

सीता-शील

खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन'

ॐ

सीता-शील

(मैथिली पद्य)

रचयिता
श्री खड्ग वल्लभ दास "स्वजन"
ग्राम—इमादपट्टी
(झंझारपुर)

प्रकाशक
श्री विद्यार्जुन प्रकाशन
सिन्धुआटोली, गुलजारबाग
पटना—७

प्रथम संस्करण—१९८६

मूल्य : १७ टाका मात्र

जखन छलनि नर-नारि-चरित में
सुन्दरता एवं उत्कर्ष।
तखन विश्व मे उच्च बनल छल
सब तरहें ई भारतवर्ष॥

— स्वजन

मुद्रक — मुरलीधर प्रेस, पटना-६

प्राक्कथन

बहुत दिन पूर्वक बात थीक। एक दिन संध्या समय हम अपना गाम-इमादपट्टीक (झंझारपुर सब-डिवीजन) पोखरि कें मोहार पर छऽ-सात संगीक संग बैसल हास्य-बिनोद मे मग्न रही, तखने हमर पितिऔत स्व० लाल भाइ ओहि ठाम पहुँच गेलाह आ हमरा सभक सम्मुख एक पीपर कें मोटगर शोर पर बैसि हमरा सभक गप्प कें कान पाथिकऽ सुनऽ लगलाह आ हमरा सभकें गप्पक आनन्द-लहर मे चुभकैत देखि ओहो लहरक आनन्द लेमय लगलाह। बीच मे ओ किछु नहिं टोकलनि। जखन समाज-सुधारक प्रसंग पर बात चलल आ चलैत-चलैत ओहि ठाम जाकऽ रुकि गेल, जाहि ठाम ई प्रश्न ऊठल जे हम सभ सुधार करऽ चाही तखन ने ? बस अही ठाम लाल भाइ कें अवसर भेट गेलनि आ बाजि उठलाह—हौ, तों सभ तौं व्यर्थ मे ई सुधारक बात करैत जाइछऽ। ई नहि देखैत जाइ छऽ जे समाजक शत-प्रतिशत युवक-युवती आ तोहूँ सभ अपन धार्मिक पुस्तक नहि पढ़ि अन्यान्य पुस्तक जेना—सस्ता उपन्यास,लौटरी-परिणाम, सिनेमाक अभद्र गीत आदि सतत् पढ़ैत रहैत छऽ। कहऽ तखन नीक विचार अर्थात् समाज-सुधारक रुचि हृदय मे कोना उपजतऽ। शिक्षा-प्रद धार्मिक पुस्तक नहि पढ़ने नीक आचार-व्यवहार कोना बनतऽ, नीक आचार-विचार नहि भेने समाज-सुधारक लेल कार्य करबाक प्रेरणा कतय सँ भेटतह। तोहू सभ एहि बात कें बुझऽ आ समाजक कार्य करबाक लेल तत्पर होइत जाह तखन ने। सभ तौं विद्वाने छऽ, कियो बी० ए०, कियो एम० ए० कियो डाक्टर, कियो इंजिनियर, कियो वकील तौं कियो प्रोफेसर। हम तौं कहैत छिअऽ जे जौं तों सभ की सम्पूर्ण समाजक लोक रामायण-महाभारत-गीता-उपनिषद इत्यादि धर्मग्रन्थक अध्ययन करथि, सूनथि एवं समझि-बूझि कऽ आचरण मे उतारथि तौं समाज-सुधार अपने - आप भऽ जेतैक। ई तौं अनुभव-गम्य बात थिक।

लाल भाइक ई उपदेशप्रद एवं उत्साहवर्द्धक बात सूनि ओहि ठामक उपस्थित लोकक संग युवकवर्ग बहुत प्रभावित भेलाह। दू-एक युवक जे साहित्यिक छलाह, बाजि उठलाह आइ सँ हम धर्मग्रन्थक नीक तरहे अध्ययन कय ओहि मे सँ सूक्तिक संग्रह कऽ प्रकाशित करब। बस, ओहीठाम हमहू प्रतिज्ञाबद्ध भऽ गेलहुँ जे रामायण मे वर्णित जगत-जननी जानकीक आदर्श-चरित्रक वर्णन अपन मातृभाषा मैथिली मे पद्य-रचना कय पुस्तक-प्रकाशित कराबी।

यद्यपि पद्य-रचना करक योग्यता नहि, तथापि मात्सर्यमयि मा मैथिलीक असीम अनुकम्पा सँ उत्साह प्राप्त भेल आ हुँनक प्रेरणा सँ रचना प्रारम्भ भऽ गेल।

नारी चरित्रक सन्दर्भ मे विविध ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि। ओहि ग्रन्थ-माला कें अध्ययन कयला पर सब सँ उत्कृष्ट आदर्श-चरित्र श्री जानकी कें जीवन मे पाओल जाइछ। किन्तु ओहि सद्ग्रन्थ सभक गूढ़ भाव एवं कठिन शब्दक कारणें सामान्यजन कें आशाजनक लाभ नहि भेटैत छैन्ह। तैं हम मिथिलाक बोल-चाल भाषा मे मैथिलीक पद्य-रचना कैल अछि। एहि मे कथा-वस्तु तौं पूर्व प्रकाशित प्रसिद्ध सद्ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा तुलसीकृत रामचरित मानस सँ लेल गेल अछि। केवल मैथिली-पद्यानुवाद भेल अछि। कतहुँ-कतहुँ अपना हृदय मे माता मैथिलीक प्रति जे श्रद्धा-पूर्ण भाव उत्पन्न होइत गेल आ उपदेशप्रद बूझि पडल से एवं अन्यान्य सद्ग्रन्थ मे सँ सूक्तिक एहि मे समावेश कऽ देल अछि।

आब श्रद्धेय पाठक-बृन्द सँ प्रार्थना जे एकरा सस्नेह स्वीकार कय सभकियो अपनाबथि, पढ़थि आ दोसरो कें सुनाबथि तौं हम अपना कें धन्य बूझब।

—स्वजन





श्री खड्ग वल्लभ दास "स्वजन" रचित "सीता-शील" नीक लागल। राम कथा पर अनेक काव्य रहितहुँ एहि पुस्तकक अपन महत्त्व अछि, मुख्यरूपें भाषाक सरलता आ सीताक मर्मस्पर्शी चरित-चित्रण प्रशंसनीय। "स्वजन" कवि सँ अधिक भक्त छथि आ कोनो भक्त केँ "सीता-शील" नीक लगबे करतैक।

दिनांक ३० अप्रील, १९८६

दीनानाथ झा
सम्पादक
इंडियन नेशन, पटना

— ❋ —

"सीता-शील" पुस्तक केँ प्रकाशित होइत अत्यन्त आनन्दक अनुभव भऽ रहल अछि। आनन्दक संगहि गौरव केँ अनुभूति सेहो ओहि सँ थोड़ नहि। जग-जननी सीता माय केँ प्रति लिखल ई पुस्तक पढ़िकऽ मोन अति प्रसन्न भेल। पूज्य बाबाजी केँ हृदय मे सीताक प्रति अपार स्नेह एवं अपूर्व भक्ति छैन्ह। ताहि सँ प्रेरित भऽ ओ 'सीता-शील'क रचना अपना मातृभाषा मैथिली मे कैलनि अछि। अपन मातृभाषाक मिठास सँ भरल ई रचना भेल अछि। पद्यक सरलता, सरसता आ मधुरता अति प्रशंसनीय अछि। विश्वास अछि "सीता-शील" रचना पढ़िकऽ नारीगण अपन चारित्रिक गरिमा केँ नीक तरहेँ जानि जयतीह एवं अपना मे जे कोनो अवगुण होयतनि तकरा हँटबैक अवश्य प्रयत्न करतीह।

दिनांक ८ मई १९८६

कुमारी आरती झा,
बी० एस-सी०।

श्री खड्ग वल्लभ दास "स्वजन" द्वारा रचित "सीता-शील' नामक पद्य-रचना देखबाक अवसर भेल। मिथिला भाषा मे सीता-विषयक अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि। यथा—चन्दा झा-कृत 'मिथिला भाषा रामायण', लाल दास-कृत 'रमेश्वर-चरित मिथिला भाषा रामायण', सीताराम झा क 'अम्ब-चरित', श्री वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'क 'सीतायन' आदि। एतेक ग्रन्थ लिखल रहलहुँ प्रस्तुत ग्रन्थक विशेष उपादेयता अछि। पहिल तँ ई जे पूर्वक रचना सर्वसाधारणक विशेष बोधगम्य नहि रहलाक कारणें ओतेक प्रचारित नहि अछि। दोसर विषय ई जे प्रस्तुत पोथी पूर्णतः 'सीताक चरित्र' पर आधारित अछि, एहि ग्रन्थक प्रारम्भे श्री जानकीक जन्म सँ होइत अछि तथा सीता सँ सम्बन्धित घटना-क्रमक वर्णन एहि मे भेल अछि। एहि मे सीता-जन्म सँ पाताल-प्रवेशक ५३ गोट प्रसङ्गक सरल-सहज-सुन्दर वर्णन प्रस्तुत कएल गेल अछि। तेसर विषय एहि पुस्तक द्वारा कवि साधारणो व्यक्ति कें ओहि उदात्त चरित्र सँ परिचय कराए नैतिकता एवं शालीनताक पाठ दए रहल छथि। लोकक चारित्रिक उत्थानहि सँ समाजक एवं देशक उत्थान भए सकैछ। सम्प्रति लोक आधुनिक चाकचिक्यक जाल मे फँसल अपन संस्कृति एवं सभ्यता सँ हँटल जाए रहल अछि। मानवीय मूल्यक अवमूल्यन भए गेल अछि। लोक अपन आदर्श चरित्र सँ अनभिज्ञ भए रहल अछि। बिना सांस्कृतिक उत्थाने आन प्रगति अकार्यक भए जाएत।

श्री 'स्वजन' जी सुलभ 'हरिगीतिका' छन्द मे सम्पूर्ण ग्रन्थकें रचना कएलन्हि अछि। एहि ग्रन्थ मे काव्यक चमत्कार सँ बेशी एक सहृदय भक्त-हृदयक उद्गार अछि। एकर भाषा प्राञ्जल रहितहुँ कतहुँ क्लिष्ट नहि अछि। आशा अछि ई पोथी अपना उद्देश्य मे पूर्ण सफल होएत।

पटना,
जूड़ शीतल
सन १३९३ (१९८६)

श्री आनन्द मिश्र
एम० ए० (अर्थशास्त्र, मैथिली एवं हिन्दी)
डी० लिट, भू० पू० विश्वविद्यालय
प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्ष,
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

शुभकामना

स्वसूक्तानां पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां ।
कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुणः ॥

कोनो पात्र कें प्रमुख बनएबा मे कविक कोन दोष ? दोष तँ होइछ पात्रक गुणराशिक । वस्तुतः जीवनमूल्यक स्थापना किंवा कोनो आदर्शक संस्थापना करबाक हेतु उदात्त चरित्रक गाथा मर्यादाक एहन दृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि, जाहि सँ चरित आ धर्म पर्यायवाची बनि जाइछ ।

भारतीय वाङ्मय मे वैदिक साहित्य सँ अद्यपर्यन्त रामकाव्यक प्राधान्य रहल अछि । यद्यपि मैथिली साहित्य मे कृष्णकाव्य सुकुमार भावना कें बोधगम्य करएबाक हेतु अप्रतिहत रहल अछि, मुदा चारित्रिक आदर्श कें प्रतिष्ठापित करबाक हेतु समाज कें कर्त्तव्य-मार्ग पर आरूढ़ करबाक हेतु रामकाव्यक अवतारणा स्वाभाविके अछि । परिणामतः कवीश्वर चन्दाझाक 'मिथिला भाषा रामायण' अत्यधिक लोकप्रिय भेल, मुदा एकरा बाद लगले कविवर लालदासक 'रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण'क प्रणयन कए ई प्रमाणित कए देल जे रामक लोकोत्तर महिमाक कारण अछि हुनक रमेश्वरत्व अर्थात लक्ष्मी (सीता) क स्वामित्व । एतय ई कहब अप्रासंगिक नहि होएत जे कविवर शक्तिस्वरूपा सीताक प्रधानता दए काव्य-रचना कएल । ओना एहि प्रकारक शक्ति कीर्त्तन कें अभिनव वस्तु नहि कहल जाएत, कारण दुर्गा सप्तशतीक "स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु" क आलोक मे शंकराचार्यक ई उद्घोष—

"कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं,
भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटी फलमिदम्"

सर्वं विदित अछि । सर्वत्र 'आधारभूता जगतस्त्वमेका' सिद्ध-प्रसिद्ध अछि आओर तैं लालदास लिखलैन्ह—

मूलप्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीतारूप प्रधान ।
तनिक नाम जपि पाब नर, दुहु लोकक कल्याण ॥ वस्तुतः आद्या-शक्तिस्वरूपा जगज्जननी जानकी (सीता) क बिना राम अनोन-बिसनोन,

सुन्न-छुछुन्न (ए राम !) भए जाइत छथि तेँ एहि में कोनो संशय नहि रहि जाइछ—

सीता नामक अमित प्रभाव, चतुर्वर्ग फल जापक पाब ।
जीवन्मुक्त थिकथि जन सैह, सीताराधन तत्पर जैह ।।

ऐह कारण अछि जे कविवर सीताराम झाक 'अम्ब-चरित', बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'क 'सीतायन', काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क 'राधा-विरह' आदि कतिपय ग्रन्थ मे शक्तिक महत्ता केँ मुक्तकंठ सँ स्वीकार कयल गेल अछि ।

भारतीय संस्कृतिक एहि पृष्ठभूमि मे परम आदरणीय श्री खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' जी द्वारा विरचित 'सीता-शील' क महत्व आओर अधिक भए जाइछ। अपन ऐतिह्यक अभिज्ञता भविष्यक मार्ग केँ प्रशस्त करैत छैक । भारतीय ललनाक उच्चादर्शक प्रतीक सीताक चरित्रगाथा ककरो लेल आकर्षणक वस्तु भए सकैत अछि । तेँ श्री 'स्वजन' जी लिखैत छथि—

"अछि भेल अभिलाषा परम नारीगणक हित किछु लिखी ।
पावन चरित्रक पद्य–पुष्पक हार गाँथव किछु सिखी ।।
आदर्श पुरुषक प्रेमिका केँ चरित शुभ लीखैत छी ।
उपदेश नारी-लेल "सीता-शील" मध्य पबैत छी ।।

यथार्थतः मर्यादा पुरुषोत्तमक सती-साध्वी पति-परायणा-शीलक प्रतिमूर्ति प्रातः स्मरणीया सीताक चरित्र-शक्तिक महत्ता केँ द्योतित करैत तिमिराच्छन्न वातावरण मे प्रकाश-स्तम्भक कार्य करैत अछि । भक्तिक वर्णन मे जे तीन गोट वस्तु प्रधान रहैत अछि—ध्यान, माहात्म्य-लीला आ आत्म-निवेदन ताहि तीनूक विलक्षण सन्निवेश एतए कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थक उपस्थापन-शैली, भाषाक विन्यास एवं भावक अभिव्यञ्जना सर्वथा स्तुत्य रहबाक कारणेँ एकरा एक स्वतन्त्र काव्यात्मक स्वरूप प्रदान करैत अछि। एतावता प्रस्तुत ग्रन्थ मात्र भक्त-समुदायेक लेल नहि, अपितु काव्य-रस-लुब्ध सुधी-बृन्दोक हेतु एक विशिष्ट निधि मानल जाएत। हमर की सामर्थ्य अछि जे एहि प्रकाश-

पुञ्ज पर प्रकाश देबाक चेष्टा करब। हँ, एतबा धरि पूर्ण विश्वास अछि जे तत्त्वान्वेषीगण एहि सँ चरम तत्त्वक परिचय अवश्ये पाबि सकैत छथि।

भावानुवाद रहितहुँ ग्रन्थक मौलिकता अक्षुण्ण अछि। कारण एक तँ मैथिली (सीता) क कथा, सेहो मैथिली मे लिखल जएबाक कारणेँ सोन मे सुगन्धिक कार्य कएलक अछि। वर्त्तमान युग केँ गद्य-युग अवश्य कहल जाइछ, मुदा एकर भाषा, शैली आ भाव-गाम्भीर्य एतेक सरल, सरस आ सुबोधगम्य अछि जे ई अपन स्थान विशेषरूप सँ सुरक्षित करा लेलक अछि। एहि ग्रन्थक सब सँ पैघ विशेषता मानल जाएत जे मिथिलाक एहन लोक जकरा मात्र मैथिली पढ़बाक ज्ञान छैक अत्यधिक लाभान्वित होएत।

मैथिली मे एहि प्रकारक ग्रन्थक प्रकाशन सँ महत्त्वपूर्ण कार्य भेल अछि। एतदर्थ श्री "स्वजन" जीक हार्दिक अभिनन्दन करैत एहि अमूल्य रचनाक अधिकाधिक प्रचार प्रसारक हेतु अपन शुभ कामना अर्पित करैत छी। इत्यलम्।

डा० देवेन्द्र झा
दिनांक २८ अप्रील, १९८६ अध्यक्ष, मैथिली-विभाग,
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

— ० —

एहि "सीता-शील" क चर्चा किछु दिन पूर्व हम सुनने छलहुँ। प्रबल उत्कंठा छल जे एकरा कने पढ़ी। संयोग वशात् हमर एक घनिष्ट मित्र क माध्यम सँ ई प्राप्त भेल। रचनाकारक प्रारम्भिक विनय-युक्त पद्य पर दृष्टि पड़ितहि पढ़वाक उत्सुकता भेल। एके-दू बैसक मे "सीता-शील" केँ आद्योपांत पढ़ि गेलहुँ। एहि पाठ्यान्तर मे कतेकों वेर आँखि सँ नोर बहल अछि, कतेकों वेर रोमांचित भए उठलहुँ अछि, कतेकों वेर देवत्वक परिवेश मे आत्मा केँ विचरण करैत पौलहुँ।

अद्य पर्यन्त अनेकों काव्य ग्रन्थक पाठ कैलहुँ। सभमे उत्कृष्ट भाव-व्यञ्जना एवं गम्भीरता पावि अत्यन्त आनन्द प्राप्त भेल अछि, मुदा

"सीता-शील" क भाषा, गम्भीर भाव एवं शैलीक अनुपम प्रभाव तथा चमत्कारपूर्ण प्रवाह सँ मुग्ध भऽ कहए पड़ल अछि अहा ! एतेक सरल सुलभ भाषा ! एहन प्रवाह ! एकोक्षण पढ़बा मे उचाट नहि बुझना गेल। लागल जे "सीता-शील' मे जगज्जननी जानकी केवल चरित्रक प्रधानते मात्र नहि, अपितु मिथिला-शीलक यथार्थ वर्णन अछि। श्रद्धेय कवि "स्वजन" जी तँ "सीता-शील" केँ मिथिला-शीलक वीजगणितीय प्रतीक बनौलन्हि अछि। एखनहुँ (वीसम शताब्दीक अंतिम दशकक चौकठि पर) हमरा लोकनिक गृहलक्ष्मी, हमरा लोकनिक वेटी, हमरा लोकनिक संस्कृति मे धैर्य, त्याग, सहिष्णुता, सच्चरित्रता एवं बुद्धिक समन्वय पर आधारित ताहि शीलक प्रतिविम्बन देखल जा सकैछ। कवि एहि महान सत्यक उद्घाटन करबा मे सफल रहलाह अछि। रामक सँग मुनिवर विश्वामित्र क मुँह सँ कहबाओल—

"अपना परिश्रम सँ उपार्जित वस्तु भोगब उचित छी।
ई धारणा मिथिला-समाजक देखि हम अति मुदित छी॥"

कतेक पैघ आदर्श उपस्थित करैत अछि। आजुक पराश्रिताक अभिशापक विरुद्ध ?

"नहि देखि रहलहुँ एकटा अपवित्र अपरोजक कियो।
सभ छथि सुशील-पवित्र-वितपनि डोम-हलखोरक धियो॥"

धन्य छथि, महान छथि "सीता-शील" क रचयिता जे आदर्श पुरुष राम एवं आदर्श मुनिवर विश्वामित्र क मुँह सँ मिथिला क ई प्रशंसा करबा सकैत छथि। डोम हलखोरक धियाक प्रति कविक ई सम्मान ! समताक ई सम्बेदना !

एक साधारण पाठकक हैसियत सँ हम इएह कहि सकैत छी जे प्रत्येक सभ्य-शिक्षित मिथिलांचला परिवार मे "सीता-शील" क एक प्रति अवश्य रहए तथा प्रत्येक एहन परिवार मे एहि काव्यक गान हो; एहि सँ अधिक रचनात्मक बौद्धिक सेवा मैथिल-सांस्कृतिक अखन हमरा नहि देखबा मे अबैछ।

डा० श्री देवनारायण मल्लिक
दिनांक २९ अप्रील, १९८६
राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष तथा
समाज-विज्ञानक सकायाध्यक्ष,
विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

पुष्पाञ्जलि

"सीता-शील" मैथिली-भाषा मे एक अद्वितीय प्रसून भऽ प्रस्फुटित भेल अछि, जकर सुमधुर सौरभ सँ समस्त मैथिली-भाषा सुवासित होएत एवं एकर पाठकगण नैसर्गिक आनन्द उठौताह। 'सीता-शील' करोड़ो मैथिली भाषा-भाषी एवं साहित्यानुरागी लोकनिक तृषित कण्ठ कें अप्यायित करैत रहत। एहि पुस्तक मे प्रयुक्त भाषा, भाव, शैली, छन्द, मात्रा आदिक अभूतपूर्व संगम भेल अछि जाहि सँ ग्रन्थक गरिमा उच्चतम शिखर पर आबि गेलैक अछि।

'सीता-शील' काव्य ग्रन्थकें रचि श्री खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' जी मिथिला एवं मैथिली कें प्रशंसनीय सेवा कयलन्हि अछि। जगत-जननी सीता मिथिलाक आराध्य देवी थिकीह। संगहि ओ मिथिलाक प्रतीक छथि। प्रत्येक मैथिल हुनका अप्पन बुझैछ एवं हुनक श्रद्धाभाव सँ पूजा-अर्चना करैछ। समस्त विश्व मे मिथिलाक नाम उजागर करबा मे एवं ओकरा हेतु अजस्र यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करबाक सर्वोपरि श्रेय सीताजी कें छन्हि। हुनक यशोगान जतेक कएल जाए से थोड़ थीक। 'विधु' जीक 'सीतायन' क उपरान्त 'स्वजन' जीक 'सीता-शील' पाबि मैथिल-समाज कृतघ-कृत्य छथि। 'स्वजन' जी एहि काव्य मे मिथिला-वर्णन मे अपन विलक्षण प्रतिभा एवं सीताक प्रति अपन भक्तिभाव प्रदर्शित कयलन्हि अछि। पंडित लालदास जी द्वारा रचित 'रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण' मे सीताक सर्वश्रेष्ठ भूमिका दर्शाओल गेल अछि, ओही क्रम मे 'सीतायन' एवं 'सीता-शील'क रचना भेल अछि।

विश्वास अछि जे 'सीता-शील'क घर-घर मे प्रचार होएत एवं एकर काव्य-सरोवर मे अवगाहन कऽ मैथिल ललना लोकनि अपन शील-स्वभाव कें स्वच्छ, सुन्दर एवं मधुर बनौती।

जय मिथिला ! जय मैथिली !!

दिनांक २ मई, १९८६

श्री जटाशंकर दास

उपाध्यक्ष,

मैथिली साहित्य-संस्थान, पटना।

जग-जननी सीता केँ प्रति पूज्य बाबू जी केँ हृदय मे अपूर्व भक्ति छैन्ह। नेन्नो-भुटका केँ मध्य जखन ओ भगवान राम आ माँ सीता केँ चर्चा करैत छथि तँ भाव-विभोर भऽ उठैत छथि। एहि प्रकारक भाव-विभोरता सँ प्रेरित भऽ "सीता-शील"क रचना अपन मातृभाषा मैथिली मे कैलनि अछि।

पाण्डुलिपि केँ रूप मे सम्पूर्ण 'सीता-शील' पढ़बाक हमरा अवसर भेटल। अपन मातृभाषाक मिठासक सँगे भावक सरसता आओर शैलीक प्रवाह सँ हम अतिशय प्रभावित भेलहुँ। तखने मनमे अभिलाषा भेल जौं ई पुस्तक प्रकाशित कैल जाय आओर मिथिलाक नारीगण एकरा आदि सँ अन्त धरि पढ़ि जाथि तँ हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ओ नारीक चरित-गरिमा सँ झूमि उठतीह।

तैं हम सतत् बाबूजी पर आग्रह पूर्वक जोर देलियनि जे पुस्तक शीघ्र प्रकाशित कैल जाय। अन्ततः हमर ई अभिलाषा पूर्ण भऽ गेल।

आशा अछि जे मिथिलाक नारीवृन्द एहि पुस्तक केँ ध्यान सँ अवश्य पढ़तीह आ माँ सीताक आचरण सँ शिक्षा-ग्रहण कऽ अपना चरित्र केँ आदर्शमय बनौतीह।

दिनांक ४ मई, १९८६

विद्या कुमारी
प्राचार्या
आनन्द-मार्ग, स्पेशल एकेडमी,
गुलजारबाग, पटना-७

समर्पण

जिनक परम श्रद्धा एवम् अनन्य भक्ति,
परम पिता परमात्माक साक्षात् स्वरूप
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रक
अर्द्धाङ्गिनी श्री जगज्जननी जानकीक
चरणाम्बुजक प्रति अहर्निश
बनल रहैत छैन्ह,
ओहि श्रद्धेय भक्तक
पाणि-पङ्कज मे
प्रस्तुत पुस्तक
स स म्मा न
सर्मापित
अछि।

—स्वजन

उपहार

श्रीमान्/श्रीमती··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· के

कर-कमल मे सादर/सस्नेह भेंट

प्रार्थना

गणपति-वीणापाणि के प्रथम सभक्ति प्रणाम।
पुनि गिरिजा-सँग शम्भु के, सुमिरि सुखद शुभ नाम ॥

इष्टदेव सिय-राम के, चरण-कमल कय ध्यान।
सुमिरि व्यास-वाल्मीकि-पद, काव्य-सुकलानिधान ॥

अनुपम श्री सीता-चरित, अछि आदर्श महान।
मिथिला-भाषा-पद्य मे कयल मातु-गुण गान ॥

तैं हे देवी-देव - गण, अपने सभ सुखधाम।
करी कृपा कय पूर्ण ई, "स्वजन"क शुभ मन काम ॥

प्रकाशक कें आह्लाद एवं आशा

"सीता-शील" कें प्रकाशित करैत अत्यन्त आनन्दक अनुभव कऽ रहल छी। मिथिलाक बाटिका मे भारतीय संस्कृति कें एक सुन्दरतम पुष्प के रूप मे प्रस्फुटित भेल छलीह—सीता !

जखन-जखन स्मृति-पट पर हुनक अनुपम सरलता, सादगी, सेवा एवं सहिष्णुताक स्मरण होइत अछि तखन-तखन हृदय स्वतः तरल रूपें आलोड़ित भऽ जाइत अछि तथा आह्लाद मे मुँह सँ सहजहि मुखरित होइत अछि – माँ ! विश्वस्य जननी!

"सीता-शील" कें माध्यम सँ करुणामयी माँ कें चरित्रगाथा गाओल गेल अछि अपन मातृभाषा मैथिली मे। पद्यक सरलता, सरसता, मधुरता आ प्रवाह प्रशंसनीय अछि जे कवि श्री खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन'' क हृदय मे माय कें प्रतियें छल-छल भरल भक्ति-कलश कें प्रतीक अछि।

आशा अछि, भोगवाद सँ ग्रसित नैतिकता कें एहि संक्रमण काल मे 'सीता-शील' स्त्रीगुण कें अनुप्राणित कऽ पथ-प्रदर्शित करत तथा पुरुषवर्ग कें चक्षु उन्मिलित करैत प्रसुप्त क्षमताक दर्शन करा देत।

श्री विद्यार्जुन प्रकाशन — अर्जुन नारायण चौधरी
पटना-७ — २१-३-१९८६

अनुक्रम

ॐ

सीता-शील

विनय

गणनाथ ! प्रथम सुपूज्य भेलहुँ नाम जपि जिनकर अहाँ !
गुन-गाबि जिनकर भक्तवर नारद भेला ज्ञानी महा ॥

छथि बनल शिव केँ आदि युग सँ पूज्य परमाराध्य जे ।
भऽ जाथि ज्ञानी-भक्त-सज्जन केँ विनय सँ साध्य जे ॥

गुरुवर वशिष्ठ छलाह परिचित अधिक जिनक स्वभाव सँ ।
श्री परशुरामक गर्व भेलनि चूर्ण जिनक प्रभाव सँ ॥

जे कैल निज आचार सँ आनन्द श्री अवधेश केँ ।
जे शिव-धनुष केँ भंग कऽ कैलनि मुदित मिथिलेश केँ ॥

बापक वचन केँ मानि वन मे बरष चौदह बसल जे ।
किछु केकयी केँ क्रोध-मिश्रित कटु वचन नहि कहल जे ॥

नर-प्रवर रघुवर बीर धनुधर जानकी-वर राम से ।
आदर्श-मर्यादा-पुरुष उर मे बसथि सुखधाम से ॥

प्रेरक बनथि श्री राम, गणपति ! अछि अहाँ सँ प्रार्थना ।
रचना सकल जन-मन-पसन्दक हो 'स्वजन' केँ कामना ॥

अछि भेल अभिलाषा परम नारीगणक हित किछु लिखी ।
पावन चरित्रक पद्य-पुष्पक हार गाँथव किछु सिखी ॥

आदर्श पुरुषक प्रेमिका केँ चरित शुभ लीखैत छी ।
उपदेश नारी-मेल "सीता-शील" मध्य पबैत छी ॥

अछि धारणा सीताक प्रति उर-मध्य श्रद्धा-भक्ति जे ।
पद-रचि प्रकट कऽ रहल छी अछि योग्यता आ शक्ति जे ॥

ई जौं पढ़थि सभ व्यक्ति "सीता-शील" चित्त पवित्र सँ ।
पढ़ि नारि-नर आचार सीखथि जानकीक चरित्र सँ ॥

तौं सफल अपन प्रयत्न बूझब ई लगौने आश छी ।
मैथिल तथा मिथिलाक सेवा-हेतु प्रथम प्रयास छी ॥

यद्यपि विविध सद्ग्रन्थ मे आदर्श-नारी गुण-कथा।
वर्णित बहुत सुन्दर-जकाँ भऽ गेल अछि अनुपम तथा॥
अछि गूढ़ अति गम्भीर भाव रु काव्य-कला-विचार सँ।
विद्वान-वर्गक रचित सब वर्णन बहुत विस्तार सँ॥
सामान्य-जन केँ ओ सुग्रन्थक अर्थ समझऽ पड़नि जँ।
स्पष्ट सुन्दर भाव समझै मे कठिनता होनि तँ॥
से जानि रचलहुँ मधुर भाषा मैथिली केँ पद्य मे।
लागत पढ़ै मे पढ़ि रहल छी जाहि तरहेँ गद्य मे॥
नहि योग्यता अछि कविक हमरा पद्य-रचना करब की?
विद्वान-वर्गक बीच बाजल करब तौं हम बनब की??
दुसबे करथि क्यो जननि-गुण-वर्णन करक प्रयास केँ।
हँसबे करथि क्यो कवि अधिक त्रुटि देखि काव्य-विलास केँ॥
तैँ हम सुश्रद्धा-भक्ति केँ उर मे दबौने रहब की?
सद्भाव उपजल माँक प्रति से प्रकट हम नहि करब की??
अछि किन्तु आशा प्रबल एकरा ध्यान सँ पढ़ताह जौं।
"स्वजन"क हृदय मे भाव श्रद्धा-भक्ति केँ पौताह तौं॥
विश्वास अछि मिथिलाक पावन पवन-पानि-प्रभाव सँ।
करता छमा निश्चय दया अरु सरलताक स्वभाव सँ॥
आग्रह हमर विशेष प्रियवर सुजन पाठक-बृन्द सँ।
पढ़ि जाथि कृपया आदि सँ धरि अन्त सभ निश्चिन्त सँ॥
श्री माँक कृपा-प्रसाद सँ प्रस्तुत अखन भऽ गेल ई।
चुनि-चुनि सुगम शुभ शब्द-सुमनक हार निर्मित भेल ई॥
कैलहुँ कतहुँ प्रयोग नहि अपशब्द "सीता-शील" मे।
नहि कैल वर्णन कतहुँ कठिन कुवाक्य आ अश्लील मे॥
मात्रा अठाइस पाँति प्रति लघु-गुरु चरण केँ अन्त मे।
सुन्दर श्रवण-सुखकर मधुर हरिगीतिका केँ छन्द मे॥

श्री जानकी-जन्म

श्री चन्द्रकुल कें आदि मे 'निमि' नाम कें राजा भेला ।
धर्मिष्ठ-नर मे श्रेष्ठ ओ गुणवान-बलशाली छला ॥

तिनकर सुपुत्र छलाह 'मिथि' जे पूर्ण सद्गुण-ग्राम सँ ।
ई तीरभुक्तक नाम मिथिला पड़ल हिनके नाम सँ ॥

'मिथि' के सुपुत्र प्रसिद्ध ज्ञानी 'जनक' नृप शशि-अंश मे ।
सब नृप 'जनक' कहबैथ हिनके नाम पर ऐ वंश मे ॥

तैसम पिढ़ी मे भेल छथि सीता-पिता 'विदेह' ई ।
रखलनि ने कहियो स्वजन-तन-धन सं विशेष सनेह ई ॥

मिथिलेश जनक विदेह अति ज्ञानी परम सब भूप मे ।
धर्मिष्ठ नरवर ज्ञानकें अवतार नृपतिक रूप मे ॥

मिथिलाक जन-गण छल प्रसन्न विदेह कें सुप्रबन्ध सँ ।
सुन्दर व्यवस्था शासनक छल योग्य मंत्री-बृन्द सँ ॥

विश्वक रचयिता के छलनि लीला करक विचार मे ।
तखने दुखी कऽ देल जल-बिनु जीव कें संसार मे ॥

इच्छा जखन जे होनि प्रभुकें सैह होइछ सृष्टि मे ।
भऽ गेल बहुतों वर्ष काल विलम्ब वारिक वृष्टि मे ॥

दुष्काल मिथिला मे पड़ल छल भेल नहि वर्षा कतौ ।
जड़ि गेल जतबा खेत-बीच जजात उपजल छल जतौ ॥

चिन्तित जकाँ बैसल छला नृप सचिव-वर्गक बीच मे ।
सोचै छला जनता मरत तौं पड़ब पापक कीच मे ॥

जे क्यो गुणी-ज्योतिष छला पंडित विदेहक राज मे ।
कृषि-ज्ञान जिनका छलनि बृद्ध-गृहस्थ सकल समाज मे ॥

सबकें बजाकऽ जनक कहलनि ठाढ़ भऽ दरबार मे ।
"दुष्काल होयत कोन तरहें दूर सभक विचार मे ॥

सब मिलि विचारि बताउ अखने कैल जायत काज से ।
सधि गेल सभटा भरल छल भण्डार मध्य अनाज जे ॥

मंत्री, प्रमुख, विद्वान, बान्धव, कहल श्री मिथिलेश सँ ।
"नहि होउ चिन्ताकुल नृपति ! उद्विग्न नहि दुख क्लेश सँ ॥

जौं कऽ सकी तौं झट करू मिथिलेश ! एक उपाय ई ।
बनिकऽ अहाँ हरवाह जोतू खेत कृषि-व्यवसाय ई ॥

किछुओ बिलम्ब कदापि नहि करबाक अछि शुभ काज मे ।
राज्यक प्रजा-हित काज मे नहि पड़ कनियों लाज मे ॥

ई सूनि वचन विचार कैलनि जनक आपद्धर्म ई ।
करबाक अछि हमरा अखन समयानुकूलक कर्म ई ॥

आदेश भेटल जनक दिशि सँ कर्मचारी वर्ग केँ ।
अनबाक लै दृढ़तर सुभग 'हर' एक तखने स्वर्ण केँ ॥

भऽ गेल प्रस्तुत वरद-पालो जनक चलला खेत केँ ॥
शुभ मंत्र होमय उच्चरित लागल सँगे-सँग वेद केँ ॥

मिथिलेश उर मे ध्यान कऽ गुरु इष्ट केँ आदेश लऽ ।
लागनि पकड़लनि की तखन घन सघन-गर्जन गेल भऽ ॥

जलपूर्ण वारिद घेरि आयल सकल दिशि आकाश मे ॥
हर्षित भेला नृप जे पड़ल अखने छलाह निराश मे ॥

किछु फाड़ मे ठेकल जनक रुकलाह विस्मित भऽ कने ।
छल पात्र फूटल मे सुकन्या एक सुन्दरतम भने ॥

पाठक ! कने ई बूझिली कन्या कोना ऐ ठाम मे ।
आयल कतय सँ भूमि तर मे कखन तिरहुत ग्राम मे ॥

पहुँचल छला विदेह जोतय लेल जाहि सुभूमि केँ ।
छल ताहि तर मे रक्त राखल ऋषि-तपस्वी-मूनि केँ ॥

तन-पाचि कऽ शोणित सभक राजस्व-कर केँ रूप मे ।
लै छल दशानन डाँटि कऽ बनि निर्दयी सब भूप मे ॥

बिचरैत नित्य रहैत छल धन-बुद्धि-वल-अभिमान सँ ।
आकाशवाणी एक दिन सुनलक स्वयं निज कान सँ ॥

"रे लंकपति ! ई रक्त हेतौ प्राण-घातक सूनि ले ।
तौं पाप-अर्जन कऽ रहल छेँ फल तकर अनुमानि ले" ॥

ई वाक्य सुनि चौंकल बहुत लागल विचारय हृदय मे ।
किछु युक्ति सोचि विचारिली द्रुति करब अखनहि समय मे ।

ई देखि स्थिति रावणक सोचलि तखन मन्दोदरी ।
दी फेंकि की जल-धार मे एकरा बहा दी किछु करी ॥

बस दूर गंगा-पार मिथिला-माटितर पाताल मे ।
जाकऽ अखन दी गाड़ि गलि-पचिजैत किछुए काल मे ॥

ई सोचि जाकय गाड़ि आयल एक कोनो पात्र मे ।
ओ रक्त विधि-अनुकूल बदलल बालिका कें गात्र मे ॥

सानन्द तकरा कोड़ लऽ राजा जनक अति स्नेह मे ।
उछलैत अति आनन्द सँ अयलाह अपना गेह मे ॥

बरिसल बहुत वारिद पटल सब खेत-थल परिपूर्ण सँ ।
जयकार लागल तखन होमय जनकपुर सम्पूर्ण सँ ॥

मानू प्रकृति अवतरित भेली जानकी कें रूप मे ।
तँ पवन सुरभित मंद सुखप्रद ताप सूर्यक धूप मे ॥

नभ छल अहा ! निर्मल अधिक मधुमास-सन छल मधुरिमा ।
उत्फुल्लता उत्कल जकाँ प्रातः उषा-सन अरुणिमा ॥

जन-मन परम प्रसन्न छल पृथ्वी प्रफुल्लित भऽ गेली ।
भऽ गेल कष्ट समाप्त भेली प्रकट जखने मैथिली ॥

आदर्श नारी-चरित-धारण कऽ प्रकट भूगर्भ सँ ।
अथवा कहू मिथिलेश-गृह मिथिलेश्वरी कें गर्भ सँ ॥

कहबथि सुनयना-आत्मजा यद्यपि छलीह अयोनिजा ।
अथवा कहू प्रत्यक्ष लक्ष्मी स्वरुचि सँ छथि भूमिजा ॥

किनको कहब छलनि अवतरित भेलीह दुर्गा-भगवती ।
सौंदर्य मे रति सँ ने कम एको रती सीता सती ॥

हर-फाड़ सँ कोड़ल सुयल कें सीत नाम धरैत छी ।
तँ सीत सँ प्रकटित भेली सीता सुनाम भजैत छी ॥

मिथिला मनोहर भूमि महि मे बूझि अति महिमामयी ।
श्री जानकी भेली प्रकट जन-हित समुद करुणामयी ॥

शोभाक वर्णन करब की ? जलनिधि मे ओस मिलैब छी ।
अथवा अधर निज चाटि कँ तृष्णा महान मिटैब छी ॥

हिनका गुणक वर्णन करत के ? पूर्णरूपें सृष्टि मे ।
क्यो नारि श्री सीता-सदृश नहि पाबि रहलहुँ दृष्टि मे ॥

चरितावली सीताक जौं अति ध्यानसँ पढ़ि-सूनि ली ।
मानय पड़त महि-मध्य मानवताक मूरति मैथिली ॥

तँ बिनय करबनि जोड़िकर मिथिलाक नारी बृन्द सँ ॥
नित पढ़ति "सीता-शील" केँ बैसथि जखन स्वच्छन्द सँ ॥

जतवा सुलक्षण नारि मे चाही छलनि से सीय मे ।
मानय पड़त निर्मल छलनि बुधि-वल सुनयना-धोय मे ॥

मन हैत "सीता-शील" पढ़ि आदर्श नारी हम बनी ।
पति-सासु-ससुरक सेविका बनि गुणवती निजकेँ गनी ॥

सत्शास्त्र नारी लेल शिक्षाप्रद सुपोथी नित पढ़ी ।
सीताक नैहर देखि आबी शीघ्रतम सीतामढ़ी ॥

सीताक पावन अवतरण भेलनि तकर किछु हेतु छै ।
सीता-चरित तौं भव जलधि केँ पार करक सुसेतु छै ॥

जौं पढ़थि ललनागण लगन सँ सतत "सीता-शील" केँ ।
बैसल समय बितबैथ नहि मारैत ·माथक ढील केँ ॥

आचार संग विचार बनबथि जनक-नन्दिनि सिय जकाँ ।
पुरुषो सकल व्यवहार सीखथि करथि सीता-पिय-जकाँ ॥

तौं अछि अटल विश्वास मिथिला रहत नहिं कम स्वर्ग सँ ।
प्रतिदिन प्रशंसा-पत्र होयत प्राप्त जग-जनवर्ग सँ ॥

की ? नारिकेँ छै धर्म-गुण सभटा बतौलनि जानकी ।
धीरज धरी दुख मे कोना कऽ से सिखौती आन की ॥

की हेतु करी विवाद ककरा संग कोन प्रकार सँ ।
सीता जनैत छलीह सभटा अपन उच्च विचार सँ ॥

मन मे उठनि इच्छा अशुभ तौं देथि झट तकरा दबा ।
जानथि सिया मन-रोग केँ की ? ह्वैछ समयोचित दवा ॥

सीता-चरित आदर्शमय उपदेशप्रद सब रीति सँ ।
सभ काज समयोचित करथि नारी-सुधर्मक नीति सँ ॥

सेवक-टहलनी सभ रहथि सन्तुष्ट सिय-वर्त्ताव सँ ।
ममता-रहित योगी जनक लऽ कोड़ चूमथि चाव सँ ॥

कखनोने कैलनि शब्द उच्चारण कोनो अश्लील कें ।
कतबो विपति पड़लनि तदपि तजलनि ने सीता-शील कें ॥

बुदरुक जे कानथि वस्तु किछुओ लेल कोनो नारि कें ।
मारथि ने डाँटथि अपितु बौंसथि दऽ मधुर परतारि कें ॥

दुसबाक अवसर देथि नहि किनको अपन व्यवहार सँ ।
पाबथि प्रशंसा सर्वदा सुसमाज आ परिवार सँ ॥

नित करथि श्रद्धा-भक्ति संग प्रणाम निज सँ श्रेष्ठ कें ।
आज्ञा सतत मानथि रहथि जे वयस मे कुलजेठ कें ॥

गृह-कार्य अपना योग्य भरि माताक शुभ आदेश लऽ ।
हर्षित-हृदय सँ करथि सब चिक्कन जकाँ सुविशेष कऽ ॥

नहि अन्य पुरुषक संग कखनो रहथि नहि एकान्त मे ।
बैसथि सखी-सँग शौच-मज्जन करथि नियत स्थान मे ॥

अनुचित कोनो जौं काज देखथि चुप कदापि ने रहथि ई ।
डाँटथि-दबारथि नहि बुझाबथि मधुर रूपें कहथि ई ॥

कखनो उदाश-निराश बैसलि व्यर्थ नहि देखल कियो ।
अलसाथि नहि अगराथि नहि नृप जनक कें भऽ कऽ धियो ॥

सदिखन सुनयना रहथि हर्षित देखि सिय-व्यवहार कें ।
लऽ आनि देथि दुलार सँ नित वस्तु विविध प्रकार कें ॥

सिखबथि गृहस्थाश्रमक सभटा लूरि एवं रीति कें ।
परिवार-प्रेमक पाठ पढ़बथि स्वजन-परिजन प्रीति कें ॥

□

मिथिला-दर्शन

एवम्प्रकारें दिवस-मास अनेक वर्ष समाप्त भऽ ।
आयल समय यौवन-अवस्था जखन सियकें प्राप्त भऽ ॥
राखल बहुत दिन सँ जनक-गृह शिव-धनुष छल एकटा ।
ओ छल कते भारी छला ज्ञाता विशेष विदेहटा ॥

सीता बढ़ारथि धनुष-तर सहजहिं उठाकऽ हाथ सँ ।
से देखि कहलनि मा सुनयना प्रेमयुत निज नाथ सँ ॥
"हे नाथ ! हम देखल बढ़ारति सीय कें आगार मे ।
सहजे उठा कऽ राखि देलनि धनुष एक किनार मे ॥

ई सूनि बजला जनक 'सिय सँ अधिक जे नर शक्ति मे ।
सामर्थ तोड़क धनुष कें छनि जाहि सज्जन व्यक्ति मे ॥
निश्चय हमर अछि वैह नर बनताह सीता-पति कियो ।
स्वीकारती पति-रूपमे तिनके सुनयना कें धियो ॥"

भऽ गेल घोषित धनुष-यज्ञ-महोत्सवक सब देश मे ।
लगलाह आबय यज्ञ-थलपर भूपवीरक वेष मे ॥
सबकें सुनौलनि प्रण जनक "जे शिव-धनुषकें तोड़ता ।
से जानकी कें पाणि गहि सम्बन्ध बड़का जोड़ता" ॥

ताही समय मे राम-लछुमन संग विश्वामित्र कें ।
रक्षा करैत छलाह दूनू भाइ यज्ञ पवित्र कें ॥
सम्पन्न भेले छलनि यज्ञक कार्य सब तत्काल मे ।
अयलनि निमंत्रण-पत्र मिथिला सँ लिखित रंग लाल मे ॥

सीता-स्वयंवर-सन सुखद सम्बाद पढ़ि हर्षित भेला ।
तीनू सुजन लऽ शिष्य-गणकें जनकपुर पहुँचे गेला ॥
पहुँचैत मिथिला-भूमि पर अतिशय प्रसन्न छलाह ओ ।
मिथिलाक वैभव देखि अनुपम मुग्ध भऽ बजलाह ओ ॥

"हिम धवल पर्वत-पुञ्ज-तलमे बसल मिथिला प्रान्त ई ।
सम्पूर्ण विश्वक देश एवं प्रान्त सँ शुभ शान्त ई ॥

कोशी बलानक धार कमला गंडकी धेपुरा तथा ।
नित बहथि मिथिला-मध्य जिनकर छनि सुखद अद्भुत कथा ॥

तिरहुतक तुलना मे कोनो नहिं देश-प्रान्त पबैत छी ।
मिथिला-सदृश सौन्दर्य हम संसार मे न सुनैत छी ॥

अपना परिश्रम सँ उपार्जित बस्तु-भोगब उचित छी ।
ई धारणा मिथिला-समाजक देखि हम अति मुदित छी ॥

किछु भिन्नता देखैत छी नहिं प्रजा-राजा-सदन मे ।
मिथिलाक महिला-पुरुषकें छनि अति मधुरता वचन मे ॥

मुँह पर सदैव प्रसन्नता झलकैत हम देखैत छी ।
किछु वस्तु कोनो लेल नहि झगड़ा करैत सुनैत छी ॥

नहिं देखि रहलहुँ एकओ अपवित्र अपरोजक कियो ।
सब छथि सुशील-पवित्र-वितपनि डोम हलखोरक धियो ॥

तैं जानकी नैहर बनौलनि एहन सुन्दर भूमि कें ।
मनहुँ छ नहिं वन जाइ पुनि मिथिला नगर सँ घूमि कै ॥

मिथिला-प्रशंसा सूनि मुँह सँ बहुत विश्वामित्र कें ।
नहि रहल गेलनि बालानक स्वभाव सँ सौमित्र कें ॥

भेलनि लखन कें लालसा देखी जनकपुर नगर कें ।
भय छनि मुदा रघुवरक अरु संकोच बड़ मुनि-प्रवरकें ॥

तैं कहथि नहिं मुँह सँ मुदा बजबाक क्रम बनबथि अहा !
अनुजक हृदय कें भाव-ज्ञाता राम तौं छथिये महा ॥

कहलनि मुनीश्वर सँ "कृपा कऽ नाथ ! जौं आदेश दी ।
जनकक नगरमे घूमि बूझी लोक-भाषा-भेष की" ?

मुनिवर मुदित मन सँ कहल "घूमू नगर आनन्द सँ ।
हे राम ! सभकें दृग सफल कऽ आउ निज मुख-चन्द सँ" ॥

मुनिकेर आज्ञा पाबि दूनू भाइ गेला नगर मे ।
लगला बहय मिथिलाक अति शोभा-समुद्रक लहर मे ॥

नर-नारि-गण नगरक निकलि बाहर भेला निज भवन सँ ।
सुकुमार युगल कुमार कें दर्शन करक हित नयन सँ ॥

श्री राम कें लखि रूप पल नहिं खसनि किनको आँखि कें ।
सब ठाढ भऽ निश्चल रहथि पक्षी जेना बिनु पाँखि कें ।।

सब कहथि नहिं देखल एहन सुन्दर पुरुष संसार मे ।
मन ह्वैछ लीतहुँ राखि दून्नू मूर्त्ति हृदयागार मे ।।

मनहर सुखद दर्शन अखन भऽ रहल अछि संयोग सँ ।
सुनितहुँ कने आलाप करितथि विहँसि मैथिल लोग सँ ।।"

बाजथि कियो शिव-धनुष कें ई तोड़ि तड़फड़ देथि जौं ।
सीता कुमारी कें अपन पत्नी बना ई लेथि तौं ।।

शोभा तखन बढ़ि जैत चौगुन एहि मिथिला-धाम कें ।
दुलहिन सिया कें बनलि लखि दुलहा बनल श्री राम कें ।।

रचलनि विधाता युगल जोड़ी बहुत सोचि-बिचारि कऽ ।
वरश्याम लै अति गोरि कनियाँ रचल कला सुधारि कऽ ।।

बजली कियो "टूटब धनुष ई एहि राजकुमार सँ ।
अछि अति असम्भव ऐ प्रकारक युवक नर सुकुमार सँ ।।

भारी बहुत दृढ़तम बनल अछि शम्भुकेर बसुचापई ।
टूटब कठिनतम छैक नर सँ हम कहै छी साँच ई ।।

सुकुमार छथि ई अछि कठोर पिनाक गिरिजा-नाथ कें ।
देखैत नहिं छी ? हिनक कोमल चरण दून्नू हाथ कें" ।।

दोसर सखी देलनि उचित उत्तर छली बुधियारि जे ।
अति तर्कयुत उत्तर छलनि बनलीह सभक पियारि से ।।

हिनकर कहब अद्‌भुत छलनि "देखैत केवल छोट छी ।
नहिं किन्तु हिनका तुल्य तिरहुत मध्य एको गोट छी ।।

छथि शक्ति-शीलक सिन्धु सुख-सौन्दर्य कें भण्डार ई ।
सखि ! शीलवन्ती सीय सुन्दरि-योग्य वर सुकुमार ई ।।

तरली अहल्या जिनक पद-पंकज-रजक स्पर्श सँ ।।
मन मुदित कौशिक मुनिक कैलनि निज चरित आदर्श सँ ।

मुनि-यज्ञ-रक्षण मे बहुत हतलनि निशाचर वर्ग कें ।
कतवेर वर्षौलनि सुमन सुर-बालिकागण स्वर्ग कें ।।

से व्यक्ति सखि ! शिव-धनुष सहजहि तोड़ि नहि सकता कियै ?
आबहुँ बताउ विचारि कऽ सन्देह सभके' अछि कियै'?

कैलनि समर्थन सभ मुदित भऽ ओहि सखिक सुबात कें ।
मुसकैत सँग विहँसैत छथि जहिना सुमन जलजात कें ॥

ओ दृश्य सुन्दर छल केहन से करब वर्णन अखन की ?
नहि देखि सकलहुं दृश्य ओ लिपिबद्ध होयत तखन की ?

आनन्द दै आनन्द ल घुमलाह अति आनन्द सँ ।
श्री राम-लछुमन छथि अहा ! मुसकैत दूनू मन्द सँ ॥

कऽ सकल महिला-पुरुष कें मोहित मनोहर रूप सँ ।
अयलाह गुरु लग जे छला पूजित अनेको' भूप सँ ॥

कैलनि प्रणाम विनीत मन सँ गुरु चरण कें छूबि कऽ ।
कहलनि सकल बृत्तान्त देखल-सुनल जे जे घूमि कऽ ॥

मुनिवर सहर्ष सनेह दऽ आशीष सिर कें चूमि कै ।
लगला सराहय "धन्य अछि सौभाग्य मिथिला भूमि कें ॥

कैलहुँ अहाँ हे राम ! जीवन-सफल नगरक लोक कें ।
विश्वास अछि धनु-भंग कऽ हरबनि विदेहक शोक कें ॥

अहँ थाकि गेले हैब घुमलहुँ जनकपुर-बाजार मे ।
नित कार्य सँ झट निपटि करु विश्राम सयनागार मे ॥

आज्ञा गुरुक स्वीकार कऽ कैलनि यथोचित कार्य कें ।
भोजन स्वरुचि सँ कऽ दुनू आदेश सँ आचार्य कें ।

गुरु-चरण जाँतब शयन सँ पहिने बुझथि अनिवार्य कें ।
कर्त्तव्य सब कैलनि नियम छल जे तखुनका आर्य कें ॥

निशिगत जखन भऽ गेल तजलनि सेज प्रातःकाल मे ।
शौचादि कऽ स्नान कैलनि जनक नगरक ताल मे ॥

आदेश लऽ गुरु सँ तखन चललाह पुष्पक बाग मे ।
छल जतय कुसुम सरोज विकसित विविध सुभग तराग मे ॥

सुन्दर सुअवसर ई विधाता पूर्व सँ रचने छला ।
लखु प्रेमिका-प्रेमी दुहू कें कोन विधि देलनि मिला ॥

माता सुनयना देलि आज्ञा स्नेह सँ श्री सीय कें ।
"पूजा करै लै जाउ सिय ! हिमवान नृपतिक धीय कें ॥

□

पुष्प-वाटिका

ई चन्द्रवंशक चलि रहल अछि पूर्व सँ सुन्दर प्रथा।
शुभ कार्य कें पहिने करी गौरीक पूजा विधि यथा।।
तैं हमर प्रिय बेटी ! अहाँ गिरिजाक पूजा नेम सँ।
जाकय करू गौरीक मठ मे अखन श्रद्धा-प्रेम सँ।।

ओ शैलजा-मन्दिर बनल छल पुष्पबागक मध्य मे।
सुन्दर सरोवर स्वच्छ जल सँ पूर्ण छल सानिध्य मे।
श्री जानकी जननीक आज्ञा पाबि अयली बाग मे।
दश-पाँच संगिनि-संग कऽ गाबथि मनोहर राग मे।।

कैलनि सिया स्नान सब सखि-संग सुभग तडाग मे।
चन्दन जकाँ सिन्दूर कैलनि एक-दोसर माँग मे।।
लगली करय श्रद्धा-सहित गौरीक पूजा नेम सँ।
कर जोड़ि सविनय प्रार्थना कैलनि सिया अति प्रेम सँ।।

"हे शैलजे ! गिरिजे ! उमे ! मैना-सुते ! शंकर-प्रिये !
हिमवन्त-नन्दिनि ! विश्व-वन्दिनि ! सतत् वासिनि शिव-हिये !
कैलनि पिता प्रण उचित हमरा योग्य वर कें प्राप्ति लै।
कृपया प्रतिज्ञा पूर्ण करु सब मे 'उमे ! छी व्याप्ति मैं।।

करुणामयी गिरिजे ! कृपाकऽ योग्य दुलहा कऽ दिअऽ।
जे भऽ सकय सेवा सिया सँ से अखन करबा लिअऽ" ।।
एही प्रकारें ठाढ़ि भऽ कर जोड़ि कऽ जनकक ललौ।
गौरीक पूजा-प्रार्थना लगली करय श्री मैथिली।।

तावत सखी मे एक गेली बाग घूमय लेल जे।
देखल युगल कुमार कें की मुग्ध अति भऽ गेल से।
सीताक लग झटकैत दौड़लि मुदित मन अयलीह ओ।
किछु छन परम आनन्द-सर मे डूबि चुप रहलीह ओ।।

पूछलि सिया "बाजू अहाँ कें हे सखी ! अछि भेल की ?
अद्‌भुत कोनो शुभ दृश्य किछु पागल जकाँ कऽ देल की ?

अपस्यांत भऽ हकमैत छी पगलैल जकां लगैत छी।
की ? देखि अयलहु कोन दिशि से नहि कियैक कहैत छी" ॥

कहलनि सखी "देखल परम सुन्दर युगल कुमार कें।
सौन्दर्य-युत सुकुमारता सद्‌गुण सकल प्रकार कें॥

छथि एक श्यामल गोर दोसर हँसथि सबखन मन्द मे।
नहि हम पबैछी ओहन सुन्दरताक समता चंद मे॥

दर्शन करै लै सब चलो अनुपम मनोहर रूप कें।
सार्थक करी निज नयन कें लखि युगल मूर्त्ति अनूप कें॥

अनुमान होइछ वैह छथि जे काल्हि खन घूमै छला।
देखबैत सभकें अपन छवि देखैत नगरक प्रिय कला॥

एब क्यो चली-देवी कने की धारणा छनि बूझिली।
जौं पैब अवसर तौं कनी बतियैब किछुओ पूछिली॥

सीता हृदय सँ सत्य मानल नारदक सद्‌वचन कें।
होयत घटित घटना अखन अनुसार ऋषिवर कथन कें॥

छथि पुरुष ई पति-योग्य सुनलनि मधुर वाणी गगन कें।
विश्वास जमलनि देखि कऽ फरकैत वायाँ नयन कें॥

भेलनि विचार अवश्य देखी छथि केहन वर पुरुष ई।
देखी कने छनि शक्ति तोड़क स्वकर सँ शिव-धनुष ई॥

चललो सुनयना - नन्दिनी समुदित सखी - गण - संग मे।
प्रकटित पुरातन प्रीति उपजल रोम सिहरल अंग मे॥

सब दिशि चकित भऽ नयन घूमनि जनक राज दुलारि कें।
जहिना तकै छथि भक्त उर मे बसल प्रभु त्रिपुरारि कें॥

सीताक कंगना-पायलक ध्वनि मधुर सुखकर सूनि कऽ।
कहलनि लखन कें राम "कहु स्वर ककर मन मे गूनि कऽ॥

अन्दाज अछि डंका बजै अछि मनसिजक जग-विजय कें।
पहुँचत एतय जीतत अखन हमरा अहाँ कें हृदय कें" ॥

भेलनि सिया-मुख-चन्द्र लखि रामक नयन-चकोर कें।
आनन्द जहिना होनि वारिद देखि प्रेमी मोर कें॥

सीता-मुखक सौन्दर्य अनुपम मुग्ध कैलक राम कें।
तजि पुष्प तोड़ब करय लगला मधुर दर्शन वाम कें॥
मन मे कहथि अछि धन्य मिथिला रहथि ई सुन्दरि जतऽ।
छी धन्य हमहूँ सभ एहन दर्शन करय पबितहु कतऽ॥

जे छलनि सुन्दर वस्तु-गुण ब्रह्माक निज भण्डार मे।
से सभ इकत्रित देखि रहलहुँ जानकी आकार मे॥
सीताक योग्य सुयोग्य वर नर के ? अखन संसार मे।
अनुमान अछि नहि छथि कियो लछमन हमर विचार मे"॥

सीताक सुन्दरताक वर्णन कऽ अनेक प्रकार सँ।
पूछल मुदित मन राम निज प्रिय अनुज लखन कुमार सँ॥
"हे लखन ! बूझि पड़ैछ हिनके लेल नृप प्रण कैल की ?
भऽ रहल अछि धनु-यज्ञ, हम सभ अैल छी ऐ लेल की ?

गौरीक पूजा हेतु छथि आयल सखी सँग बाग मे।
सुनलहुं अखन संगीत हिनके मधुर सुन्दर राग मे॥
गौरीक प्रति श्रद्धा हिनक लखि परम पूजाचार कें।
हम मुग्ध छी भऽ गेल हिनकर बूझि मधुर विचार कें॥

हम तौँ प्रभावित भऽ रहल छी एहि नारि-प्रभाव सँ।
परिचित करा क्यो देथि जौँ सम्प्रति हिनक स्वभाव सँ॥
तौँ हे लखन ! हृदयेश्वरी हिनका बनबितहुँ यत्न सं।
भऽ जाइ हम अतिशय सुशोभित एहि नारी-रत्न सँ॥

देखैत छी लक्ष्मण सुखद फरकैत दहिना अंगकें।
होनी लगै अछि प्राप्त होयत वस्तु अनुपम रंग कें॥
कखनो कुपथ पर नहि चली ई रघुकुलक स्वभाव छै।
पर नारि पर भऽ जाइ मोहित भावनाक अभाव छै॥

छी किन्तु अखन देखैत अति विपरीत बात स्वभाव मे।
परि गेल छी हम राम एक कुमारि नारि-प्रभाव मे"॥
बतियाति छथि सौमित्र सँ छनि ध्यान सीता-दिशि मुदा।
सीताक मुख-छवि-मधुर-मय पीबैत मन सँ सुखप्रदा॥

वाचक ! निहारू आब एमहर सियक ढंग लगैछ की ?
लखि राम छवि सीता-हृदय मे भाव मधुर उठैछ की ?

सब दिशि निहारथि किन्तु देखथि नहि युगल कुमार कें।
भऽ जानि व्याकुलता अधिक मनमे अनेक प्रकार कें ॥

फूहरि अधिक सज्ञानि एक छली सखी के गोट मे।
देलनि लखा श्री रामकें छीपल लता कें ओट मे ॥

लखि रूप रामक जानकी कें लागि गेलनि टकटकी।
कहु तों तखुनका दृश्य कें वर्णन करै मे हम सकी ॥

भैला प्रकट भ्राता दुनू सुन्दर लताकें कुञ्ज सँ।
मानू जेना दू चन्द्रमा बहराथि वारिद-पुञ्ज सँ ॥

छनि माथ पर जिनका मयूरक पंख शोभा धाम जे।
छनि बाल घुँघरदार अति छथि नाम रखने राम जे ॥

मणिमाल उर मे भाल परम विशाल बाल-स्वभाव कें।
लखि मुग्ध छथि सीता विसरली अपन शक्ति प्रभाव कें ॥

विह्वल विदेह-कुमारि भेली जखन प्रेम अपार सँ।
दृग-गेह मे प्रभु-रूप कैलनि बन्द पलक-किवार सँ ॥

भेली अचेत खसैत देखलनि जखन जनक कुमारि कें।
देलनि खसय नहि सीय कें धऽ लेल सखी सम्भारि कें ॥

लगली कहय सुकुमारि सीता कें सखीगण प्रेम सँ।
"सीते ! करू दर्शन नयन भरि चेत भऽ शुचि नेम सँ ॥

भेलछि विलम्ब विशेष आबहु भवन दिशि झट दऽ चलू।
अबिलम्ब अवध-किशोर लग सँ हे सखी ! सभ क्यो टलू ॥

भऽ जैब सम्भव सब प्रभावित हिनक रूप-प्रभाव सँ।
भऽ जैब पीड़ित सभ युगल नर-नयन-वाणक घाव सँ ॥

अनजान कोनो पुरुष लग अँटकलि रही फुलवारि मे।
सोचैत छी नहि की ? अहाँ लागत कलंक कुमारि मे" ॥

वाणी सखी कें सूनि सिय सकुचा गेली संकोच सँ।
पितु जनक-प्रण कें बूझि चिन्तित भऽ गेली अति सोच सँ ॥

तत्काल धीरज राखि चललौ राम कें धरि ध्यान मे।
कोनो र.खी लग ठाढ़ि भऽ लागथि कहय किछु कान मे ॥

झूठे लगं छनि ठेस बैसथि तौं निहारथि राम कें।
कखनो ने बिसरं छथि मनोहर रूप आनन्द-धाम कें ॥

चाहैत छथि यावत समय धरि देखि रहलहुं राम कें।
अंटकलि रही कं कऽ बहाना झूठ-मूठक काम कें।

कऽ लेल चित्तक भीत पर अंकित प्रभुक शुभचित्र कें।
लगली करय सीता विनय गौरीक मूर्त्ति पवित्र कें ॥

अति भक्तिवश दृग-नीर बहलनि जानकी कें नयन सँ।
गौरीक बारम्बार विनती करथि मृदुतम वयन सँ ॥

"हे श्रेष्ठ पर्वतराज-तनये ! शम्भु-भामिनि पार्वती !
शिव-मुख-शशिक सुन्दर चकोरी ! जगत-प्रथित महासती !!

गणपति तथा कार्तिक-सुमाता ! विश्व जननी हे उमे !
जय हो अहाँ कें हे शिवे ! मैनाक तनये ! हे उमे !!

अर्द्धाङ्गिनी शम्भुक सदा वरदायिनी सब जीव कें !
जय हो अहाँ कं हे शिवे ! आनन्द-दायिनि शीव कें !!

संसार कें उत्पत्ति - पालन - नाश अपने हाथ मे।
अछि भक्ति अविचल माँ अहाँ कें स्वपति भोलानाथ मे ॥

अछि लालसा हमरा कथी ? जनिते अवश्ये छी अहाँ।
सबकें हृदय मे जखन शिव-सँग नित विराजित छी अहाँ ॥

हम तखन अपने कें सुनायब की ? मनोरथ शब्द मे
सब किछु जनै छी माँ ! अहाँ विधि-लिखल जे प्रारब्ध मे" ॥

कैलनि विनय बहु भाँति सँ भरि नीर दूनू नयन मे।
प्रेमाकुला जनकात्मजा सिर टेकि देलनि चरण मे ॥

सीता विनय सुनि प्रेम कें वश मे भवानी भऽ गेली।
खसि पड़ल पुष्पक हार कर सँ तखन गिरिजा हँसि देली ॥

आनन्द सँ आदर सहित लऽ माल गौरि-प्रसाद कें।
कैलनि सहर्ष सुमाल धारण पाबि आशीर्वाद कें ॥

गौरी हृदय मे हर्ष भरि कहलनि सियाकें स्नेह सँ।
"प्रण-पूर्ण हेतनि कैल अछि जे गेल नृपति विदेह सँ॥
सीते! अवश्ये पूर्ण होयत जे अहँक अछि कामना।
अनुपम पुरुष वर-प्रति बनौलहुँ भक्तियुत निज भावना॥
अनुरक्त भेलछि मन अहँक सिय! जाहि पुरुषक प्रति अहा!
दुलहा अवश्ये अहिँक बनता ओ बली सुन्दर महा॥
जिनका स्वपति मन मे बनौलहुँ छथि धनुर्द्धर राम से।
सर्वज्ञ-सर्वसमर्थ-हँसमुख छथि दया कें धाम से॥
ओ सब जनै छथि नीक तरहें अहँक शील-स्वभाव कें।
ओ पूर्व सँ परिचित तथा ज्ञाता अहँक प्रभाव कें॥
ओ तौं प्रभावित भेल छथि पहिनहि जनक-व्यवहार सँ।
मोहित अधिक भऽ गेल छथि मिथिलाक शिष्टाचार सँ॥
ओ ऐल छथि बूझू जनकपुर ऐह मन मे धारि कँ।
बनबैक छनि प्राणेश्वरी सीते! अहीं सन नारि कें"॥
गिरिजाक आशीर्वाद रुचिकर सूनि प्रमुदित जानकी।
भेली प्रसन्न कतेक से कहि सकत कहु तौं आन की?
गौरीक बारम्बार स्तुति कैल अति आनन्द सँ।
चलली भवन दिशि जानकी वरदान पाबि पसन्द सँ॥
पुनि आब देखू राम कें की? हाल सिय-सौन्दर्य सँ।
भऽ गेल मोहित छथि अधिक सीताक छवि-माधुर्य सँ॥
सीताक सुन्दरता सराहति पहुँचला गुरु चरण मे।
सब घटित घटना कहि सुनौलनि सत्य समुचित वचन मे॥
आशीष देलनि मुनि समुद मुसकैत दूनू बन्धु कें।
"होयत सफल मन कें मनोरथ" कहल करुणा-सिन्धु कें॥
लऽ पुष्प पूजा कैल ओ निज इष्ट गुरुकें प्रेम सँ।
चर्चा चलऽ लागल परस्पर वेद शास्त्रक नेम सँ॥
आदेश मुनि कें पाबि दूनू भोजनक उपरान्त मे।
किछु काल धरि विश्राम कऽ पहुँचै गेला एकान्त मे॥

तुलसी चबुतरा पर दुनू बैसल छला दिवसान्त मे।
वातावरण छल शान्त सुखमय सकल मिथिला प्रान्त मे॥

देखल अहा! पूरब दिशा मे उदित उज्जर चान कें।
श्री जानकी मुख-सदृश लखि लगला करय मिलान कें॥

"सीता-मुखक समता कोना भऽ सकत कहियो चान मे।
छै भिन्नता जहिना बुझू अति मूर्ख आ विद्वान मे॥

खारा जलधि सँ जनम चन्द्रक रहथि एकसर व्योम मे।
छिप जाथि घनगर धूम्र सँ जे उठय यज्ञक होम मे॥

भ्राता हिनक छनि गरल दिन मे रहथि सदिखन मलिन ई।
लागल कलंकक दाग छनि जे आब छूटब कठिन ई॥

नित दिन घटैत-बढ़ैत छथि दुख देथि विरहिणि नारि कें।
ग्रसि लैत छनि हा! राहु हिनका ग्रहण अवसर पाबि कें॥

सरसिज सुमन कें शत्रु शशि छथि विश्व मे विख्यात ई।
सीताक तुलना करब शशि सँ हैत व्यर्थक बात ई॥

जग बीच अनुपम अवनि-तनया छथि अवश्ये लखन ई।
भऽ गेल समय विशेष अँटकब हैत अनुचित अखन ई"॥

अयलाह गुरुकें निकट पुछलनि हाथ-जोड़ि प्रणाम कऽ।
'हे गुरु प्रवर! धनु-यज्ञकें परिणाम कहु विश्राम कऽ॥

सर्वज्ञ अपने छी भविष्यक बात सकल जनैत छी।
सीताक वर के? नर हेता बुझितहुँ कने पूछैत छी"॥

ई प्रश्न रामक सूनि मुनि लगलाह सोचय ध्यान सँ।
की पूछि रहला अछि स्वयं जे पूर्ण छथि सद्ज्ञान सँ॥

अछि उचित उतर देब हमरा गुरु हिनक कहबैत छी।
छथि शिष्य तखन छिपाउ की परिणाम जखन जनैत छी।

कहलनि "कहब की? राम! हम अपने स्वयं सर्वज्ञ छी।
की हैत? की भऽ रहल अछि? की भेल अछि? मर्मज्ञ छी॥

सीता बना चुकली अहाँ कें स्वपति पुष्पक बाग मे।
वरदान दऽ देलनि उमा सानन्द भरि अनुराग मे॥

तैं आब की छीपल रहल सीताक वर बनताह के ?
राघव ! अहाँ कें छोड़ि धनु के तोड़ि नर सकताह के ?

मुनि कें कथन सँ राम अति हर्षित हृदय सँ भऽ गेला।
गुरुवरक लऽ आदेश तीनू व्यक्ति सूतइ लै गेला ॥



धनुष-यज्ञ

नित कर्म सँ निवृत्ति भऽ गुरु-शिष्य प्रातःकाल मे।
जनकक सुआग्रह पर पहुँचला यज्ञभूमि विशाल मे ॥

धनु - यज्ञ - आयोजन छला कैने जनक उत्साह सँ।
प्रति देशकें लगलाह आबय नृपति-गण सिय-चाह सँ ॥

मणि-मढ़ल मंडप छल बनल सीता-स्वयंवर लेल जे।
अद्भुत-अपूर्व सुरम्य देखक योग्य मानल गेल से ॥

सम्पूर्ण थल छल भरल आगत शूर-वीर नरेश सँ।
मन्त्री सुनौलनि जनक-प्रण मिथिलेश कें आदेश सँ ॥

"राखल एतय अछि शिव-धनुषकें तोड़ि देता वीर जे।
बनताह पति सीताक नर-वर भूमिपति रणधीर से ॥

श्री जानकी जयमाल पहिरौती परम आनन्द सँ।
सम्पन्न होयत कार्य वैवाहिक सविधि सुपसन्द सँ" ॥

प्रण-वाक्य सुनितहि भूप सब लगला विचारय हृदय मे।
वीरत्व अपन करी प्रकट समुचित उपस्थित समय मे ॥

सब नृपति अपनाकें लगाबथि वीर जग-विख्यात छी।
कोदंड ~~[illegible]~~ कें तोड़ब कहू ई कोन भारी बात छी ॥

लगला उठाबय आबि बेरा-बेरि शंकर-धनुष कें।
उठतनि की हिलबो कैल नहि ताकथि चहू दिशि मनुष कें ॥

चुपचाप निज स्थान पर बैसथि झुका सिर लाज सँ।
लगलनि पता नहि कतेक भारी धनुष छै अन्दाज सँ ॥

धनु नहि हिलनि हिलबथि मुदा पुनि-पुनि अनेको यतन स ँ।
जहिना सती-मन हो न विचलित पुरुष कामी-वचन स ँ॥

लगला उठाबऽ एक स ँग बहुतेक व्यक्ति सम्भारि कऽ।
उठलनि तथापि ने धनुष रहला बैसि हीया-हारि कऽ॥

देखल जनक निराश भऽ बैसल स्वयंभू भूप कें।
छनि शक्ति नहि तोड़क किनको ओहि धनुष अनूप कें॥

मिथिलेश कें तें कहऽ पड़लनि तखन यज्ञागार मे।
"बुझि लेल हम छथि वीर नहि सम्प्रति कियो स ंसार मे॥

जौं पूर्व मे जनितहुँ तखन नहि प्रण एहन करितहुँ कदा।
अछि आब कोन उपाय से सोचक पड़त हमरा मुदा॥

वरु जानकी रहि जाथि जीवन भरि कुमारिक रूप मे।
प्रण नहि टरत सुनि लेथि जे क्यो होथि ज्ञानी भूप मे॥

नहि छनि लिखल विवाह सिय कें बूझि स ँह पड़ैछ की?
रहती बिना ब्याहलि सिया लक्षण विचित्र लगैछ की"?

जनकक वचन कें सूनि लछुमन भौंह कैलनि टेढ़ तौं।
उठलनि फड़कि कर दहिन चुप छथि भाइ-भयकें बेढ़ सँ॥

नहि रहल गेलनि तखन उठला बाजि झट लछुमन ततऽ।
"नृप ई वचन वजला कियै? रघुकुलक नर छथि क्यो जतऽ॥

हे भानुकुल के दीप रघुवर! अखन आज्ञा दी अहाँ।
ब्रह्मांड कें कंदुक जकाँ दी फेंकि जौं कहि दी अहाँ॥

आदेश दी मूली-जकाँ तोड़ब सुमेरु पहाड़ कें।
शक्तिक प्रदर्शन कऽ देखा दी जनक सँग संसार कें॥

कहु तखन श्रमकी हैत तोड़ब मे पुरान पिनाक 'कें'।
लऽ लेथु वापस जनक अपना एहि बाजल वाक कें"॥

ई वीरता-सम्पन्न वाणी सूनि लछुमन लाल कें।
भेलनि असीम प्रसन्नता ज्ञानी सुजन नरपाल कें॥

भेली मुदित सीता अधिक आशा-जनक प्रसंग सँ।
वातावरण वनि रहल छल उत्तम निराला ढ़ंग सँ॥

सकुचागेला मिथिलेश कैलनि राम चुप सौमित्र कें ।
भेलनि अतीव प्रसन्नता गुरुदेव विश्वामित्र कें ॥

शुभ जानि अवसर कहल कौशिक स्नेह युत श्री राम सँ ।
"हे राम ! जनकक दुख हरू धनु-भंग कऽ आराम सँ ॥

तखने सखीगण सीयकें लै आनि अन्दर गेह सँ ।
कैने छली सिय कें उपस्थित प्रिय सखीसभ स्नेह सँ ॥

अनुपम सुभूषण सँ सजलि सीता सुभग श्रृंगार कऽ ।
धनुयज्ञ-थल पर ऐल छथि सौन्दर्य जनु साकार भऽ ॥

सीताक सुन्दरताक वर्णन सृष्टि मे कऽ सकत के ?
रामक प्रिया बनती तिनक गुणगान पूरा करत के ?

नित रहथि गज-गामिनि सिया अति प्रिय सखी कें संग मे ।
जहिना रहै छथि गंग विविध तरंग संग उमंग मे ॥

रहती कियै नहि सजलि सीता विविध रत्न विभूषिता ।
बल-विभव-पूर्ण उदार नृप-सन जनक जिनकर छथि पिता ॥

यज्ञक महा मण्डप सुशोभित आबिकँ कऽ देल ओ ।
मानू जेना नभ मे उदित तारा सहित शशि भेल हो ॥

सिय-पाणि मे जयमाल छनि छथि ठाढ़ि अनुपम रीति सँ ।
विश्वास छनि पति राम बनता ध्रुव पुरातन प्रीति सँ ॥

सब दिशि सिया ताकथि हृदय मे बसल शोभा धाम कें ।
नहि देखि व्याकुल छथि महा ! मन मे पुकारथि राम कें ॥

गुरु-बन्धु-बीच सुशान्ति बैसल देखि प्रेमी कें अहा !
वर्णन करत के ? कते भेलनि जानकी कें सुख महा ॥

बुधियारि सीता ध्यान कऽ रामक मनोहर रूप कें ।
लगली करय मधु-पान अति सुखमय अमिय अनूप कें ॥

मानू पतंग प्रदीप पर जीवन-निछावर हो जेना ।
प्रेमी मधुप मकरन्द पर अर्पित करय तन-मन जेना ॥
छनि जानकी कें राम पर रामक सिया पर दृष्टि जे ।
प्रत्यक्ष ई तौ भऽ रहल सत्प्रेम-वारिक वृष्टि से ॥

लगली करय सीता हृदय सँ पुनि उमाकेँ बन्दना ।
"हे शैलजे ! गिरिजे ! करू मम पूर्ण कृपया कामना ॥

कोमल हिनक कर-कमल छनि भारी धनुष विशाल ई ।
तोड़थि अखन श्री राम बाधक बनल अछि विकराल ई ॥

प्रण ई पिता केँ पूर्ण अपने केँ कृपा सँ हैत जौँ ।
शिष्या अहाँ केँ सब दिनुक ई जानकी भऽ जैत तौँ ॥

हम तौँ बना चुकलहुँ स्वरुचि सँ प्राणपति श्री राम केँ ।
जग मे उमे ! सुन्दर पुरुष हम नहि बुझैत छी आन केँ" ॥

दशरथ-सुवन केँ सुखद सुन्दर सुमुख रूप निहारि कऽ ।
मिथिलाक महिला भऽ गेली शिथिला शिला-सन ठाढ़ि भऽ ॥

करजोड़ि नगरक लोग सब मन सँ मनाबथि ईश केँ ।
नाना प्रकारेँ प्रार्थना सब करथि प्रभु जगदीश केँ ॥

सुकुमार छथि श्री राम तौँ सुकुमारि छथि श्री जानकी ।
गुण-बल-मनुजता मे कहू छथि नहि दुनू समान की ?

आदर्श पुरुषक सकल शुभ लक्षण भरल छनि राम मे ।
तौँ नारिगुण-सम्पन्न सीतो छथि एम्हर सब वाम मे ॥

श्यामल ओम्हर रघुवर एम्हर छथि गोरि वैदेही महा ।
देलनि मिला बिधि सोचि कऽ जोड़ी युगल सुन्दर अहा !

गुणवान सुत अवधेश केँ तौँ ई जनक केँ गुणवती ।
भगवान छथि जौँ राम तौँ श्री जानकी छथि भगवती ॥

हे ईश ! सभ शुभ कार्य होइछ सफल अहिक प्रसाद सँ ।
धनु-भंग होयत राम-कर सँ अहिंक आशीर्वाद सँ ॥

हे जीव-दुख-हर ! हरू सत्वर जनक-तनया शोक केँ ।
वामाङ्गिनी ई बनथि रामक लालसा सब लोक केँ" ॥

पौलनि गुरुक आदेश उठला राम इष्ट प्रणाम कऽ ।
धनुषक निकट झट चल गेला भोला-दिगम्बर नाम लऽ ॥
श्री रामचन्द्र मृणाल-सदृश तोड़ि देल पिनाक ओ ।
नरपति उपस्थित जे छला कटलनि सभक श्रुति-नाक ओ ॥

जयमाल पहिरौलनि तुरत श्री रामकें श्री जानकी।
प्रत्यक्ष देखल सभकियो शोभाक ह्वैछ सिमान की?
आदर्श वर छथि राम तौं आदर्श कन्या जानकी।
भरि मोन दर्शन कऽ लिअऽ पुनि पैब एहि समान की?
अति प्रेम जकरा जाहि मे दृढ़तम रहय श्रुति-वाक्य ई।
ओ प्राप्ति हो तकरा अवश्ये शास्त्र कथन अकाट्य ई॥
श्री राम देखथि सीय कें सीता लखथि प्रिय प्राण कें।
करतार देखथि जीव कें आ कोक जहिना चान कें॥
उर-बीच प्रेम प्रगाढ़ छनि दूनूक हृदयागार मे।
दूनू सँगेसँग बहि रहल छथि प्रेम-सरिता-धार मे॥
रखबाक छनि संसार मे आदर्श शिष्टाचार कें।
गम्भीर छथि तें कऽ रहल छथि मनुज-सन-व्यवहार कें॥
सब देवगण द्वारा जयति जय भऽ रहल आकाश मे।
सुमनक सुवृष्टि सहर्ष सुर-महिला करथि उल्लाश मे॥
बाजथि समाजक लोग सुन्दर सुबन दशरथजोक ई।
श्री जानकी कें योग्यवर चुनलनि विधाता नीक ई॥
विधि! जौं युगल जोड़ी सकल रचना करी ऐ भांति सँ।
तौं अवनि मे सब जन्तु सदिखन रहत अति सुख-शान्ति सँ॥



परशुराम कें लक्ष्मण सँ वार्त्ता

तखने घटल घटना अपूर्व सँह आब लिखैत छी।
रामक प्रभावक मात्र किछु चर्चा अखन चलबैत छी॥
धनु-भंग-शब्द कठोर पड़लनि परशुरामक कान मे।
अयला कतहुँ सँ परशु लय अगुतैल यज्ञ-स्थान मे॥
रघुकुल-तिलक राघव-निकट देखबैत अपन प्रभुत्त्व कें।
लगलाह गर्जय जनक पर सुनबैत निज ब्रह्मत्त्व कें॥
"के? शिव-धनुष कें खण्ड कयलक शीघ्र हमरा दे बता।
मारब पकड़ि कय अखन ओकरा, कहि कने दे तौं पता॥

हम परशु-द्वारा खण्ड दू तकरा करब धनुषे जकाँ।
ओ नर्क भोगत बहुत दिन धरि पातकी मनुखे जकाँ" ॥

भय-भीत भऽ गेलाह सुनि नृप सकल मुनि-वर्त्तात्र केँ।
उत्तर कियो नहि दऽ सकथि सुनि परशुराम-स्वभाव केँ ॥

क्षत्रिय कुलोद्भव लखन सँ नहि रहल गेलनि ई मुदा।
भेलनि हृदय मे अत्यधिक पीड़ा लखन केँ दुखप्रदा ॥

पुछलनि "परशुधर छी अहाँ धनु पर तखन मात्सर्य की ?
पहुँचल तपस्वी छी अहाँ केँ क्रोध हो आश्चर्य ई ॥

द्विजश्रेष्ठ भऽ धारण कियै ? कँने रहै छी क्रोध केँ।
अछि भावना उर मे कियै ? शुभ कार्य-बीच बिरोध केँ ॥

छल ई अधिक पुरान राखल जगह केँ अजवारने।
बूझू अहाँ तेँ अखन तोड़ल गेल तकरे कारने ॥

सुपिनाख्य निर्मित नित्य नेन्ना मे करी पुनि तोड़ि दी।
मन भेल तौँ टूटल धनुष केँ पूर्ववत पुनि जोड़ि दी ॥

हे धनुष-प्रेमी ! दी अहाँ हमरा अखन आदेश जौँ।
निर्माण हम कऽ देब सुन्दर एहि सँ सविशेष तौँ" ॥

श्री परशुरामक क्रोध बढ़लनि सूनि लखनक वचन केँ।
श्री राम दिशि तकलनि विशाल गुराड़ि अपना नयन केँ ॥

मनमे कहथि 'ई युवक के छी ? छैक नहि डर मारि केँ।
मारय पड़त एकरा अवश्ये आब हमरा हारि केँ ॥

"सुन राम ! तोरा संग मे दुर्बुद्धि संगी के ? छियौ।
कऽ दे मना नहि तौँ अखन हम काल-मुँह मे दऽ दियौ ॥

हम के ? थिकहुँ नहि चीन्हलक अछि की ? अखनधरि मूढ़ ई।
क्यो नहि मना एकरा करथि बैसल कते छथि बूढ़ ई ॥

मुनिकेँ कठोर कुवाक्य सुनि नहि रहल गेलनि लखन सँ।
कहलनि 'मुनीश्वर ! दुर्बचन सुनलहुँ अहाँ-सन सुजन सँ ॥

छी धन्य अपने, अपन गुण वर्णन करी निज बैन सँ।
मारैत क्षत्री-वर्ग केँ घूमैत छी बेचैन सँ ॥

अपना प्रतापक डींग हाँकब उचित बूझि पड़ैछ की ?
क्रोधाग्नि सँ जड़बंत सबकें नीक काज लगैछ की ?

अद्भुत कोनो शुभकार्य सँ नाखुश कियै भऽ जाइ छी।
बिनु बात बुझने व्यक्ति सभ सँ की ? ठनैत लड़ाइ छी॥

छी विप्रवर वेदाध्ययन कैने अवश्ये हैब तौं।
ककरा कहै छै श्रेष्ठतम व्यवहार बुझले हैत तौं॥

कहु तखन एहन महान भऽ बच्चा-जकाँ बतियाइ छी।
नहि छोट-बड़क विचार अछि सभ पर एना खिसियाइ छी॥

सुनितहि बचन विचित्र लखनक द्विज भेला कोपित महा।
बजलाह "बालक ई हमर सब मान देलक अछि ढहा॥

सब देखि अखने लेथि हम जे करब हिनकर दुर्दशा।
फरसाक द्वारा छनि हिनक मरबाक सम्प्रति लालसा॥

श्री परशुरामक लखन प्रति देखल असह व्यवहार कें।
श्री राम कहलनि परशुधर सँ धारि शिष्टाचार कें॥

"हे विप्र ! अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परम देव-समान छी।
एवं छमा कें शील नामी ज्ञानवान महान छी॥

करुणाकरक स्वभाव अछि अपनेक हमहुँ जनैत छी।
तें हेतु बालक कें छमा करबाक हेतु कहैत छी॥

हम दास छी अपनेक अपने थिकहुँ तपसी मुनि अहा !
हम राम केवल थिकहुँ अपने परशुराम प्रथित महा॥

अपनेक सम्मुख टीक हम की ? सकब कोनो काल मे ?
ब्राह्मण-तपस्वी-तुल्य-गुणबल हो कतहुँ भूपाल मे"॥

द्विजवरक क्रोध विलैल तखने सूनि रामक बात कें।
उर सँ निठुरता क्रोध दुर्गुण राखि देलनि कात कें॥

अति शान्ति भऽ गेलाह रामक नम्रयुत वर्त्ताव सँ।
परिचित जखन भेलाह रामक परम मृदुल स्वभाव सँ॥

कहलनि "लिअऽ हे राम ! ई विष्णुक धनुष कें हाथ मे।
ई जौं चढ़ा दी तौं हँटत सन्देह बातक बात मे"॥

कहितहि धनुष चलि गेल रामक हाथ अपने आप सँ।।
खीँचल प्रत्यंचा शब्द भेल कठोर विष्णुक चाप सँ।।
भेला अचम्भित देखि राम-प्रभाव अद्भुत जखन ओ।
अति नम्र भऽ करजोड़ि विनती करय लगला तखन ओ।।
"रविकुल-कमलकेँ सूर्य रघुपति ! अहँक जय-जयकार हो।
प्रत्यक्ष विष्णुक रूप केँ जयकार बारम्बार हो।।
सुर विप्र-पृथ्वी-धेनु रक्षा करक हेतु अबैत छी।
निज भक्तजन हित कष्ट सहि रक्षा सदैव करैत छी।।
कहि देल अनुचित बचन अपने अनुज केँ अनजान मे।
करुणानिधे ! ऐ बातकेँ राखब ने कहियो ध्यान मे।।
कऽ दी छमा अपने छमाके शील कृपानिधान छी।
अपने दुनू भ्राता जगत मे मनुज-श्रेष्ठ महान छी।।
जे किछु करब आदर्शमय ओ हैत ऐ संसार मे।
उपयोग नर-तन केँ करब नित जीवकेँ उपकार मे।।

□

शुभ विवाह

कर जोड़ि कय कैलनि विनय नृप अरुन्धती केँ कन्त सँ।
"ई शुभ विवाहोत्सव सविधि सम्पन्न करु आनन्द सँ"।।
जनकक शुभेच्छा बूझिकय मुनिवर वशिष्ठ प्रसन्न सँ।
लगला करावय मंत्रयुत सानन्द विधि सम्पन्न सँ।।
जल-कलश अंकुर पान राखल गेल वस्तु प्रबन्ध सँ।
मन मुदित सभकेँ भेल अति सुरभित सुमन-सुगन्ध सँ।।
छल अर्घ्य-लावा धूप-श्रुक पर्याप्त अक्षत पात्र मे।
पुरहित ग्रहण कैलनि स्वआसन लेपि चन्दन गात्र मे।।
अरिपन पिठारक पड़ल छल सिन्दूर लालक रंग सँ।
वेदीक चारूदिशि कुशुम-कुश छल सजावल ढंग सँ।।
बाजन बजैछल विविध रूपक दूर देश-विदेश केँ।
नटुआ नचैछल गाबि सुन्दर गीत मिथिला देश केँ।।

महिला उपस्थिति पहिर वस्त्र सुरँगल लाल सुपीत सँ।
वातावरण भऽ गेल सुन्दर मैथिलानिक गीत' स ॥

सिन्दूरदानक विधि सुवेदी पर अहा! आनन्द स ।
सम्पूर्णरूपे भेल विधि-सम्पन्न रघुकुल-चन्द स ॥

सीताक पाणि-ग्रहण कैलनि राम अति आनन्द स ।
श्री माण्डवी के संग कैलनि ब्याह भरत पसन्द स ॥

लछुमनक जीवन-संगिनी श्री उर्मिला सभ रीति स ।
रिपुसूदनक श्रुतिकीर्त्ति संग भेलनि विवाह सुनीति स ॥

सिन्दूर दानक विधि सकल मुनिवर करौलनि नेम स ।
आशीष देलनि वर-वधू के सब मुदित मन प्रेम स ॥

सुरभित सुमन बरिसय तखन लागल अहा! आकाश स ।
जयकार के ध्वनि भेल अति प्रिय घोषयुत उल्लास स ॥

माता-सुनयना संग जनकक हर्ष वर्णन करत के?
ई दृश्य अनुपम देखि कहु तँ मुग्ध भऽ नहि रहत के?

गिरिजा रमायुत शारदा के संगकय स्वनिकेत स ।
शिव-विष्णु ब्रह्मा सब कियो आयल छला साकेत स ॥

शोभा विवाहोत्सवक लखि सन्तुष्ट भऽ वापस गेला।
ओ दृश्यके अवलोकि मोहित देव-नर सभक्यो भेला॥



श्री वैदेहीक विदाइ

सीता जखन सासुर चलय लगली सुनेहर धाम सँ।
वंचित कियो नर-पशु-विहग नहि रहल कानब-काम सँ॥

सीता-विदाइक छन सुनयना भऽ गेलो मूर्च्छित अहा!
रहली अचेत तथापि मुँह सँ वाक्य बजली मृदु महा॥

बेटी! जनकपुर त्यागि कय जौं जैब सासुर धाम के ।
तौं आब रहि जायत जनकपुर मात्र केवल नाम के ॥

छल पड़ल पैच अकाल सीते! जन्म स पहिने जतऽ।
ओकाल बिनु रहने अहाँके आबि जायने कहुं एतऽ॥

यावत समय धरि छी उपस्थित जानकी ! ऐ नगर मे।
तावत समय धरि बहथि सब आनन्द-सागर-लहर मे॥

की ? आब हमरा मोन लागत घरक कोनो काज मे।
कहु ककर बलकेँ पावि अनुशासन सिखैव समाज मे॥

हम आब वस्तु बचैब ककरा लेल उत्तम चूनि कऽ।
ककरा दुलारब गाल चूमब बोल मधुमय सूनि कऽ॥

वश जौं चलैत कदापि नहि हम जाय दीतहुँ सीय केँ।
घर-बीच कहुना राखि लीतहुँ सिय-सहित सिय-पीय केँ॥

हे देव ! नियम कठोर रखने छी किये ? संसार मे।
कन्या विवाहित होथि की चलि जाथि पर परिवार मे॥

सन्तान-प्रति माताक ममता ह्वैछ केहन ? जनैत छी।
जनितहुँ अहाँ सर्वज्ञ देव ! कियैक कठोर बनैत छी ?

मात्सर्य उरमे भरल अछि उपयोग ककरा लय करू ?
वात्सल्यता उमड़ैत अछि कहु आब ककरा पर धरू ?"

मद-मोह ममता सँ विरत यद्यपि विदेह रहै छला।
अद्भुत परम लीला प्रभुक सब थिकनि से बूझै छला॥

तद्यपि अहा ! लगला खसाबै नोर दून्नू नयन सँ।
बेटी विदाइक काल नहि किछु बोल निकलनि बयन सँ॥

बूझैछला नहि होइ व्याकुल व्यर्थ विरह-वियोग सँ।
नहि होइ आनन्दित अधिक सुखमय मिलन सँयोग सँ॥

छथि किन्तु व्यथित विदेह वैदेही-विदाइक बेर मे।
पड़ि गेल छथि मायापतिक भ्रम-जाल-माया-फेर मे॥

मन मे कहथि 'हम कोन विधि समझैब जगतक लोक केँ।
कन्या-विदाइक काल मे नहि करक चाही शोक केँ॥

ई कथन निर्मोही नरक उपदेशप्रद सुनताह के ?
अपने चली नहि जाहि पथ पर ताहि पर चलताह के ?

दी अन्य केँ उपदेश किन्तु ने कय सकी निज काज जे।
कहबथि महा ढोंगी जगत मे परम पण्डितराज से" ॥

ई सब बजैत विदेह चलला जानकी-लग स्नेह सँ।
छलि ठाढ़ि वैदेही शुभाशीर्वाद लेल विदेह सँ॥

कैलनि प्रणाम पिताक पद मे परम श्रद्धा-भक्ति सँ।
देलनि शुभाशीर्वाद सिय के जनक स्नेहासक्ति सँ॥

कहलनि "सिये ! सौभाग्य अविचल रहत सत्य कहैत छी।
सानन्द स्वामी-सँग रहब आशीष उर सँ दैत छी॥

हे आत्मजे ! सीते ! स्वयं शुभकार्य पहिने करब जौं।
करबाक लय ककरो तखन प्रियगर वचन सँ कहब तौं॥

हम तौं बुझू अपना जनैत सुयोग्य घर-वर देखि कऽ।
सम्बन्ध हम रघुवंश सँ जोड़ल समुझि-परेखि कऽ॥

अछि तैं भरोश सदैव सुख सँ रहब स्वामी संग मे।
नहि हैत कहियो कष्ट किछु मन मे न कोनो अंग मे।

राखब अपन चरित्र पावन शशिकुलक सन्तान छी।
गुणबल-चरित-सौन्दर्य मे दम्पति दुनू समान छी॥

रखलहुँ जेना आदर्श अनुपम चरित एतय कुमारि कें।
राखब सतत तहिना चरित सम्भारि व्याहिल नारि कें॥

जहिना एतऽ रक्षा अहाँ कें भेल हमरा शक्ति सँ।
तहिना रहब रक्षित ससुर-गृह-मध्य स्वामी-भक्ति सँ॥

विश्वास अछि राखब बचा कऽ कष्ट सहि निज शील कें।
नहि किन्तु राखब गेह एवं राज्य-शासन ढील कें।

जौं कुलक मर्यादा बढ़ाबय अत्यधिक चाहैत छी।
जौं चन्द्र-सूर्यक वंशकें पावन परम मानैत छी॥

तौं नारि-धर्म-विरुद्ध कथमपि नहि करब दुष्कार्य कें।
प्रतिकूल मानवताक पथ पर नहि चलब अनिवार्य कें॥

लागल रहब जौं शुद्ध मन सँ नित्य पर-दुखत्राण मे।
तौं हैब नहि कहियो दुखी छं कहल शास्त्र-पुराण मे" ॥

देखू कने एमहर व्यथाकुल के ? सियाक वियोग मे।
नहि नोर दृग मे छनि एहन नहि क्यो बचल छथि लोग मे॥

अति प्रेमवश पक्षी तथा पशु सकल शोकित छथि महा।
जकरा स्वयं निज हाथ सँ नित दै छली दाना अहा !!

सूगा तथा मैना विकल भए गेल पिजरा-गेह मे।
पूछथि सिया सँ "जाइछी तजि जोड़ि हमरा नेह मे ।।

हा ! आब 'आत्माराम' सुन्दर शब्द नित्य पढ़ौत के ?
नित गाबि प्राती भोर मे कहु आब हाय ! जगौत कें"?

मिथिलाक बालक-बालिका पर्यन्त छथि व्याकुल महा।
नगरक सकल पथ-धूलकें दृग-नीर सँ देलनि बहा ।।

संगिनि-सखी-मानिनि रहथि सहपाठिका सीताक जे।
तन रक्षिणी बनि रहथि सदिखन श्री जनक-दुहिताक जे ।।

जिनका सँगे झूलै छलो झूला सदैव सुनेम सँ।
जिनका सँगे खेलै छली चौपड़ि-पचीशी प्रेम सँ ।।

बहिना-सुपारी, लौंग, किसमिस, प्रियसखीगण सहचरी।
हँसबैत जे हिनका छलनि मृदु बचन कहि कऽ सब घड़ी ।।

से सभकियो सद्भाव अरु मात्सर्य-मिश्रित वचन सँ।
दै छथि सिया कें सान्त्वना खसबैत अश्रु नयन सँ ।।

देलनि शुभाशीर्वाद सिय कें रहथि वय मे श्रेष्ठ जे।
भेलनि सियाकें उम्र भरि सम्बल परम यथेष्ट से ।।

आदर्शनारी बनथि सीता तें विविध उपदेश दऽ।
लगली कहय सभ वचन मधुमय अमिय भरल विशेष कऽ ।।

"हे प्रिय जनक-तनये ! सुनू हमरो कथन किछु ध्यान दऽ।
वर्त्ताव सबकें संग उत्तम करब समुचित मान दऽ ।।

प्रातः समय सासुक युगल पद-पद्म पर सिर टेकि दी।
छल-कपट ईर्ष्या-द्वेष कें दुर्भाव उर सँ फेंकि दी ।।

गृह-कार्य अपना योग्य जे हो मन लगा कऽ से करी।
बैसलि निरर्थक नहि बिताबी समय किछु एको घड़ी ।।

किनको कहब नहि कटु वचन नहि लेब मन मे खेद जौं।
स्पष्ट रूपें साँच बाजब हैत नहि मतभेद तौं ।।

स्वामीक जौं सेवा करब सानन्द प्रेमावेश सँ।
सीते! सहर्ष सदैव मानल करब पति-आदेश जौं ॥
तौं शान्ति सँ जीवन कटत आनन्द सँ परिवार मे।
होयत उजागर नाम साध्वी नारि-सम संसार मे॥

लक्ष्मी, स्वधा, संज्ञा, सुमति, स्वाहारु सावित्री सती।
श्रद्धा, सुमेना, साण्डिली, दमयन्ति, अनुसूया व्रती॥
साध्वी सकल ई छथि अहूँ ध्रुव ऐह कोटिक हैब जौं।
नारी-नियम-पालन करब नित अति प्रशंसा पैब तौं॥

ई सीख शुभ सीता हृदय मे धारि लेलनि हर्ष सँ।
बञ्चित सिया रहलीह नहि नारी-चरित आदर्श सँ॥
दुर्गुण-कुसंगति सँ जनक-दुहिता रहथि बाँचलि सदा।
कतबो दुलारल जाथि नहि तजलनि मनुजता ई मुदा॥

तैं एहन अनुपम दिव्य कन्या कें विदेह प्रसन्न सँ।
चाहैत छथि दय दी सकल भूषण-वसन-सम्पन्न सँ॥
अपना जनैत विदेह नहि चुकलाह दान-प्रदान मे।
सोचथि दहेजक बस्तु ने बाँकी रहय अनजान मे॥

अछि जखन अतुल अपार सम्पति राज्यकें भण्डार मे।
व्यय सँ बचल अतिरिक्त धन अछि पड़ल जे बेकार मे।
से दान कऽ दी देखि अवसर देश अरु सत्पात्र कें।
नहि करक अखन बिलम्ब अछि हमरा एको छन-मात्र कें॥

नहि छनि स्वभाव मँगैक जहिना सूर्यकुलक नरेश कें।
तहिना चुकथि नहि दान मध्य स्वभाव छनि मिथिलेश कें॥
सम्पत्ति विपुल बिदेह-गृह राखल छलनि अमूल्य जे।
सीताक सँग सम्हारि साजि सनेश देल अतुल्य से॥

कत भार देलनि? गिन कियो नहि सकल सियक विदाइ मे।
अवधेश कें लगलनि कतो दिन बस्तु सभक रखाइ मे॥
श्री राम सानुज व्याह कऽ अयलाह अपना धाम मे।
सुनितहि अवध कें लोग पहुँचल अवध पतिक सुधाम मे॥

सीताक दर्शन करक आतुरता अयोध्या-लोग कें।
सब छथि प्रसन्न अतीव मन सँ पाबि शुभ संयोग कें॥

सब सासुगण लै दीप-जल-अच्छत सुवर्णक थाल मे।
भेली उपस्थित कैल परिछन स्नेहयुत तत्काल मे॥

देलनि उधारि सुनारिगण महफा परक ओघार कें।
दृग-पल खसनि नहि देखि किनको जानकी-शृंगार कें॥

भूपर पड़य नहि देल पग लऽ लेल सासु स्वअंक मे।
चलली सिरागृ-गृह सहर्ष छलीह सब निःशंक मे॥

कैलनि प्रणाम सभक्ति रवि-कुलकेर देवी-देव कें।
पुनि पैर छूबि प्रणाम कैलनि ससुर-संग भूदेव के॥

कैलनि प्रणाम सनम्र पुनि सब सासु एवं श्रेष्ठ कें।
प्रणिपात कैलनि समुद नगरक नारि-नर मे जेठ कें॥

मुँह-देखना लगलनि पड़य दशरथ नृपति-पुतोहु कें।
नहि गिन सकल क्यो ओहि दर्शक-दर्शिकाक गिरोह कें॥

पड़लनि कते देखना कहत त्रेता युगक ई बात के?
नहि कतहुँ पढ़लहुं नहि सुनल हम कहब तँ पतियंत के?

देलनि सुमित्रा अपन चूड़ामणि उतारि स्वमाथ सँ।
केकइ कनक-गृह देल भेटल छलनि स्वामी नाथ सँ॥

दशरथ विहुँसि कऽ कहल कौशल्या सुमुखि बुधियारि कें।
"हम आ अहाँ को? दियनिदेखना जानकी सुकुमारि कें"॥

किछु काल रहली ध्यान सँ सोचैत कौशल्या सती।
झट फूरिगेलनि हर्ष सँ पति कें कहल शोभावती॥

"हे नाथ! हम दूनू गोटय दी राम कर सिय-पाणि मे।
'प्रिय रामकें हम दैत छी सीते'! कही मृदुवाणि मे"॥

भेलनि अपार प्रसन्नता सीताक हृदयागार मे।
अति श्रेष्ठता पौलनि एतय आचार अरु व्यवहार मे॥

मुँह देखना कें विधि बहुत दिन धरि चलल शुभ रीति सँ।
देलनि शुभाशीर्वाद बृद्धा-बृद्धजन अति प्रीति सँ॥

मिथिलाक पावन कुलक कन्या आबि गेली गेह मे।
से जानि तीनू सासु रखलनि जानकी कें नेह मे॥
जे भार काजक देल गेलनि कैल तकरा पूर्ण ई।
कहबैत काजुल जे छली कैलनि तिनक मद-चूर्ण ई॥

हम एहि घरक पुतोहु भेलहुं आब नेनमति त्यागि दी।
जे हैत इच्छा मोन मे से सासु सबसँ माँगि ली॥
ई भावना भेलनि हृदय मे सीय कें अबितहि एतऽ।
की ? कखन ? अछि करबाक बस्तु रखैक अछि की ? की ? कतऽ ?

सब जानि लेलनि कार्य-क्रम नित दिनुक ऐ परिवार कें।
सब बूझि गेली सभक शुभ आचार तथा विचार कें।
की ? छै ककर स्वभाव क्रोधी-सहनशील मनुष्य के ?
की ? श्रेष्ठ छथि के ? छोट अरु हमरा वयसकें तुल्य के ?

वर्त्ताव तहिना करथि ई जे रहथि जाहि स्वभाव कें।
तें सब सराहनि सकल नारी-नर सिबा सद्भाव कें॥
नित कर्म सँ निवृत्त भऽ पति-सासु-ससुर-प्रणाम कऽ।
गृह-कार्य मे लगि जाथि दासिन वर्ग कें नित काम दऽ॥

अपने करथि ओ काज जे करबाक अपना योग्य हो।
सेवक-खवासिन सँ कराबथि काज ओकरा योग्य हो॥
भनसा घरक बासन मँजाबथि साँझ-भिनसर नेम सँ।
रुचिगर यथेष्ठ निरोगप्रद भोजन कराबथि प्रेम सँ॥

सूतलि सियाकें देखि नहि क्यो सकथि कोनो काल में।
नहि होनि पीड़ा देह मे नहि होनि पीड़ा भाल मे॥
केवल अपन परहेज सँ बाँचलि रहथि सब रोग सँ।
सेवा करौलनि अपन कहियो नहि कोनोटा लोग सँ॥

किछु वस्तु कोनो लेल नहि कैलनि दुराग्रह जानकी ?
भूषण-वसन पर्यन्त लै रुसलीह नहि पुनि आन की ?
पितु-तुल्य गुरुजन ससुरकें आदेश शुभ मानथि सदा।
माता जकाँ मानथि सुपूज्या सासुगणकें सर्वदा॥

तीनू सुदेवरकें लगाबथि छोट बन्धु-समान मे।
सेवक-टहलनी कें सुवन अरु संगिनीक मिलान मे॥

प्रियतम स्वपति श्रीरामकें सर्वस्व प्राणधिक जकाँ।
पूजथि सदैव सहर्ष चित सँ इष्ट-परमेश्वर जकाँ॥

हर्षित अवधवासी रहथि अनुपम बहुरिया पाबि कऽ।
वर्णन करथि सब नारि-गण सीता-प्रशंसा गाबि कऽ॥

बैसल-चलैत सराहना सब्र करथि सीता शील कें।
नहि कहल सीता प्रति कियो अपशब्द किछु अश्लील कें॥

अति उच्चकुलक पवित्र कन्या अवध मे अबितहि अहा!
बढ़िगेल सुन्दरता अवधकें सुखद मंगलमय महा॥

दशरथ प्रसन्न छलाह लखि पावन अपन परिवार कें।
मन्त्री सुमंत समेत सब सन्तुष्ट छल दरवार कें॥

कुल राज्य-काज चलैत छल सुन्दर सुशासित ढंग सँ।
सन्तुष्ट सभजन रहथि सज्जन साधु कें सत्संग सँ॥

नृप गुरु वशिष्ठक पाबि अनुमति करथि कोनो काज कें।
बनबथि विधान विचारि दशरथ पूछि सकल समाज कें॥

नृप-कोष कें धन-खर्च हो अति दीनजन कें दान मे।
जनताक हित शुभ काज मे विद्वान कें सम्मान मे॥

आन्हर, अबोध, अनाथ, लाँगड़ जीव कें कल्याण मे।
मन्दिर - सरोवर - पाठशाला - धर्मगृह - निर्माण मे॥

जप-यज्ञ-पूजा होइ छल सदिखन उचित स्थान मे।
अवकाश छण बीतनि सभक सियराम कें गुणगान मे॥

सब सत्य-शिव-सुन्दर-स्वरूपक मूर्त्ति सुजन समाज मे।
लागल रहथि कर्त्तव्य निज-निज बूझि अपना काज मे॥

माता-पिता कें कहल जे नहि करथि नर मुश्चण्ड से।
दोषी प्रमाणित होथि जौं पाबथि उचित ध्रुव दण्ड से॥

सबक्यो चलथि निज धर्म कें अनुकूल पर हित जानि कऽ।
नहि झूठ बाजथि कहथि नहि कटु वचन ककरो जानि कऽ॥

पसरल सुयश बल-कीर्ति दशरथ केँ सकल संसार मे।
परिवार सुन्दर देखि भूपति रहथि मुदित अपार मे॥
सब भाँति विज्ञ विशाल बुद्धि-प्रवीण बूझल राम केँ।
गृह कार्य-पटु-वितपनि-सुयोग्या बूझि रामक वाम केँ॥
दशरथ बिचारल आब हम अतिबृद्ध-तन भऽ गेल छी।
सुख-भोग कैलहुँ बहुत सब सँ अति प्रतीष्ठित भेल छी॥
गत भेल तीनू पन हमर चारिम अवस्था ऐल ई।
तन-भोग मे लागल छलहुँ आगूक किछु हम कैल की ?
तेँ आब राज्यक भार दऽ श्री राम केँ वनमे चली।
देखथि सँभारथि आब ऐ परिवार केँ जनकक लली॥
पौलहुँ पुतोहु-सुपुत्र सीता-राम सन सद्धर्म सँ।
भऽ गेल अछि सार्थक मनुज-तन पूर्व जन्मक कर्म सँ॥
व्रत-यज्ञ कैलहुँ दान देलहुँ काज उत्तम बँचल की ?
कर्त्तव्य नृपतिक सब निबाहल आब बाँकी रहल की ?
विश्वास अछि बढ़बे करत सद्कीर्त्ति नित रघुवंश केँ।
अवतरित सीता-राम छथि लक्ष्मी तथा हरि अंश केँ॥
एवम्प्रकारे अवधपति सोचल बहुत विधि हृदय मे।
गुरुवर वशिष्ठ-समीप जाकय कहल अनुनय-विनय मे॥
"हे गुरु! हृदय मे भेल इच्छा से सतत्र कहैत छी।
मनमे मनोरथ भेल से किछु शब्द मे सुनबैत छी॥
सद्गुण सकल सम्पन्न छथि बूझैत छी हम राम केँ।
सन्तुष्ट छी हम देखि हिनकर परम सुन्दर काम केँ॥
ई योग्य शासक बनि गेला अपनेक कृपा अपार सँ।
छथि सब प्रसन्न विदेह-नन्दिनिकेर शिष्टाचार सँ॥
परिवार केँ सब व्यक्ति छथि सन्तुष्ट हिनका काज सँ।
सदिखन सराहल जाथि सज्जन-साधु-सभ्य समाज सँ॥
तेँ हेतु हम चाहैत छी युवराज पद दी राम केँ।
वन मे तपस्या लेल हम चल जाइ तजि निज धाम केँ॥

ई जे मनोरथ हमर अछि से पूर्ण ध्रुव भऽ जंत जौं।
ई गुरुप्रवर ! अपनेक दिशि सँ समुद स्वीकृत हैत तौं॥

जे क्यो गुरुक पद-पद्म-रज धारण करथि निज माथ मे।
बूझू सकल वैभव सुयश-उपलब्ध तिनका हाथ मे॥

हमरा तकर अनुभव अधिक अछि गुरुक सेवा-धर्म सँ।
जे प्राप्ति होयत से न कथमपि पब दोसर कर्म सँ॥

तें आइ धरि कैलहुँ सकल शुभ कर्म गुरु-आदेश सँ।
जीवन सफल भऽ गेल केवल मात्र गुरु-उपदेश सँ॥

हे गुरु ! कृपा कऽ दय दिअनि युवराज-पद श्री राम कें।
हमरा दिअऽ आज्ञा चली वन त्यागि सब सुखधाम कें॥

हम वृद्ध भेलहुँ आब रहलहुँ नहि कोनोटा काम कें।
राजा बनल बैसल रही नहि आब केवल नाम कें॥

शुभ कार्य मे न विलम्ब होयत जौं कृपा अपनेक हो।
शुभ लगन मे प्रिय रामकें युवराज-पद-अभिषेक हो॥

सुन्दर कथन ई सूनि गुरुवर कहल नृप अवधेश कें।
हे नृप ! अहाँ पर छनि कृपा अतिशय कृपालु रमेश कें॥

ई उचित अवसर पर अहाँ सँ सुमति बाजल गेल जे।
मर्जी प्रभुक छनि ई अवश्ये पूर्ण बूझू भेल से॥

साक्षात परमेश्वर बनल छथि सुत अहाँकें राम ई।
होयत तखन इच्छा कियै नहि पूर्ण सकल सुकाम ई॥

ई भऽ सकैं अछि पूर्व मे बाधा त्रिविध उत्पन्न हो।
पाँछा मुदा परिणाम उत्तम रूप मे सम्पन्न हो॥

राज्यक व्यवस्थित विज्ञ-ज्ञानी व्यक्ति सभक विचार सँ।
युवराज-पद पाबथि सिया-पति वेद-विधि-अनुसार सँ॥

गुरुवर वशिष्ठक पाबि आज्ञा नृपति अति उत्साह सँ।
लगला करय ओरिओन तखने सँ मुदित मन-चाह सँ॥

सेवक सुयोग्यक हाथ मे दऽ भार कार्यक रीति सँ।
आनन्दमय वातावरण भऽ गेल मंगल-गीत सँ॥

राज्याभिषेकक बात सुनि रघुवर विचारल स्वमन मे।
"अवतार भेलछि हमर असुरक नाश लै ऐ भुवन मे॥
तैं हेतु रची उपाय किछु वन जाइ कोनो रीति सँ।
माता-पिताकें मति फिरनि कहुना अखन कुटनीति सँ"॥
वाचक ! विदित अछि बात ई भगवान छथि चाहैत जे।
मायाक द्वारा बिधि प्रभुक रुचि देखि ध्रुव करबैथ से॥

□

मंथराक-मंत्रणा

श्री राम-सीता अवतरित छथि भेल असुरक नाश लै।
सुख-भोगता ओ तैं कियै ? कहु तौं अवधमे बास कै॥
हिनका दुनूकें करक छनि लीला ललित संसार मे॥
नर-नारिकें कर्त्तव्य छनि करबाक की ? व्यवहार मे।
तैं तदनुसार उपाय रचलनि देवगण चुपचाप सँ।
वन जाथि कहुना राम सीता-संग अपने आप सँ॥
भेलनि विचार-विमर्श कै सुरगणक निर्णय स्वर्ग मे।
बुधियारि सबसँ शारदा कें बूझि अपना वर्ग मे॥
सब देवगण कैलनि विनय-अनुनय सुवीणा-पाणि सँ।
"कहुना दिअविअनु रामकें वनबास केकइ-रानि स"॥
श्री शारधा झट मंथरा द्वारा करौलनि कार्य ई।
रचना रचल ओ राति भर मे बूझिकऽ आनिवार्य ई॥
चलि गेल प्रेरित मंथरा केकइक शुचि आवास मे।
अगुतैल चिन्तित भावयुत बाजलि गरम निःश्वास मे॥
"हे रानि ! बनता काल्हि खन युवराज राम सुनैत छी।
अछि हानि अपने कें अधिक तैं कान मे कहि दैत छी॥
अवधेश श्री दशरथ कपट सँ कार्य छथि कऽ रहल ई।
नहि छथि भरत परोक्षमे अन्याय अति भऽ रहल ई॥
ई सूनि केकइ क्रोध सँ कहलनि "महा तों मूर्ख छें"।
घर-फोड़नी झगड़ाउ निश्चर-सदृश बड़का धूर्त्त छें"॥

तोरा ने किछुओ ज्ञान छौ मतिमंद परम गँवार छें।
हमरा संगे रहि कऽ तखन रखने एहन कुविचार छें ?

रामक विषय मे मंथरा ! 'बाजल एना गेलौ कोना ?
शुभ काज मे बाधा उपस्थित हेतु ई फुरलौ कोना ?

बड़भाइ राजा होथि ई रघुवंश मे शुभ रीति छै।
सब नीक कुलक सुव्यक्ति द्वारा बनल बढ़ियाँ नीति छै॥

हम तौं अनेकों बेर लेलहुँ अछि परीक्षा राम कें।
सब बेर पौलहुँ छल-रहित प्रिय राम आनन्द धाम कें॥

रामक प्रशंसा करब कतबो बहुत थोड़ कहौत से।
निज मातु सँ बेशी जकाँ श्रद्धा एहन देखौत कें ?

प्रिय छी अधिक तीनू जननि मे रामकें हम जानि ले।
ई राम कौशल्याक सुत नहि पुत्र हमरे मानि ले॥

सीता-विषय मे पूछ नहि ओ शीलवन्ती छथि महा।
सद्गुण भरल छनि एक नहि दुर्गुण सिया मे छनि अहा !

सबकें प्रसन्न करैत अपनो नित प्रसन्ने रहथि ओ।
हमरा बिना पुछने कोनो नहि काज कखनो करथि ओ॥

परिवार-परिजन छथि प्रसन्न दुनूक मृदु व्यवहार सँ।
सन्तुष्ट छथि जनता सकल सीताक शिष्टाचार सँ॥

युवराज-पद भेटनि अवश्ये राम-सन सद्पात्र कें
छौ क्लेश केवल मंथरा तोरे समान कुपात्र कें॥

तोरा शपथ भरतक कपट-तजि कह खुलाशा बात की ?
हर्षक समय पीड़ित कियै छें ? कहब मे पुनि लाथ की "?

"हमरा कपार क दोष अछि" बाजलि दुखी भऽ मंथरा॥
नीको कहल पर स्वामिनी ! हमरा कहैछी निश्चरा॥

हम आइ सँ नित मुँह-देखोवलि बात सभ केवल कही।
अनुचित क्रियाकें देखि हम तौं जानि कऽ चुप्पे रही॥

जे छी अखन तखनो रहब दासी जकाँ सन्ताप की ?
क्यो राज्य पाबथि तैं कि हमरा हानि अथवा लाभ की ?

तैयो बिना दजने ने हमरा रहल जाइछ केकयी।
भरतक भविष्य विशेष भयप्रद बूझि मन अछि दुखमयी॥
राजा कहौता राम रानी जानकी सुख भोगती।
घर मे अहाँ केँ जूति किछुओ चलत नहि ओ रोकती॥
सेवक कहौता भरत केकइ ! अहँ कहायब सेविका।
ई सहन होयत ? सोचिली नहि थिकहुँ अपने बालिका"॥
माया-विवश सब जीब अछि ककरो अपन नहि चलि सकै।
हैबाक छै से हैत किनको सँ कदापि न ओ रुकै॥
जे काज जकरा सँ जखन हैबाक छै ओ हैत से।
जकरा जतय जैबाक छै निश्चय ततै ओ जैत से॥
छनि लिखल केकइ रानिकेँ बड़का कलंक कपार मे।
तेँ बदलि गेलनि मोन कहलनि मंथरा सँ प्यार मे॥
'तोँ उचित कहलेँ मंथरा ! हम आब बुझलहुँ ठीक ई।
रूकत कोना ई काज हमरा तोँ बता दे नीक की ?
युवराज-पद पर राम नहि बैसथि तकर उपाय की ?
सोचय पड़त भरतक विषय मे जखन भरतक माय छी॥
अपना मनक अनुकूल देखल जखन केकइ रानि केँ।
बाजलि बनाके मंथरा मुसकंत मधुर सुवानि केँ॥
"वरदान राखल अहँक अछि दू गोट बहुतोँ वर्ष सँ।
जे भूप देने छथि अहाँकेँ वचन द्वारा हर्ष सँ॥
से आइ माँगू राति मे कऽ स्ववश निज प्राणेश केँ।
बनताह राजा भरत सहजहि बिनु उठौने क्लेश केँ॥
बन मे रहथि श्री राम चौदह वर्ष तपसी भेष मे।
राजा बनथि श्री भरत गणना होनि अवध-नरेश मे"॥
ई युक्ति-युक्त सलाह उर मे ढूकि गेलनि रानि केँ।
चलली भवन मे करक हित ओ काज मनमे ठानि कै॥
नखरा पसारल कोप घरमे रानि केकइ राति मे।
ई बात देखल जाइ अछि अखनहुँ जनानी जाति मे॥

स्वामीक रुचि-विपरीत जिद्द ठनैत छथि निज स्वार्थ लै ।
रूसथि-लटाढ़म करथि भूषण-वसन आदि पदार्थ लै ॥
की ? भेल एवं भऽ रहल अछि नारिगणक स्वभाव सँ ।
घायल करथि पति केँ स्वहित लै शोकरूपी घाव सँ ॥
वनबास भेलनि रामकेँ प्राणान्त भेलनि भूप केँ ।
सीताहरण-दुख सँ भेला श्री राम विरही रूप केँ ॥
निशिचरक घर मे रहय पड़लनि जानकी सन नारि केँ ।
अपवाद लोकक सहय पड़लनि राम-सन असुरारि केँ ।
तेँ अन्त मे वन वासिनी भेलीह वैदेही सती ।
नारी विना जीवन वितौलनि एक नारीकेँ व्रती ॥
विस्तार सँ वर्णन करब की ? राम-कथा जनैत छी ।
तुलसीक रामायण जखन रुचि सँ सदैव पढ़ैत छी ॥
कतवा करऽ पड़लनि परिश्रम जानकीक तलाश मे ।
आगू करब वर्णन कोना कटलनि समय वनवास मे ॥



वन-गमनक आदेश

अवधेश सँ वरदान लै केकयि कहल श्री राम केँ ।
चौदह वरष लै जाउ वन तजि कऽ अयोध्या-धाम केँ ॥
हा ! तखन केकयि पैर पर पड़ि कैल राम प्रणाम तौं ।
जे छल उपस्थित सभक तन भिजलनि अहा ! अति घाम सँ ॥
चललाह कौशल्या जननि सँ राम शुभ आशीष लै ।
कैलनि प्रणाम सभक्ति माता-चरण पर निज शीश धै ॥
देलनि अहा ! आशीष सुतकेँ प्रेमयुत उद्‌गार सँ ।
बैसौल अपना कोड़ मे गहि पाणि रामक प्यार सँ ॥
मुँह चूमि लेलनि रामकेँ दृग-नीर बहलनि स्नेह सँ ।
झट दौड़ि कौशल्या समुद मिष्ठान्न अनलनि गेह सँ ॥
प्रिय पुत्रकेँ भोजन करौलनि जखन अपने पाणि सँ ।
मुसकैत सुमुख निहारि कहलनि मधुरतम मृदु वाणि सँ ॥

"हे राम ! ओ आनन्ददायक छण कखन उचरैत छै ।
युवराज-पद भेटत जखन से समय कखन पड़ैत छै ।।
युवराज-पद आसीन हम निज आँखि सँ देखी कने ।
देखब सियाकेँ वाम बैसलि बनलि श्री रानी भने' ।।

चाहैत अछि चातक जेना स्वाती नक्षत्रक बुन्द केँ ।।
आतुर रहथि चकोर जहिना पाबि जाइ सुचन्द केँ ।।
माताक स्थिति देखि सोचल राम अइ आनन्द मे ।
दुर्गन्ध हैत मिलैब सुरभित सुरुचिकर प्रिय अन्न मे ।।

तेँ हम प्रथम प्रसन्नता बतबैत दुर्घटना कही ।
नहि बहथि मातु विछोह-शोक-समुद्र मे हमहूँ बही ।।
पुनि कै प्रणाम सनम्र कहलनि "मा ! सुबात कहैत छी ।
हम भाग्यशाली परम अपना केँ अखन लगबैत छी ।।

करुणामयी मा केकइ सब भाइ सँ देलनि जिता ।
हमरा विपिन के राज्य दऽ वनपति बना देलनि पिता ।।
बस, मात्र केवल वरष चौदह रहब हम वनवास मे ।
राजा भरत बनताह अवधक नहि रहब उदाश मे ।।

वन जाइ लेल सलाह हमरा सप्रुद जननी ! दी अहूँ ।
पुत्रक विछोहक क्लेश पुत्रक हितक लै माता ! सहू ।।
आज्ञा अहूँ हे मा ! कृपा कऽ दी विपिन मे जाइ लै ।
हम सहब वन-दुख समुद सज्जन भरत-सन प्रिय भाइ लै" ।।

सुनितहि वचन दुख-जनक थकमक भेलि ठाढ़े रहि गेली ।
चुपचाप माटिक मूर्त्ति मानू अचल निर्मित भऽ गेली ।।
नहि राम केँ मुख सँ अशुभ कहियो कथन सुनने छली ।
नहि केकइक वरदान विषयक बात ओ बुझने छली ।।

पल नहि खसल किछु काल धरि माता-दशा केँ देखि कऽ ।
मा ! मा ! पुकार करैत खसला पैर पर सिर टेकि कऽ ।।
किछु चेतना भेलनि जखन चेतन पुरुष-स्पर्श सँ ।
कर युगल सँ सुतकेँ उठौलनि तौँ मुदा नहि हर्ष सँ ।।

कहलनि शुभाशीर्वाद दऽ "हे राम ! सकुशल नितऽ रहू ।
ई की अहाँ कहलहुँ कने फरिछा-बुझा हमरा कहू ॥

सुनने छलहुँ युवराज-पद भेटत अहाँके हर्ष सँ ।
भू-देवके हम देब धेनु सहस्र हर्षोत्कर्ष सँ ॥

के ? राति भर मे उलटि देलक शुभ महोत्सव रूप के ।
के ? पलटि देलक कैल निर्णय सत्यवादी भूप के ॥

सब छल बुझैत सुनारि केकइ रामकेँ माता थिकी ।
हुनका दुलार-पियार सन कहियो ने हमहूँ कऽ सकी ॥

मात्सर्य नहि हमरा अपेक्षा कम हुँनक एको रती ।
विश्वास छल निर्दय कदापि न राम-प्रति केकइ हेती ॥

हे राम ! ई की उचित भेलछि काज सोचि अहीँ कहू ।
रविकुलक रीति-विरुद्ध अनुचित बात लखि सहिकऽ रहू ?

हमरा लगैं अछि दैव के रचना अवश्ये थीक ई ।
किछु सोचि कऽ कैं रहल छथि विधि हैत आगू नीक की ?

आश्चर्य अछि एकरा अहूँ उर सौं पसन्द करैत छी ।
सुख-भोग राज्यक त्यागि वनमे जैब नीक बुझैत छी ॥

एहना परिस्थिति मे कोना कऽ रोकि राखू स्नेह सँ ।
अथवा कोना कऽ कहल जायत जाउ वन निज गेह सँ ॥

हम तौं छुछुन्दर-साँप-सन पड़िगेल छी अति फेर मे ।
सुत स्नेहकेँ देखू कि देखू धर्म एहना वेर मे ॥

तैयो कहब हम राम ! मन सँ नीक तरहे सोचिली ।
की करक चाही से प्रथम सब श्रेष्ठजन सँ पूछिली ॥

गुरुवर वशिष्ठ वरिष्ठ सब सँ बूझितौं पहिने लिअऽ ।
पुनि-पुनि पिता सँ पूछि कऽ पश्चात्त पथ पर पग दिअऽ ॥

सब देब एवं पितर निशिदिन करथि रक्षा स्नेह सँ ।
जहिना पलक रक्षा करथि दृग के सदैद निमेष सँ " ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र माता चरण कर सँ दाबि कऽ ।
आशीष पौलनि जननि सँ चललाह आज्ञा पाबि कऽ ॥

सीता-भवन दिशि जानकी-पति जा रहल जखने छला ।
अबितहि छली सीता स्वयं पथ-बीच विधि देलनि मिला ॥

भेलनि मिलन दम्पति दुनू कें उचित शिष्टाचार सँ ।
अवगत करौलनि एक-दोसर अपन-अपन विचार सँ ॥

'स्वामी ! कहू कानन-गमन कहिया करब ?' पछलि सिया ।
'अपनेक सँग हमहूँ चलब आदेश दी प्रभु ! कै दया ॥

□

वन चलबाक 'लेल' सीताक आग्रह

ई देखि उत्सुकता सियाकें राम सोचथि हृदय मे ।
की ? कहि सियाकें रुकय कहियनि एहि दुर्घट समय मे ॥

नेनमति अखन छनि नारि छथि सुकुमारि अधिक अबोध ई ।
कहबनि तौं हिनके नीक लै करती कियैक विरोध ई ॥

"हे सिय प्रिये ! हमरा संगे भोगब अहाँ वन-दुख कोना ?
वन मे विपत्ति विशेष छै से सहि सकब सीते ! कोना ?

क्षत्री थिकहु जूझय पड़त जाकय अनेक कुठाम मे ।
वन मे भयानक असुरगण-सँग लड़क अछि संग्राम मे ॥

रक्षा अहाँ कें करब मे लगि जैब तौं हम लड़ब की ?
निशिचर-असुर सँ हारिकै हमहूँ अहाँ सँग मरब की ?

अछि अघ असुर बन मे अनेकों रंग-रूप-स्वभाव कें ।
ऋषि-मुनि-तपस्वी कें सतत देखबैत अपन प्रभाव कें ॥

ओ रूप देखब लागि जायत चकविदोर कहैत छी ।
ओ सब कुचरपन करत लगमे आबि सतत सुनैत छी ॥

वन मे बहुत हुड़दंग सभ मचबैत सदिखन रहत ओ ।
सभकाल हरविहरो करैत रहैत भागल करत ओ ॥

कहु तखन सीते ! हैत नहि दुर्गति अहाँके विपिन मे ।
सोचू कने बुधियारि छी कहबैत चारू बहिन मे ॥

निशिचरक संग लड़ाइमे फँसिजाइ सम्भव हम कहीं ।
फुरसति ने कखनो भऽ सकय भूखल-पियासल जौं रही ॥

दश-पाँच दिन लगाल रही रणमे कदाचित हे प्रिये !
एकसरि अहाँ बन-बीच कतबा काल धरि बैसब सिये !!

कहतौं तखन उपाय सीते ! विपिन मे अहुँ करब की ?
बपहारि काटि कनैत वनमे कहु अहाँ नहि मरब की ?

तैं बात मानू हमर महिला वर्ग मे बुधियारि छी ।
सुकुमारि सँग सँग मैथिली ! मिथिलेश नृपक दुलारी छी ॥

कंटक बहुत पगमे गड़त अति कोमलाङ्गी नारि छी ।
देखल कोना जायत अहाँ तों हमर परम पियारि छी ।

सीता कहल "हे नाथ ! हमरा निबल कियैक बुझैत छी ।
मिथिलाक कन्याकें कियै ? सामान्य-सन लगबैत छी ॥

की ? एहि दुखमय काल मे प्रेमक परीक्षा लैत छी ।
अर्द्धाङ्गिनी कें अंग सँ अन्यत्र रहय कहैत छी ॥

जइ कार्य लै लेलहुँ अहाँ अवतार अइ संसार मे ।
तइ कार्य मे सँग देव हमहू नाथ ! नित व्यहार मे ॥

हम सँग रहलहुँ अखन धरि तहिना रहब छाहरि जकाँ ।
सब काल हम सेवा करब अपनेक प्रभु ! चाकरि जकाँ ॥

कहियो अहाँ हमरा बिना हे नाथ ! रहलहुँ कतहुँ की ?
कहु तौं अहीं बिनु नाथ कें रहि सकब हमहूँ छनहुँ की ?

मिथिलाक कन्या थिकहुँ हम अपनेक सन पुरुषक प्रिया ।
अछि ज्ञात हमरा पतिक प्रति की करक चाही सद्क्रिया ॥

धन-धाम-धरती-राजसुख अपनेक बिनु सब व्यर्थ ई ।
ई देह पति-बिनु शव-सदृश सब भाँति सँ असमर्थ ई ॥

ई प्राण बिनु प्राणेश कें कहु टिक सकै अछि देह मे ।
ई बात जनिते छी तखन रोकै कियै छी गेह मे ॥

अपनेक आधा अंग छी हम संग नित्य रहैत छी ।
हे नाथ ! तैं अपनेक हम अर्द्धाङ्गिनी कहबैत छी ॥

बिनु प्राण कें तन जल-रहित सरिता न आबथि काज मे ।
तहिना पुरुष बिनु नारि बूझल जाथि मनुज-समाज मे" ॥

सीताक आग्रह देखि कहलनि राम गहि सिय-पाणि कें ।
"सीते ! अहाँके देब दुख कहु कोन तरहें जानि कें ॥
नैहर जनकपुर मे वयस बीतल दुलार-पियार मे ।
सब सुखक साधन सतत छल सीते ! अहिक अधिकार मे ॥

वकरा कहैछे कष्ट जनलहु आइधरि किछु नहि अहाँ ।
कखनहु सखी सँ भिन्न नहि रहलहुँ कतहु एकसरि अहाँ ॥
पर्याप्त छल उपलब्ध भोगक बस्तुकें स्वामिन अहाँ ।
जखने प्रयोजन जाहि बस्तुक भेल पौलहुँ झट अहाँ ॥

नीपल-बढ़ारल भूमि पर पद-कमल रखलहुँ नित अहाँ ।
ड्योढ़ीक बाहर ह्वैछ की ? से देखि नहि सकलहुँ अहाँ ॥
अखनो एतय सब सासुगण सँ अति दुलारल जाइ छी ।
गीदर तथा कुक्कुर भुखै अछि तौं तुरत पड़ाइ छी ॥
एहना परिस्थिति मे अहाँ वन मे रहब कहु तौं कोना ?
गरजत जखन गज-बाघ कटु स्वर होइ छै वज्रक जेना ॥
बिनु पादुका कें चलक अछि गड़ि जैत कंटक पैर मे ।
हिंसक कोनो पशु जौं खिहारत तखन सकब पड़ैब गे ?
कहु खेत जोतल ढ़ेप पर पड़ि जैत पैर कुठाम मे ।
तौं नहि खसब की ? छी अहाँ सुकुमारि अधिक सुवाम मे" ॥
स्वामी बचन कें सूनि सीता देल उत्तर राम कें ।
"हे नाथ ! निर्बल एहन नहि बूझू अहाँ निज वाम कें ॥

प्रियतम ! अहाँ सँ की ? कहब हम प्रभु स्वयं सर्वज्ञ छी ।
पत्नीक की ? कर्त्तव्य पति-प्रति तकर प्रभु मर्मज्ञ छी ॥

स्वामीक सेवा करक अवसर अछि तुलायल आबि कऽ ।
कहु तखन हम चूकब कोना संयोगवश ई पाबि कऽ ॥

एहने समय मे जाँच प्रिय पत्नीक सचमुच होइ छै ।
स्वामीक जीवन-सँगिनी पत्नी कहल तैं जाइ छै ॥

अछि भेल नारी सृजन पुरुषक संग पूरक लेल तौं ।
नित स्वपति-सेवा करब नारी-धर्म मानल गेल तौं ॥

पालन स्वधर्मक करक चाही प्रभु अवश्य जनैत छी ।
अपने लखन हमरा कियै ? प्रभु ! एतय रहक कहैत छी ॥

जे वीर नहि लड़लाह रण मे तिनकर जीवन व्यर्थ छी ।
जे दान नहि देलनि धनी तिनकर निरर्थक अर्थ छी ॥

ओ साधु की ? जे वासना तजलनि ने अपना चित सँ ।
समरथ कथी ? जे दीन जनकेँ कैल हित नहि वित्त सँ ॥

विद्वान हुनका नहि कहब जे करथि नहि सत्कर्म केँ ।
बुधियार ओ नहि छथि करथि जे राति-दिन दुष्कर्म केँ ॥

नेता कथी ? जनताक हितलै काज किछु नहि कैल जे ।
ओ नारि की ? पति-विपत्ति-क्षनमे काज किछु नहि ऐल जे ॥

स्वामिनि कथी ? स्वामीक सँग नहि रहथि भागि-पराथि जे ।
बुधियारि की पति सँ कहै मे मनक बात लजाथि जे ॥

वेशी हमर अधिकार की ? हे नाथ ! अपने सं कही ।
रहलहुँ सँगे सब दिन भविष्यो मे रहब अखनो रही ॥

चेतन-प्रकृति भवमे बनल हम आ अहाँ अनेक छी ।
हम शक्ति अपने शक्तिधर प्रभु ! बस्तुतः हम एक छी ॥

वाल्मीकि-रामायण अनेकोँ बेर पढ़ने हमहुँ छी ।
विद्वान-गण सँ वेद-शास्त्र समस्त सुनने बहुत छी ॥

बीतल अनेकोँ बेर त्रेता युग अवनिधरि सृष्टि मे ।
भेलहुँ सिया हम राम अपने जगत-जीवक दृष्टि मे ॥

दशरथ-सुवन भेलहुँ अहाँ हम जनक-दुहिता भेल छी ।
सब बेर हमरा सँग लै सानन्द कानन गेल छी ॥

कहु लखन सम्प्रति एहि बेर कियैक मना करैत छी ।
की हेतु सं हमरा बिपिन नहि चलै लेल कहैत छी "॥

प्रभु मुग्ध भऽ गेलाह सिय केँ तर्क संगत बात सँ ।
खसलनि तखन जल बिन्दु प्रभुकेँ युगल दृगकेँ कात सँ ॥

लगलाह सोचय कोन विधि हमरोकि सकबनि सीय केँ ।
वन मे कतय रखबनि सुरक्षितरूप सँ रमणीय केँ ॥

सोचैत छथि उत्तर दिअनि की ? तर्कयुत सिय-उक्ति कें ।
सूझैत नहि छनि युक्ति किछु रघुवीर-सन सद्व्यक्ति कें ॥

कहलनि सियाकें राम जे अति प्रिय मधुरतम वचन कें ।
से बूझि सबकें ध्रुव सराहय पड़त रामक कथन कें ॥

"हे जनक तनये ! हम कहब सम्प्रति अहाँ सँ आब की ?
अछि प्रश्न कठिन अहाँक ई हम अखन देब जबाब की ?

नृप जनक सौंपल भार हमरा पर अहँक तें विवश छी ।
बन में कोना रक्षा करब तें सोच मे हम पड़ल छी ॥

हम जैब कत्तहु हमर जी टँगले अहीं पर रहत जे ।
ओ काज सपरत कोन तरहें आबि सिर पर पड़त जे ॥

हम धर्म-संकट मे अखन सीते ! बुझू पड़ि गेल छी ।
किछु अहूँ सम्मति दिअऽ आधा अङ्गिनी जे भेल छी "॥

देलनि सिया उत्तर तखन "हे नाथ ! जौं पूछैत छी ।
तौं सूनि लीअऽ नाथ ! अंतिम बचन आब कहैत छी ॥

समझा सकब हमकी ? अहाँ कें नारि हम अज्ञान छी ।
जे कहि रहल छी सूनि सोचू अहँ स्वयं सज्ञान छी ॥

हमरा कहऽ पड़बे करत तें लेल आब कहैत छी ।
बाजऽ पड़ै अछि आइ हमरा तैं निधोक बजैत छी ॥

पर्याप्त पौलनि बल अहाँ मे जनक कैल पसंद जें ।
सौंपल अहाँकें हाथ मे हमरा पिता सानन्द तें ॥

तकरा निबाहक अछि अहाँ कें प्रभु ! अवश्ये आब ई ।
हमरा अवश्ये लऽ चलू वन देब हमहु सुझाव ई ॥

पति सँ विछोहक कष्ट-सन दुख अधिक की ? ससार मे ।
पति-संगकें सुख-तुल्य की ? के ? कहि सकल विस्तार मे ॥

लीला अहाँ कें पूर्ण होयत कोन विधि हमरा बिना ।
जे काज करबा लेल उद्यत हैब से जायत घिना ॥

अर्द्धाङ्गिनी कें त्यागि जीवन-सफल कैलनि मनुज के ?
निजनारि तजि परनारि-सँग जीवन बितौलनि दनुज से ॥

हम तौँ सुरक्षित सतत छी प्रभु परम पतिव्रत-शक्ति सँ ।
सामर्थ नहि दुखके' सतौता पति चरण केँ भक्ति सँ ॥
नित हैत अनुभव नाथ ! सुख-दुख द्वँद्व की ! वनबास मे ।
की ? हैत रहने नगर मे बैसलि-पड़ल रनिवास मे ॥
तैँ लऽ चलू वन संग हमहूँ देब नित सब काज मे ।
चुप छी किये ? बाजू रहू नहि पड़ल अखनो लाज मे" ॥
'आग्रह उचित सीताक छनि' स्वीकार भेलनि राम केँ ।
"लै आउ आज्ञा सासुसभ सँ" कहल अपना वाम केँ ॥

□

सासुगणक आदेश

चलली सिया आशीष आ आदेश लै रनिवास मे ।
प्रणिपात कै सविनय कहलि सब सासु सँ एक श्वास मे ॥
"स्वामी सँगे हमहूँ चली वन मातुगण ! आज्ञा दिअऽ ।
मात्सर्य-वश जनु रोकि राखू हृदय पत्थर कऽ लिअऽ ॥
जौँ विधिक इच्छा ऐह छनि तौं कऽ सकै छी तखन की ?
बुझनीक सभ क्यो छी स्वयं वेशी कहब हम वचन की ?
दुख पैघ अछि अपने सभक सेवा-समय वन जाइ छी ।
आशा मुदा अछि छमब ध्रुव सभ तौं हमर प्रिय माइ छी" ॥
सीताक अद्भुत भावना केँ बूझि सब विस्मित भेली ।
रहती कोना वन-ठाम मे सुकुमारि भऽ जनककलली ॥
अभ्यास नहिं छनि कष्ट कोनो सहक सिय सुकुमारि केँ ।
अनुभव ने किछुओ छैन्ह एकसरि रहक सीता नारि केँ ॥
तैयो सिया छथि जाइ लै तत्पर अहा ! वनवास मे ।
दुख बिसरि सुख बूझथि अहा ! स्वामीक मृदु सहवास मे ॥
पति-चरण-सेवा मे निरत छथि बूझि सिय सुकुमारि केँ ।
सब सासु शुभ आशीष दैलनि मुद सुमति विचारि केँ ॥
"हे प्रिय सिये ! नारीक सब कर्त्तव्य अहाँ जनैत छी ।
पति-संग पत्नी केँ रहब नित उचित अहाँ बुझैत छी ॥

कहु तखन हम रोकब किये ? रहबाक लै सुखधाम मे।
सुखप्रद बुझै छी रहब पति-सँग जखन जंगल-ठाम मे ॥
अछि धारणा उत्तम अहाँ कें बूझि हम सन्तुष्ट छी।
स्वामी-प्रिया नारी-सुलक्षण सँ अहाँ परिपुष्ट छी ॥
विश्वास अछि राखब अहाँ पावन परम आदर्श कें।
सीते ! अहाँ पर गर्व छै सम्पूर्ण भारतवर्ष कें ॥
हम सभ अहाँ सन सुतवधू कें पाबि धन्य बुझैत छी।
सानन्द सबखन रहो सीते ! सैह सब चाहैत छी ॥
हा ! किन्तु दुख अछि जनक को ? कहताह अपना मोन मे।
छनि सासु केहन कठोर देलनि जानकी कें वोन मे"।
प्रिय कथन सासुक सूनि भरि प्रेमाश्रु सीता नयन मे।
कहलनि सिया अति नम्रयुत मधु-अमिय-वोरल वयन मे ॥
"हे मातुगण ! चिन्ता कनेको नहि करू पति-संग मे।
रहताह तौं दुख हैत की ? मन मे ने कोनो अंग मे ॥
सुख-दुखक अनुभव भावना पर छैक निर्भर जीव कें।
कर्त्तव्य कें आगू न किछुओ कष्ट हेतनि सीय कें ॥
स्वामी-बिना अइ अवध कें हम वन-समान बुझैत छी।
स्वामीक सँग रहने विपिन कें अवध-सन लगबैत छी ॥
तैं मातुगण ! आज्ञा दिअऽ वन जाइ ले आनन्द सँ।
परिणाम उत्तम हैत जौं हम जैब सभक पसन्द सँ" ॥
दृढ़ता सिया कें देखि कहलनि सासुगण "सकुशल रहू।
सीते ! अहाँ कें आब वन नहिं जाइ ले कोना कहू ॥
तजि राजसुख वन-दुख सहै मे जखन अहाँ समर्थ छी।
हम तखन रुकवाले कहो तौं कहब हमरो व्यर्थ छी ॥
वन जेब तौं सिय ! जाउ सदिखन रहब चेतलि-सन मुदा।
नहि करब गप्पो अपरिचित-सँग आबि जाय कियो कदा ॥
वन मे घुमैत रहैत छै राक्षस-निशाचर वर्ग जे।
चाहत अहाँ सँ करक बहु-विधि यत्न सँ सम्पर्क से ॥

निर्दय दुराचारी अधर्मी होइ छैक पुनैत छी।
ओ सभ ठगत दऽ लोभ चेतल रहब तैं कहि दैत छी" ॥

कैलनि विदा सीता वधू केँ दऽ विविध उपदेश केँ।
सोतो समुद स्वीकार कैलनि सीख-युत आदेश केँ ॥

वन जाइ छथि प्रभु जानकी सँग ज्ञात भेलनि लखन केँ।
झट दौड़ि केँ अयलाह धैलनि प्रभुक दुनू चरण केँ ॥

श्रीराम दूनू हाथ सँ धैऽ उठौलनि लखन केँ।
लगलाह देमय सान्त्वना मृदु बाजि सुन्दर वचन केँ ॥

"हे प्रिय अनुज ! हम दैत छी सब भार राजक काज केँ।
भरतक बँटायब हाथ राखब सतत सुखी समाज केँ ॥

बस, वर्ष चौदह मात्र अछि रहबाक हमरा विपिन मे।
घुरि आबि सिंहासनक ऊपर हरषि बैसब सुदिन मे" ॥

सुनि कथन रामक लखन मन मे तखन बुझने की ? हेता।
की ? उचित हुनकर छलनि वाचक ! ओहि छन दीतहुँ बता ॥

चाहै छलनि पालन लखन केँ करक प्रभु-आदेश केँ।
चलबाक तौं चाहै छलनि अनुसार प्रभु निर्देश केँ।

छथि किन्तु की ? सोचैत मन मे राम केँ प्रिय दास ओ।
छथि ठाढ़ भेल दयालु लग कर जोड़ि भेल उदास ओ।

मन मे कहथि हैबाक की ? छल किन्तु की ? भऽ गेल ई।
घटना दुखद रचलनि विधाता अखन ककरा लेल ई ॥

हमरा कियैक कहैत छथि प्रभु अवध मे रहबाक लै।
हम जन्म-जन्मक दास हिनकर रहब कोना फराक भै।

कैलनि अखन धरि पूर्ण इच्छा ई कि नहिं करताह की ?
करबनि विनय तौं छोड़ि हमरा विपिन चल जैताह की ?

देखल लखन केँ ठाढ़ सन्मुख कहल रघुवर प्रेम सँ।
'सेवा करू माता-पिता केँ रहि एतै शुचि नेम सँ ॥

भऽ जैत अवध अनाथ बूझू जैब कानन लखन जौं।
नहि छथि भरत-शत्रुघ्न तैं ई हमर मानू कथन तौं ॥

देखू अखन तों छथि पिता चिन्तित अवस्था मे महा।
गुरुवर वशिष्ठ सुमन्त मन्त्री छथि व्यथित-शोकित महा॥

जौं शत्रु कोनो आबि जाय ससैन्य अपना नगर मे।
कहु तखन नगर बचौत के लै लेत किछुए पहर मे॥

तें मानि लीअऽ बात लछुमन! जे अखन कहैत छी।
रक्षा करत के? नगर केँ रक्षक अहीं लगैत छी"॥

सुनि कथन रामक लखन कहलनि "हम अहाँ केँ दास छी।
मन-वचन एवं कर्म सँ सेवक बनल खबास छी॥

अपने हमर सबकिछु थिकहुँ दोसर तौं केवल नाम केँ।
स्वामी-पिता-माता-सखा-गुरु हम जनै छी राम केँ"॥

देखल लखन केँ धारणा दृढ राम कहलनि भाइ सँ।
"चलबे करब तौं चलू पहिने पूछिलीअनु माइ सँ"॥

पूछल लखन सब मातु सँ "हम जाइ वन प्रभु-संग मे।
तें दी अहूँ सभ मुदित मन सँ सुमति एहि प्रसंग मे"।

देलनि शुभाशीर्वाद सँग अनुमति हृदय सँ लखन केँ।
"रामक चरण-सेवक थिकहुँ रोकत अहाँ केँ तखन के?

अछि किन्तु संशय छथि परम पति-भक्तिनीक समान जे।
बिनु चरण-रज लेने अहाँ केँ करथि नहि किछु पान जे॥

से उर्मिला रहती कोना स्वामी-बिना कहु तौं एतऽ।
पहिने अवश्ये पूछि ली जेबाक हो लछुमन जतऽ"॥

गेला सुमित्रा आदि माता-निकट मा-आदेश लै।
लखि माइ-प्रति-श्रद्धा कहल सब जाइ लै उपदेश दै॥

गेला तखन लछुमन स्वपत्नी उर्मिला केँ गेह मे।
कहलनि सकल वृत्तान्त मृदुमय वचन सानि सनेह मे।

"हे उर्मिले! प्रभु राम-सँग वनबास मे हम जाइ छी।
सेवक हुनक हम छी बुझू नहि मात्र केवल माइ छी॥

जीवन सफल होयत हमर तें प्रिय! सहर्ष बिदा करू।
आज्ञा हमर ई मानि तीनू सासु केँ सेवा करू॥

हमरा सभक दिन कटत सुखमय अहिंक पतिव्रत-धर्म सँ।
बाँचल रहब सदिखन तखन हम सब सकल दुष्कर्म सँ" ॥

स्वामी-कथन पर कलपि कऽ कहलनि वचन जे उर्मिला।
से बूझि पाथर-सन हृदय कें देत निश्चय ओ गला ॥

"हे नाथ! के? सुख-वारि मे दुख-धूल कें देलक मिला।
सुरभित सुमन वर्षांक बदला पटकि देलक अछि शिला ॥

हम अखन अति आनन्द-सागर कें लहर लैते छलौं।
हम बहिन चारू एक अनुपम कल्पना करिते छलौं ॥

सेवा ससुर-सासुक करब हम सभ स्वपति-सँग मीलि कऽ।
अति मोद मानब पतिक चरणोदक-सुधा कें पीबि कऽ ॥

कखनो ने कोनो सासु कें लागय देबनि गृह-कार्य मे।
आदर्शमय परिवार छल रचना करक समाज मे ॥

आशा बहुत कैने छलहुँ सभ क्यो रहब आनन्द सँ।
उपदेश सीता बहिन सँ सूनब सतत स्वच्छन्द सँ ॥

हा! किन्तु शोकान्वित दुखद सम्बाद अखन सुनैत छी।
की? कऽ विधाता! देल अनुचित काज किये? करैत छी ॥

नहि नीक किनको होनि किछुओ सेह की? चाहैत छी।
संसार रचि निर्दय-सदृश व्यवहार किये? करैत छी ॥

हे प्राणपति! हम की? कहू श्री राम-सीता संग मे।
नहि जाउ अथवा जाउ नहि फूरैछ एहि प्रसंग मे ॥

अपने स्वयं सज्ञान छी जे उचित बूझी से करी।
स्वीकार अछि हमरो अहाँ जे कहब से हमहूँ करी" ॥

तीनू तखन गेलाह केकइ-निकट केकइ-भवन मे।
कैलनि विनय "मा! दिअऽ आज्ञा जाइ हम सभ विपिन मे।

रामक निवेदन सुनि देलनि वस्त्र वल्कल केकयी।
श्री राम-लछुमन पहिरि लेलनि देखि प्रमुदित निर्दयी ॥

कहलनि सिया कें "वस्त्र ई पहिरू अहूँ" ओ तखन हा!
लगलीह पहिरय होनि नहि पहिरल सिया कें जखन हा ॥

ई देखि गुरु वशिष्ठ कें नहिं रहल गेलनि तखन हा !
ओ डाँटि कऽ कहलनि "अहाँ छी अति निठुर महिला महा ॥
भरतक अहाँ माता थिकहुँ नहि अछि दया किछु हृदय मे ?
सद्ज्ञान-बुद्धि-विवेक को भऽ गेल एहना समय मे ??
नर-नारि कें व्यवहार उत्तम करक लेल कहैत छी।
कहु तखन स्वयं कियैक निर्दयताक काज करैत छी ?
श्री राम कें वनबास भेटल छनि अहाँ वरदान मे।
सीता कियैं ? वल्कल पहिरती अछि इहो नहि ध्यान मे ॥
नव वस्त्र धारण करथि सीता पहिरि भूषण अंग मे।
वन जाथि स्वेच्छा सँ रहथि सानन्द स्वामी संग मे" ॥

□

वन-गमन

रथ आनि मन्त्री द्वार पर रखलनि नृपक आदेश सँ।
आज्ञा सुनौलनि राम कें मृदु वचन द्वारा क्लेश सं ॥
रथ पर चढ़ौलनि लखन एवं सिय-सहित श्री राम कें।
केलनि प्रणाम सनम्र तीनू जन अयोध्याधाम कें ॥
सब सँ बिदा भऽ जखन धैलनि सघन बिपिनक डगर कें।
नर-नारि-बच्चा बूढ़ पाछू लागि पड़लनि नगर कें ॥
सस्नेह अवधक धेनु-गज-नभचर निहारथि सीय कें।
चलि पड़ल पाछू लागि वृषभ-तुरंग सब अवधीय कें ॥
सौन्दर्य सम्पति शौर्य मानू जा रहल अछि अवध सँ।
सुख-शान्ति-शुचि सद्गुण सकल जनु जा रहल अछि महल सँ ॥
गृह द्वार-भवन विशाल नगरक अति उदास लगैछ ई।
सब जीव जन्तु निराश भऽ मानू जेना कनैछ ई ॥
बूझू जेना दीपक बिना मन्दिर पिया-बिनु नारि कें।
गुणशील बिनु वनिता जेना सरिता लगथि बिनु वारि कें ॥
तहिना लगै अछि अवध सीता-राम केर अभाव मे।
सब कहथि बैसल छी बुझू नाविक बिना हम नाव मे ॥

के ? सान्त्वना दऽ सकत हमरा हा ! विपत्तिक बेर मे।
सन्तुष्ट द्विज कें के ? करत दै दान नित्य सवेर मे॥
राज्यक सुशासन के ? सँभारत राम-लक्ष्मण कें बिना।
भऽ जैत गृहपति-रहित घर-परिवार कें दुर्गति जेना॥

कहु आब दशरथ राजगद्दी पर कदापि विराजता।
युवराज-पद दऽ राम कें संकल्प कथमपि टालता॥
असमर्थ अपना कें बुझथि ओ राम-बिनु सब रूप सँ।
ओ आब बाहर नहि हेता गम्भीर शोकक कूप सँ॥

तैं सब अवधबासी चली वन राम-सीता-संग मे।
तप करब हिनके संग मिलि नित लेपि भसम स्वअंग मे॥
एमहर बढ़ऽ चाहैत छथि तौं रथ बढ़ै छनि नहि मुदा।
रथ कें पकड़ि कनैत सभ कें लखि कोना हेता विदा॥

कोमल वचन सँ राम तौं बुझबैत छथि सब लोक कें।
किछु दिनक लेल सुधैर्य पूर्वक सहक हेतु वियोग कें॥
तैयो मुदा नहि पाछु छोड़नि लूल्ह-आँन्हर छोड़ि कऽ।
परिवार-मित्र-समाज-सम्पति-गेह सँ मुँह मोड़ि कऽ॥

श्री राम असमंजस मे पड़ल सोचैत छथि की ? हम करी।
दिन भरि रहय दीअनि करब किछु सोचि कऽ रातुक घड़ी॥
ई सत्य अछि शास्वत वचन प्रभु जखन छथि सोचैत जे।
मायाक द्वारा तखन निश्चय दैव छथि करबैत से॥

ओ राति मे विश्राम लै सब वृक्षतर सूतै गेला।
की नींद सँ भऽ भेर जखने फोंफ सब कटिते छला॥
श्री राम-लखन-सुमन्त मिलि मन मे तखन सोचै गेला।
चलि दी अखन वन-सघन मे होयत सभक तखने भला॥

लाचार-वश हुनका करय पड़लनि समय अनुसार ई।
करितथि तखन जन-वर्ग सँ बिछुड़क कहु उपचार की ?
उठलाह सब, नहि देखि मन्त्री लखन सीताराम कें।
चीत्कार पारि कनैत उठला नाम लै सुखधाम कें॥

चललाह सब रथ-लीख लखि आगू चलल किछु नहिं पता ।
के ? कहत कतबा भेल सब कें शोक एवं विकलता ॥
बपहारि हाय ! कटैत घुमला तखन हीया-हारि कऽ ।
चललाह माथा कें पकड़ि चिन्तित जकाँ मन-मारि कऽ ॥

सभ क्यो अहुछिया हा ! कटै छथि आबि कऽ निज नगर मे ।
शोकाश्रु दृग सँ बहनि सब कें सतत आठो पहर मे ॥
सब लोक नगरक पुछनि "तजि कऽ राम कें घुमलहुँ किये ?
जौं राम नहिं घुमलाह तौं श्री सीय कें छोड़लहुँ किये ?

रथ सँ उतारि-सँभारि कऽ लऽ कान्ह पर अबितहुँ अहाँ ।
से कैल नहिं तौं हारि कऽ रथ टाँगि कं लबितहुँ अहाँ ॥
की ? आब सब भेलहुँ निराश्रय पीटि अपना माथ कें ।
जीवन निरर्थक बीत जायत आब बिनु रघुनाथ कें" ॥



वन-प्रवेश

एमहर अबै गेलाह सभ श्री जाह्नवीक किनार मे ।
कैलनि प्रणाम सनम्र मज्जन कैल गंगा धार मे ॥
थकनी सभक हटलनि जखन बैसल छला शुचि नेम सँ ।
गंगाक महिमा कहि सुनौलनि राम सबके प्रेम सँ ॥

वन सँ मँगौलनि दूध बड़के तखन कोनो सुजन सँ ।
सिर पर बनौलनि एक-दोसर के जटा अति यतन सँ ॥
ई देखि दृग प्रेमाश्रु सँ भरिगेल तखन सुमंत के ॥
मुँह मलिन कऽ अति दीन बनि कहलनि बचन श्री मंत कें ।

"हे राम ! अवध-नरेश हमरा जे कथन कहने छला ।
से कहि रहल छी" की तखन भरिगेल छल हुँनकर गला ॥
"फल-फूल सँ शोभित विपिनके देखि जखने लेथि ओ ।
तपसी-मुनीश्वर वर्गके दर्शन जखन कऽ लेथि ओ ॥

पावन परम अति सुरसरिक जल पीबि तीनू लेथि ओ ।
स्नान कऽ तन-मनक कलमष सकल जौं धो लेथि ओ ॥

लऽ अँब सादर नगर मे सिय-लखन शोभा धाम कें।
तखने हृदय मे शान्ति होयत पाबि दर्शन राम कें॥
तैं आब जे आज्ञा अहाँ दी सोचि कऽ हम से करी।
जे उचित बूझी से कहू हम ताहि रूपें पग धरी"॥
ई कहि सुमन्त विनम्र सँ छथि ठाढ़ चिन्तित भेल ओ।
आदेश की छथि दैत राघव सेंह सूनै लेल ओ॥
मंत्री सुमंतक कहब तौं उचिते छलनि ई जानि कऽ।
दशरथ-पिता सम पूज्य ई छथि राम उर सँ मानि कऽ॥
कहलनि "अहाँ तौं धर्मकें ज्ञाता स्वयं हे तात छी।
धर्मक महत्त्व जनैत छी बुधियार मे विख्यात छी॥
हरिचन्द नृपति दधीचि शिवि सब कष्ट सहलनि धर्म लै।
सहलनि अनेको व्यक्ति संकट विश्व मे सद्धर्म लै॥
तौं हम किये छोड़ब पिता-आदेश रूपी धर्मकें।
धर्मिष्ठ हम कहबैत छी तौं करब कियै अधर्म कें॥
केकयि-मनोरथ पूर्ण हेतनि राम कें वनबास सँ।
रहबाक अछि किछु दिवस हमरो दूर भोग-विलास सँ॥
तैं अधिक आग्रह नहि करू आपस अवध मे जाइ लै।
नहि कहू जीवन-युद्ध मे रण भूमि त्यागि पड़ाइ लै"॥
रामक कथन कें सूनि चुप भऽ किछु छनक उपरान्त मे।
देलनि सुमंत बिचारि उत्तर रामकें ई अन्त मे॥
"हे प्रभु ! अहूँक दृढ़ता उचित अछि तैं हमहुँ लाचार छी।
जहिना करै लै कही हमरा करै लै तैयार छी॥
अछि किन्तु चिन्ता जानकी वन मे कोना रहतीह ओ।
कहबनि अहाँ तौं घूमि निश्चय अवध मे जयतीह ओ"॥
कहलनि सुमंतक कहल पर श्री राम सिय कें "हे प्रिये !
जौं घूमि घर जैतहुँ अहाँ तौं नोक होइत हे सिये"॥
रामक वचन सुनितहि अचम्भित भऽ गेली श्री जानकी।
मन मे कहल प्रभु छथि सियाक स्वभाव सँ अनजान की ?

करजोड़ि कऽ कहलनि बचन मुसकैत-आनन्द-कंद सँ।
"की हेतु हँटै कहैत छी प्रभु! अखन अपना संग सँ॥
अपने स्वयं ज्ञानी-दयार्णव छी बिचारू तौं कने।
छाया अलग हेतौक की? तन सँ अही" सोचू भने॥
सूर्यक प्रभा तजि कतय जायत त्यागि रविके" सृष्टि मे।
शशि संग तजि कऽ चांदनी जायत कतय? अछि दृष्टि मे?
हे तात! मंत्री थिकहुँ अपने नीति-निपुण नरेश के"।
अपने पिता-सम छी हितैषी तुल्य श्री अवधेश के"॥
सम्मुख अहाँके" आर्त्त भऽ उत्तर अहाँ के" दैत छी।
प्रभु राम-चरणक नित्य दर्शन पाबि हम जीबैत छी॥
ऐश्वर्य हम देखल पिता के" ससुर केर प्रभाव के"।
पति-बिनु मुदा न सोहाय लक्षण अछि हमर स्वभाव के"॥
कहबनि ससुर सब सासु के" हे तात! हमरा ओर सँ।
नहि करथि चिन्ता हमर बजितहि नयन भरलनि नोर सँ॥
छथि धनुषधारी प्राण-रक्षक प्राण-प्रिय पति संग मे।
देवर लखन-सन छथि सहायक तेँ न पीड़ा अंग मे॥
कहबनि हमर किछु सोच नहि ओ सभ करथि मनमे कदा।
राखथि हृदय मे स्मरण नित छनहु" नहि बिसरथि मुदा"॥
सीताक वाणी मधुर सुनि प्रेमाश्रु मंत्री-नयन सँ।
लगलनि बहय फुरलनि ने किछु नहि बाजि सकला वयन सँ॥
कैलनि बहुत प्रयत्न घूमथि अवध के" कहुना सिया।
हा! किन्तु नहि भेला सफल ओ हारि के" अंतिम हिया॥
घुमला अवध दिशि छोड़ि कऽ प्रिय लखन-सीताराम के"।
पूँजी गवाँ बनिया चलथि चललाह तहिना धाम के"॥
पुनि आउ गंगा-तीर पर ओ ठाढ़ छथि तीनू जना।
पर-पार करबा लेल केवट सँ करै छथि प्रार्थना॥

□

केवट-संवाद

नहि नाव मुदा अनैत अछि लागल कहय श्री राम सँ।
"हम मर्म अपनेकेँ" जनैछी सुनल अछि निज कान सँ॥
ई अहँक चरणक धूरि मानव-रचक अद्भुत छी जड़ी।
छुबितहि शिला सुन्दरि त्रिया बनिजाइ छे ओही घड़ी॥
अछि नाव काठक हमर पाथर सँ कठिन नहि अधिक ई।
साधन हमर छी ऐह दै अछि पूर्ण पारिश्रमिक ई॥
परिवार-पोषण तौं अही सँ होइ अछि जहिना-तेना।
रोजी हमर चलि जैत संग-सँग पार जायब अहँ कोना?
तैं अखन गंगा-पार अपने जैंक जौं चाहैत छी।
तौं अपन चरणाम्बुज पखारय दी हमहुँ चाहैत छी॥
हम शपथ खाकऽ कहैछी वरु लखन मारथि वाण सँ।
बिनु पैर धोने पार गंगा नहि करब जलयान सँ॥
अटपट वचन सुनि केवटक हँसला सियापति जोर सँ।
ओ छल विनय सँ झुकल खसबति नोर दृगकेँ कोर सँ॥
कहलनि 'चरण पखारि ले नहि नाव बूड़ी जाहि सँ।
तौं बूझि ले हमरा कोनो आपत्ति नहि अछि ताहि सँ॥
नहि कर बिलम्ब उतार हमरा पार गंगाधार केँ।
सविनय कहैत छिऔक कर चरितार्थ शिष्टाचार के'॥
वाचक! बिचारू प्रभुक लीला छनि केहन अनुपम महा।
सामान्य नर-सन कऽ रहल छथि बात सुन्दतम अहा!
जे पार लगबथि जीवकेँ भव-जलधि अगम अथाह सँ।
से प्रभु निहोरा कऽ रहल छथि एक नर-मल्लाह सँ॥
अनलक कठौता-भरि अछिजल राम-आज्ञा पाबि कऽ।
आनन्द सँ पद-कमल धोलक राम-पदकेँ दाबि कऽ॥
अपने स्वयं पीलक पियोलक सकल कुल परिवार केँ।
भव-पार अपने भेल कैलक पार जग-करतार केँ॥

ई देखि सुरगण केवटक मन सँ सराहथि भाग्य कें।
नभ सँ अहा ! बरिसल सुगन्धित तखन पुष्पक माल्य कें॥

कैलक प्रणाम ने माँग कैलक जखन खेवा नाव कें।
प्रभु कें बहुत संकोच भेलनि देल नहि मल्लाह कें॥

स्वामी-हृदय कें बात जाननिहारि सिय निज ओर सँ।
देलनि अपन अँगूठी सहर्ष निकालि आँगुर-पोर सँ॥

नहि किन्तु लै अछि नाव कें उतराइ केवट राम सँ।
कर जोड़ि कें केवट कहै अछि भक्तियुत सुखधाम सँ॥

"हे राम ! हम पौलहुँ बहुत दुर्लभ सुफल श्री नाथ सँ।
निज चरण धोअय देल हमरा पर कृपा कै हाथ सँ॥

हम पाबि गेलहुँ पूर्ण श्रम-फल आइ प्रभुक प्रताप सँ।
दुख-दोष-दुर्बलता दरिद्री हँटल अपने-आप सँ॥

वन सँ जखन घूमब तखन जे देब अपने लेब से।
मन-कामना पूरत हमर सब तखन ध्रुव स्वयमेव से"॥

लेलक जखन उतराइ नहि किछु राम रघुकुल-चंद सँ।
देलनि स्वयं वरदान निर्मल भक्ति कें आनन्द सँ॥

कैलनि कृपालु सहर्ष मज्जन पैसि गंगा-धार मे।
किछु काल लगलनि इष्ट शिवकें सविधि पूजाचार मे॥

सीता विनय कैलनि दयामयि जह्नवी कें प्रेम सँ।
"हे मा ! समय वनवास कें कटि जाय कुशलक्षेम सँ॥

हम घूमि कऽ आबी लखन-सँग नाथ कें वनवास सँ।
पूजा करी अपनेक हमसभ अधिक हृदय-हुलास सँ"॥

ध्वनि मधुर सुनलनि सब कियो जे भेल गंगा-धार सँ।
"हे सिय ! अहाँ कें हम प्रशंसा करब कोन प्रकार सँ॥

सुन्दर अहँक स्वभाव ककरा ज्ञात नहि संसार मे।
के ? नारि जूमि सकैछ सीते ! अहँक विमल विचार मे॥

कैलहुँ हमर विनती वड़प्पन देल हमरा स्नेह सँ।
देलहुँ अपन दर्शन एतय सिय ! आबि अपना गेह सँ॥

सीते ! बूझू हम अपन वाणी कें पवित्र करैत छी।
सकुशल विपिन सँ घूमि आयब सत्य बचन कहैत छी॥

मन-कामना ध्रुव पूर्ण होयत अहँक जे अछि हृदय मे।
यश विमल फैलत विश्वभरि मे अहँक किछुए समय मे॥

जनकात्मजा हर्षित भेली सुनि सुरसरिक मृदु कथन कें।
जल पीवि कऽ भरि पोख पावन कैल तन-मन-बचन कें॥

कैलनि प्रयाण प्रयाग दिशि कहबैछ तीरथ-राज जे।
भरद्वाज मुनि सँ भेंट भेलनि नीक बुझलनि काज से॥

□

भरद्वाज मुनि सँ भेंट

सन्तुष्ट तीनू जन भेला अति मुनिक शुचि सत्कार सँ।
अतिशय पुनीत विचार एवं उच्च शिष्टाचार सँ॥

प्रभु अपन दर्शन दऽ अहा ! कैलनि मुदित भरद्वाज कें।
जीवनं सफल कऽ देल तीर्थक सकल सुजन समाज कें॥

वन-पथ-प्रदर्शक शिष्य कें देलनि लगा ओ संग मे।
चललाह तीनूजन विपिन दिशि अति निराला ढंग मे॥

चलबाक क्रम अद्भुत छलनि श्री लखन-सीता-राम कें।
जनु जीव एवं ब्रह्म बीच चलैछ माया नाम कें॥

रति रहथि शोभित मदन एवं ऋतु वसंत सुपास मे।
बुध अरु निशापति बीच रोहिणि रहथि नित आकाश मे॥

सीता चलथि बचबैत रामक चरण सुभग निशान कें।
लछुमन दुनू पद-चिह्नसँ निज पग बढ़ाबथि वाम कें॥

सुंदर एहन झाँकी बसै अछि जाहि भक्तक हृदय मे।
ओ धन्य छथि मानव रहथि नहि दुखित कोनो समय मे॥

जे नारि नहि चललीह एको डेग बिनु पदत्राण कें।
से चलथि कंटकमय विपिन मे बिनु कोनो थलयान कें॥

पूछथि सिया "कत दूर अछि ठहरब जतै स्थान ओ।
सन्ध्या समीप लगैत अछि जा रहल छथि दिनमान ओ"॥

ई कहि असोथकीत भऽ कऽ बैसि रहली जानकी।
सीताक स्थिति पर कतहुँ नहि देथि रघुवर ध्यान की ?

थाकलि सिया केँ बूझि किछु छन एक पावन ठाम मे।
थकनी मेटौलनि बैसि कऽ किछु काल केँ विश्राम मे॥

देखल सघन वट वृक्ष सुन्दर छल सुकूप समीप मे।
सब सँ सुरक्षित बूझि पड़लनि ओहि वीपिनक बीच मे॥

कहुना बितौलनि राति भिनसर भेल कैलनि नितक्रिया।
चललाह आगू भूमि पावन देखि कऽ कहलनि सिया।

"ई अछि लगैत मुनीश केँ आश्रम कतहुँ समीप मे।
सब सँ मनोहर भूमि लगइछ एहि जम्बूद्वीप मे॥

देखैत छी हम विटप सब परिपूर्ण अछि फल-फूल सँ।
वातावरण सुरभित बहै अछि वायु मन-अनुकूल सँ।

अति मधुर निर्मल जल सरोवर मे एतय देखैत छी।
कोकिल निरंतर कऽ रहल कू-कू सुशब्द सुनैत छी॥

अछि भऽ रहल शुभ पाठ वेदक ब्रह्मचारी-वृन्द सँ।
घन सघन देखि मयूर सभ नाचैत अछि आनन्द सँ"॥

कहलनि सियापति "थीक ई तप-भूमि साधु-ऋषीश केँ।
पावन परम आश्रम थिकनि ई वाल्मीक मुनीश केँ॥

सुन्दर सरोवर मे कमल विकसित विविध प्रकार छै।
मकरंद-रस मे मस्त भँवरा कऽ रहल गुञ्जार छै॥

वाल्मीक सँ भेँट

देखू सिये ! पशु-विहग केँ स्वर मधुर पड़ितहि कान मे।
हँटिगेल तनक थकान सब अबितहि सुभग स्थान मे॥

रघुवीर रामक आगमन पर मुनि परम हर्षित भेला।
सानन्द अगवानी करै लय शिष्य-संग तखने एला॥

श्री राम लछुमन दण्डवत कैलनि मुनिक पद छूबि कऽ।
देलनि शुभाशीर्वाद मुनिवर हर्ष सँ सिर चूमि कऽ॥

श्री राम केँ छवि देखि मुनि-चख भरल प्रेमक नोर सँ।
पुछलनि कुशल-मंगल मुनीश्वर समुद अवध-किशोर सँ॥

भोजन करौलनि मधुर फल दऽ कमल-पत्रक पात्र मे।
स्तुति करय लगलाह गायक-वर छला जे छात्र मे॥

बैसल छला विश्राम-गृह मे, सब अधिक आराम सँ।
श्री राम कैलनि विनय मुनिवर पूर्ण सद्गुण ग्राम सँ॥

"हे मुनि! परम ज्ञानी थिकहुँ त्रयकालदर्शी छी अहाँ।
फल बैर-सम निज पाणि मे छी विश्व केँ रखने अहाँ॥

हम सभ एतय वन मे किये अयलहुँ अवश्य जनैत छी।
तेँ की कहब जानल विषय केँ कहब व्यर्थ बुझैत छी॥

सुस्थान अपने दी बता निज यज्ञ-भूमि समीप मे।
सोता-लखन सँग रहक अछि किछु दिन विपिन केँ बीच मे"॥

श्री राम केँ वाणी मधुर सुनि मुनि परम आवेश सँ।
कैलनि मुनीश्वर प्रश्न सुखप्रद नर-प्रवर अवधेश सँ॥

'हे राम! पुछलहुँ अछि अहाँ वन मे कतय जाकऽ रहू।
तोँ हम पुछैत लजाइ छी नहि छी कतय से तऽ कहू॥

हम कोन ठाम बताउ अपने जतय न सतत रहैत छी।
स्थान रहबा-योग्य होयत कतय स्वयं जनैत छी॥

तैयो सुनू स्थान हम रहबाक योग्य कहैत छी।
जा कऽ ततय ली बास अपने उचित सैह बुझैत छी॥

छनि कान जिनक समुद्र-सन सरिता अहाँ केँ शुभ कथा।
जे नित निरन्तर भरि रहल अछि भरि सकय नहि ओ यथा॥

चातक जेना पीबैछ केवल मात्र स्वाती-बुन्द केँ।
चाहथि ने कखनो जल विमल सरिता सरोवर-सिन्धु केँ॥

तहिना जिनक दृग तृप्ति होनि सुरूप अमृत पीबि कऽ।
तिनके हृदय मे जा बसू हे राम! तीनू मीलि कऽ॥

छनि जीभ हंसिनि बनि जिनक यश-रूप-मानस-नीर मे।
अपनेक गुण-मोती चुनथि बसु तिनक हृदय-कुटीर मे॥

सूँघैछ जिनकर नासिका अर्पित सुमन-सुगन्ध केँ।
पाबथि प्रसादक रूप मे अर्पित वसन अरु अन्न केँ।।
झुकि जानि सिर गुरुदेव-ब्राह्मण देखि जिनकर विनय सँ।
पूजथि चरण अपनेक रघुवर ! भजन गाबथि हृदय सँ।।

जे जपथि रामक नाम पावन दान दैछथि दीन केँ।
सेवा करथि असहाय केँ बसबथि अगार-विहीन केँ।।
छनि प्रीति जिनका प्राण सँ बढ़ि कऽ अहाँ केँ चरण मे।
जाकय बसू सिय-लखन केँ संग ओहि मानस-भवन मे।।

नहि क्रोध-मद-अभिमान छनि किछु लोभ नहि पर बित्त मे।
तिनका हृदय मे जा बसू नहि छैन्ह ईर्ष्या चित्त मे।।
छथि सभक प्रिय सभ केँ हितैषी अति प्रशंसा-पात्र जे।
परदुख-निवारण-हेतु दौड़थि रुकथि नहि छणमात्र जे।।

जे ताकि-ताकि सदैव नाशथि दुर्दशा दयनीय केँ।
तिनका हृदय मे राम ! जाकय बास करु संग सीय केँ।।
मुनि पुनि सुनौलनि अंत मे "सुनु राम ! आब कहैत छी।
किछु दिवस वन मे सिय-लखन संग रहक जौं चाहैत छी।।

तौं जाउ ततय प्रसन्न सँ हम जतय आब कहैत छी।
ओ हैत रहबा योग्य उत्तम अति अवश्य बुझैत छी।।
अति भव्य सुन्दर एहि वन मे चित्रकूट पहाड़ छै।
फल-फूल सँ सम्पन्न मन-अनुकूल बहति वयार छै।।

गज-सिंह-हरिण-सियार-पक्षी बसथि मित्रक भाव सँ।
नहि शत्रुता राखथि परस्पर अत्रि मुनिक प्रभाव सँ।।
सुरसरि बहैथ समीप मे मन्दाकिनी केँ नाम सँ।
अनलन्हि अनुसूया सती तप-शक्ति सँ सुरधाम सँ।।

हे राम ! जाउ अवश्य अपनेसब ओतय जाकऽ रही।
दी संग कऽ दू-चारि वन-पथ विज्ञ केँ जकरा कही"।।
मुनिवर-कथन केँ सूनि रघुवर कहल अति आनन्द सँ।
"हे मुनिप्रवर ! जाकय रहब हम कतहुँ अहिक पसंद सँ"।।

कैलनि बिदा कऽ देल सँग वन-मार्ग-जाननहार कें।
दूनू निबाहल शुभ परस्पर मधुर शिष्टाचार कें॥



अत्रि-अनसूया सँ भेंट

बिचरैत वन मे रहथि तीनू एक दिन पहुँचै गेला।
श्री अत्रिमुनिक पवित्र आश्रम देखि अति हर्षित भेला॥

मुनि-चरण-युग मे दण्डवत कैलनि सप्रेम प्रणाम क।
आशीष पौलनि अत्रि सँ "होयत अहाँ कें राम जँ"॥

आदर सहित बैसौल कर गहि लखन एवं राम कें।
"बैसू सिये !" कहलनि अधिक सस्नेह रामक वाम कें॥

पूछल कुशल-मंगल सभक स्थिति अयोध्या नगर कें।
"अयलहुँ कियै ? से ज्ञात अछि तजि अपन अनुपम सुघर कें॥

तैं आब सहर्ष विताउ चौदह वर्ष बन मे वास कऽ।
ईहो जनै छी जैब अपने आब निश्चर-नाश कऽ॥

हम तौ प्रतीक्षा आइ धरि करितहि छलहुँ आयब अहाँ।
रूकब कतय कहिया कखन पहुँचब रहब-ठहरब कहाँ॥

हम छी जनैत अहाँक लीला-कार्यक्रम विस्तार सँ।
कऽ देब अपने दूर दुर्गुण-दुर्गुणी संसार सँ॥

हे राम ! करु अनुपान सुन्दर फल मधुरतम प्रेम सँ।
विश्राम कऽ किछु कहू अथवा सुनू बैसू नेम सँ"॥

मुनि कें छलनि पत्नी तपस्विनि नाम अनुसूया सती।
बृद्धा विशेष सुविज्ञ भक्तिनि नीति-निपुण दयावती॥

"तिनका निकट सिय जाथि" कहलनि अत्रि अपन सुभाव सँ।
"पतिव्रत-नियम-लक्षण त्रिया कें सीखि आबथु चाव सँ"॥

मुनिवरक आज्ञा पाबि देलनि राम आज्ञा सीय कें।
"जा कऽ प्रिये ! मन दऽ सुनू उपदेश श्री रमणीय कें"॥

ततकाल सीता आश्रमक अन्दर पहुँचली हर्ष सँ।
भेलनि अहा ! प्रत्यक्ष दर्शन नारि-धर्मादर्श सँ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र अनुसूया-चरण पवित्र के ।
देखल सिया साक्षात तप-व्रत-त्याग-पावन चित्र के ॥

कर जोड़ि सीता कुशल-मंगल पूछि निश्छल प्रेम सँ ।
जा कऽ निकट मे बैसि रहली भक्ति-श्रद्धा-नेम सँ ॥

देलनि शुभाशीर्वाद सीता के तखन मुनिवर-प्रिया ।
"अहिबात अविचल रहत पति सँ प्यार भेटत नित सिया !

अछि धर्म पर रुचि अहँक आ अनुराग स्वामी चरण मे ।
सदिखन सुरक्षित रहब अहँ छी जखन रामक शरण मे ॥

मुनिप्रवर-गण चर्चा अहाँ के करथि बहुतों वर्ष सँ ।
आदर्श नारी मे अहाँ के नाम गनबथि हर्ष सँ ॥

छल मोन लागल कत दिवस सँ अहँक हम दर्शन करी ।
सीते ! अहाँ लग बैसि नारी-शील-गुण-वर्णन करी ॥

छै नीति उत्तम पाबि श्रोता धर्म के चर्चा करी ।
उपयुक्त अवसर पाबि कऽ धन-अन्न के खर्चा करी ॥

छल प्रबल अभिलाषा हमर जे भऽ रहल अछि पूर्ण से ।
अनुभव अखन धरि भेल अछि जे कहब हम सम्पूर्ण से ॥

स्वामीक रुचि के बूझि पहिने काज नारी करथि जे ।
पति-हृदय-आसन पर विराजित सतत नारी रहथि से ॥

रामक करैछी शुश्रुषा छी धन्य महिला-जाति मे ।
गणना अहूँ के हवैछ नित पति-प्रेमिका के पाँति मे ॥

स्वामी नगर मे रहथि अथवा घोर जंगल-बीच मे ।
स्वामी प्रतिष्ठित होथि अथवा होनि गणना नीच मे ॥

धन-हीन वा बल-हीन छथि अथवा रहथि बड़का धनी ।
स्थिति सकल में नारि के चाही स्वपति-भक्तिनि बनी ॥

हे जानकी ! सीते ! बुझू ओ श्रेष्ठ नारि-समाज मे ।
जे हाथ बँटबथि नित्य निज स्वामीक सभटा काज मे ॥

पढ़लहु बहुत सद्ग्रन्थ सूनल साधु-सन्त अनेक सँ ।
बहुतेक तरहें कैल अछि मन में विचार विवेक सँ ॥

प्रत्यक्ष ईश्वर-तुल्य मानू स्वपति प्रिय प्राणेश कें।
स्वामीक सेवा करब तौं नहि हैत अनुभव क्लेश कें॥

मन मे मनोरथ जे उठय छल-त्यागि स्वामी सँ कहू।
होयत मनोरथ पूर्ण ध्रुव विश्वास कैने तौं रहू॥
जौं किछु समस्या हो उपस्थित स्वपति-पद निर्भय गहू।
सब कष्ट कें सानन्द सदिखन सीय! स्वामी लै सहू॥

जौं पति रहथि विपत्ति मे शोकित सकल अभाव सँ।
तन-क्षीण मनमति-हीन अति क्रोधी रहथि स्वभाव सँ।
तद्यपि पतिक प्रति प्रेम-श्रद्धा मे कमी नहि करथि जे।
ओ धन्य नारी लोक मे पूज्या अवश्ये बनथि से॥

छथि चारि तरहक नारिगण पतिव्रत-व्रती जग-बीच मे।
सर्वोत्तमा अरु मध्यमा निकृष्ट अधमा नीच मे॥
नित स्वप्न मे पर्यन्त अपने पतिक दर्शन करथि जे।
पर पुरुष दिशि ताकथिने ध्यानो हृदय मे नहि धरथि जे॥

से उत्तमा स्वामीव्रता कहबैथ शास्त्र-पुराण मे।
ई प्राप्त पद जे करथि नहि सन्देह तिनका त्राण मे॥
जे पर पुरुष कें बाप-भ्राता-पुत्र-सम मानथि सदा।
से मध्यमा कहबैथ जगमे सकल जन सौं सर्वदा॥

अति शुद्धतम आचार राखथि करथि काज विचारि जे।
निकृष्ट छथि पातिव्रता-श्रेणीक मध्य सुनारि से॥
नहि करथि पति-प्रतिकूल किछु स्वामीक भय सँ जे त्रिया।
से अधम पतिवरता कहाबथि करथि यद्यपि सत् क्रिया॥

ऐ चारि सँ जे शेष छथि तै नारि कें पतिता कही।
पर पुरुष संगक रमण-शीला नारि स' अलगे रही॥
व्यभिचारिणी वनिता बनथि विधवा बराबरि विश्व मे।
भोगथि विविध दुख आ कलंकित होति रहथि भविष्य मे"॥

ई सूनि सीता मुदित भऽ उपदेश प्रद शुभ वाक्य कें।
कैलनि प्रशंसा हुनक कहलनि धन्य अपना भाग्य कें॥

"हे देवि ! सृष्टिक नारिगण मे श्रेष्ठ ज्ञानी छी अहूँ।
नहि देखि रहलहुँ अछि अहाँ सन विश्व भरि मे तिय कहूँ ॥
अपने-सदृश साध्वी-सती केँ पाबि भारतवर्ष ई।
गर्वित महा अछि विश्व मे भेलहुँ त्रिया-आदर्श ई ॥
हमरो रहैछ प्रयत्न पालनकरी नारी धर्म केँ।
सीखी सती सभ सँ सुशिक्षा-शीलता सद्धर्म केँ ॥
रहितथि कदाचित पति असुन्दर अरु विहीन चरित्र सँ।
करितहुँ तथापि हृदय-विलग नहि पति-चरण पवित्र सँ ॥
छथि जखन हमरा पति प्रशंसा-पात्र भेटल ई महा !
कहु तखन हम हर्षित किये नहि रहब नित मन सँ महा ॥
हम सासु-ससुर-समाज केँ व्यवहार सँ सन्तुष्ट छी।
नहि याद अछि हम सेविका पर भेल कहियो रुष्ट छी ॥
छी भाग्य-शालिनि नारि मे हमहूँ ने कम संसार मे।
श्री राम श्रीपति प्राप्त छथि जे श्रेष्ठ शिष्टाचार मे ॥
ई वैह पुरुष थिकाह जे कोपित ने ककरो पर भेला।
नित सुपथ पर पग धैल ई नहि कुपथ पर कहियो गेला ॥
हमरा सदृश अबोध कन्या केँ बनौलनि निज प्रिया।
भेलछि जनम तौँ माटि तर कहबैत छी जनकक धिया ॥
कहु तौँ अहीं हमरा सदृश महिला बनथि रामक प्रिया ?
ई मात्र प्रभुक उदारता छनि हमर किछु नहि सत् क्रिया ॥
वन-आगमन कालक सुशिक्षा सासुसभ सँ प्राप्त जे।
माता सुनयना-वचन उरमे अखनि धरि अछि व्याप्त जे ॥
सूनल-पढ़ल अछि सन्त सँ सद्शास्त्र केँ पद्यांश मे।
हम सूनि रहलहुँ अहुँक मुख सँ वैह सब सारांश मे"॥
सीताक समुचित वचन सँ सन्तुष्ट अनुसूया छली।
मिथिलेश-दुहिता केँ मुदित मन कहल श्री कर्दम-लली ॥
"पति-संग हमरा सँ तपस्या कैल किछुओ गेल जौँ।
वरदान देबक शक्ति हमरा हे सिये ! अछि भेल तौँ ॥

मांगू अहाँ संकोच तजि हम देब अति सत्कार सँ।
सचमुच बुझू सन्तुष्ट हम छी अहँक उच्च विचार सँ"॥

कहलनि सिया "हे मातु ! अपने देल शुभ उपदेश जे।
पौलहुँ बहुत किछु आब की ? रहिगेल देबक शेष से॥

अपनेक सन साध्वी सती केँ चरण-रज चाहैत छी।
चाहैत छी आशीष शुभ पुनि-पुनि प्रणाम करैत छी"॥

निर्लोभ लखि सीता सती केँ देथि अनुसूया कथी ?
लगली विचारै की दिअनि ? स्वीकार करती की ? सती॥

वनवास नहि रहितनि सजबितहुँ स्वर्णमय श्रृंगार सँ।
करितहुँ बिदा प्रिय नारि केँ उपहार दऽ सत्कार सँ॥

कहलनि "सिये ! सौभाग्य अविचल रहय, रहो आनन्द सँ।
रक्षित जेना छी रहब तहिना सतत रघुकुल-चंद सँ"॥

देलनि अनेक अमूल्य आभूषण सिया केँ स्नेह सँ।
आशीष दऽ कैलनि बिदा की पुष्प बरिसल मेघ सँ॥

□

सीताक सन्देह-निवारण

वन-भ्रमण मे मुनिगणक दर्शन होनि नित श्री राम केँ।
सब सँ शुभाशीर्वाद पाबथि चलथि अगिला ठाम केँ॥

तूणीर बाँधल पीठ पर लखि धनुष लटकल कन्ध सँ।
मुनि-भेष मे चलि रहल छथि तपसी-नियम-प्रतिबन्ध सँ॥

प्रभु राम केँ वाणी मनोहर मे कहल श्री मैथिली।
"हे नाथ ! अपने छी दयानिधि आर्यवर अति निश्छली॥

देखू-विचारू दुर्व्यसन पर प्रभु ! अहाँ पड़िगेल छी।
हमरा लगय कुपंथ पर की ? चलक तत्पर भेल छी॥

जौँ आइ धरि दुर्व्यसन सब सँ सर्वथा निवृत्ति छी।
तौँ आब की प्रभु ! निष्प्रयोजन कार्य मे प्रवृत्ति छी॥

छै तीन तरहक दुर्व्यसन तैपर ने कखनो पग धरी।
परनारि-संगति, झूठ-बाजब, वैर-बिनु हत्या करी॥

ऐ तीन मे स प्रथम के त्यागी अहाँ प्रारम्भ स ।
दोसर व्यसन अछि नहि अहाँ मे हम कहैछी दम्भ स ।।

हम किन्तु तेसर दुर्व्यसन-लक्षण देखै छी नाथ मे।
तरकस बगल मे धनुष-शर रखने अहाँ छी हाथ मे।।

वनबास भेटल अछि बनोलहु भेष-मुनि-तपसी जकाँ।
शस्त्रक प्रयोजन तखन की ? घूमी एना हिंसक जकाँ।।

हमहूँ जनैछी शस्त्र धारण करथि क्षत्री सर्वदा।
पीड़ित कोनो प्राणोक पीड़ा दूर करबालय मुदा।।

अछि शस्त्र धारण करक अवसर अखन की ? वनबास मे।
के भिड़त-लूटत, लेत की ? अछि किछु ने अपना पास मे।।

वन आबि चूकलहु जखन प्रभु ! अपनाउ ऋषि-मुनि-कर्म के।
पालन करक अछि आब हमरा विपिन-बासी-धर्म के।।

करुणा-निधान महान प्रभु ! कहबैत छी संसार मे।
अछि जे छमाशीलक स्वभाव सदैव सब व्यहार मे।

बिनु कष्ट सहने धैर्य धैने प्राप्त धर्मक हैत की ?
आचार शुद्ध विचार-बिनु दुर्गुण हृदय सँ जैत की ?

प्रत्येक जन्मक प्रेमिका के सब सिखौने छी अहाँ।
हम सैह किछु सुनबैत छी जे किछु सुनौने छी अहाँ।।

हम कोन योग्यक छी, अहाँ के नीक बात बतैब की ?
सब भाँति सर्वोत्तम पुरुष के हम अधिक सुनैब की ?"

सीताक सुन्दर वचन सुनलनि राम अतिशय ध्यान सँ।
लगला कहय "सुकुमारि ! अछि उचिते अहँक अनुमान तौं।।

घबड़ाउ नहिं सीते ! प्रिये ! लखि एहन हमरा रूप के।
छै धर्म परम सदैव धारण करब आयुध भूप के।।

अयलहुँ एतय हम धेनु-सज्जन-विप्र-हित संसार मे।
शस्त्रक करब उपयोग हम सब निश्चरक संहार मे।

जे दुष्टता करताह तिनकर छोड़ि देबनि प्राण की ?
तखने अहाँ बूझब प्रयोजन अस्त्र के की ? जानकी !

वन मे घटत घटना बहुत निर्भीक भऽ देखू अहाँ।
की ? की ? करय पड़ैत छै अइ जीव कें जाकय कहाँ" ॥
बीतनि समय दम्पति दुनू कें मधुर वार्त्तालाप मे।
सीता समय बितबैथ स्वामी राम-सँग आलाप मे ॥

□

अगस्त्य सँ भेंट

एवम्प्रकारें विपिन मे वनबास-अवधि कटै छला।
घूमैत सब अयला जतय मुनिवर अगस्त्य रहै छला ॥
साष्टांग कैलनि दण्डवत सविनय प्रणाम मुनीश कें।
देलनि शुभाशीर्वाद मुनि-सिय लखन संग जगदीश कें ॥

"हे राम ! हम छी धन्य ! दर्शन भेल अहँक स्वनैन सँ।
हर्षक करब वर्णन कठिन बूझैत छी हम बैन सँ ॥
श्रम भेल होयत अधिक चलने विपिन-कंटक-बीच मे।
खसि पड़ल होयब पिछड़ि कऽ पथ-मध्य कादो-कीच मे ॥

नृप-सुत विवाहित युवक भऽ कऽ भेष कैलहुँ साधु कें।
वन विकट मे सीताक सँग घूमैत छी बिनु पादुकें ॥
सुकुमारि राजकुमारि सीता कष्ट सहैत-रहैथ ई।
कहु कोन तरहें काँटकुश-युत मार्ग मध्य चलैथ ई ॥

ई कष्ट सीता सहथि केवल स्वपति - प्रेमावेश मे।
पातिव्रता नारी रहथि पति-संग मुदित विशेष में ॥
संसार मे बहु काल सँ नारी स्वभाव देखैत छी।
बहुतेक मुख सँ नारि-जातिक चालि-चलन सुनैत छी ॥

स्वामी सुखी सम्पन्न सुन्दर स्वस्थ्य सदिखन रहथि जौं।
नहिं संग छोड़थि नारिगण अनुराग पति सँ करथि तौं ॥
दुर्भाग्यवश पति कष्ट सँ संत्रस्त अति भऽ जाथि जौं।
नारी अधिकतर स्वपति कें झट त्यागि दूर पराथि तौं ॥

सीता मुदा स्वामीक सँग मे रहथि सदिखन अति सुखी।
बिनु सेज-घर-शृंगार कें छथि, होथि नहि तैयो दुखी ॥

राघव ! अहाँ राखब सिया पर ध्यान अधिक सचेत भऽ।
कहुँ खसि पड़थि नहि सूनि गर्जन बाघ केर अचेत भऽ॥

तकितहिं छलहुं हम बाट आयब अवश विपिन-निवास मे।
सहयोग चाहब, देब हमसभ असुर-गणक विनाश मे॥

कैलक उपद्रव आइ धरि ई यज्ञ-जप-तप काल मे।
डेरबैत छल बहुरूप बनि कऽ आबि झुण्ड विशाल मे॥

ई देखि जे रहलहुँ पहाड़क सदृश हाड़रु मांस कें।
तप-लीन मुनि कें मारि देलक फेंकि लाखो लाश कें॥

अयलहुं अहाँ वन में अहा ! हमरा सभक सौभाग्य सँ।
कैकयिक मन विपरीत भेलनि निश्चरक दुर्भाग्य सँ॥

भऽ जैत यज्ञक कार्य ध्रुव सम्पन्न आब बुझैत छी।
अछि ज्ञात हमरा यज्ञ कें रक्षक अहाँ कहबैत छी॥

अछि बुझल धर्मक हानि होबय जखन-जखन लगैत छै।
जग मे अधर्मक बाढ़ि दिन-दिन बहुत अधिक बढ़ैत छै॥

तखने प्रभुक ध्रुव होइ अछि अवतार अइ संसार मे।
नहि होइ छैक बिलम्ब किछुओ असुर कें संहार मे॥

तैं आब बूझि पड़ैछ हमरा आबि अवसर गेल से।
दर्शन अहाँ कें पाबि आब भरोश बड़का भेल जे॥

जा कऽ रहू हे राम ! दंडक-वन पुनीत सुठाम मे।
भऽ जैत ओ वन प्रथित जगभरि तीर्थ श्रेष्ठ सुधाम मे॥

जल स्वच्छ, थल पावन, मधुर फल प्राप्त होयत ध्रुव ततऽ।
बनि जैत स्वर्गक तुल्य अपने रहब सीता-सँग जतऽ" ॥

□

जटायु सँ भेंट

बूझू अहा ! घूमैत वन तीनू गोटे पहुँचथि जतऽ।
आशीष सँग सत्कार भेटनि भोजनक आग्रह ततऽ॥

संयोगवश वन मे मिलन भेलनि विहंग जटायु सँ।
जे छला सभ्य-सुशील-ईश्वर भक्त अति अल्पायु सँ॥

सोचल सियापति एहि खग सँ करक चाही मित्रता।
छथि वृद्ध वन मे कोन तरहें रहब से देता बता॥

वन मे ककर के ? मित्र, ककरा छै कथी सँ शत्रुता।
के अछि केहन स्वभाव कें हिनका अवश्ये छनि पता॥

विश्वास-पात्रक योग्य छथि दशरथ पिताक सुमीत ई।
करताह अवसर पर हमर हित अछि अवश्य प्रतीत ई॥

सीताक रक्षा-भार सौंपी अखन हिनके हाथ मे।
सीता-लखन कें संग तेसर स्वजन रहता साथ मे॥

मिलि कऽ परस्पर प्रेम सँ चललाह निश्चित ठाम कें।
बतबैत चलथि जटायु शुचि स्थान सभ लऽ नाम कें॥

पूछैत विपिनक लोक सँ अयलाह चारू जन ततऽ।
मुनि वाल्मीकक कहल-चूनल छलनि पावन थल जतऽ॥

पहुँचै गेला, मन मुदित भेलनि पंचवटी-समीप मे।
कहबैत छल जे अति मनोहर भूमि जम्बूद्वीप मे॥

□

पंचवटी मे निवास

पुनि पूछि वन-बासी-सुजन नर-नारिगण वृद्धायु सँ।
कुटिया बनाबी राय लऽ सीता-लखन-जटायु सँ॥

कहलनि सियापति लखन सँ "जौं सब पसँद करैत छी।
तौं एक सुन्दरतम कुटी-निर्माण हेतु कहैत छी॥

प्रकृतिक सकल सुन्दर कला सँ पूर्ण अछि शुचि प्रान्त ई।
निकटहिं जलाशय जलज सँ शोभित अहा ! अति शान्त ई॥

कुसुमित कदम्बक डाढ़ि पर बैसल विहंगक वर्ग जे।
सुनबैत सभखन अछि मृदुल स्वर सूनि होयत हर्ष से॥

तें एक शुचि आश्रम बनाबी जानकीक पसंद सँ
वनबास अवधि व्यतीत होयत सभक अति आनन्द सँ"॥

आदेश-पालन मे सतत तत्पर लखन सुनितहिं छला।
लगला बनाबै पर्ण-गृह जानल छलनि सुन्दर कला॥

खड़-पात चुनि-चुनि आनि देलनि बहुत माता जानकी।
कहु एकर सुन्तरताक क्यो कऽ सकत ठीक बखान की ?

अति स्नेह सँ कहलनि सियावर उर लगा कऽ लखनकें।
"ई पर्णशाला नहि बुझू बूझू मनोहर भवन कें॥

हम सभ बनाबी कार्यक्रम प्रतिदिनक सुन्दर रीति सँ।
जे आबि जाथि एतय तिनक स्वागत करी अति प्रीति सँ॥

दी दीन कें किछु दान नित अभिमान तजि मृदु भाव सँ।
कऽ ली स्ववश सभ कें सुप्रिय वर्त्तावकेर प्रभाव सँ।

दुर्बल दया कें पात्र जे छथि तिनक रक्षा ध्रुव करी।
आपद-विपत्तिक काल उरमे धैर्य कें धारण करी॥

अति दूर दुर्जन सँ रही नित सुजन कें संगति करी।
आचार सर्वोत्तम रहय सत्शास्त्र कें चर्चा करी॥

जौं उच्च परम विचार राखब रहब सादा वेष मे।
नहि पड़ब कखनो ध्रुव बुझू कथपपि कियो दुख-क्लेश मे।

बाजब असत्य कदापि नहि वरु प्राण त्यागथि देह कें।
विश्वासपात्र कहैब एवं पैब सभक सिनेह कें॥

ई अछि कुटी आरोग्यप्रद रचलनि लखन निज पाणि सँ।
हिनकर प्रशंसा थोड़ होयत करब कतबो वाणि सँ॥

तेँ आब सहर्ष बिताउ सिय ! वनबास अवधिक काल कें।
देखू मनोहर दृश्य अद्भुत सघन विपिन विशाल कें" ॥

स्वामीक सुखप्रद वचन सँ सन्तुष्ट वैदेही छली।
नहि विश्व मे लगबथि जनकजा राम सँ किनको बली॥

सभ काज शुचिपूर्वक समय पर करथि अति आनन्द सँ।
सूनथि कथा भक्तक चरित्रक सुभग रघुकुल-चंद सँ॥

नित लोढ़ि लाबथि सुमन सिय सुरभित कुसुम कें बाग सँ।
ऋषि-नारि-सँग शुभ हार गाँथथि गाबि कऽ अनुराग सँ॥

फल मधुर लाबथि तोड़ि रघुवर विविध अनुपम स्वाद कें।
तुलसीक पावन पत्र-युत पाबथि प्रभुक प्रसाद कें॥

बैसथि जखन सीता उठाबथि प्रश्न मानव-धर्म कें।
श्री राम उत्तर देथि सभ कें खोलि सृष्टिक मर्म कें॥

लक्षण सुनाबथि ईश-भक्तिक सविधि कथा-पुराण कें।
साध्वी सतीक चरित्र सुनबथि दऽ अनेक प्रमाण कें॥

श्री जानकी कें जखन जे सन्देह उपजनि हृदय मे।
कऽ देथि दूर दयालु रघुवर तुरत किछुए समय मे॥

बूझल छलनि यद्यपि सिया कें नियम नारी-धर्म कें।
जानल छलनि विस्तारपूर्वक विधि सकल सत्कर्म कें॥

तद्यपि सुनऽ चाहै छली धर्मज्ञ कृपानिधान सँ।
चाहै छली लेमऽ सुसम्मति स्वपति श्री भगवान सँ॥

सन्तुष्ट छथि सीतेश सीता केर सभ व्यवहार सँ।
बाजल करथि सभखन वचन रघवीर हृदयोद्गार सँ॥

"हमरा जखन आहार उत्तम-सुलभ अछि फल-मूल कें।
पौलहुँ सिया-सन शीलवन्ती नारि मन अनुकूल कें॥

लछुमन-सदृश हम बन्धु पौलहुँ रहथि सदिखन संग मे।
बीतैत अछि अवधिक समय ऋषि-मुनि-सुजन-सत्संग मे॥

अछि नहि किछुक अभाव हमरा जखन कोनो समय मे।
तौं हैत की ? अनुभव विपिन-दुखकेर किछुओ हृदय मे"॥

एही प्रकारें समय बितबति रहथि अति आनन्द सँ।
छथि राम हर्षित सीय सँ सीता मुदित प्रियकन्त सँ॥

श्री राम घूमल करथि सबदिशि विपिन मे सदिखन मुदा।
मुनिगणक जप-तप-यज्ञ-रक्षा में रहथि लागल सदा॥

सीता एम्हर मृग-संग खेलथि विहग सँ बतियाथि ओ।
मुनि-नारि-वृन्दक संगकऽ जल-हेतु सर पर जाथि ओ॥

नहि कष्ट किछुओ होनि प्रभु कें लखन ताहि प्रयास मे।
सदिखन रहथि सचेत भऽ रखवारकेर लिवास मे॥

बूझै छला लछुमन स्वयं कें श्रेष्ठ रामक दास मे।
रक्षाक सभटा भार हुनके पर छलनि वनबास मे॥

ओ राति-दिन धनु-बाण लऽ पहरा करैत रहै छला।
वनबास भरि सुतलाह नहि जानल छलनि जागक कला॥
बीतल अनेकों दिवस-मास सचेत भेल रहै छला।
निशिदिन परस्पर विविध वार्त्तालाप मे वितबं छला॥

□

सूर्पणखा सँ भेंट

आयल कतहुँ सँ एक दिन अति खल शुपनखा निश्चरा।
रावण प्रतापी कें बहिन ओ छल अधिक कामातुरा॥
रामक मनोहर कान्तिमय मुख देखि मोहित भेल ओ।
प्रभु सँ करैलय बात प्रेमक बैसि लग मे गेल ओ॥
कामक वशी भऽ गेल छल ओ देल तजि निज लाज कें।
लागल करय मोहित वचन सँ अवधपति महराज कें॥
ठीके कहब छै वस्तु किछु सूझैक नहि जन्मान्ध कें।
उन्मत्त जे मद सँ रहय बूझै ने से प्रतिबन्ध कें॥
लोभी धनक जे छथि लखथि नहि दोष किछु दुष्कर्म मे।
कामातुरा कें बोध नहि की ? हैत कुफल कुकर्म मे॥
ओ राम कें पूछल "अहाँ के छी ? अपन परिचय दिअऽ।
चाही अहाँ तौं पूर्ण परिचय अखन हमरो लय लिअऽ॥
ई गोरि-सन महिला तथा ओ गोर-सन नर के थिका ?
वन मे अहाँ एलहुँ कियै लऽ संग मे ई बालिका"??
रघुवीर परिचय अपन सभटा आदि सँ देलनि बता।
पूछल निशाचरि सँ "बता दे तों अपन पूरा पता॥
बेटी ककर ? की नाम तोहर ? ककर तों पत्नी थिके ?
अयलें एतय एकसरि लगै अछि हेतु किछु तोहर निकें"॥
बाजलि महा अभिमान सँ "हम लंकपतिक बहीन छी।
बितपनि-पढ़लि-सुन्दरि कलासम्पूर्ण मे सुप्रवीण छी॥
अपना सनक हमरा पुरुष नहि भऽ सकल तैं दुखित छी।
बूझी ओना तँ सब प्रकारें पूर्णरूपें सुखित छी॥

भैंआ कृपा सँ किछु कमी नहि त' बनलि सुकुमारि छी।
लंका नगर भरिमे अहा ! हमहीं परम बुधियारि छी॥

सब भाइ-बहिनक बीच वेशी वाप केर दुलारि छी।
माताक तौं हम प्राण सँ बढ़ि कऽ परम पियारि छी॥

अछि नाम सूर्पणखा हमर नख सूप-समान रखैत छी।
जे क्यो भिड़ै छथि उदर तिनकर चीड़ि तखने दैत छी॥

अपना मनक अनुकूल क्यो नहि पुरुष भेटल अछि कतौ।
नहि जैक चाही जतय अपना गरज सँ गेलहुं ततौ॥

सुन्दर पुरुष कें प्राप्ति लय घुमलहुं बहुत हम सृष्टि मे।
नहि अेल तोरा सन मनोहर पुरुष हमरा दृष्टि मे॥

हम तौं अनूपम नारि छी अपना सदृश बश हमहि छी।
तों राम ! हमरा योग्य पति पत्नी तोरा लय हमहि छी॥

शोकाकुला अबला सिया कें संग तों झट छोड़ि दे।
हमरा सँगे दाम्पत्य कें सम्बन्ध मन सँ जोड़ि ले॥

दण्डक विपिन मे संग मिलि विचरण करब स्वच्छन्द सँ।
सुखमय सुजीवन सतत काटब हम दुनू आनन्द स'॥

हमरा सदृश गुण-बल अधिकतम अन्य जनि रखतीह के ?
हमरा जकां बहुरूप छन-छन मे बना पौतीह के"?

हँसला ठहाका मारि रघुवर सूनि अटपट बचन कें।
उत्तर तुरत देलनि उचित श्री राम ओकरा कथन कें॥

"हे भोग-भोगिनि ! हम विवाहित छी हमर छथि नारि ई।
तोरा कोना हम संग राखब जखन छथिये प्यारि ई॥

हम प्रेम-बन्धन मे परस्पर सविधि बान्हल गेल छी।
हम एक-दोसर कें चरित स' मुग्ध-मोहित भेल छी॥

हम छी मनुज ई मानवी समता दुनूक विचार मे।
नहि दोष पौलहु आइ धरि सीताक शिष्टाचार मे॥

हम रवि-कुलक सन्तान छी ओ शशि-कुलक कन्या थिकी।
सुख-दुख सहैछी संगमिलि हम, हमर ई प्रिय जानकी॥

हम एक पत्नीव्रत निबाहक कैल अछि प्रण बूझि ले।
ओ प्रथम कोटिक नारि मे स्वामीव्रता छथि जानि ले॥

छथि छोट हमरे भाइ लछुमन जे प्रमुख विद्वान मे।
बल-बुद्धि सँ सम्पन्न सुन्दर प्रथित सब बलवान मे॥

हुँनके निकट जाकय मनोरथ अपन सभटा बाज तों।
कामातुरा भऽ गेल छें नहि आब कर किछु लाज तों'॥

रामक कथन पर ओ पहुँचिए गेल लखन-समीप मे।
बाजलि 'अहीं लछुमन थिकहुँ बड़वीर साती द्वीप मे॥

हमहीं अहाँ सन पुरुष के अनुरूप नारि लगैत छी।
सौन्दर्य मे हमहूँ अहाँ सँ थोड़ किछु ने पड़ैत छी॥

तैं शीघ्र अंगीकार कऽ अपने हमर स्वामी बनू।
सिन्दूर शिर मे दऽ अखन हमरा अपन पत्नी गुनू॥

वन मे करब विहार दूनू स्वरुचि एवं प्रेम सँ।
सानन्द बीतत समय सदिखन करब केलि स्वनेम सँ॥

रोकत कियो नहि किछु करब खर-दूषणक अइ राज मे।
सहयोग सभ क्यो देत नित अनुचित-उचित सभ काज मे"॥

निर्लज्ज अछि ई बूझि पड़लनि बातचीतक ढंग सँ।
नखशूप-सन ओ नारि के कहलनि लखन किछु व्यंग सँ॥

'हे कामिनी ! हम दास छी रामक अधीन रहैत छी।
सब काज आज्ञा पाबि हुँनकर हम सदैव करैत छी॥

हमरा बनौने पति कहेमे सेविका सीताक तों।
से सहन करमे कह कदापि कुमारि छें लंकाक तों॥

तैं बात हमरो मान कहुना राम के स्वामी बना।
तोरा-सदृश सीता कतय ? तों सुन्दरी काली जेना॥

ई नारि छनि दूवरि वयस कम रंग गोर विशेष छै।
डोका-सनक छै आँखि बड़का लाम-कारी केश छै॥

तों मोट-गांठक नारि तोहर हाथ-पैर विशाल छौ।
दूनू नयन रवि-किरण-सन दाँतो अहा विकराल छौ॥

तोरा-सदृश स्वच्छन्दचारिणि नारि के? संसार मे।
तुलना करत के नारि? तोरा चालि-चलन-विचार मे।
बहुरूप अद्भुत स्वमन सँ सहजहिं अहा! बनबैत छैं।
श्री राम कें स्वामी बना जौं नीक तों चाहैत छैं" ॥

बूझल कनेको नहि शुपनखा ओहि मृदु-उपहास कें।
पहुँचैत रामक निकट लागल ओ देखाबय त्राश कें॥
"सुन राम! हमरा बात कें" बाजलि निशाचरि कोध सँ।
"मानैत नहि छैं तो कियै? अति प्रेममय अनुरोध कें।

के? विश्व मे बुधियारि बेशी हम सुनारि सुबोध सँ।
सब भाँति योग्या छी जखन सीता कुनारि अबोध सँ॥
कहु तखन हमरा कथन पर किछु नहिं विचार करैत छैं।
हमरा विनय पर तों कियै? नहि ध्यान मन सँ दैत छैं॥

तों एहि दूबरि छोट निर्बल लाजवन्ती नारि सँ।
प्रेमक अखन कर त्याग कर अनुराग हम बुधियारि सँ॥
नहिं तौं अखनिये देखले हमरा निशाचरि-शक्ति कें।
लंकापतिक लग बान्हि कऽ लऽ जेब तीनू व्यक्ति कें॥

नहिं ज्ञात छौ हमरा बलक तैं तों एना अगड़ाइ छैं।
हूँ देखले अखने कोना नहि नारि छोड़ि पड़ाइ छैं"॥
ई बाजि झपटल वाज झपटै छैक पक्षी पर जेना।
भेलै जेना रवि-किरण कें पकड़त कोनो मच्छर तेना॥

रोकल सियापति निश्चरी कें कात कैलनि सीय सँ।
ओ दूर जा कऽ गरजि बाजलि जानकी कें पीय सँ।
"तों सभ बुझै छैं नारि हम असहाय बनि घूमैत छी।
पति सँ झगड़ि कऽ भागि वन-वन व्यर्थ हम बिचरैत छी॥

तों सभ तमाशा देख हम की? आब अखन करैत छी।
अपना स्वजन सभ कें एतय हम देखिले बजबैत छी"॥
ई देखि रघुवर चालि-बात बिचार कैलनि हृदय मे।
'अज्ञानि अछि किछु दण्ड दऽ दी मात्र एहना समय मे'॥

प्रभु देल आज्ञा लखन कें "सत्वर कुरूपा कऽ दिअऽ।
वर्त्ताव केलक बहुत अनुचित दण्ड समुचित दऽ दिअऽ।।
जौं दण्ड किछु नहि देब तौं ई परिक जैत जनैत छी।
तें अंग कें दी भंग कऽ वश दण्ड उचित बुझैत छी।।

अन्याय-अनुचित कार्य कें लखि बैसि जाइ अधर्म छी।
न्यायार्थ शत्रु-स्वबन्धु की? दण्डित करी सत्कर्म छी।।
केवल स्वहित दिशि ध्यान दऽ आनक अहित कें जौं करी।
तौं श्रेष्ठ नर कें कहब छनि ध्रुव विपद-वारिधि मे पड़ी"।।

अविलम्ब लछुमन उचित आज्ञा पाबि कऽ असुरारि सँ।
काटल दुनू टा कान एवं नाक निज तरुआरि सँ।।
ई जे प्रसंगक कैल चर्चा तकर एतबै अर्थ छै।
कामातुराक कुभावना सँ होइछ केहन अनर्थ छै।।

खर-दूषणक समीप तखने गेल विलाप करैत ओ।
जा कऽ अपन ई दुर्दशा देखबैत कहल कनैत ओ।।
"हे बन्धु! तोरा-वीरता-बल कें बहुत धिक्कार छौ।
बहिनक एहन दुर्गति करौ क्यो की? तोहर विचार छौ।।

जौं प्राण नहि लेमे अखन तों कान-काटनहार कें।
जौं छोड़ि देमे ओहि मानव नाक-नोचनहार कें।।
तौं आइ सँ बूझब हमहुँ असहाय-बन्धु-विहीन छी।
क्यो अछि सहायक नहि स्वजन सभ भाँति सँ हम दीन छी"।।



खर-दूषण-वध

दुखपूर्ण दुर्गति देखि एवं सूनि दुखद विलाप कें।
दम्भी असुर लागल बखानय तखन अपन प्रताप कें।।
"हे प्रिय बहिन! हम आब नहि बैसल रहब छन शान्ति सँ।
दुर्गति करब अहिना तकर हम पकड़ि कोनो भाँति सँ।।
कछमछ करै अछि मोन लऽली प्राण अखने वाण सँ।
जाकय ओकर गरदनि तुरत दी काटि अपन कृपाण सँ।।

तो॑ शान्ति रह हम आइ अखने मारि ओकरा दैत छी।
ऋषि-मुनि-मनुज हत्या करैमे वीर हम कहबैत छी"॥

देलक बहिन के॑ धैर्य कर मे अस्त्र लेलक लोह के॑।
ऊठल गरजि कऽ खर तखन तनलक भयानक भो॑ह के॑॥

कुरहरि-कोदारि-गुलेल-खंती मोट बाँसक लट्ठ लऽ।
चलि पड़ल पकड़ै लेल ओ चौदह हजारक भट्ठ लऽ॥

अछि राम नारी-स॑ग कतय ? बतबैक छै तैं लेल ओ।
श्रुति-नाक-कट्टो शूपनख चलि पड़ल आगू भेल ओ।

अशकुन अनेको॑ देखि तैयो दैत छल क्यो ध्यान की ?
ककरो विनाशक काल किछु रहलैक अछि सद्ज्ञान की ?

बाजल कियो "जिविते पकड़िली अखन दून्नू भाइ के॑।
श्रुति-नाक हमहूँ काटि कऽ दऽ दी शुपनखा दाइ के॑"॥

देखल सियापति निश्चरक सेना पहुँचिये गेल जौं॑।
आयल इकत्रित भऽ स्वयं मरबाक छै अइ लेल तौं॑॥

कहलनि लखन सँ "दंड एकरा दैक अछि नीके जकाँ।
हमरा बुझै अछि दीन अति निर्बल-भयातुर नर-जकाँ॥

तँ॑ जाउ सीता के॑ नुका राखू कोनो गिरि-खोह मे।
हम असुर के॑ मारैत छी जे पड़ल अछि मद-मोह मे"॥

रामक अनूप सुरूप लखि भऽ गेल मोहित सब अहा !
खर कहल दूषण सँ "अहा ! ई अछि केहन सुन्दर महा॥

सुर-असुर-नागरु मनुज देखल आइधरि हम सृष्टि मे।
नहि किन्तु एहन अनूप रूपक जीव आयल दृष्टि मे॥

यद्यपि कुरूपा बहिन के॑ कैलक एकर बड़ दोष छै।
ईहो जनै छी अधिक एकरा पर बहिन के॑ रोष छै॥

तद्यपि हमर मन ह्वै छ नहि बध करी एहन कुमार के॑।
उपजैत अछि मन मे दया ई योग्य नहि संहार के॑॥

तैं॑ एक जाकय दूत ई सन्देश हमर सुना दही।
'नारी अपन दय भागि दूनू जाथि' जाकऽ ई कही"॥

कहलक तुरत जाकऽ कियो श्री रामके' भय-भीति मे।
रघुबीर देलनि वीर-सन उत्तर तुरत रण-नीति मे॥

"क्षत्री थिकहुँ हम अखन तोरा सभक-सनके' ताकि कऽ।
मारैत हम घूमैत छी वन-वन अहर्निश डाकि कऽ॥

रण मे उतरि देखबैत छे' की ? आब तों' ममता-मया।
कायरपना कहबैछ जे निज शत्रु पर कैलक दया॥

भय छौक तों' कामान्ध बहिनक बात पर पड़ले' कियै ?
बल छौक नहि तों' युद्ध करबा लेल तों' अयले कियै ?

तों' सभ उपद्रव कऽ रहल छें ऋषि-मुनिक जप-यज्ञ मे।
जे करथि जन-हित यज्ञ जिनकर नाम छनि सर्वज्ञ मे॥

कर युद्ध अथवा नहि, मरण छौ सभक कोनो भाँति सँ।
करबाक अछि संसार के' द्रुति रहित निश्चर जाति सँ"॥

निर्भीक रामक कथन सुनि अबिलम्ब घूमल दूत ओ।
खर के' सुनौलक आबि भय सँ छल कँपैत अकूत ओ॥

खर-दूषणक उर-धधकि ऊठल अति प्रखर क्रोधाग्नि मे।
रघुवीर के' बध-हेतु झट धनु-वाण लऽ निज पाणि मे॥

दौड़ल गरजिकय वेग सँ जूझल भयानक युद्ध मे।
छोड़ल सहस्रो' वाण सभमिलि राम पर अति क्रुद्ध मे॥

ई देखि रघुवर तीन पग पाछू तखन हँटि अड़ि गेला।
ततकाल निश्चर-नाश करबा लेल ओ उद्यत भेला॥

पल मे सकल निश्चर मरल खर-दूषणक सँग खेत में।
होयत निशाचर-नाश बुझना गेल ई सँकेत मे॥

निशिचर अकम्पन एक छल खर-दूषणक पछुआर मे।
बचि गेल कहुना ओ चतुर रण-नीति-छल-व्यवहार मे॥

जाकय सकल घटना दुखद कहलक तुरत लंकेश सँ।
सुनितहि दशानन बाजि ऊठल गरजि क्रोधावेश सँ॥

"के ? ओ बली अछि भेल हमरा क्षेत्र एवं प्रान्त मे।
आयल करै लय ओ उपद्रव छीपि कऽ एकान्त मे॥

हमरा पराक्रम सँ विदित ओ मूर्ख नहि अछि भेल की ?
खर-दूषणक आघात सँ ओ अखनि धरि बचि गेल की ?
के छी बता दे शीघ्र अखने प्राण ओकर गेल छै।
ओ अछि अभागल दुर्दशा तौं आब निश्चय भेल छै॥
आश्चर्य हमरा ह्वैछ ओ बचि गेल कोन प्रकार सँ।
खर-दूषणक ललकार एवं कठिन प्रबल प्रहार सँ" ॥
बाजल अकम्पन जोड़िकर लंकाक प्रभु-सरकार सँ।
"सूनू निशाचर-पति ! कहै छी हम अखन विस्तार सँ॥
ओ अछि अयोध्यापतिक प्रिय सुत राम सुन्दर नाम छै।
सानुज रहै अछि विपिन मे सँग म अनूपम वाम छै॥
बड़ पैघ तीरन्दाज अछि कहबैत ओ संसार मे।
लगबैछ नहि ककरो स्वयं सँ ओ अधिक बुधियार मे॥
तैं हेतु एक उपाय अछि मानी उचित तौं से करू।
कोनो प्रकारेँ ओहि सुन्दरि नारि केँ छल सँ हरू॥
विश्वास अछि मरिजेत ओ वनिता-बिना सन्ताप सँ।
भऽ जैत शत्रुक नाश दशमुख ! तुरत अपने-आप सँ" ॥
ई उचित सम्मति बूझि पड़लैं तैं हृदय सँ मानि कऽ।
अविलम्ब नारी केँ हरब चलि पड़ल मन मे ठानि कऽ॥

□

मारीच-बध

मारीच नामक एक निश्चर छल अधिक बुधियार जे।
तकरे निकट पहुँचल त्वरित दशग्रीव केँ छल यार से॥
घटना सकल कहि देल रावण निज सखा मारीच केँ।
"अनबाक अछि रामक प्रिया केँ पकड़ि कहुना खींच केँ॥
तोँ बन सहायक हमर दऽ किछु सँग सम्प्रति काज मे।
तोँही देखै मे आबि रहले चतुर हमरा राज मे।
छल-कपट केने होउ अथवा अन्य आओर उपाय सँ।
सीता-हरण करबाक अछि हम चलब तोरे राय सँ" ॥

मारीच उत्तर देल "दशमुख ! ध्यान स" सोचू कनी।
विद्वान-ज्ञानी छी अहाँ हम जे कहैछी से सुनी॥

छनि राम जिनकर नाम जग मे पैघ छथि बलवान से।
तिनका स"गे जे शत्रुता करताह छथि अज्ञान से॥

ओ मूर्ख अछि देलक अहाँ के" एहन नीच विचार जे।
श्री राम-स"ग छल करै लै कहलक परम गँवार से॥

रामक स"गे जौं रारि ठानब हैत क्षति लंकेश के"।
कहि दैत छी अखनहि अहाँ के" त्यागि दी आवेश के"॥

घूमू अहाँ जा कऽ रहू निज नारि संग स्वच्छन्द सँ।
पर नारि के" पाछू पड़ू नहि, छी भने आनन्द सँ"॥

मारीच के" ई तर्क-संगत बात हितकर सूनि कऽ।
घूमल दशानन लंकदिशि मन मारि माथा धूनि कऽ॥

किछु काल के" उपरांत पहुँचलि शूर्पनख दरबार मे।
निज दुर्दशा देखबैत बाजलि कानि कऽ विस्तार मे॥

"हम तौं थिकहुँ तोरे बहिन दुर्गति तखन हो हमर ई।
कहतौक जग के" लोक की ? अपमान बड़का कक्कर ई"॥

दशग्रीव झट पूछल 'बता ई दुर्दशा केलकौक के ?
ई कान एवं नाक तोहर काटि हा ! लेलकौक के"?

बाजलि शुपनखा "भाइ ! दूटा मनुज वन मे अैल जे।
सँग मे परम सुन्दरि त्रिया छै तैं अधिक अगड़ल से॥

चाहै छलहुँ हम ओहि अनुपम नारि के" परतारि कऽ।
लऽ आनि तोरा दऽ दिऔ गेलहुँ ततऽ विचारि कऽ॥

तोरा गुणक वर्णन सुना कऽ छलहु" बैसलि आश मे।
की कान दूनू नाक काटल गेल ताहि प्रयास मे॥

हम की ? अधिक कहिऔ स्वयं तों" लंकपति सज्ञान छें"।
प्रतिशोध लेबक यत्नकर सब सँ अधिक बलवान छें"॥

रावण बहिन के" बात पर लागल बिचारय हृदय मे।
किछु करब नहि प्रतिकार तौं क्षति हैत आगू समय मे॥

तैं जाहि रूपें भऽ सकत सीता-हरण निश्चय करी।
युद्ध करत तों राम कें मारी स्वयं अथवा मरी॥
ई सोचि पुनि मारीच-लग चलि पड़ल बड़का डेग सँ।
झटकैत आ दौड़ैत पहुँचल मद्य कें आवेग सं॥
हकमैत बाजल "सुन हमर आदेश कें मारीच तों।
बुधियार छें बेबूझ नहि बन एहि वनचर-बीच तों॥
हम जे कहैत छिऔक से कर बात निश्चय मानि ले।
नहि तौं दशा दुखमय करा देबौक से तों जानि ले॥
बतबै छिऔक उपाय से कर अखन जाकय काज तों।
सोनाक मृग बनि दौड़ सिय-लग कर ने किछुओ लाज तों॥
लखि स्वर्ण-मृग मोहित सिया हेती अवश्य बुझैत छी।
पति कें पठौती पकड़ि कऽ अनबाक लेल जनैत छी॥
तों तखन जैहें भागि वन मे दूर बहु अति वेग सँ।
पाछू तोहर करतौक रामो दौड़ि बड़का डेग सँ॥
तों उच्चस्वर सँ पारिहें चित्कार "लछूमन छी जतऽ।
दौड़ू तुरत दौड़ू अहाँ रक्षा करू हमरा एतऽ"॥
ई वाक्य सुनितहि जानकी निश्चय पठौती लखन कें।
एकसरि सिया रहती कुटी मे बिनु कोनोटा स्वजन कें॥
झट पाबि अवसर हरण सीता कें करब छल-नीति सँ।
रानी बना राखब भवन मे स्ववश कय अति प्रीति सँ॥
तों शीघ्र तों ई काज कर पठबै छियौ हम सोचि कऽ।
नहि तों अखन हम मारि देबौ कंठ तोहर दबोचि कऽ"॥
मारीच सोचल "छैक लीखल विविध ग्रन्थ-पुराण मे।
विद्वान-वर्गक कहल छनि सूनल बहुत स्थान मे॥
कवि, भाँट, वैद्य, समर्थ स्वामी होथि अति धनवान जे।
आ पाककर्त्ता, भेद-ज्ञाता, शस्त्रधर, अज्ञान जे॥
अइ व्यक्ति नौ कें संग वैर-विरोध कथमपि नहि करी।
ई जे कहथि झट मानिली, नहि व्यर्थ संकट मे पड़ी"॥

दशमुखक शासन बड़ भयानक छैक से बूझल छलै।
मन मानिगेलै संह करबा लेल मन उद्यत भेलै॥

चलि पड़ल त' मारीच करबा लेल छल-युत काज ओ।
'मरबाक अछि हमरा अखन' कैलक तखन अन्दाज ओ॥

नहि कहल मानब एकर मारल जैब अखन जनैत छी।
मरबेक अछि तौं राम मारथि नीक सैह बुझैत छी॥

नृप हठ, त्रिया-हठ, बालहठ तौं अडिग सब कहबैत छै।
अइ तीन हठ कें नहि जगत कें जीव टारि सकैत छै॥

ई सोचि स्वर्णक हरिण बनि मारीच हरि-सुमरैत ओ।
सीताक आश्रम-निकट पहुँचल झट कुदैत-फनैत ओ।

सीताक पड़लनि दृष्टि मृग पर भऽ गेली विस्मित महा।
वन मे अखनि धरि एहन मृग नहि दृष्टि मे अयलनि अहा!

मृग-प्राप्ति लय इच्छुक सिया आतुर अधिक भेलीह ओ।
श्री राम-लछुमन कें पुकारय जोड़ सँ लगलीह ओ॥

"हे आर्यवर! सुन्दर मृगा के पकड़ि कऽ आनू एतऽ।
बहलैत मन सब कें एहन मृग पैब हमरा सभ कतऽ?

जौं पकड़ि एकरा नहि सकी तौं कोन दिशि सँ अैल ई।
कहुना पता लगाउ बचिकऽ कोन दिशि चलि गेल ई॥

जाकय ततय सँ लाउ पोसब पुत्र-सम प्रिय मानि कऽ।
भागय ने देब कदापि कखनो सतत राखब बान्हि कऽ"॥

लछुमन बुझौलनि बहुत तरहें 'ई कपट-मृग असुर छी।
सोनाक मृग बनि कय ठगइ लय अैल क्यो ई चतुर छी॥

होनी मुदा जे छैक से तौं अवश भऽ कऽ रहै छ।
सभ कें विवश भऽ काज तहिना तखन करक पड़ैत छै॥

कहलनि लखन कें राम "निश्चय थीक ई मृग असुर कें।
हम अखन तुरत खिहारि कऽ मारंत छी अइ चतुर कें॥

रक्षा सिया कें करू हम अइ हरिण कें मारैत छी।
आग्रह सिया कें मानिलीअनु उचित सैह बुझैत छी"॥

चलला मृगा कें पाछु पकड़ै लेल प्रभु धनु-वाण लऽ।
भागल कपट-मृग तेज सँ अति दूर वन मे प्राण लऽ।।

पहुँचल जखन अति दूर ओ मृग संग लऽ श्री राम कें।
लागल पुकारय राम-स्वर मे मधुर लछुमन नाम कें।।

"हे लखन! दौड़ू शीघ्र दौड़ू देर किछुओ नहि करू।
मारू पकड़ि झट हम दुनू मिलि कऽ अखन एकरा धरू"।।

व्याकुल व्यथा-युत आर्त्त स्वर सुनितहि सिया आकुल भेली।
"झट जाउ लक्ष्मण" बाजि कऽ चिन्तित अधिक ओ भऽ गेली।।

"हा! आर्त्त सँ बजबैत छथि की विपति पड़लनि नाथ कें"।
खसलनि नयन सँ नोर आ लगलीह पीटय माथ कें।।

सीताक स्थिति देखि दुविधा मे लखन हा! पड़ि गेला।
आदेश रामक सोचि कऽ कर्त्तव्य कें शोचै छला।।

सीता लखन दिशि तानि भौं कें कहल "की? अछि चित्त मे।
छी ठाढ़ आब कियै? जखन छथि पड़ल प्रभु आपत्ति मे।।

प्रत्यक्ष स्वर स्वामीक छनि स्पष्ट हम सूनैत छी।
सत्वर अपन धनु-वाण लऽ दौड़ू पुकारि कहैत छी।।

चिन्ता अहाँ कें ह्वैछ नहि अग्रज अपन प्रिय भाइ लै।
चुप भेल ठाढ़ कियैक छी? हम कहि रहल छी जाइ लै।।

अनुमान हमरा ह्वैछ मन मे पाप किछु भऽ गेल की?
अधिकार हमरा पर करब, नहि जाइ छी तें लेल की?

श्री राम संकट मे पड़थि प्रायः अहाँ चाहैत छी।
लोभी हमर भऽ गेल छी की? किन्तु हम कहि दैत छी।।

ओ सेव्य छथि सेवा करइ लय हुनक एलहुँ हम-अहाँ।
रक्षा हमर की? जौं पड़ल छथि नाथ संकट मे महा।।

हा! प्राणपति कें प्राण पर पड़तनि विपत्ति कदा कहूँ।
तौं कोन तरहें रहब रक्षित हम तथा लक्ष्मण! अहूँ'।।

खसबैत दृग सँ नोर कहलनि सिय जखन सौमित्र कें।
बाजऽ तखन पड़लनि लखन कें सूनि बोल विचित्र कें।।

'हे देवि ! सोचि अहीं कहू भव-बीच राम-समान के ?
नर-असुर-सुर-गन्धर्व तीनू लोक मे बलवान के ?
छथि राम रण मे कुशल, नहि बलहीन नहि असमर्थ ओ।
सीते ! करू विश्वास अहँ सभभाँति सर्व-समर्थ ओ ॥

हुँनका मधुर स्वर-सन अहाँ तौं व्यर्थ मिलान करैत छी।
असुरक कपट-युत बोल सीते ! ई थिकैक जनैत छी।
खर-दूषणक बध कैल एकसर राम जन-स्थान मे।
चौदह हजारक सैन्य कें मारल रणक मैदान मे ॥

हम जे शुपनखा कें कटलियै कान-नाक कृपाण सँ।
प्रतिशोध लेमक हेतु ओ पड़ि गेल जानरु प्राण सँ ॥
एहना परिस्थिति मे अहाँ कें छोड़ि हम जायब कोना ?
रक्षाक देने भार छथि आज्ञा प्रभुक टारब कोना '?

लखनक बचन सुनितहि सिया देलनि नयन सँ जल बहा।
आ क्रुद्ध-स्वर सँ कहल "छी अहँ निर्दयी लक्ष्मण ! महा ॥
किछु अछि दया नहि क्रूर अतिशय लखन ! अहाँ लगैत छी।
पड़लनि विपत्ति स्वनाथ पर अहँ बात की बनबैत छी ॥

अधिकार नहि होयत सिया पर व्यर्थ लोभ करैत छी।
होयत मनोरथ सिद्ध नहि कथमपि हमहुँ कहि दैत छी" ॥
सीताक सुनि वाणी लखन कें विवश कलक जाइ लै।
चलताह जिज्ञासा करक हित लखन अपना भाइ लै ॥

छनि किन्तु चिन्ता जैब हम एकसरि सिया कें छोड़ि कऽ।
कहने छला प्रभु रहब चेतल सतत सिया-अगोरि कऽ ॥
तैं की करी की नहि करी किछु तौं करक अछि सोचिली।
आज्ञा प्रभुक मानी कि मानी जे कहै छथि मैथिली ॥

माताक आग्रहपूर्ण आज्ञा मानि जौं नहिं जाइ छी।
तौं जन्म भरि लय हम बेसाहै की तखन लड़ाइ छी ॥
ई सोचि लछुमन कहल सिय कें "बेश तखन चलैत छी।
आशीष दी मा ! हम अखन श्री राम-लग पहुँचैत छी।

वश एक हमरो बात मानी मा ! विनय करैत छी।
अइ चिह्न सँ नहि हैब बाहर पारि रेखा दैत छी"॥

पाठक ! सिया पर नहि कदापि लगैब किछुओ लांछना।
पति-प्रेमिका सीताक पति-प्रति अमित प्रेमक भावना॥

पति पर पड़ल संकट कोनो सुनि होथि पागलि नारि जौँ।
पति लेल किछु बाजथि-करथि पर-पुरुष सँ तकरारि जौँ॥

तौँ दोष हुँनका पर मढ़ब कथमपि उचित नहि थीक ई।
प्राणेश-रक्षा लेल बाजथि नारि क्यो नहि नीक ई?

बुझबाक चाही राम केँ लीला करक छनि नर-जकाँ।
सीतोक सभटा रीति तहिना नारि साधारण-जकाँ।

रावण-असुर केँ भान नहि किछु होइ छथि भगवान ई।
सीता थिकी लक्ष्मीक शुचि अवतार नहि अनुमान ई॥

भऽ जाइ छै मति-भ्रष्ट सभ केँ अवश संकट-काल मे।
देखबैक छनि प्रभु केँ कोना फँसि जाथि नर भ्रम-जाल मे॥

पुनि आब आउ प्रसंग दिशि सीता बहुत चिन्तित छली।
एकसरि कुटी पर बैसि कऽ लगलीह सोचय मैथिली॥



सीता-रावण संवाद

ताही समय पहुँचल दशानन सुन्न कुटिया देखि कऽ।
ओ छल बनौने वेष साधुक एक सुन्दर टेबि कऽ॥

कर मे कमण्डल रँगल तन पर वसन गेरुआ रंग सँ।
भिक्षाक कैलक याचना सविनय निराला ढंग सँ॥

लागल प्रशंसा-युत वचन बाजऽ निशाचर-पति ततऽ।
चौंकल रहय देखैत चहुँदिशि ने कियो देखय एतऽ॥

बाजल सिया सँ "शोभने! अत्यन्त सुन्दरि छी अहाँ।
लक्ष्मी थिकहुँ वा कामदेवक वल्लभी रति की? अहाँ॥

सब अंग अछि उत्तम अहाँ केँ हम पसन्द करैत छी।
अयलहुँ कियै वन मे अहाँ एकसरि कियैक रहैत छी?

बहु बाघ-वानर-भालु एवं सिंह एतय रहैत छै।
दिन-राति सभ दिशि ई भयंकर पशु घुमैत-फिरैत छै॥
एकसरि कियै युवती ! अहाँ बैसलि-झखैत रहैत छी।
ई वयस सुन्दरि ! व्यर्थ बैसलि विपिन मे बितबैत छी॥
जिज्ञासु हमरा कें बुझू परिचय अपन सब दऽ दिअऽ।
पश्चात् हम के थिकहुँ से अखने अहूँ बुझिए लिअऽ"॥
अति निश्छला श्री जानकी हा ! बात मे भुतिया गेली।
वर साधु-ब्राह्मण बूझि बैसऽ लेल कहलनि मैथिली॥
बुझलनि सिया छथि ऋषि कियो तपसी-मुनीश महान ई !
भिक्षा मँगै छथि आबि भिक्षुक वेष मे भगवान ई॥
तैं कैल अति सत्कार कहलनि मृदुलतम अह्लाद सँ।
"हे पूज्य मुनिवर ! प्रथम भोजन कऽ लिअऽ चखि स्वाद सँ॥
छी अतिथि अपने तैं गृहस्थक नारि कें अछि धर्म ई।
अपने-सदृश साधुक करी सेवा मनुज कें कर्म ई॥
हम के थिकहुँ से कहि रहल छी अखन सब विस्तार सँ।
आयल कियै छी विपिन मे हम अखन किनक विचार सँ॥
मिथिलेश कें कन्या थिकहुँ श्री अवधपतिक पुतोहु छी।
सीता हमर थिक नाम रामक प्रिय विवाहित बोहु छी॥
देवर लखन अरु शत्रुहन एवं भरत सत्पात्र जे।
छथि सासु कौशल्या तथा केकइ-सुमित्रा मात्र से।
केकइ-वचन कें मानि चौदह वरष लै वन अैल छी।
ई डाँड़ि पारल लखन कें छनि ताहि बीच घेरैल छी॥
मृगया करक हित गेल छथि स्वामी तथा देवर कतौ।
सोनाक मृग कें पकड़ि कऽ अनताह ओ भेटतनि जतौ॥
मुनिवर ! अपन परिचय दिअऽ अपनेक थिक शुभ नाम की ?
अपनेक तप-स्थल कतय अछि पुण्य पावन धाम की" ?
रावण तखन स्पष्ट बाजल सीय सँ अभिमान मे।
"सीते ! हमहिं रावण थिकहुँ छी श्रेष्ठ सभ बलवान मे।

मानव असुर-सुर सकल प्राणी डरथि हमरा नाम सँ।
आश्रय हमर छनि प्राप्त सभ के" तेँ रहथि आराम सँ॥
अछि राजधानी हमर सुन्दर जकर लंका नाम छै।
सब सुखक साधन छै ततय अनुपम मनोहर धाम छै॥
बिचरैत छथि सुन्दरि सहस्रों सतत हमरा महल मे।
आनन्द सँ सुख-भोग भोगथि रहथि हमरा कहल मे॥
क्रीड़ा अनेकों करथि सभ मिलि विविध पुष्पक बाग मे।
भऽ जैब मोहित ओ जखन गउती मधुर प्रिय राग मे॥
आत्मा हमर कहैत अछि सभ सँ महासुन्दरि अहाँ।
हम पैब सीते! सुन्दरी बेशी अहाँ सँ प्रिय कहाँ॥
निश्चय बनायब आब पटरानी अहीं कें रानि मे।
हम राज्य-शासन-सूत्र अर्पण करब अहिंक सुपाणि मे॥
लंकेश के" भार्या कहायब बढ़त गौरव विश्व मे।
अधिकारिणी होयब अहीं निश्चय हमर सर्वस्व मे॥
वामाङ्ग-दिशि बैसब अहीं अरु शेष रानी दहिन मे।
लाखो टहलनी करत सेवा रहि अहिंक आधीन मे"॥

□

रावण के" सीताक फटकार

मुनि-रूप असुरक बोल सुनि कऽ जानकी क्रोधित भेली।
अपमान-युत दुर्वचन बाजक लेल वेवश भऽ गेली॥
"पापी-छली निश्चर! एना वर्त्ताव किये करैत छें।
हम राम बलशालीक पत्नी थिकहुँ तों ने जनैत छें"॥
अनुगामिनी तन-प्राण-मन सँ हम थिकहुँ से मानि ले।
अर्द्धाङ्गिनी हम छी हुँनक ओ पति हमर छथि जानि ले॥
रामक प्रिया-सँग एहि तरहें बात तों कऽ रहल छें।
तें बूझि हमरा अछि पड़ैत विशेष तों नहि पढ़ल छें॥
तों देखि आयल छें स्वयं धनु-यज्ञ-उत्सव-काल मे।
नहि ठहरि सकला राम-सन बलवान क्यो भूपाल मे।

के ? ठाढ़ होयत छनहुँ नर-वर राम-संग कतार मे।
रवि-कुल-वधू केँ छू सकत से व्यक्ति नहि संसार मे॥
चेष्टा करै छेँ व्यर्थ ई तोँ आगि मे कूदैत छेँ।
तोँ मूर्ख ! हमरा नारि साधारण जकाँ लगबैत छेँ॥
हम राम केँ पत्नी-प्रिया-अर्द्धाङ्गिनी छी जानि ले।
पति-भक्तिनी अनुगामिनी स्वामीक हमरा मानि ले॥
महि गन्ध केँ त्यागथि बरू जल तजथि निज गुण सरसता।
रवि ज्योति केँ त्यागथि कदाचित तजथि पावक उष्णता॥
त्यागथि पवन स्पर्श गुण तजि देथि चपला-चपलता।
सुन किन्तु पति-पद-कमल-रज कथमपि तजथि नहिं पतिव्रता॥
हमरा लगै अछि मृत्यु तोरा माथ पर मरराइ छौ।
दुर्दिन निकट छौ अै ल तैं की मन एना बौआइ छौ॥
तोँ आँखि केँ की सूई सँ पोछक प्रयास करैत छेँ।
अति तीक्ष्ण चाकू सँ अपन मृदु जीभ केँ सटबैत छेँ॥
राजा कोना रहमे बनल दुर्नीति मन मे आनि कऽ।
जग जीत तोँ सकमे कोना कऽ रारि प्रभु सँ ठानि कऽ॥
बाजऽ कोना चाहैत छेँ सुइ-ताग सँ मुँह-सीबि कऽ।
जीबऽ कोना चाहैत छेँ दशग्रीव ! माहुर पीबि कऽ॥
के पार सागर कैल अछि गरदनि मे पाथर बान्हि कऽ।
के हाथ सँ पकड़त जगत मे सूर्य नभ सँ आनि कऽ॥
नहि ठाढ़ भऽ सकबेँ छनों भरि राम-सन्मुख जानि ले।
हुँनका भयंकर सिंह आ अपना केँ गीदर मानि ले॥
ओ छथि महासागर जकाँ तोँ तुच्छ धारक श्रोत छेँ।
ओ बाज पक्षी-तुल्य तऽ तोँ एक भीरु कपोत छेँ॥
गज बूझ हुँनका तोँ बिलाड़ि-समान अपना केँ लगा।
आबहुँ समझि कऽ मूढ़ मन सँ भेल भ्रम केँ दे भगा॥
जे भिन्नता छै स्वर्ण-लोहा मध्य चानन-कीच मे।
छौ सैह अन्तर बूझि ले श्री राम तोरा बीच में॥

विख्यात छथि ओ विश्व मे बलवान मध्य बलिष्ठ ओ।
प्रख्यात उच्च विचारवानक बीच मध्य वरिष्ठ ओ॥
ई जानि ले नहि तौं ने रहमे जोबि कऽ संसार मे।
बेशी तोरा समझाउ की कहि आब हम विस्तार मे" ॥

सीताक ई फटकार सुनि कऽ बाजि ऊठल रोष मे।
भौं टेढ़ कऽ रावण सगर्व कठोरमय उद्घोष मे॥
"गर्विणि ! कुवेरक हम प्रतापी एक माझिल भाइ छी।
बलवीर-वैभवशील-विजयी-वर कहल हम जाइ छी॥

हम जाइ छी ठहरैत छी. देखैत छी जेमहर जतऽ।
पत्ताक हीलब बन्द आ सरिताक धारा थिर ततऽ॥
लागथि पवन झट बहय भय सँ मानि मम आदेश कें।
रवि होथि शीतल तप्त शशि निर्देश पर लंकेश कें॥

सुन्दर पुरी लंका हमर अछि स्वर्ग कें लजबैत जे।
बड़ पैघ उच्च विशालतम स्वर्णक महल चमकैत से॥
नाना प्रकारक फूल-फल सँ पूर्ण विटप सुवाग मे।
विकसित सुगन्धित पुष्प-वर मकरन्द सकल तराग मे॥

जखने पड़त लंकाक ऊपर दृष्टि मोहित जैब भऽ
लंकाक उपवन मे करी विचरण एहन मन जैत भऽ॥
गज-अश्वरथ सँ राजपथ शोभित सदैव रहैत छै।
गायक-गुणीगण मधुर स्वर युत सुखद गीत गबैत छै॥

हम की करू वर्णन दशो मुख थाकि जायत हमर ई।
सारांश मे कहि रहल छी सबभाँति सुन्दर नगर ई॥
हम भीख लेमक हेतु अयलहुँ अछि स्वयं लंकेश छी।
प्रेमक दिअऽ भिक्षा अहाँ जौं धर्म-भीरू विशेष छी॥

बुधिआरि भऽ स्वीकार हमरा नहि कियैक करैत छी।
पाछू अहाँ पछतैब निश्चय अखन हम कहि दैत छी"।
एवम्प्रकारें अपन बल-पौरुष बतौलक धाख ओ।
कैलक अनेकों यत्न मति-फेरक जनक-तनयाक ओ॥

नहि कऽ सकल अनुकूल सियकें लंकपति कथमपि मुदा
बाजल तखन ओ हारि कऽ किछु सानि बोली मे सुधा ॥
'भद्रे ! दिअऽ भिक्षा लखन-रेखाक बाहर आबि कऽ।
हम लेब बान्हल भीख नहि कथमपि अहाँ सँ जानि कऽ ॥

तौं आब जे देबाक हो से दऽ दिअऽ निज पाणि सँ।
आदर्श महिला छी अहाँ से जाय कहब स्वरानि सँ॥
हम मुग्ध छी भऽ गेल सुन्दरि ! अहँक शुद्ध विचार सँ।
हमरा समय भेटैत तौं सिखतहुँ अहिँक आचार सँ।

अपने थिकहुँ पावन परम सिय ! सकल महिला वर्ग मे,
के ? भेल अहाँ-समान चौदह भुवन एवं स्वर्ग मे" ॥
लंकापतिक अइ कपट पूर्ण सुवाक्य सँ श्री जानकी।
बुझलनि अहा ! प्राय: लगैअछि ई महा सज्ञान की ?

नहि कैल किछु सन्देह खलपर शुद्ध-हृदया जानकी।
बिनु भीख दऽ रहि जेब होयत पाप एहि समान की ?
सोचलि हृदय मे जानकी गृहिणीक तौं ई धर्म छी।
करबाक चाही ध्रुव अतिथि-सत्कार मानव-धर्म छी॥

धन कोन कार्यक अछि जखन घुरि जाथि याचक द्वारि सँ।
बलवान की ? बलहीन कें ओ नहि बचौलनि मारि सँ ॥
नहि भेल उत्तम आचरण पुस्तक-पढ़ब सब व्यर्थ छी।
इन्द्रिय विजय जौं कैल नहि पुरुषार्थ मनुजक अर्थ की ?

भिक्षुक कियो जौं आबि जाय अवश्य किछुओ भीख दी।
ई कार्य सभ नर कें करे कें चाहियनि से सीख दी "॥



सीता-हरण

होनी कोना कऽ रुकि सकत हैबाक जे छै हैत से।
सीता-हरण कारण बनत सब असुर मारल जैत जे॥
रेखाक बाहर भीख लऽ भेलीह जखने जानकी।
सत्वर सुअवसरपाबि कैलक हरण रावण पातकी॥

झट बलि पड़ल रथ पर चढ़ा कऽ राम-उर-रमणीय केँ।
रथ तेज सँ देलक बढ़ा भागल चुरा कऽ सीय केँ॥

हा! भूमिजा भयभीत भऽ लगली पुकारय नाथ केँ।
पशु-खग पथिक केँ देखि कानथि हाय! पीटथि माथ केँ॥

चीत्कार पाड़थि जानकी "हे राम! लछुमन! छी कतऽ?
अविलम्ब दौड़ू वीरवर! झट आउ हमरा लग एतऽ"॥

कानय तखन लगली अधिक आकुल छली सीता सती।
नहि धैर्य रहलनि हृदय मे बुधियारि केँ एकोरती॥

जकरा जतय देखथि निहोरा करथि तकरे जोड़ सँ।
सब भीज गेलनि वस्त्र एवं अंग आँखिक नोर सँ॥

"दशग्रीव हमरा हरण कैने जाइ अछि देखैत जा।
हम कोन आब उपाय करु किछु बुद्धि-बल बतबैत जा॥

कृपया कियो जाकऽ दुखद सम्वाद कहियनि राम केँ।
रावण-हरण कैलक कपट सँ आइ हुनका वाम केँ॥

विश्वास हम कैलहुँ अहा! अछि साधु-ब्राह्मण-रूप ई।
ज्ञाता चतुर्वेदक दशानन बुद्धिमान सुभूप ई॥

हम आइ धरि नहि सुनल पकड़त कयो पुरुष पर-नारि केँ।
सन्देह नहि किछु भेल एकरा पर हरत परतारि केँ॥

हे राम! अपने थिकहुँ न्यायी आर्य-पुत्र-महान छी।
दी दण्ड दोषी केँ उचित नर मे अहाँ मतिमान छी॥

ठग-धूर्त्त-अपराधी-छली केँ दण्ड दी नृप-धर्म छी।
सज्जन तथा निर्दोष पाबथि दण्ड पैघ अधर्म छी॥

रे निठुर रावण! हरण कैने जाइ छेँ हमरा कियै?
तोँ जानि कऽ दुष्काल केँ मँगबैत सिर पर छेँ कियै?

सृष्टिक रचयिता पुरुष अद्भुत छथि कलाविद जे कियो।
ओ देखि सब रहलाह अछि की? कऽ रहल अछि किछु कियो॥

भऽ गेल तोहर बुद्धि छौ अति भ्रष्ट रावण! मानि ले।
भोगऽ तोरा पड़तौक बड़का कष्ट निश्चय जानि ले॥

छल-रहित पश्चाताप कर जे भूल भेलौ मानि ले।
करथुन छमा जौं छमाशीलक चरण पड़मे जानि ले"॥

देखल सिया बैसल विटप पर विहग-वर बृद्धायु कें।
कहलनि कनैत-कनैत सीता गीधराज जटायु कें॥

"हे सभ्य पक्षीराज ! देखू निर्दयी लंकेश कें।
लऽ जा रहल अछि हरण कऽ कहबनि कने प्राणेश कें"॥

ई करुण क्रन्दन सूनि कऽ जगला विहग-वर नीन्द सँ।
जे गाछ पर सूतल छला हरिभजन कऽ निश्चिन्त सँ॥

देखल कनै छथि व्यथित-व्याकुल भऽ दयामयि मैथिली।
लऽ जा रहल अछि गगन-पथ सँ लंक दिशि रावण बली॥

ओ बहुत समझौलनि दनुज रावण निशाचार दुष्ट कें।
नृप नीति उत्तम धर्मयुत कहलनि वचन अति पुष्ट कें॥

नहि कान देलक किछु जटायुक कथन पर दम्भी महा।
ठनि गेल युद्ध खगेश देलनि गर्व कें असुरक ढहा॥

जे सुजन ज्ञानी होथि से नहि सहथि अत्याचार कें।
कथमपि ने होमय देथि कोनो निम्नतम व्यवहार कें॥

चुकलाह पक्षीराज नहि निज शक्ति भरि लड़लाह ओ।
रावण बली छल अत्यधिक तैं जीति नहि सकलाह ओ॥

ई छै नियम सृष्टिक असत कें जीत पहिने होइ छै।
सत्यक विजय तऽ अन्त मे निश्चय अवश्ये होइ छै॥

नहि होनि एहन विवेक पापी-दुष्ट-अधम-कुपात्र कें।
पश्चात भोगथि दुष्ट दुख, सुख प्राप्त हो सत्पात्र कें॥

छथि पड़ल आहत भेल हाय ! जटायु पथ पर शोक सँ।
प्यासल बहुत छथि हा ! मँगै छथि पानि विपिनक लोक सँ॥

सीता निरन्तर करुण स्वर सँ छथि करैत विलाप हा !
जे भूल भेलनि ताहि लेल करैत पश्चाताप हा !!

दृग बन्द भऽ गेलनि सिया कें रुदन एवं रंज सँ।
भऽ जाय पंकज साँझ खन जहिना निशिक-तम पुंज सँ॥

निश्चर महा दशग्रीव कें डाँटय बहुत लगलीह ओ।
धिक्कार-युत कटुबोल सँ अति कोप मे बजलीह ओ॥
'रे नीच रावण ! लाज किछु नहि होउ एहि कुकर्म सँ।
भऽ तों जेमे निन्दित जगत मे तुच्छतम दुष्कर्म सँ॥
विद्वान अपना कें बुझै छें किन्तु बूझ यथार्थ मे।
बड़ पैघ तों छें मूर्ख ! ब्राह्मण की कहौलें व्यर्थ मे॥
मिथिलाक महिला कें असुर वश मे करत, आश्चर्य छे।
भय-लोभ द्वारा वश करब तों अति असम्भव कार्य छे॥
छल-कपट धारण कऽ ठगथि ककरो हरण किछु करथि जे।
ईश्वर-निकट दोषी परम रावण ! अवश्ये बनथि से॥
करबनि विजय हम विश्व कें पुनि जीति लेबनि स्वर्ग कें।
कऽ लेब हम आधीन त्रिभुवन केर भूपति-वर्ग कें॥
ई धारणा जिनकर रहनि बुझू पड़ल छथि भ्रान्ति मे।
दुखमय तिनक जीवन कटनि आ रहथि सतत अशान्ति मे॥
अनुचित कोनोटा कार्य सँ क्यो शान्तिपूर्ण रहैछ की ?
वेदज्ञ छें नहि ज्ञात छौ पर - नारि हरणे ह्वैछ की ?
जे करथि अपने मोन सँ किछु, त्यागि शास्त्र-विधान कें।
से कष्ट भोगथि नियम छनि अति प्रबल विश्व-प्रधान कें॥
अपराध तों कयलें हुनक, छथि राम सर्व-समर्थ जे।
तोरा-सदृश पापीक रक्षा मे रहथि असमर्थ से॥
खल ! शरण जग मे कतहु तोरा आब भेटब कठिन छौ।
रे मूर्ख ! बूझि पड़ैछ तोहर आबि गेलौ कुदिन छौ॥
प्रभु राम कें सामान्य नरपति-तुल्य जौं लगबैत छें।
तौं बूझ तों अज्ञानतम संसार मे भटकैत छें॥
जे पुरुष चौदह सहश सेना कें हनल पलमात्र मे।
खर-संग-दूषण मरल जे छल अति प्रसिद्ध कुपात्र मे॥
से राम पुरुषोत्तम कोना कऽ छोड़ि देथुन दे बता।
दुर्गति बहुत करथुन दशानन ! लागि जैतनि जौं पता॥

अछि प्राप्त हमरा शक्ति देबक श्राप स्वामी-भक्ति सँ।
नहि किन्तु चाहै छी करक उपयोग क्रोधासक्ति सँ॥
हम आइ धरि नहि कैल अछि अपकार कोनो जीव केँ।
जौँ क्रोध उपजल किन्तु रहलहुँ क्रोध-विष केँ पीबि कै॥
जौँ छौ दया उर-मध्य किछुओ तौँ सिया केँ छोड़ि दे।
अथवा निठुर छेँ तौँ बधिक-बनि घेँट हमर मचोड़ि दे॥
नहि रहब जीवित आब हम ध्रुव प्राणपतिक वियोग मे।
तोँहूँ सतत अशान्ति रहमे पड़ल अति दुख-भोग मे॥
क्यो कहथि जा कऽ नाथ केँ हम कानि रहलहुँ अछि एतऽ
आबथि-बचाबथि प्राण केँ ओ होथि कानन मे जतऽ"॥
तखने सिया गिरि शिखर पर कपि-वर्ग केँ देखल अहा!
भेलनि हृदय मे धैर्य दृग सँ अश्रु केँ देलनि बहा॥
निज सकल आभूषण तुरत सब फेँकि देल उतारि कऽ।
प्रभु सँ कहत दऽ हमर वस्तु प्रमाण मे से धारि कऽ॥
पुनि दुष्ट निश्चर-नाथ केँ फजहति तखन लगली करै।
रावण मुदा सीता-कथन पर ध्यान किछुओ नहि धरै॥
सीता बुझौलनि वचन कहि बहु भाँति सँ दशग्रीव केँ।
छूलक कनेको मात्र नहि निष्ठुर निशाचर जीव केँ॥
कुल-नाश होमक छैक जकरा बुद्धि हत भऽ जाइ छै।
अति नीक सन बातो लगै कटु लेश भरि ने सुहाइ छै॥
बल-बुद्धि-विद्या-विभव सँ लंकेश छल गर्वित महा।
लऽ गेल सीता केँ करै लै दृश्य सँ मोहित अहा!
लऽ गेल ओ अन्तःपुरी मे विभव सभ देखथि सिया।
भऽ जाथि मोहित कहथि हमरा प्रेम सँ प्रेमी-पिया॥
रावण देखौलक सकल सुन्दर स्वर्णमय निज महल केँ।
छल मनुज सभ बान्हल जतय लाखो, देखोलक जहल केँ॥
लऽ गेल अति सुन्दर मनोहर सकल शुभ स्थान मे।
भंडार-आँगन-पाकघर लऽ गेल एक दलान मे॥

मणिमय सजल बैसक जतय बड़ ऊँच सिंहासन छलै।
गायक गुणीगण के॑ जतय नित राति-दिन गायन चलै।
लऽ गेल सीता के॑ दिखाबऽ रत्नमय रनिवास मे।
भऽ जाथि मोहित जानकी छल दुष्ट ताहि प्रयास मे॥
मन-मुग्धकर सुन्दर अनेकों ओ देखौलक दृश्य के॑।
लऽ गेल पुष्पक वाग मे देखथि मयूरक नृत्य के॑॥
नहि भेल मोहित किन्तु सीता केर मन तखनो अहा!
पति-शोक सँ कानल करथि केवल कहथि हा! राम हा!!
नहि चूकि रावण रहल किछु अपना जनैत प्रयास सँ।
सीताक दृढ़ता देखि कऽ बाजल तखन निराश सँ॥
"हे जानकी! सूनू हमर अन्तिम विचार कहैत छी।
सोचू अहाँ सब भाँति सँ किछु और अवसर दैत छी॥
होयब हमर की नहि? विचारू समय किछु हम दैत छी।
किछु दिन सुरक्षित रूप सँ हम तैं अखन रखैत छी॥
हम अखन किछु नहि कहब भीतर आब बारह मास के॑।
बिनु राम के॑ रहि सकी पहिने कऽ लिअऽ अभ्यास के॑'॥
ई कहि दशानन राक्षसी-गण के॑ कहल "सब सूनि ले।
हम जे कहैत छिऔक से सब नीक तरहें बूझि ले॥
लऽ जो सिया के॑ शीघ्र आइ अशोक-वनिका-कक्ष मे।
रक्षा हिनक करिहें मनविहें होथि हमरा पक्ष मे॥
गुण गाबि हमर विशाल वैभव कें बतबिहें रीति सँ।
बनिजाथि हमरे प्रेमिका ओ जाहि तरहें नीति सँ"॥

□

अशोक वाटिका मे सीता

हा! फँसि गेली श्री जानकी कामी दशानन-जाल मे।
ई डूबि कऽ मरि जाथि ने कहुँ शोक-ताल विशाल मे॥
अनुमान कऽ ब्रह्मा कहल सुरराज सँ साकेत मे।
'हे इन्द्र! रावण भेल अछि सम्प्रति विशेष अचेत मे॥

सीता-हरण कऽ लंक मे लऽ ऐल अछि अन्याय सँ।
होयत निशाचर-संग रावण-नाश एहि उपाय सँ॥

सुख-भोगिनी सीता निशाचरि-वर्ग बीच घेरैल जे।
स्वामीक दर्शन सँ अखन वञ्चित बहुत घबड़ैल से॥

वन मे ओतय श्री राम लछूमन जानकीक तलाश मे।
घूमैत छथि पागल जकाँ भूखल व्यथाकुल प्यास मे॥

लगि जानि समय विशेष निश्चर-नाश मे जौं राम कें।
तौं की बुझै छी पैब जीवित तखन रामक वाम कें॥

भूखलि-पियासलि नारि बहु दिन धरि जिबैत रहैथ के?
पति-प्रेमिका स्वामी-वियोगक कष्ट अधिक सहैथ के?

तौं हे सुरेश! प्रवेश करु लंकेश केर सुदेश मे।
लऽ जाउ खीर खुआउ सिय कें जाउ ब्राह्मण-वेष मे॥

कनियो करू ने बिलम्ब सीता अम्ब कें रक्षक बनू।
प्रिय एक अपना कें अहाँ सीताक सेवक मे गनू"॥

ब्रह्माक शुभ आदेश सँ सुरपति पहुँचला लंक मे।
सिय-लग पहुँचि सानन्द लय निद्रा-सुदेवी संग मे॥

घनगर अशोकक बृक्षतर बैसलि छली जनकक लली।
निद्राक द्वारा निश्चरीगण नींद सँ मातलि छली॥

श्री जानकी कें प्रार्थना कैलनि शचीपति प्रेम सँ।
'हे देवि! अनलहुँ स्वर्ग सँ हम खीर पावन नेम सँ।

हम इन्द्र थिकहुँ, कहैत छी अछि खीर ई भोजन करू।
नहि भूख-प्यासक त्रास लागत जानकी! धीरज धरू॥

हम देवगण सहयोग देबनि राम कें सब काज मे।
कपि-रूप बनि सेवा करब जे थिकहुँ देव-समाज मे"॥

इन्द्रक कहल पर तुरत नहि विश्वास कैलनि जानकी।
कहलनि शचीपति सँ अहाँ छी इन्द्र तकर प्रमाण की?

लक्षण सुरक अछि ज्ञात हमरा अखनि धरि तिन-चारि जे।
दीतहुँ लखा पतियैब तखने थिकहुँ अहँ असुरारि से॥

लक्षण सुनू पग पड़नि नहि भू पर जनै छी देव कें।
आँखिक पलक कखनो खसनि नहि सुर तथा सुरदेव कें॥
नहि वस्त्र पर धूरा लगनि अति स्वच्छता नित वसन मे!
कुम्हलानि नहि माला सुमन कें घाम किछु नहि बदन मे॥
देखनि लखा सुरपति जखन, विश्वास कैलनि प्रभु-प्रिया।
सुरराज सँ कहलनि तखन आनन्द सँ जनकक धिया॥
"देवेन्द्र ! दर्शन देल अपने थिकहु पिता-समान मे।
बहुतो दिनक उपरान्त सुनलहु प्रभुक नाम स्वकान मे॥
भूपति ससुर दशरथ, पिता मिथिलेश जे वर भूप मे।
देखैत छी देवेश ! अपने कें अखन तद्रूप मे॥
सानन्द कैलहुँ खीर हम स्वीकार आज्ञा पाबि कऽ।
दर्शन अपन दऽ धैर्य दी अहिना बराबर आबि कऽ"॥
ई कहि सिया लऽ इन्द्र कर सँ खीर अपना हाथ मे।
ध्यानस्थ भऽ मन कें लगौलनि स्वपति श्री रघुनाथ मे॥
सविनय निवेदन कैल पति कें जनक-नन्दिनि प्रेम सँ।
"अपने जतऽ छी ततहि प्रभु ! ई अछि समर्पित नेम सँ"॥
पश्चात प्रभुक प्रसाद-रूपें ग्रहण कैलनि प्रभु-प्रिया।
निश्चर-निशाचरि बीच रहली पूर्ववत घेरलि सिया॥

□

राम कें अन्देशा

हँ आब एमहर राम कें देखू मृगा कें मारि कऽ।
अबितहि छला अपना कुटी पर वेग सँ झटकारि कऽ॥
की हरिण रूपी असुरकें सुनि बोल परम विचित्र ओ।
मन मे कहल सुनने हेता श्री जानकी-सौमित्र ओ॥
सुनितहि कपट-युत बोल, चिन्ता-उदधि मे पड़ताह ओ"।
अपनहु अनेको अपशकुन लखि बहुत घबड़ैलाह ओ॥
अनुमान कऽ बजलाह "किछु घटना अशुभ अछि भेल की ?
प्रिय जानकी एवं लखन पर विपत्ति अछि पड़ि गेल की ?

अति वेगपूर्वक वाम दिशि गीदड़ भगै अछि दहिन सँ।
कूकुर भुकै अछि आ कनै अछि पग बढ़ै अछि कठिन सँ॥

कलक निशाचर पैघसन अपकार बूझि पड़ैछ की?
मिथिला कुमारी कें पकड़ि लऽ गेल असुर लगैछ की?

खर-दूषणक सँग कैल बध बहु असुर कें तें लेल की?
प्रतिशोध लेमक हेतु हमरा पाछु ओ पड़ि गेल की"?

ई सब बजैत-अबैत रघुवर जखन आश्रम-दिशि छला।
लछुमन भेटलथिन मार्ग मे जे अति उदाश लगै छला॥

पूछल लखन कें राम "लक्ष्मण! आबि रहलहुँ अछि कियै?
निर्जन विपिन मे छोड़ि एकसरि सीय कें एलहुँ कियै?

कैलहुं अहाँ ई काज अनुचित परम अहँ बुधियार भऽ।
सीताक रक्षा-लेल ककरा लखन! एलहुं भार दऽ॥

हम तौं अहाँ पर आइ धरि कैने छलहु विश्वास ई।
आज्ञा उलंघन करब नहि कथमपि अहाँ, छल आश ई॥

कैलहुँ मुदा बड़का उलंघन लखन! हमरा वचन कें।
विश्वास हमहूँ करब आब कोना अहूँ कें कथन कें॥

आशा अहाँ सँ बहुत हम कैने छलहु भविष्य मे।
हमरा अहाँ मे भाव छल जहिना रहय गुरु-शिष्य मे॥

हा! किन्तु आइ देखैत छी बदलल अहाँक स्वभाव कें।
ई पार भव-सागर करत के? खेबि जीवन-नाव कें"॥

रामक कथन सँ भऽ दुखी लछुमन सभय लगला कहै।
"भैया! सिया कें छोड़ि दी एकसरि विचारो नहि रहै॥

तजि किन्तु आबय पड़ल अछि माताक कटु आदेश सँ।
हमरा पठौलनि अछि अहाँ-लग डाँटि कऽ अति क्लेश सँ॥

अपनेक स्वर मे क्यो पुकारल जे सुनल हम ध्यान सँ।
"लक्ष्मण एतय दौड़" जखन सुनलनि सियो निज कान सँ॥

से सूनि व्याकुल भऽ गेली दृग भरि गेलनि बहु नोर सँ।
"झट जाउ लछमन जाउ" सीता बाजि उठली जोर सँ॥

अपना जनैत बुझौल हुँनका हम अनेकों भाँति सँ।
सीता मुदा घबड़ैल रहली ओहि काल अशान्ति सँ॥

लाचार भऽ अयलहुँ दयानिधि ! आब हमरा जे कही।
दी दण्ड फजहति जे करी स्वामी ! अहाँ कें सब सही"॥

कहलनि कृपानिधि "आब पश्चात्ताप कैने हैत की ?
होयबाक जे छै हैत से रोकल ओ किन्नहु जैत की ?

सुख सँ रहब जौं करब अपना बुद्धि कें अनुसार सँ।
ओ कार्य सुखमय अधिक होयत करब गुरुक विचार सँ॥

परबुद्धि सँ सब कार्य होयत भ्रष्ट निश्चय जानि ली।
नारी-दुराग्रह बूझि हुँनकर कथन झट नहि मानि ली॥



रामक विलाप

देखु-चलू सत्वर कुटी पर हम दुनू अति वेग सँ।
अछि पँघ अन्देशा चलू दौड़ैत बड़का डेग सँ॥

अगुतैल आ घबड़ैल दूनू भाइ कुटिया पर एला।
नहि देखि सीता कें कुटी मे राम व्याकुल भऽ गेला॥

लगला पुकारय "हा ! सिये ! तजि राम कें गेलहुँ कतऽ।
लछुमन ! तुरत लऽ चलू हमरा होथि वामाङ्गिनि जतऽ॥

लक्ष्मी सदृश सुन्दरि सिया प्रिय सहचरी प्राणक थिकी।
शुभकाल आ दुष्काल मे सुख-दुखक संगिनि ओ थिकी॥

भरि सृष्टि मे सीता महा सुन्दरि कहल हा ! जाथि ओ।
लावण्य लखि कय लखन ! लक्ष्मी न्यून जानि लजाथि ओ॥

श्री मैथिली बिनु शिथिल हम किछु करक नहि चाहैत छी।
सीता-बिना सचमुच लखन ! आनन्द नहि मानैत छी॥

हम आब उत्तम कार्य कोनो लखन ! कऽ ने सकैत छी।
बिनु सीय अपना कें लखन असहाय-सदृश बुझैत छी॥

जीअब असम्भव हमर अछि ओ छथि हमर प्राणेश्वरी।
रहली सदैव स्वअंग बनि कऽ संगिनी ओ सहचरी॥

हा ! की कहू, व्याकुल अधिक हम शोक सँ भऽ गेल छी।
सीताक बिनु हम एक तरहें लखन ! मुरदा भेल छी॥

सीता-बिना जीवित छनहुं भरि आब रहि ने सकैत छी।
परलोक मे पहुँचब पिता सँ बात सूनि सकैत छी॥

वनबास कें आज्ञा कियै टारल अहाँ पुछताह जौं।
हम की तखन उत्तर पिता कें देब लखन ! बताउ तौं॥

हम एक केवल पुत्र निज माताक हा ! मरिजैब जौं।
कथमपि ने कोशल्या जननि कें छणहुं जीवित पैब तौं॥

बचती सुमित्रा कहु कदापि सुसौत कौशल्या बिना।
पुनि लखन ! तखन बताउ बिनु माता अहाँ जीअब कोना ?

बाजू लखन ! सीता हमर जीबैत छथि की मरि गेली।
की ? क्यो हरण कैलक सिया कें पाबि एकसरि ओ छली॥

छल-कपट-चोरी सँ सिया कें असुर कैलक हरण जे।
चौदह भुवन मे अछि कियो नहि देत हुँनका शरण से॥

की ? छथि कतहुं कनैत की खा गेल राक्षस मारि कऽ।
बौआति छथि वन मे कि मरली डूबि हीया-हारि कऽ॥

दुख सहक अनुभव नहि छलनि सीता सती सुकुमारि कें।
रहबाक अवसर आइ धरि एकसर ने भेलनि प्यारि कें॥

कपटी निशाचर शोर छल कैने अहाँ कें जखन हा !
भऽ गेल छल सन्देह हमरो पैघ मन मे तखन हा !

ओ उच्च स्वर असुरक छलै किछु हूबहू हमरे जकाँ।
से सूनि सीता अरु अहाँ भेलहुं सशंकित नर जकाँ॥

अनुमान हमरा ह्वैछ तैं लाचार भऽ गेलहुँ अहाँ।
सीताक चिन्ता कैल नहि चिन्ता हमर कैलहुं अहाँ॥

जे हो, परञ्च सुबोध भऽ कैलहुं अहाँ दुष्कार्य ई।
एकसरि सिया कें छोड़ि आयब उचित छल नहि आर्य ! ई॥

नारी-दुराग्रह केहन लछुमन ! होइ छै नहि ज्ञात की ?
आवेश मे अबितहि ने सोचय उचित-अनुचित बात की ?

अवसर अखन भेटलैक अछि अति अधम क्रूर-सुरारि केँ।
ओ लेत बदला मारि कऽ प्रायः सिया-सुकुमारि केँ'॥

भऽ गेल व्याकुल राम छथि दुख-विरह शोक अतीव सँ।
पूछथि विटप-पशु-विहग रवि शशि विपिन-बासी जीव सँ॥

"हे तरु अशोक! सशोक लोकक शोक दूर करैत छी।
हमरा सदृश विरही जनक विरहाग्नि केँ मिझबैत छी॥

जौँ आबि बैसलि होथि कखनो अहँक छाहरि मे सिया
तौँ हैत बूझल कोन दिशि गेली एतय सँ मम प्रिया!

जामुन! अहाँ तौँ मुनि-जकाँ वन मे सदैव रहैत छी।
फल अहँक श्यामल हमहुँ श्यामल एक रंग लगैत छी।

वन-पथिक केँ विश्राम हित नित धूप-शीत सहैत छी।
कहु तौँ कृपा कऽ त्वरित जौँ सीता-पता जनैत छी॥

हे शाल! नयनि-विशाल केँ किछु हाल कहु ततकाल मे।
सिन्दूर-शोभित लाल छनि सब काल जिनका भाल मे॥

हे आम! हमरा वाम केँ तौँ नाम अहाँ जनैत छी।
छनि लाम वाल तमाम तिनके सकल ठाम तकैत छी॥

कृपया हुँनक किछु सुधि जनै छी तौँ अहाँ हमरा कहू।
संसार मे सबदिन हमर कहबैत उपकारी रहू॥

कटहर! अहाँ छी कष्ट-हर तेँ हरण कष्टक झट करू।
मिथिला कुमारी केँ पता हमरा बता कऽ दुख हरू॥

पीपर! अहाँ केँ पात पीयर भेल पर उपकार मे।
पति-प्रेमिका पातिव्रता सीताक सुधि कहु सार मे॥

जूही! जनैछी जानकी केँ जौँ जिबैत अहाँ जतऽ।
अपना सँगे हमरा उड़ा कऽ लऽ चलू ओ छथि ततऽ॥

हे प्रिय कनैल! कनैत कान्ता केँ पता कहु छथि कतऽ।
सब दिन अबैत छलीह लोढ़य सुमन श्री सीता एतऽ॥

गेना! गुलाब! बताउ जे नित गाबि गीत सबेर मे।
सुनबै छली से गायिका छथि कतऽ असुरक फेर मे॥

चम्पा ! अटल विश्वास अछि जौँ अहँक अनुकम्पा अहा !
भऽ जाय तौँ ध्रुव भेट जयती जानकी सुन्दरि महा ।।

चन्दन ! कतहुँ क्रन्दन सुनल अछि जनक-नन्दिनि केँ अहाँ ।
कहु हे कमल ! कोमल अहीँ सन ओ कमल-नयनी कहाँ ।।

हे वट ! कदम्ब ! अनार ! गूलरि ! सब हितैषी हमार जौँ ।
कृपया पता सीताक कहु उपकार मानब परम तीँ ।।

कोकिल ! अहीँ सन बोल जिनकर से सिया कहु छथि कतऽ ?
हे काग ! सुन्दर राग-स्वर भऽ जैत सीता कहु कतऽ ?

हे हरिण ! सीता-हरण कैलक के ? चरण धरैत छी ।
कहु, अहिँक जातिक पाछू पड़ि कऽ विपति ई भोगैत छी ।।

गजराज ! तोरे चालि सन सीता चलै छथि छौ पता ?
तोँ चालि सीखक लेल हुँनका की ? छिपौने छेँ बता ।।

हे सिंह ! वानर ! भालु ! क्यो देखल कतहुँ सुकुमारि केँ ।
ताकू अहूँ सभ भेँट ओ जौँ जाथि, लाउ सम्हारि केँ ।।

सीताक सुधि सचमुच अहीँ सभ देब हमरा ध्रुव बता ।
अति व्यथित छी व्याकुल पुरुष केँ दूर करु सत्वर व्यथा ।।

हे सूर्य ! अहिँक प्रकाश सँ अछि सब प्रकाशित सृष्टि मे ।
प्रत्यक्ष सकल पदार्थ अछि दिनकर ! अहाँ केँ दृष्टि मे ।।

छी पुण्य-पापक अहीं साक्षी जगत अछि मानैत ई ।
नहि रहि सकय छीपल अहां सँ किछु, पुराण कहैथ ई ।।

कृपया पता सीताक अपने दी बता अछि प्रार्थना ।
अपने हमर पुरखा थिकहुँ तैँ कऽ रहल छी याचना ।।

के हरण कऽ हुनका कतऽ अछि दऽ रहल दुख-यातना ?
ताकू अहूँ भेटथि कतहुँ, दीअनि अवश्ये सान्त्वना ।।

हे वायु ! कोनो बात नहि अज्ञात अपने सँ रहै ।
सर्वत्र अपने केँ पहुँच अछि, विश्वव्यापी सब कहै ।।

सुखदायिका सीता कतय छथि जौँ अहाँ दीतहुँ बता ।।
सीता-हरण कैलक असुर के ? जोँ अहाँ कहितहुँ पता ।।

तौँ ई परम उपकार अपने केँ ने हम बिसरब कदा।
हम पूर्व सँ उपकृत्य छी कृतकृत्य भऽ जैतहुँ सदा"॥

हे चन्द्र ! मुख छनि अहिक सन तेँ शशिमुखी कहबैथ ओ ?
छथि अहिक वंशज जनक-पुत्री सतत प्रसन्न रहैथ ओ॥

करितहुँ कृपा स्पर्श कऽ निज किरण केँ सिय-अंग सं।
छुबितहुँ हमर तन हर्ष हमरा ह्वैत एहि सुढंग सँ॥

हे मा अवनि ! अपने अपन दुहिताक सुधि नहि लैत छी।
तेँ भेल छथि निपता, विमाता-सदृश अहाँ लगैत छी॥

आबहुँ पता लगाउ भैटथि राखि लीअनि कोड़ मे।
कन्या करोड़ोँ मे ने भेटत एहन हिनका जोड़ मे॥

हे वरुण ! अहाँ बताउ तौँ को ? डूबि मरली जानकी ?
भूखलि-पियासलि भेल तत्पर छथि तजइ लै प्राण की ?

आकाश ! नहि आकार अछि सुधि कहब की साकार केँ।
साकार बिनु रहि सकत को ? अस्तित्व निराकार केँ" ॥

एही प्रकारेँ राम पूछथि विपिन मे सब जीव सँ।
चेतन रहय वा जड़ रहय जीवित तथा निर्जीव सँ॥

निज सत्त्व केँ ओ विसरि बिरही बनल छथि मानव-जकाँ।
सीताक सूरति ध्यान मे अबितहि बनथि पागल-जकाँ॥

मृग-नैन कोकिल-बैन लखि-सुनि भान भेलनि राम केँ।
सीता लगहि मे छथि कतहुँ लगला पुकारय वाम केँ॥

"सीते ! सुनीते ! सत्यभाषिणि ! शीलवन्ती हे सिये !
मैथिलि ! मधुर भाषिणि ! जनक-धी हमर प्राणक अति प्रिये !

हमरा कियै हे प्रियतमे ! व्याकुल बनौने छी एना ?
प्राणेश्वरी छी तौँ अहीं बिनु प्राण केँ जीअब कोना ?

हृदयेश्वरी ! सुन्दरि ! जगत-आनन्द-दायिनि ! जानकी !
बिनु अहँक एकसर श्रीमती ! हम रहि सकब श्रीमान की ??

लछुमन ! अबै अछि नहि कतहुँ सीता अहूँ के दृष्टि मे
की ? आब ताकय पड़त वन-वन नगर घर-घर सृष्टि मे।

हम आ अहाँ मिलि एक स्वर सँ शोर तौ करियनि कने।
सुनि बोल उत्तर देथि प्रायः कतहुँ सँ जौं ओ भने।

जे गीत-वाद्यक मधुर ध्वनि सदिखन सुनैत रहै छली।
से बाघ-सिंहक शब्द सुनि की बधिर प्रायः भऽ गेली॥

लछुमन ! कदाचित मारि कऽ खा गेल होयत असुर जौं।
सीताक बिनु जीअब असम्भव जैत भऽ ध्रुव हमर तौं॥

तैं आब हम रचना करी सीताक नवल स्वरूप कें।
अछि किन्तु ई सन्देह हम रचि सकब ओहि अनूप कें॥

हमरा अटल विश्वास अछि सीता ने तजती प्राण कें।
ओ जा सकै छथि राम-पत्नी शरण मे नहि आन कें॥

लछुमन ! कुटी सँ चलल होयब अहाँ जखन तलाश मे।
तखने सियो भऽ गेल पाछू होथि अधिक उदाश मे॥

वन-बीच भुतिया गेल छथि अनुमान हमरा होइछ ई।
बैसलि कतहुँ कनैत छथि ओ सैह बूझि पड़ैछ ई॥

तैं तुरत अन्वेषण करब हमरा सभक अनिवार्य छी।
सम्प्रति कहू लछुमन अहीं दोसर एहन अछि कार्य की ?

सब जीव पर करुणा करब अछि हमर सरल स्वभाव जे।
तकरा बुझै अछि लोकसभ हमरा मे निर्बल भाव से॥

हे अनुज ! हम पुरुषार्थ अपन देखैब, आब छिपाउ की ?
कोमल स्वभाव समेटि अखनो निठुरता नहि लाउ की ?

अछि शक्ति जे हमरा प्रवल ओ रहत कहिया लेल से।
उपयोग अखने करक अछि ई आबि अवसर गेल जे॥

छथि विश्व मे सुर-नर-निशाचर-आर्य तथा अनार्य जे
क्यो देत छथि नहि ध्यान हमरा बात पर आश्चर्य से॥

रहना कियो नहि आब जग मे चैन सँ कहि दैत छी।
जड़ि जैत ई ब्रह्माण्ड जौं कऽ देब क्रोध कहैत छी॥

सब सूनि पहिने लेथु जौं सीताक देता नहि पता।
बिरहो जनक क्रोधाग्नि होइछ केहन से देबनि बता॥

सीताक दर्शन हैत नहि जौं लखन ! हमरा नेत्र कें ।
तौं करब नारि-विहीन हम सम्पूर्ण सृष्टिक क्षेत्र कें"॥

ई कहि लखन कें धनुष पर झट वाण कें सन्धानि कऽ ।
"होयत अखन बड़का प्रलय" कहलनि जगा क्रोधाग्नि कें ॥
"जौं ताकि कऽ सिय कें कियो नहि आनि देत समीप मे ।
तौं आब हे लछुमन ! कियो बचता ने सातो द्वीप मे ॥

हम देखि लेलहुं क्यो हितैषी नहि समस्त समाज मे ।
केलहुं बहुत कें हित कियो नहि अैल हमरा काज मे "॥
देखल लखन प्रभु तौं पड़ल छथि सिय-विरह कें शोक मे ।
जे नर-प्रवर कहबैत छथि ज्ञानी परम त्रैलोक मे ॥

हा ! आइ नर-सामान्य-सन व्याकुल-व्यथित छथि भेल जे ।
लीला-बिहारी ई करै छथि खेल बुझना गेल से ।
बुझितहि छला लछुमन, भरल भण्डार छथि ई ज्ञान कें ।
लगलाह देमय सान्त्वना लघु जीव श्री भगवान कें ॥

"हे आर्यवर ! अगुताउ नहि, लागत कियै नहि सिय-पता ।
तकरे प्रयत्न करैत छी, सब देत अपने सँ बता ॥
अपने अपन अनुपम स्वभावक त्याग कथमपि नहि करी ।
आदर्श-मर्यादा-पुरुष छी, कुपथ पर पग नहि धरी ॥

पर्वत जेना कम्पित कदापि ने होथि वायु विशेष सँ ।
तहिना अहाँ-सन व्यक्ति विचलित होथि नहि दुख-क्लेश सँ ॥
त्यागथि ने चन्दन गन्ध सुरभित घसति कतबो जैब जौं ।
कुशियार कें कतबो अहाँ छीलब मधुरते पैब तौं ॥

कंचन अपन सुवरण निखारथि दग्ध भेलो पर सदा ।
सज्जन रहथिदुख समुद, सदगुण तजथि नहि कथमपि मुदा ॥
हँ देख लीअऽ मभक सम्मुख रथ ककर ई पड़ल छै ।
टूटल जकाँ ओघरैल पहिया संग धूरी धरल छै ॥

लड़लाह अछि अखने कियो संग्राम बड़का भेल की ?
ई बून्द रुधिरक कहि रहल अछि जीव मारल गेल की ?

के अछि लइल ककरा संगे से हम पता लगबैत छी।
ई युद्ध भेल कियैक ! कारण बूझि अखन कहैत छी॥
सीता पुनीता लेल राक्षस बीच ई रण भेल जौं।
रण जीति कऽ के असुर सीता केँ कतय लय गेल तौं॥
यावत पता लागत प्रभो ! तावत अहाँ धीरज धरू।
सज्ञान छी अज्ञान भऽ नहि काज अगुता कऽ करू॥
श्री जानकी केँ अपहरण रघुवीर ! कने हैत जे।
रामक अचूक अमोघ शर सँ कतय बचि कऽ जैत से॥
ताकय दिअऽ किछु काल हमरा गिरि-विपिन सब ठाम मे।
पूछय दिअऽ सब सँ प्रथम प्रति नगर-घर-घर ग्राम मे॥
जौं उचित रूपेँ ताकि हारब किन्तु लागत नहि पता।
तखने सकल संसार केँ हमहूँ तुरत देबनि बता॥
दुख धैर्य पूर्वक सहक अछि अपने स्वयं सर्वज्ञ छी।
आदर्श राखब नहि तखन सीखत अहाँ सँ अज्ञ की?
आपत्ति ककरा पर पड़ल नहि आइ धरि संसार मे।
कैलक मुदा सब दूर सोचि उपाय विविध प्रकार मे॥
सुत एक सौ देखू छलनि गुरुवर महर्षि वशिष्ठ केँ।
राजर्षि विश्वामित्र हत्या कैल सकल वलिष्ठ केँ॥
दऽ देल नृप हरिचन्द्र द्विज केँ दान निज ऐश्वर्य केँ।
विकलाह डोमक हाथ किन्तु ने त्याग कैलनि धैर्य केँ॥
शशि-सूर्य धरि छथि ग्रसल जाइत पाबि अवसर राहु सँ।
पकड़ैल छी पहिनो अहाँ हमहूँ सहस्राबाहु सँ॥
ई तौं विपति सब पर बराबरि प्रभु ! अबैत-रहैत छै।
दुख-भोग दुष्कर्मक कुफल अनिवार्य सहक पड़ैत छै॥
सभ क्यो मुदा दुख-सहन करिते अैल अछि संसार मे।
धीरज धरो हमहूँ अहाँ अछि उचित हमर विचार मे॥

□

जटायु-उद्धार

प्रभु ! छथि परीक्षा लैत दैव सदैव सज्जन लोक कें।
से सोचि धीरज धारि उर सँ दूर कऽ दी शोक कें॥

वैरी-विनाशक लेल हमसभ वीर विपुल बलिष्ठ छी।
चिन्ता कथी ? अपने स्वयं बुधियार-बीच वरिष्ठ छी"॥

शोकित सियापति सारगर्भित वचन लखनक सूनिकऽ।
धीरज हृदय मे राम धैलनि सोचि मन मे गूनि कऽ॥

देखल विहंग जटायु कें हत भेल रंजित रक्त सँ।
"ई भेल दुर्गति अछि कियै ?" रघुवीर पूछल भक्त सँ॥

बाजल "सिया कें हरण कयने जाइ छल रावण बली।
चित्कार कऽ रक्षा करू श्री जानकी बजने छली॥

तैं हेतु हम लड़लहुं बहुत निज शक्ति भरि लंकेश सँ।
रथ-क्षत्र सारथि कें हताहत कैल कोधावेश सँ॥

रघुवर ! मुदा हम मारि नहि सकलहुं निशाचर भूप कें।
ओ पाँखि दूनू काटि हमरा कऽ देखलक बदरूप कें॥

ओ छी कुवेरक भाइ, वेटा विश्रवाक कुपात्र ई।
केवल पता कहलहुँ, हमर सहयोग एतबे मात्र ई॥

ई बाजि प्राणक त्याग कैल जटायु प्रभुक समीप मे।
प्रभु कें कहय पड़लनि "एहन के ? भक्त जम्बू द्वीप मे॥

बजलाह लछुमन सँ सियावर कैल बड़ उपकार ई।
हम हा ! एकर करबैक किछुओ आब प्रत्युपकार की ?

अछि पूज्य पिता-समान ज्ञानी-भक्त वीर महान ई।
प्रेमी हमर दुख काल कें संगी परम सज्ञान ई॥

दाहक-क्रिया हैबाक चाही सविधि हमरा हाथ सँ।
सद्गति परम भेटनि समादर होथि स्वर्गक नाथ सँ"॥

श्रद्धा-सहित संस्कार सब भेलनि सुपक्षी-राज कें।
चलला सियापति सीय-अन्वेषण करैलय काज कें॥

छल एक विपिनक बीच मे राक्षस कबन्धक नाम सँ।
मुठभेड़ भेलनि ओहि निशिचर के लखन श्री राम सँ॥

ओ देल परिचय अपन मृत्युक काल मे श्री राम कें।
बाजल विनययुत बात बढ़ियाँ एक बड़का काम कें॥

"हे राम! सीता कें अहाँ झट पँब जाहि प्रकार सँ।
से युक्ति हम बतबैत छी समुचित अपन विचार सँ॥

अछि ऋष्यमूक पहाड़ पर वानर-प्रवर सुग्रीव जे।
बड़ बन्धु वालि सुवीर स भय-भीत भेल अतीव से॥

ओ वालि बड़ अगड़ैल अछि ब्रह्माक किछु वरदान स।
सुग्रीव कें ओ अछि भगोने अपन राज्य-सिमान स॥

यद्यपि परम बुधियार अछि सुग्रीव विक्रमशील ओ।
तद्यपि अवश्ये वालि कें सँग युद्ध मे किछु ढील ओ॥

चाहैत अछि ओ प्रभु! अहीं सन एक निश्छल मित्र कें।
उरमे ने राखय जे कियो ईर्ष्या-कपट छल-छिद्र कें॥

निज-निज व्यथा-गाथा परस्पर कहि सुनायब नाथ! जौं।
बनिजैत सहजहि ओ सहायक अहँक दहिना हाथ तौं॥

पबिते अहँक सहयोग बदला लेत अपना भाइ सँ।
ओ तखन चूकत नहि पता सीताक लागय जाहि सँ॥

कृपया अहाँ तकरा बनाउ सुमित्र सुन्दर काज ई।
सब भाँति सँ हित ओ करत सुग्रीव वानरराज ई॥"

चललाह तखने भाइ दूनु बूझि काजक बात ई।
पहुँचे गेला सुन्दर परम पम्पा-सरोवर-कात ई॥

मुनिवर मतंगक दिव्य आश्रम-लग रहै छल भक्तिनी।
सवरी जकर शुभनाम छल जे बड़ पवित्र तपस्विनी॥

रामक चरण-धूरिक प्रतीक्षा मे सदैव रहैथ ओ।
प्रभु कें समर्पण करक हित फल चूनि-चूनि रखैथ ओ॥

सर्वज्ञ कृपानिधान प्रेमी रसिकवर चुकतथि कोना।
भक्तिनि समर्पित वस्तु बिनु कैने ग्रहण रहितथि कोना॥

□

सुग्रीव संग मित्रता

स्वीकार कऽ सीताक वर सवरीक सभ सत्कार कें।
साकेत कें सत्वर पठौलनि देखि भक्ति-विचार कें।।

चलला तखन सुग्रीव सँ प्रभु मित्रता करताह जे।
गिरि-निकट मे जाकय दुनू ताकय ओतय लगलाह से।।

ओ ऋष्यमूक पहाड़ पर बैसल रहय भय-भीति सँ।
सोचैत छल बदला कोना कऽ वालि सँ ली नीति सँ।।

देखल घुमैत-फिरैत पर्वत-कात नर अनजान कें।
सत्वर पठौलक प्राप्त परिचय करक हित हनुमान कें।।

श्री राम-सम्मुख अंजनी-सुत आबि विप्रक रूप मे।
पूछल सियापति सँ विनय-युत "के अहाँ अइ रूप मे?

हे वीर! बूझि पड़ैत अछि बलवान अहाँ महान छी।
वन विकट मे बिनु यान अहँ घूमैत लऽ धनुवान छी।।

सुन्दर शरीरक कान्ति सँ तौं ह्वैछ बड़ सज्ञान छी।
की? थिकहुँ नृपति-कुमार कानन-विपथ सँ अनजान छी।।

परिचय अपन कृपया दिअऽ एमहर कतय चल जाइ छी।
वन-प्रान्त मे विरही-जकाँ की हेतु सँ बौआइ छी।।

सब अंग ललित अहाँक लखि अद्भुत भुजा विशाल कें।
शुचि भाल मञ्जुल गाल घूँघरवाल अधर सुलाल कें।।

के हैत नहि मोहित अहँक ई रूप सुखकर देखि कऽ।
दू बात सँ बतियैत के नहि पथ अहाँ के छेकि कऽ।।

बाजू अहाँ किछु, तखन बूझब की अहाँ चाहैत छी।
तजि निज भवन की हेतु सँ वन मे एना घूमैत छी।।

सुग्रीव नामक एक छथि कपिवीर एतय रहैथ जे।
बालिक निकालल छथि सतत भागल पड़ैल फिरैथ से।।

तिनके पठावल हम अहाँ लग अखन दौड़ल अैल छी।
सचमुच अहाँ के थिकहुँ बूझबा लेल हम अगुतैल छी।।

हनुमान हमरे नाम अछि छी दूत हुँनकर एक टा।
बेकार बैसल काज किछु नहि भरि रहल छी पेट टा॥

यद्यपि जनै छी जतय मन हो जा अवश्य सकैत छी।
चाही जेहन धारण करै लय रूप से बनबैत छी॥

जौं मित्रता कऽ ली अहाँ सुग्रीव वानरराज सँ।
तौं हम अपन परिचय करा ध्रुव देब अपना काज सँ"॥

ई बाजि हनुमत ठाढ़ रहला राम-लग चुपचाप सँ।
मन मे बिचारथि बूझि ली उद्देश्य वार्त्तालाप सँ॥

सोचल एतय श्रीराम "क्यो छथि बुद्धिमान महान ई।
विद्वान बूझि पड़ैछ कोनो राज्य केर प्रधान ई"॥

कहलनि लखन सँ 'जेंक चाही देखि तों लीतहु कने।
मिलि जैत मन तों मित्रता कऽ लेब भेटल अछि भने"॥

देलनि अपन परिचय सविस्तर राम द्विज-हनुमान कें।
कहलनि "अहाँ ब्राह्मण लगै छी बड़ पयोनिधि ज्ञान कें॥

सज्ञान सुग्रीवक सकल गुण ज्ञात हमरो भेल जें।
बूझू एतय आयब हमर अछि भेल हुँनके लेल तें॥

स्वीकार अछि हमरो करब मैत्री तुरत सुग्रीव सँ।
अछि स्नेह हमरा अधिक वानर-भालु-विपिनक जीव सँ"॥

चलला पवनसुत कान्ह पर लय राम-लखन कुमार कें।
सुग्रीव कें सम्मुख उपस्थित कैल अवध-कुमार कें॥

देलनि सुआसन पाणि-गहि बैसौल आदर-भाव सँ।
परिचय करौलनि पवन-सुत दूनूक मृदुल स्वभाव सँ॥

वर्त्ताव कैलनि मधुररूपें छल-कपट कें त्यागि कें।
भेलनि दुनू मे मित्रता साक्षी बनौलनि आगि कें।

ओ एक-दोसर सँ परम सन्तुष्ट भऽ लगला रहऽ।
बालिक निठुर व्यवहार कें सुग्रीव सब लगला कहऽ॥

सुनितहि सखाक विपत्ति प्रण कैलनि तुरत राघव ओतऽ।
अविलम्ब मारब बालि कें हम हैत निष्ठुर ओ जतऽ॥

सुग्रीव कें कहलनि "अखन ललकार रण हित वालि कें।
ओ आबि जायत क्षेत्र मे हम तखन अवसर पाबि कै।।

मारब अवश्ये मित्र ! करु विश्वास एकहि बाण सँ।
ओ बालि, देखब हाथ धोयत तखन अपना प्राण सँ"।।

रामक कथन-अनुसार कैलनि कपि-प्रवर ओ काज कें।
मारल अबध कुमार अवसर पावि वानर-राज कें।।

पश्चात् देलनि राज-पद सुग्रीव कें अति हर्ष सँ।
जे राज्य-बंचित भेल भागल रहथि बहुतो वर्ष सँ।।

युवराज-पद दऽ देल राघव चतुर वालि-कुमार कें।
बन-बीच बाँटल गेल फल-मिष्टान्न विविध प्रकार कें।।

सुग्रीव सोचल राम कैलनि निज प्रतिज्ञा पूर्ण जौं।
हमहूँ सियाक तलाश मे दी झोंकि बल सम्पूर्ण तौं।।

सीताक अन्वेषण करक हित सब तखन तत्पर भेला।
सुग्रीव कें आदेश सँ वानर सकल चहुँदिशि गेला।।

हनुमान पर विश्वास बेशी छलनि वानर-राज कें।
तें छलनि सभटा भार हुँनके पर कठिनतम काज कें।।

लगला कहय हनुमान सँ "सब तोहर अद्भुत काम छौ।
आकाश-पृथ्वी-जल जतय चाहें पहुँच सब ठाम छौ।।

वेरोक गति मति तेज बड़का डेग वेग विचित्र छौ।
बल मे पिता वायुक बराबर छें पवित्र चरित्र छौ।।

सत् शास्त्र कें ज्ञाता तथा बलवान मे प्रख्यात छें।
तें तों महावीरक परम शुभ नाम सँ विख्यात छें"।।

हनुमान केर सुकंठ मुख सँ बड़ प्रशंसा सूनि कऽ।
कैलनि विचार सुधीर रघुवर तखन मनमे गूनि कऽ।।

अछि उचित हिनके हम पठाबी जानकीक तलाश मे।
घुनताह जाधरि पवनसुत ताधरि रहो सभ आश मे।।

ई सोचि रघुपति नाम खोधल सुभग कर-अरविन्द सँ।
दय देल कपि कें पाणि मे अँगूठी अपन आनन्द सँ।।

कहलनि "पवन सुत ! हमर ई शुभ चिह्न अपने लय लिअऽ।
पहिचानि जैती जानकी विश्वास मन मे कय लिअऽ॥

कपिवर ! अहँक बल-बुद्धि लखि लच्छन लगै अछि नीक ई।
आत्मा कहै अछि काज बनि जायत अहाँ सँ ठीक ई॥

कपिश्रेष्ठ ! जाउ तलाश मे जनकात्मजा भेटथि जतऽ।
कय भेंट दय ई मुद्रिका लय चिह्न जाउ अहाँ ततऽ" ॥

हनुमान केँ साहस बढ़ल प्रभु-मुद्रिका-स्पर्श सँ।
प्रभु-पाद-पद्म-प्रणाम कय प्रस्थान कैलनि हर्ष सँ॥

शुभ धारणा बनवैत मन मे झट बिदा भेलाह ओ।
उर धारि रामक रूप केँ जय राम कहि चललाह ओ॥

मन मे कहैत सुदास बनलहुँ आइ सँ अवधेश केँ।
करबनि टहल, पालन करब मन सँ सकल आदेश केँ॥

ओ कार्य हम पहिने करब स्वामीक छनि अनिवार्य जे।
नहि लेब किछु विश्राम जाधरि पूर्ण नहि हो कार्य से" ॥

कपि संग कऽ चललाह दक्षिण दिशि समुद्रक कात मे।
पहुँचैत सब गेलाह दच्छिन प्रान्त बातक बात मे॥

रहलाह सब भटकैत किछु दिन गिरि-विपिन-उद्यान मे।
नहि पता सीताक लगलनि किछु कोनो स्थान मे॥

हा ! ओ हकासल आ पिआसल बैसि कऽ मैदान मे।
सोचै छला की ? हम करी सब आब अइ स्थान मे।

तखने पहुँच गेला ततय सम्पाति शुभ संयोग सँ।
चिन्ता हटा देलनि सभक व्याकुल छला जे शोक सँ॥

देलनि पता ओ छथि सिया दशमुखक लंका नगर मे।
जौं जा सकी तौं जाउ छिपि कऽ ओतय रातुक पहर मे।

सुनितहि पवनसुत कहल निज वीरत्व केर स्वभाव सँ।
हम जा सकै छी रामचन्द्रक मुद्रिकाक प्रभाव सँ॥

दर्शन करब सीता-चरण केँ हम अहा ! निज नयन सँ।
सन्देश रामक हम सुनेबनि मधुरतम प्रिय वयन सँ॥

ताबत अहाँ सभ जलधि कें अइ पार बैसल तौं रही।
बस आइ झट सीता सती कें आनि दी जौं सब कही॥
सीता हेती नहि लंक मे तौं जैब हम साकेत मे।
ताकब ततय हम पैसि कऽ सब देवगणक निकेत मे॥
जौं नहि कतहु भेटतीह तौं पकड़ब असुरपति-टीक कें।
हम मारि थप्पड़ गाल मे कऽ देब दुर्गति थीक के।

□

हनुमान कें समुद्र-लंघन

ई बाजि सागर-पार करबा लेल फनला जोर सँ।
नभ-बीच नागक माइ सुरसा आबि गर्जल घोर सँ॥
बाजलि "ठहर तों भक्ष्य बन लें आबि ककरो श्राप सँ।
हम खैब तोरा आबि जो मुँह-बीच अपने-आप सँ॥
चल लाँघि कऽ हमरा जेमे वानर ! बुझै तों खेल छें।
संयोग सँ आहार बनि कऽ आबि सम्मुख गेल छें"॥
ई कहि अपन विशाल मुख कऽ अैल वेग प्रचण्ड सँ।
निज देह कें कैलनि द्विगुण हनुमान ओकरा तुण्ड सँ॥
पुनि तिगुन कैलक ओ पवनसुत चारिगुन कैलनि अहाँ !
सुरसाक दुस्तर दर्प दानव-दलन देलनि द्रुति ढहा॥
कपि-रूप लखि ओ अधिक मुँह कें पैघ कैलक अपन जौं।
लघु-रूप बनि मुँह मे टहलि बाहर भेला शिव-सुवन तौं॥
सन्तुष्ट भऽ सुरसा कहल "हे सुकपि ! अहाँ सुयोग्य छी।
रघुवीर-कार्यक सिद्धि मे केवल अहींटा योग्य छी॥
सन्देह छल सम्पन्न होयत की ? अहाँ सँ काज ई।
तेँ छल परीक्षा-मात्र, कहबा मे अहाँ सँ लाज की ?
आगू बढ़ू निर्भीक भऽ रूकू कतहुँ नहि बीच मे।
रोकक जे चेष्टा करत से फँसत निश्चय कीच मे"॥
रुकलाह नहिं, बढ़लाह पुनि हनुमान कपिवर साहसी।
आकाश-मग मे एक अद्भुत सिंहिका छल राक्षसी॥

छाहरि पकड़ि गति रोकि देलक एक छन हनुमान केँ ।
मन मे कहल हनु रोकि के ? देलक पुनः नभ-यान केँ ।।

देखल निशाचर एक अछि स्थिर जलधि-मझधार मे ।
छायाक ग्राही थीक कँने मुँह विचित्र प्रकार मे ।।

कैलनि अपन तन संकुचित हनुमान वृद्धि विचार सँ ।
झट सिंहिका-मुख पैसि चिरलनि हृदय निज नख-धार सँ ।।

बाधा बिविध केँ झेलि कैलनि हनु प्रवेश विदेश मे ।
लगलाह ताकय जानकी केँ गुप्त चूनल भेष मे ।।

सीता-हरण उपरान्त रावण रहै छल भय-भीति सँ ।
लंकाक तैं रक्षाक कयने छल प्रबन्ध सुरीति सँ ।।

सब काल पहरूदार पहरा पर उपस्थित शस्त्र लऽ ।
के ? आबि जायत कोम्हर सँ चौंकल रहै छल अस्त्र लऽ ।।

कविवर पहुँचला साँझ खन लंकाक उत्तर द्वार मे ।
लंकाक रक्षा-लेल राक्षस ठाढ़ एक कतार मे ।।

क्यो देखि नहि राक्षस सकल पैसैत श्री हनुमान केँ ।
मन मे जपैत रहैथ हनु शुभ नाम दयानिधान केँ ।।

कैलनि विचार 'अहा ! प्रथम माताक शुभ दर्शन करी ।
चिन्तित हेती बैसलि कतहुँ से बूझि आगू पग धरी ।।

देखैथ नहिं क्यो तेहन छोपल हम बनाबी रूप केँ ।
आयल छलय क्यो राति मे केवल कहय सब भूप केँ ।।

ताकी सिया केँ रहय सूतल जखन धरि सब चैन सँ ।
दर्शन प्रथम माताक कयली अखन अपना नेन सँ ।।

प्रायः हेती बैसलि कतहुँ एकसरि सिया एकान्त मे ।
अथवा हेती डूबल कतहुँ सिय शोक-सागर-प्रान्त मे" ।।

लगलाह ताकय जननि सीता केँ सकल स्थान मे ।
बाहर तथा भीतर भवन आँगन तथा दलान मे ।।

धैलनि विलाइक वेष ढुकला रावणक प्रति गेह मे ।
देखथि कतहुँ सुकुमारि अति पड़ि जाथि ओ सन्देह मे ।।

प्रति महल कें प्रति खंड मे कपि घूमि तकलनि सीय कें ।
नहि किन्तु पाबथि कतहुँ सीता-सदृश शुचि रमणीय कें ॥
देखल कतहुँ सुन्दरि सजलि सुवरण सुभूषण सँ अली ।
देखल कतहुँ रमणी पुरुष-सँग रमण कऽ सूतलि छली ॥
क्यो नारि निज युग पाणि उर पर राखि सूतलि नीन्द सँ ।
क्यो एक-दोसर सँ सटल बान्हल भुजा-अरविन्द सँ ॥
देखल अनेकों कामिनी कें हँटल आँचर अंग सँ ।
क्यो वसन-रहिता छथि लजायल भेल मानक भंग सँ ॥
सुमुखी सकल छल सजलि सोलह भाँति कें श्रृंगार सँ ।
प्रेमीक संग प्रेमक प्रदर्शन-पटु सकल प्रकार सँ ॥
मोहित पुरुष कें छल कियो कयने सुप्रेमालाप सँ ।
क्यो नारि पति लग आबि रहली सूति जनु चुपचाप सँ ॥
ककरो मुखक छवि छल कहैत हँसैत सतत रहैथ ओ ।
ककरो मुखाकृत कहनि दुसनी नारि विशेष लगैथ ओ ॥
सूतलि कियो बक-बक करैं छथि भाँग पीने छथि जेना ।
पति सँ झगड़ि क्यो आबि सूतलि होथि लागथि छथि तेना ॥
लंकेश अनने छल हरण कऽ नारि बहुतों देश सँ ।
सब नारि बन्दी भेलि छल लंका पतिक आदेश सँ ॥
कपिवर कहल 'कखनो न रहती सिय दशानन कहल मे ।
नहि सूति रहती एहि तरहे मातु लंका-महल मे ॥
उद्दण्ड-उच्छृंखल त्रिया कें लंक रहबा योग छै ।
निज पति पसन्द ने छैक तकरे लेल लंका भोग्य छै ॥
सीताक सुन्दर रूप-चालि-स्वभाव हमरा ज्ञात जे ।
नहिं षोड़शांशो तकर कोनो हम पबै छी बात से" ॥
तकलनि सकल गृह-महल-बाग-तड़ाग उपवन भवन मे ।
नहि पाबि वैदेही-जननि कें जखन कोनो सदन मे ।
लगला विचारय सिय बिछुड़ि छथि गेल प्रभु श्री राम सँ ।
एहना परिस्थिति मे ने कथमपि रहि सकथि आराम सँ ॥

सुतती ने भोजन कऽ सकै छथि दशमुखक आवास मे ।
श्रृंगार कें तौं बात की ? बैसलि हेती उदाश मे ॥

सुर-असुर कतबो होथि क्यो सुन्दर गुणी-धनवान की ?
दोसर पुरुष-सँग मे ने रहि छन भरि सकै छथि जानकी ।

गज-वाजि-गर्दभ-वृषभशाला ताकि थकलहु" हम एतऽ ।
तकलहुँ समग्र कुठाम कथमपि हम ने जा सकितहु" जतऽ ॥

सीताक छाया-मात्र हम नहिं कतहु" किछु देखैत छी ।
हेती कतहु" कनैत-हिचकति किन्तु किछु न सुनैत छी ॥

अनुमान होइछ जानकी जीबैत नहिं छथि लंक में ।
कैलक कियो हत्या अधम जे पड़त पापक पंक मे ॥

सीता-हरण कऽ मूढ़ ओ अगुतैल भागल हैत जे ।
श्री रामचन्द्रक वाण सँ वचि कय कतय ओ जैत से ॥

अछि किन्तु अन्देशा अधिक लय गेल हो आकाश सँ ।
सुविशाल सागर देखि मूर्च्छित भेल होथि हताश सँ ॥

निष्प्राण बूझि कठोर रावण फेंकि देने हैत जौं ।
निश्चर कियो झट दय जलधि सँ छानि कै लऽ जैत तौं" ॥

ओ होथि परम दयालु रखने होनि अपना गेह मे ।
जौं निर्दयी ओ हैत पीड़ा दैत हेतनि देह मे ॥

लखि राक्षसीगण कें सिया डरि गेल होथि लगैछ जे ।
निज प्राण देने होथि सीता त्यागि बूझि पड़ैछ से ॥

माताक दर्शन सँ तखन वंचित हमहुँ रहि जैब की ?
'सीता-पता लागल' सुखद सम्वाद कहि नहिं पैब की ?

दर्शन बिना कयने सिया कें घूमि कऽ हम जैब जौं ।
घूमक अवधि बीतल अवश्ये दण्ड बड़का पैब तौं ॥

हम मुँह देखेबनि की ? कहब सुग्रीव बानर-राज कें ।
हम अधम, नहिं जग-बीच रहलहु" आब कोनो काज कें ।

पुछताह वानर-वर्ग लंका जाय की कैलहु" अहाँ ।
'आशा लगौने सब छलहुँ, सुधि कहब सियकें ध्रुव अहाँ ॥

हा ! हम तखन की देब उत्तर पूछि बैसथि कैल की ?
श्री राम केँ कहबनि कथी ? नहि अछि फुरैत बतैब की ?
सीताक दर्शन भेल नहि कहबनि अमंगल बात जौं ।
जीवित कदापि ने रहि सकै छथि राम प्रभु पल-मात्र तौं' ॥

प्राणान्त प्रभु केँ देखि लछुमन त्यागि देता प्राण केँ ।
ई सुनि रिपु-सूदन भरत बचताह ? बिनु भगवान केँ ॥
एवम्प्रकारेँ रघुकुलक भऽ जैत निश्चय नाश टा ।
सुग्रीव-अंगद-संग वानर-वंश हैत विनाश टा ॥

तैं सुधि सिया केँ बिनु लगौने जाइ नहि, लंके रही ।
श्री जानकीक तलाश मे दिन-राति भरि घुमिते रही" ॥
ई सोचि पुनि बजलाह हनु 'बैसल रही ने हताश भऽ ।
तकलहुँ जतय नहि ततय ताकी अधिक मनमे आश कऽ ॥

उत्साह कथमपि त्यागि नहि करबाक चाही जानि कऽ ।
लागल रही सत्कर्म मे होयत सफलता मानि कऽ ॥
तकलनि सघन बसवारि-बाड़ी सब तड़ाग इनार मे ।
बहु तार-विटप-कतार एवं धारसभक किनार मे ॥

लंकाक कोनो भाग नहि बाँचल रहल कपि-दृष्टि सँ ।
सीताक दर्शन लै विनय सदिखन करथि निज इष्ट सँ ॥
लगलनि पता नहि किछु जखन शंकर-सुवन हनुमान केँ ।
लगला करय अनुमान धऽ कऽ ध्यान श्री भगवान केँ ॥

क्यो छथि अवश्ये एहि गृह मे भक्तवर भगवान कें।
जाकऽ प्रथम दर्शन करी हम एहि बड़ सज्ञान कें॥
छथि भक्त ई भगवान कें चरणाम्बुजक आशक्ति सँ।
लागत पता सीताक निश्चय एहि सज्जन व्यक्ति सँ'॥

उठले छला तखने विभीषण भक्त रामक नाम लऽ।
हनुमान-सम्मुख ठाढ़ भऽ गेलाह सनम्र प्रणाम कऽ॥
पुछलनि "अहाँ के थिकहुँ ? कृपया अपन परिचय तों दिअऽ।
जे काज सँ अयलहुँ एतय स्पष्ट बाजि सुना दिअऽ॥

ओ भक्त-भक्तक मिलन अनुपम केहन से कहि सकत के ?
दूनूक उर मे हर्ष कतबा भेल वर्णन करत के ?
"हम राम कें सेवक थिकहुँ" कहलनि बचन प्रिय मधुर मे।
"हम अैल छी सीताक सुधि लय एहि लंका नगर मे॥

सुग्रीव-मंत्री थिकहुँ, हनुमत नाम सँ प्रख्यात छी।
रामक प्रियाक तलाश मे हम कालिह सँ अपर्स्यांत छी॥
नहि भेँटि रहली कतहुँ सीता घूमि-घूमि तकैत छी।
कृपया बता दी हे सुजन ! जौं पता अहाँ जनैत छी॥

सज्जन समर्पण करथि सम्पति निज सहर्ष समाज मे।
लगबैथ तन-मन-बुद्धि-बल कें लोक-हितकर काज मे॥
पर दुख-निवारण-लेल नित लागल रहथि प्रयास मे।
प्रभु-भजन गाबथि रहथि नित हरि-भक्त कें सहवास मे॥

ई सुभग लक्षण पाबि रहलहुँ अछि अहाँसन व्यक्ति मे।
हम नहि कमी किछु देखि रहलहुँ राम-प्रति-अनुरक्ति मे"॥
देलनि बता सुन्दर अशोकक वाटिका मे छथि सिया।
"ओ वाटिका अछि रावणक सब वाटिका सँ अति प्रिया॥

जायब ततय अहँ कोन तरहें गुप्त पथ बतबैत छी।
हमही की लंकेश्वर जनै छी मात्र सेंह कहैत छी॥
छै मार्ग कठिन तथापि अपने थिकहुँ रामक दास जौं।
सहजहि पहुँच जायब अहाँ अछि प्रभु-कृपाकें आश तों॥

पथ-सूत्र भेलनि ज्ञात कपि कें रावणक निज भ्रात सँ।
ओ वाटिका मे पहुँचि पूछथि बृक्ष कें हर पात सँ।।

"छथि कतय बैसलि हमर पूज्या इष्ट देवी, दे बता।
सब सँ निहोरा छी करैत सुवाटिका कें हे लता !"।।

शोभित मनोहर सुभग छल ओ वाटिका सब भाँति सँ।
नव कमल सँ परिपूर्ण पोखरि विटप लागल पाँति सँ।।

कोकिल समूहक काकली सँ छल कोलाहल पूर्ण ओ।
छल पूर्ण बृक्ष विशाल नव फल-फूल सँ सम्पूर्ण ओ।।

नाना प्रकारक विहग कलरव सतत करितहि छल जतऽ।
ऋतुराज रहथि सदैव तत्पर निज निरीक्षण मे ततऽ।।

बड़ सघन एक विशाल बृक्ष अशोक पर चढ़ि छोट भऽ।
लगलाह ताकय कपि-प्रवर सबदिशि लता कें ओट कऽ।।

देखल ततय कपिवर विटप-तर नारिगण बैसलि छली।
छथि मध्य मे चुपचाप बैसलि रहथि घेरलि मैथिली।।

हनुमान कें अनुमान भेलनि ऐह छथि श्री जानकी।
भार्या बना रखताह दूबरि नारि कें भगवान की ?

पति-प्रेमिका साध्वी सती कें ऐह लक्षण हुँछ की ?
बिछुड़लि स्वपति सँ नारि कें अहिना रहक पड़ैछ की ?

श्री राम चर्चा सिय-स्वभावक दास सँ कैने छला।
तहिना लगै छथि हूबहू सब भाँति सीता निर्मला।।

भूषण खसौने रहथि जे से नहि एतय छनि अंग मे।
लक्षण मिलै अछि ज्ञात अछि जे जानकीक प्रसंग मे।।

दुर्बल अवन भऽ गेल छथि प्रायः सिया उपवास सँ।
व्याकुल-व्यथित छथि भेल हा ! अति भूख एवं प्यास सँ।।

छथि दुखित पत्नी पति-विना पति व्यथित छथि पत्नी विना।
जहिना विना शशि राति, चन्दा मन्द अति रजनी बिना।।

आविष्ट छथि पोअर पुरान मलीन रेशम वसन सँ।
सन्तप्त छथि सीता निशाचरि वर्ग कें कटु वचन सँ।।

मुखपर रहनि बहैत नोरक धार सदिखन नयन सँ।
श्री राम स्वपतिक नाम कखनो बोल निकलनि वयन सँ॥

विश्वस्थ भऽ मन मे कहल कपि 'ऐह ध्रुव सीता थिकी'।
नहि रहथि परिचित पूर्व सँ तेँ कोन विधि बतियाथि की?

सीता-चरण पर झूकि गेलनि माथ श्री हनुमान केँ।
'आयब सफल भऽ गेल' बुझलनि अति कृपा भगवान केँ॥

देखल मुदा सीताक स्थिति सोच मे ओ पड़ि गेला।
घेरलि निशाचरि-वर्ग सँ लखि सीय केँ शोकित भेला॥

बजला "लगै अछि छथि विधाता बड़ विवेक विहीन ओ।
सीता-सदृश-साध्वी सती सँ हर्ष लेलनि छीन ओ॥

के? हैत नहि क्लेशित दशा लखि हिनक हा! संसार मे।
सिय-सन सुशीला-शीलवन्ती हैत के? व्यवहार मे॥

श्री जानकी-पति रहथि व्याकुल एहन महिला लेल तैं।
बौआति छथि वन-वन सतत पागल-जकाँ भऽ गेल तैं॥

अर्द्धांगिनी सीता-बिना जीअब असम्भव राम केँ।
सुख-प्राप्त कथमपि भऽ सकनि नहि सीय-बिनु सुखधाम केँ॥

त्रैलोक केँ सद्गुण सकल जौं एक दिशि राखथि कियो।
सीताक केवल एक गुण-सम हैत नहि तौलथि कियो॥

ई धन्य छथि पति-प्रेम-कारण राजसुख त्यागल अहा!
रहलो विपिन मे कत वरष, छै पशु जतय हिंसक महा॥

पति-संग रहने दुखक अनुभव कैल नहि किछुओ मुदा।
स्वामीक प्रति सानल सुधा सँ शब्द सुनबथि सुखप्रदा॥

कतबो सराहब सीय-गुण केँ पार कथमपि पैब की?
माताक दर्शन त्यागि जायब जन्म भरि पछतैब की"?

बुधिआर वानर-वीर कपि मन मे विचार करैत ई।
बैसल अशोकक गाछ पर मन-मुदित कऽ सोचैत ई॥

□

सीता-रावण-विवाद

तखने निशिक अन्तिम पहर मन्दोदरी के संग कऽ।
पहुँचल दशानन सिय-निकट, रहली सिया अपचंग भऽ॥

लखि ढंग रावण कें विचित्र सिय-दशा भेलनि तेना।
पवनक प्रचण्ड प्रवाह सँ कदलीक काँपब हो जेना॥

झट बाँहि सँ छाती छिपा कऽ पेट अपना जाँघ सँ।
सिय मोड़ि ठेहुन बैसि रहली दाबि आँचर काँख सँ॥

अति दीन-दुखिया नारि-सन ओ छथि लगैत अनिन्दिता।
बिनु पानि-पवन-प्रकाश के होइछ जेना मूर्च्छित लता॥

यद्यपि सदाचारी प्रतिष्ठित वंश कें कन्या थिकी।
धार्मिक सुसंस्कृत उच्च कुलक पुतोहु बड़ धन्या थिकी॥

तद्यपि लगै छथि नीच दूषित वंश मे उत्पन्न ई।
असहाय त्यागलि गेह सँ छथि बनल बहुत विपन्न ई॥

करजोड़ि तखन करै छली सिय प्रार्थना कुलदेव सँ।
रावण निशाचर संग मारल जाय झट पतिदेव सँ॥

ताही अवस्था मे असुरपति सीय सँ लागल कहै।
ओ गर्व सँ गर्वित महा अरु काम सँ मातल रहै॥

"हम आबि गेलहुँ अछि स्वयं असुरारि-पति लंकेश छी।
भय नहि करू निर्भय रहू हमरा कहू अछि क्लेश की?

सुन्दरि! अहाँ दुख कखन धरि ई सहब अति सुकुमारि छी।
हमरा पसंदक छी अहाँ तैं हमर परम पियारि छी॥

मन सँ अहाँ के चन्द्र-वदनी! हम अधिक चाहैत छी।
सुमुखी! अही के आब पटरानी जकाँ मानैत छी॥

हँसि कऽ कने बाजू बचन प्रिय ताकि हमरा दिशि प्रिये!
आदर करू हमरा हृदय सँ आबि बैसू मम हिये॥

यावत अहाँ हमरा सँगे बतियैब नहि अति स्नेह सँ।
तावत बुझू तँ हमहुँ नहि भीड़ब अहाँ के देह सँ॥

हमरा सदृश प्रेमीक सिय ! अपमान कियैक करैत छी।
उपवास-प्यासलि रहि सदैव झखैत-कनैत रहैत छी॥

त्रुटि नहि पड़त सुख-भोग मे भार्या हमर बनि जैब जौं।
निज तन सकल सुवरण-सुभूषण सँ सजल नित पैब तौं॥

जे रत्न हम छी जीति कऽ अनने अनेकों ठाम सँ।
से सब पठा देबनि तखन हम अहँक जननी-नाम सँ॥

हमरा-सदृश धनवान समरथ-चतुर के ? संसार मे।
सम्पत्ति विविध अपार अनुपम भरल अछि भंडार मे॥

सीते ! अहाँ केँ जाहि बस्तुक जखन इच्छा हैत जे।
अविलम्ब सम्मुख अहँक तत्छन पहुँचि निश्चय जैत से॥

अहँ भाँति-भाँतिक भोग भोगब दिव्य भोजन-पान कऽ।
सन्तुष्ट याचक वर्ग केँ कऽ देब मन भरि दान दऽ॥

जे यज्ञ चाहब करय तखने जैत भऽ निर्विघ्न ओ।
करता प्रशंसा राम, लछुमन, भरत अरु शत्रुघ्न ओ॥

चाहब अहाँ जौं करय तीर्थाटन सकल संसार मे।
धर्मार्थ पावनि-व्रत करी नित रही पूजाचार मे॥

स्वीकार अछि जे कहब तखने देब इच्छा पूर्ण कऽ॥
जकरा कही तकरा धनी कऽ देब धन सम्पूर्ण दऽ॥

जे शत्रु होथि अहाँक तिनकर देब मद केँ चूर्ण कऽ।
लायब पकड़ि कऽ ओहि अरि केँ नारि-धन सम्पूर्ण लऽ॥

मिथिला-अवध केँ सदन बनबा देब सभटा सोन सँ।
निर्भीक सम्मुख भऽ सिये ! हमरा कहू तौं मोन सँ॥

सुखभोग केँ भोगनि अहाँ केँ हम सिये ! मानैत छी।
हमरा सदृश समरथ सँगे रहने अहाँ शोभैत छी॥

प्रत्यक्ष सम्मुख देखि हमरा तखन की ? सोचैत छी।
अति दीन निष्ठुर राम केँ सँग दुख कियै भोगैत छी॥

श्रीहीन भऽ वन-वन घुमैत-फिरैत छथि नित राम ओ॥
निज राज्य सँ वञ्चित अखन छथि गेल भऽ बेकाम ओ॥

अनुमान हमरा ह्वँछ ओ जीबैत प्राय: नहि हेता।
जौं होथि जिबितो तौं अहाँकें पाबि नहि सकता पता॥

तें हम कहै छी आश हुँनकर त्यागि हमरा लग रहू।
प्राणेश्वरी बनि परम-प्रियतम प्रेम सँ हमरा कहू॥

हम तें अहाँ कें आब सुन्दरि! कहब जीवन-संगिनी।
अन्त:पुरी कें सकल सुन्दरि बनत अहिँक खबासिनी॥

लक्ष्मीक सेवा जाहि तरहें करथि नित सुर-गायिका।
ताही तरह सँ टहल करती सकल महलक नायिका॥

त्रैलोक मे अतुलित प्रभावक धाक हमरा व्याप्त जे।
धनपति कुवेरक सदृश धन हमरा अखन अछि प्राप्त जे॥

से हैत सभटा अहिँक, अहँ बनि जैब सबहक स्वामिनी।
चाही अधिक की आब बाजू तें कृपा कऽ भामिनी!

विरही बनल बौआति वन मे विकल छथि जे वाम लै।
नहि कऽ सकल रक्षा अहँक जे ताहि दुर्बल राम लै॥

घर सँ निकालल गेल अछि असहाय भऽ घबड़ैल ओ।
हा! रोग-शय्या पर पिता कें त्यागि भागि पड़ैल ओ॥

जे अछि एहन अबूझ तकरा लेल कियै? कनैत छी।
कहियो अहाँ कें डेबि कऽ राखत? भरोश करैत छी"।

एकम्प्रकारें लंकपति बाजल अनेक प्रकार सँ।
अपना जनैत सुरारि नहि चूकल कोनो उपचार सं॥

अपना सदृश संसार मे किनको ने तों लगबैत छें।
तें साधु-मुनि-तपसी-सुजन कें सतत तों सतबैत छें॥
अभिमान कें सर्वोच्च चोटी पर पहुँचि ऐंठैत छें।
हा ! वेद पढ़ि सद्धर्म सभटा अखन तों बिसरैत छें॥

ई तें स्वयं विचार, भेलौ बुद्धि तोहर भ्रष्ट जौं।
अति शीघ्र स्वजन-समेत छौ होयबाक तोरा नष्ट तौं॥
मनकें विषय सँ मोड़ि ईश्वर दिशि लगे मे नहि कदा !
तौं बूझ मन चंचल विषय-दिशि लागि जयतौ सर्वथा॥

रुचिगर विषय-चिन्तन-सँगे आसक्ति हेतौ जाहि मे।
आसक्ति सँ कामक उदय भऽ जाइछै ध्रुव ताहि मे॥
पुनि कामना मे विघ्न पड़ने क्रोध अधिक बढ़ैत छै।
क्रोधाग्नि सँ अविवेक एवं मूढ़ता उपजैत छै॥

अविवेक सँ स्मृति सुगुण कें तुरत देतौ नष्ट कऽ।
स्मृति जखन रहतौक नहि तँ बुद्धि जेतौ भ्रष्ट भऽ॥
हा ! तखन हेतौ दुर्दशा की ? से स्वयं अनुमानिले।
ई वचन केवल हमर नहि श्रुति-वाक्य एकरा जानिले।

परिवार-संग सदैव सकुशल जौं रहक चाहैत छें।
तौं ध्यान दे हमरा कथन पर नीक जौं मानैत छें॥
तँ आइ अखने सुपथ पर चलबाक प्रण तों ठानिले।
पर नारि कें तजि निज प्रिया कें प्रेमिका-सम मानिले॥

रहतौक मन मे पाप तँ करबें न प्रभु कें प्राप्त तों।
दुष्कर्ममय कुविचार कें कऽ दे अखन समाप्त तों॥
हम उच्चकुल कें थिकहुँ कन्या उच्च कुल मे अल छी।
पतिव्रत-परम पावन सुव्रत-सीमाक बीच घेरैल छी॥

पति-प्रेमिका कें लल जे निन्दित कोनो दुष्कर्म छै।
से करथि नहि स्वामी-प्रिया जे नारि लै अपकर्म छै॥
अधमेश ! हमरा स्वपति-भक्तिनि नारि कें सम बूझ तों।
सचमुच एहन नारीक आगू अति लगै छें तुच्छ तों॥

वरु हो अनादर सत्पुरुष सँ चरित जिनकर नीक हो।
सम्मान नहिं चाही पतित सँ चालि जिनकर नीच हो॥

ओ छथि प्रशंसा पात्र जे सहि सकथि अश्व-लथार कें।
निन्दा करनि सब लोक गदहा पर चढ़ल असवार कें॥

सम्मान नहिं चाहैत छी तोरा समान कुपात्र सँ।
सानन्द अपमानो सहब हम राम-सन सद्पात्र सँ॥

केवल करय चातक ग्रहण स्वातीक वर्षा-बुन्द कें।
छथि होइ मुदित चकोर केवल गगन मे लखि चन्द कें॥

नाचथि मयूर जनैत छे नहिं देखि वारिद-श्याम कें।
तहिना प्रसन्न यथार्थ होयब पाबि प्रियतम राम कें॥

की वेद पढ़ि विद्वान भेलें ज्ञान नहि भेलौक ई।
धिक्कार तोरा बुद्धि कें छौ लोक सभ कहतौक की?

सुन ज्ञान, जकरा मे हृदय सँ प्रेम केन्द्रित कैल जे।
ई बूझ तकरे नित्य जीवन-संगिनी भऽ गेल से॥

भुतियैल-सन अज्ञान बनि भ्रम मे अखन तों पड़ल छें।
रावण! दुराग्रह पर एना तें अखन धरि तों अड़ल छें॥

अखनो सँभरि जो समय सँभरक छौ अखन बाँचल कने।
सन्मार्ग पर चलबे तुरत बनबें सदाचारी भने॥

प्रभ राम प्रति दुर्वचन हमरा व्यर्थ तों सुनबैत छें।
हा! झूठ-निन्दा सत्पुरुष कें तों कियैक करैत छें॥

सुन, ओहि पुरुष महान कें सन्दर्भ मे बतबै छिऔ।
छनि स्वजन जिनक अपूर्व सुन्दर सेहो हम सुनबै छिऔ॥

धीरज पिता छनि, जिनक जननी छनि छमा, भगिनी दया।
सुत सत्य, भ्राता मनक संयम, परक हित लय सब क्रिया॥

भूतल रहनि शय्या जिनक, नहि वस्तु किछु लय लालशा।
भोजन जिनक छनि ज्ञान तिनका भऽ सकनि नहिं दुर्दशा॥

अद्भुत स्वजन छनि एहन वन मे राम कें परिवार मे।
तों दे बता अनुपम एहन नर के? अखन संसार मे॥

जौं होनि स्याही गिरि-सदृश सागर-सदृश मसि-पात्र हो।
सुर-विटप-शाखा कलम सँग मे लिपिक लाखो छात्र हो॥
भू-पत्र पर जौं सर्वदा लीखथि रहथि श्री शारदा।
नहिं लीखि सकती प्रभुक गुण सम्पूर्ण रूपें ओ मुदा॥
तैं हम कहैत छिऔक आबहु नीक तरहें सोचिले।
लीखल-पढ़ल छें शान्ति मन सँ खूब सोचि-बिचारिले॥

अपराध निज स्वीकार कर जो शरण मे रघुनाथ कें।
जा कऽ छमा तों मांग सविनय पेंर पर धऽ माथ कें॥
करथुन छमा रघुवर दयानिधि छथि छमा कें शील ओ।
शरणागतक रक्षा करै मे नहि कनेको ढील ओ॥

शिव-भक्त छें शिव राम कें प्रिय तँ उपाय कहै छियौ।
हम छी छमाशीलक प्रिया तैं युक्ति ई बतबै छियौ॥
अपना प्रिया सँ नहि रहय सन्तुष्ट जग मे पुरुख जे।
भऽ जाय ओ लम्पट-दुराचारी-अधर्मी प्रमुख से॥

धन-बल-विभव कें गर्व छौ तौं बूझ पड़लें व्याधि मे।
दुष्मार्ग पर चलि रहल छें खसबें अवश्ये खाधि मे॥
कह तौं अनेको नारि सुन्दरि कें छिपौने छें कियै?
सुरवृन्द सँ नित टहल करबाबैत दशमुख! छें कियै?

निर्दोष नृपगण छथि कियै? हा! बन्द करागार मे।
ई छै कतय लीखल नियम नृप-नीति कें व्यवहार मे।
निर्दोष कें दी दण्ड दोषी कें मुदा नहि दण्ड दी।
ई बुद्धि जकरा छैक से शासक विमूढ़ प्रचण्ड छी॥

होमय खिधांस विशेष लगतौ अटल कलंक कपार मे।
निन्दित महा सबदिनक लय भऽ तों जेबे संसार मे॥
सब भर्त्सना रहतौ करैत सदैव तोरा काम कें।
थुकतौक सदिखन लोकसभ लऽ नित्य तोरा नाम कें॥

निज सम्पतिक उपयोग कयलें नहि परक उपकार मे।
पावन चरित श्रीराम-सन नहि छौक किछु आचार मे॥

ब्राह्मण जखन छे" तखन दानवता कियैक विचार मे।
पढ़ि वेद विधिवत मन कियै लगलौक दुष्टाचार मे॥

रखले सकल रहतौक धन भण्डार सुन्दर धाम मे।
पड़ले बनल रहतौक कोठा आदि ठामक ठाम मे॥

घरनी दरुक्खा लागि छाती पीटतौ बेजान मे।
परिजन-स्वजन शव लऽ पहुँचतौ कान्ह पर स्मशान मे॥

हा ! नोचि लेतौ पुत्र-पुत्री सकल भूषण देह सँ।
तन कें चितापर राखि देतौ बोझि लकड़ी स्नेह सँ॥

दऽ आगि मुख मे नोर कें खसबैत रहतौ नयन सँ।
जीवन भरिक करनीक वर्णन करय लगतौ वचन सँ॥

क्यो संग नहि जयतौक हा ! देहान्त कें उपरान्त मे।
कर्त्तव्य कें अनुसार लेबें जन्म पुनि मरणान्त मे॥

हम देखि रहलहुँ अछि विनाशक काल तोहर अैल छौ।
तों बूझिले रावण ! अखन मृत्युक समय लगिचैल छौ॥

भऽ जाइ छै विपरीत सभकें बुद्धि नाशक काल मे।
नहि वचन नीक सोहाइ जे पड़ि गेल कालक गाल मे॥

जा कऽ कतहुँ रहबें नुका आ युद्ध कर रण-खेत मे।
प्रभु राम-शर शिर काटि दश कें फेंकि देतौ रेत मे"॥

सीताक शिक्षाप्रद वचन लगलैक कटु लंकेश कें।
लागल तखन छाँटय अपन अभिमान-युत उपदेश कें॥

"हे मानिनी ! हमरा अहाँ सामान्य नर लगबैत छी ?
हम वेदविद विद्वान कें की जानि शिक्षा दैत छी ?

अनुनय करैछ विशेष रूपें पुरुष कोनो नारि सँ।
सविनय सिनेहक भीख माँगय परम प्रेमी प्यारि सँ॥

तौं के ! निठुर नारी बनत कहु आइ धरि सुनलहुँ कतौ ?
हठ धर्मिणी हम नहि अहाँ सन देखि हम रहलहुँ कतौ॥

किछु नहि गुदानइ छी अहाँ हमरा सदृश लंकेश कें।
उलटे अहाँ लगलहुँ सुनाबय ज्ञानमय उपदेश कें॥

कैलक अनादर हमर जे, नहि रहल से जीवित कियो।
नहि मानलक लंकापतिक आदेश से अछि नहि कियो॥

आश्चर्य अछि बाँचलि कोना छी अखन धरि सीते ! अहाँ।
नहि क्रोध अछि उपजैत तैं बाँचलि अखन धरि छी अहाँ॥

रथ कें कुपथ दिशि देखि सारथि अश्व कें रोकथि जेना।
अछि प्रेम मन मे अहँक प्रति ओ क्रोध कें रोकय तेना॥

हम किन्तु छी देखैत नहि छोड़ब अहाँ हठधर्म कें।
तैं हेतु आब कृपाण सँ बध करब जानि कुकर्म कें"॥

लंकापतिक बकवास अनुचित बोल सीता सुनि कऽ।
किछु वाक्य मे देलनि सिया संक्षिप्त-उत्तर चूनि कऽ॥

"रे नीच ! निश्चर ! छौक नहि तोहर हितैषी लंक मे।
जे रोकि रखतौ जा रहल छें अगम पापक पंक मे॥

तों मारबें की ? अमर आत्मा कें जखन अकाट्य ई।
निश्चल सनातन सर्वगत अति गोप्य नित्य अदाह्य ई॥

तजि एहि तन कें बसत आत्मा फेर दोसर देह मे।
ममता तखन राखब कथी किछु काल देहक नेह मे॥

मस्तिष्क मे ढुकलौक नहि वर्णित विषय ई वेद कें।
नहि बूझि मे अयलौ अमर आत्मा-शरीरक भेद कें॥

धन-जन-विभव-सामर्थ कें अभिमान-गिरि पर चढ़ल छें।
लक्षण लगै अछि अखन निश्चय पतन-दिशि तों बढ़ल छें॥

ई नहि जनै छें तजथि नहि सज्जन कदापि सुधर्म कें।
जहिना अधर्मी तजथि नहि कथमपि अधर्म-अकर्म कें॥

जड़ि मे भुजंगक बास वानर बसथि शिखरक छोर पर।
पक्षी बसथि शाखाक ऊपर भ्रमर कुसुमक कोर पर॥

सकलाङ्ग सेवित दुष्ट सँ चानन तजथि ने सुगन्ध कें।
दुष्टक उपद्रव सँ ने सज्जन तजथि सत-सम्बन्ध कें॥

रे अधम ! दुर्गति अपन करबा लेल उद्यत भेल के ?
तोरा-सदृश विद्वान भऽ दुष्कर्म पर अड़ि गेल के ?

प्रत्येक प्राणी कें जगत मे भिन्न-भिन्न स्वभाव छै।
पति-प्रेमिका कें स्वपति-प्रति अति प्रेम-श्रद्धा भाव छै॥

छथि इन्द्र कें पत्नी शची, शिव कें प्रिया भामिनि उमा।
ब्रह्माक वीणापाणि जहिना विष्णु कें प्यारी रमा॥

तहिना थिकहु हमहूँ कृपानिधि राम कें प्रिय प्रेमिका!
ई युगल जोड़ी बनल छै शाश्वत परम सुखदायिका॥

जौं बुद्धि किछुओ बचल छौ तौं नीक तरहें सोचि ले।
रघुवीर-रामक तुल्य अपना कें कने तों तौलि ले॥

खरगोश तों नर-सिंह-रामक सँग लड़बें कह कोना।
तों रे अनार्य! लगैत छें पवनक निकट मच्छर जेना॥

तोरा-सनक पापी असुर कें भस्म कऽ दीतहु मुदा।
तप-योग-बल नहि क्षीण हो अछि ध्यान मे हमरा सदा॥

तों व्यर्थ अपना बुद्धि-बलक बड़ाइ कय बतबैत छें।
बड़ पँघ वैभवशील अपना कें बहुत लगबैत छें॥

से शक्ति जौं रहितौक तौं चोरी एना कैलें कियै?
श्री राम-लखन-परोक्ष मे सिय-हरण कऽ अनलें किये?

ओ शक्ति तोरा छौक नहि जे छनि उपस्थित राम मे।
तों तौं कदापि ने जीत सकबें राम-सँग संग्राम मे॥

ई विधिक रचना कैल छनि सब आब हम बूझैत छी।
तोरा विनाशक हेतु वातावरण बनल देखैत छी॥

रे शठ! हमर प्रग आब अन्तिम सूनिले निज कान सँ।
नहि आब कहबौ किछु तोरा-सन मूढ़तम अज्ञान सँ॥

दशकंठ! पड़त कृपाण तोहर मात्र हमरा कंठ मे।
अथवा प्रभुक कर-कमल लागत जानकी कें कंठ मे॥

स्वीकार कर शिर हमर समुदित चन्द्रहास! कृपाण तों।
अनुरोध तोरा सँ हमर अछि अखन लऽ ले प्राण तों" ॥

सीता-वचन छल मर्मयुत चुभलैक बड़ लंकेश कें।
ओ रोकि नहि सकलक निठुरतम अपन क्रोधावेश कें॥

नहि कऽ सकल रावण सहन सीताक बातक मारि केँ।
सीताक गरदनि पर उठौलक तखन ओ तरुआरि केँ॥

नहि रहल गेलनि देखि ई मन्दोदरी बुधियारि केँ।
झट रोकि कऽ लेलनि बचा सीता सती सुकुमारि केँ॥

रावण कृपाण सँभारि बाजल वचन क्रोधावेश मे।
निन्दा अपन, रामक प्रशंसा सूनि कहलक शेष मे॥

"सीते ! हमर अदखोइ आ वदखोइ कैलहुँ नारि भऽ।
हम लंकपति केँ लंक मे धिक्कारि रहलहुँ गारि दऽ॥

तेँ आब काटब अहँक शिर निश्चय अपन तलवार सँ।
प्रिय बात कहलो पर अहाँ मानैत छी नहि प्यार सँ॥

सोचू विचारू पुनि सुअवसर दैत छी दू मास केँ।
हमरा करू स्वीकार नहि तौँ हैब प्राप्त विनाश केँ"॥

ई कहि दशानन निज भवन दिशि चलल क्रोधित भेल ओ।
निशिचर-त्रिया-गण केँ निठुर-निर्देश दऽ कऽ गेल ओ॥

कटु वचन असुरक सूनि सिय भेली दुखी अति क्लेश सँ।
तखने प्रकृति-गण सान्त्वना देलनि अहा ! आवेश सँ॥

आकाश सँ स्वर सूनि पड़लनि 'धैर्य केँ धारण करू।
अति शीघ्र रामक हैत दर्शन ध्यान प्रभु-पद मे धरू'॥

पवनक मधुर ध्वनि भेल 'सीते ! स्वपति केँ सुमिरण करू।
लऽ अैल छथि सन्देश रामक हमर सुत धीरज धरू'॥

अग्निक कथन 'देबनि जड़ा हम आब लंका नगर केँ।
देखब जड़ैत समग्र गृह पश्चात किछुए पहर केँ॥

जल कहल 'हे जग-जननि ! जिनकर थिकहुँ जीवन-संगिनी।
से आबि हरता अहँक विपदा शीघ्र हे सुखदायिनी !!

पृथ्वी अहा ? कहलनि सिया केँ 'छी हमर बेटी अहाँ।
घबड़ाउ नहि अति शीघ्र पहुँचब श्री अवधपति छथि जहाँ'॥

धीरज बँधल सीताक उर मे सूनि स्वर देवादि केँ।
कैलनि प्रणाम विनम्र मन सँ अति हितैषी मानि केँ॥

बैसलि छली सिय ध्यान धऽ प्रिय चरण मे श्री राम कें।
लगली करय जप जानकी स्वामीक सुन्दर नाम कें॥

छल घेरि कऽ बैसलि सिया कें किछु निशाचरि-वर्ग जे।
लागल करय सब निज मतिक अनुसार नाना तर्क से॥

"ई अछि अभागलि नारि किछुओ ज्ञान नहि छै देह मे।
नहि रहक चाहै अछि असुर पति कें सुवर्णक गेह मे॥

रावण-समान समर्थ पुरुषक हैब पत्नी नहि रुचै।
निर्बुद्धि नारी हैत जकरा बनब रानी नहि जँचै॥

हमरा दशानन एहि तरहें प्रेम कें देखबैत जौं।
एकरा जकाँ हमरा स्वपत्नी बनक लेल कहैत जौं॥

तौं हम कदापि न चूकितहुँ शुभ एहन अवसर पाबि कऽ।
अविलम्ब रावण-कोड़ मे हम बैसि जैतहुँ आबि कऽ"॥

छलि हरजटा नामक निशाचरि बाजि ऊठलि ओ ततऽ।
"हे सुमुखि ! दशमुख-सन पुरुष भेटत अहाँ कें कहु कतऽ॥

ब्रह्माक मानस-पुत्र चारिम छथि पुलस्त्य प्रसिद्ध जे।
तिनकर परम प्रिय पुत्र भेला विश्रवा अति बृद्ध जे॥

मुनि विश्रवा कें पुत्र दशमुख भेल छथि अतिशय बली।
माता हिनक छथि केशकी राक्षस सुमाली कें लली॥

आदित्य बारह, रुद्र ग्यारह, आठ वसु, दू अश्विनी।
तैंतीश कोटि सुदेव एवं नाग-नर, तपसी, मुनी॥

सबकें प्रसन्न सदैव रखने रहथि बुद्धि-विवेक सँ।
सेबा कराबथि अपन जग मे नित नरेश अनेक सँ॥

सीते ! एहन राजाक सत्त्वर जाउ बनि भार्या अहाँ !
भाग्यक-उदय अछि भेल, शुभ संयोग भेटल अछि महा"॥

विकटा निशाचरि बाजि ऊठलि "हम विशेष बतैब की ?
ई छथि केहन बलबीर, धनपति हम कतेक सुनैब की ?

किछु मात्र गुण-बल हिनक हम सँक्षेप मे सुनबैत छी।
रावण-सदृश नहि छथि बली क्यो विश्व मे कहि दैत छी॥

गन्धर्व-सुर-नर-नाग-दानव केँ पराजित कैल जे।
छी भाग्यशालिनि अहाँ प्रेमी बनि हृदय सँ अैल से ॥

अति गुणवती जौँ छी अहाँ दशमुखक गुण पर झट रिझू।
नहि तौँ जनक तनये ! अभागलि नारि अपना केँ बुझू "॥

पुनि तखन आगू आबि कऽ तेसरि निशाचरि दुर्मुखी।
बाजलि ' दशानन केँ प्रिया बनि जैब तौँ होयब सुखी ॥

लंकेश-इच्छामात्र सँ तरु मे फलादि फरैत छै।
कृषि-काल मे पर्याप्त रूपेँ मेघ नित बरसैत छै॥

हे देवि ! अहीं बताउ मन सँ नारि जग मे हैत के ?
कहु, एहन भूपक भामिनी नहि मुदित भऽ बनि जैत जे ॥

अनुमान छल हमरा अखन धरि बड़ अहाँ बुधियारि छी।
तैँ ने स्वपति केँ त्यागि रावण-संग मन सँ अैल छी॥

कहु, तखन कियैक उदास भऽ बैसलि सदैव रहैत छी।
जे अछि कहैत कियैक से नहि बात अहाँ करैत छी॥

सोचू विचारू, समय अछि, सज्ञानि छी, बुधियारि छी।
सुनने छलहुँ हम तौँ अहाँ अति उच्च कुलकेँ नारि छी ॥

हठ त्यागि मानू कहल हमरो सोचि सीते ! ध्यान सँ।
नहि तौँ अहाँ केँ हाथ धोअऽ पड़त अपना प्राण सँ" ॥

देलनि सभक उत्तर अहा ! मृदु बचन मे श्री जानकी।
कहलनि "जनै छे" नहि कियो कहबैत छै सद्ज्ञान की ?

तोँ सभकियो मिलिकय अनर्गल बात केँ सुनबैत छेँ।
अनुचित बचन सँ हृदय हमरा केँ किये जड़बैत छेँ ॥

ई अनसोहातक बात हमरा लग कियैक बजैत छेँ।
उपदेशिका बुधियारि अपना केँ बहुत लगबैत छेँ ॥

सुन आब हमरो बात किछु दऽ ध्यान जे सुनबै छिऔ।
अति तर्कयुत उपदेशप्रद किछु वाक्य मे बतबै छिऔ॥

कह, मनुज-दुहिता कतहुँ सुनलेँ दनुज-वनिता बनल छै।
मानव-दनुज मे प्रेमयुत सम्बन्ध कहियो रहल छै॥

पति मानि लेलनि नारि जिनका, रहथि जौं गुण-हीन ओ।
तद्यपि सुपूज्य सुनारि कें छथि वैह, यद्यपि दीन ओ॥

स्वामी तथा गुरु वैह छथि पति-प्रेमिका कें जानि ले।
सम्पूर्ण मानव-नारि कें पूज्या परम तो मानि ले॥

नल मे जेना दमयन्ति, मदमन्ती जेना सौदास कें।
श्री रोहिणी शशि कें, सगर कें केशिनी द्युतिऽकाश कें॥

तहिना हमहुँ भक्तिन थिकहुँ श्री राम कें आरम्भ सँ।
तँ आब क्यो नहि बाज बारम्बार एतबा दम्भ सँ॥

तों सभ जकर नित अन्न-जल आहार-पान करैत छें।
तें बुद्धि तेहने भेल छौ तकरे सदैव गबैत छें॥

संसर्ग जकरा जाहिसँ तहिना स्वभाव बनैत छै।
सद्गुण सुजन सँ दुष्ट सँ अवगुण अवश्य मिलैत छै॥

बेशी बतेबौ की? अपढ़ तोरा-सदृश अज्ञान कें।
मानैत छें नहि जखन नीको बात सुभप्रद ज्ञान कें॥

तौं बूझि ले नाशक समय तोरा सभक लगिचैल छौ।
प्रत्यक्ष रावण लंक मे ई काल बनिकऽ अैल छौ"॥

सीताक समुचित बात नहि ढुकलैक ककरो हृदय मे।
तैं छै कहब भऽ जाइ छै मतिशून्य दुर्घट समय मे॥

उलटे निशाचर-नारिगण लागल डेराबय सीय कें।
निन्दा करय लागल पुरुष-वर प्रवल सीता-पीय कें॥

"तों एक निर्बल नारि भऽ हमरा कथो सुनबैत छें।
अज्ञान नर पत्नी थिकें उपदेश कथी छँटैत छें॥

जौं कान नहि देबें कथन पर हम कहैत छिऔक जे।
अखने शरीरक खाल कें हम खींचि तौं लेबौक से॥

खेलब बना कऽ गेंद तोहर एहि सुन्दर शीर कें।
शतखंड कै कऽ रान्हि खायब तोहर एहि शरीर कें॥

ताही समय मे नाक-कान-विहीन बाजलि शुपनखा।
"हम सभ ककर दासिन-बहिन छी दे अभागलि कें लखा॥

ओ अपन कुःनह सब सधयबा लै सुअवसर पाबि कऽ।
बाजलि निशाचरि-वर्ग सँ तखने कतहुँ सँ आबि कऽ॥

"अइ नारि केँ कारण कुरूपा भेल छी हम बूझि लें।
दुर्गति जहाँधरि होउ कर, ई कहल हमरो मानि लें॥

हठ धर्मिणी नारीक प्रति उचिते सभक विचार छी।
कर ताहि सँ दुर्गति अखन जे ज्ञात अत्याचार छी॥

स्वामी तथा देवर एकर अपमान कैने अछि महा।
ओ कान कटलक नाक छटलक रक्त देलक अछि बहा"॥

एही प्रकारेँ निश्चरीगण दुर्वचन सुनबैत ओ।
लागल डेराबय बहुत तरहेँ भय अधिक देखबैत ओ॥

हा! तखन सीता अति उदाश निराश भऽ बजली ततऽ।
"जे छी करक से कर दशा अइ देहकेँ लऽ जो जतऽ॥

हम आब बहुत अकच्छ भऽ गेलहुँ सुनैत-सुनैत ई।
मृत्युक सतत देखबैत छेँ भय वार-वार बजैत ई॥

इच्छा सभक छौ मारि कऽ खेबाक तौँ झट मारि दे।
हमहूँ कहैत छिऔक हमरा माटि तर मे गाड़ि दे॥

हम एहि तन मे प्राण राखक आब नहि चाहैत छी।
छूलक दशानन देह केँ अपवित्र तैँ मानैत छी।

देवर लखन केँ दुर्वचन कहलहुँ तकर फल भेल ई।
सूनऽ पड़ै अछि बोल कटु तोरा सभक तैँ लेल ई॥

बेबूझ-मूढ़ विशेष अनपढ़ केँ अधिक समझाउ की?
पतिव्रत-नियम-विधान की कहबैत छैक बताउ की"?



सीता-विलाप

लगली विचारय जानकी करबाक चाही आब की?
एकरा सभक सँग व्यर्थ हम कऽ रहल छी बर्त्ताव की?

सुमिरण करय लगलीह स्वामी राम कृपा-निधान केँ।
माता-पिता, संगिनि - सखी-गण-सासु-ससुर महान केँ।

लगली करय परिजन-स्वजन केँ नाम लैत विलाप से।
भोगय तकर पड़ैत छनि फल, कैल छनि बड़ पाप जे॥

"हे दैव! कतवा भेल अछि दुष्कर्म हमरा सँ कहू।
जे आइ धरि भोगक पड़ै अछि कष्ट आब कते सहू॥

प्रभु राम सँ बिछुड़लि अखनि धरि हम कियै जीबैत छी।
बिनु अन्नजल-आहार केँ रहितहुँ कियै ने मरैत छी॥

जीवन-मरण नहि जीव केँ छै हाय! अपना हाथ मे।
दुख-सुख सहक पड़ैत छै एकसर कियो नहि साथ मे॥

सब भाँति सँ वेवशि अखन हम दैव! हा! भऽ गेलि छी।
क्यो नहि सहायक अछि हमर अबला बनलि अकेलि छी॥

हम छी कतय से छिपल नहि रहि सकय प्रभुवर राम सँ।
छथि हा! तखन बैसल कियै ओ वीरवर आराम सँ॥

हमरा हरण कैलक दशानन छल जनैत जटायु टा।
ओ किन्तु आहत भेल छल तन मे छलै किछु वायु टा॥

के? राम केँ कहतनि, हमर ई दुर्दशा विस्तार सँ।
चाहैत छी चलिदी एहन छल-कपटमय संसार सँ॥

जीबैत कहुना छी, वचन कटु दुष्टसभक सुनैत छी।
घेरलि निशाचरि सँ सतत बन्दिनि बनलि रहैत छी॥

ई जानि जौँ जैतथि पिया, छथि कष्ट मे हुनकर सिया।
तौँ नहि विपत्ति सहैत रहितथि अखन धरि प्रभु के प्रिया॥

अछि भेल हमरा सँ बहुत बड़का कोनो अपराध जँ।
ई बूझि रहलहुँ अछि अखन ई पड़ल कष्ट अगाध तँ॥

हम आब तन केँ त्यागि दी अविलम्ब उचित बुझैत छी।
सामर्थवानक नारि भऽ दुख एहन कियैक सहैत छी॥

जीबैक नहि अधिकार हमरा अछि, पतिक परोक्ष मे।
मरि जाइ पतिक अछैत मे बाधा पड़त नहि मोक्ष मे॥

सम्पन्न नर लीला समुद कऽ ओ पहुँचता स्वर्ग मे।
बनि सेविका रहबनि उपस्थित प्रभु-पुजारिन वर्ग मे॥

हेतनि पसंद की नहि हमर ई काज स्वामी राम के"।
हेतनि हँसी बड़का कदाचित लोक मे सुखधाम के"॥
करतनि जगत निन्दा, सिया के" डेबि नहि सकलाह ई।
संसार मे सब सँ अधिक निर्बल नृपति बनताह ई॥
नहि अछि फुरैत, फुरौत के नर अछि हमर कर्त्तव्य की ?
किछु नहि सुझै अछि की करी ? हेबाक छै भवितव्य की "?

□

त्रिजटाक सान्त्वना

ताही समय मे त्रीजटा नामक सुलक्षणि नारि जे।
सूतलि छली झट ऊठि बाजलि बचन मृदु शुभकारि से॥
"सूनैत जो सब देखलहुँ हम स्वप्न अद्भुत राति मे।
बड़ पैघ भगदर मचल छै लंकाक निशिचर-जाति में॥
छै आगि लागल महल सब जड़तैक किछुए पहर मे।
औनी-पथारी छैक लागल सकल लंका नगर मे॥
सम्पूर्ण पुर के" भष्म करतै बड़ चतुर कपि एकटा।
केवल विभीषण-गृह बचल रहतैक मात्र अनेक टा॥
हम स्वप्न मे देखल दशानन के" दशा दुखपूर्ण जे।
गदहा-चढ़ल माथा-मुड़ल मदिराक मद मे चूर्ण से॥
करवीर पुष्पक हार पहिरल पड़ल भूपर छल तेना।
कारी वसन सँ अंग झाँपल मरल-पसरल हो जेना॥
घबड़ेल सन कटुवचन कहि कऽ गाढ़ि ककरो दैत ओ।
पगलेल-सन पथपर खसैत अलक्ष्य दिशि छड़पैत ओ॥
तमपूर्ण नरकक तुल्य मल सँ भरल मूत्रक पंक मे।
ओ छल तते चुभकैत लागल मल छलै सब अंग मे॥
सूअर-चढल रावण सवारी मेघनादक सोंस छै।
छै कुम्भकर्णक ऊँट-वाहन, सब मुड़ौने मोछ छै॥
लंकेश के" लखि दुर्दशा सब हाकरोश करैत छै।
लंका-निवासीगण अहुछिया काटि माथ पिटैत छै॥

वपहारि हाय ! करैत सब के॑ सूनि अखनो रहल छी।
ई देखि-सुनि हम स्वप्न मे चिन्ता-उदधि मे पड़ल छी॥
अछि लिखल सभक कपार मे दुर्गति अवश्य जनैत छी।
ओ दुर्दशाक बखान सीता निकट कियैक करैत छी॥

श्री राम-लछुमन पहिरि पुष्पक माल पूर्ण सुवास सँ।
चढ़ि कऽ अलौकिक पालकी पर अैल छथि आकाश सँ॥
निश्चर-सहित निश्चर-पतिक बध भेल छनि छण मात्र मे।
केवल विभीषण छथि बचल विख्यात जे सद्पात्र मे॥

हाथी चढ़ल छथि राम-लछुमन नारि सीता-संग मे।
सुन्दर वसन-भूषण-सुशोभित, सकल सभ के॑ अंग मे॥
सुर-सुन्दरी-गण सुमन वर्षाबथि समुद आकाश सँ।
वातावरण छल भेल सुरभित सुभग सुमन-सुवास सँ॥

तैं आब नहि कहु दुर्वचन श्री रामचन्द्रक नारि के॑।
सम्मानपूर्वक राख रक्षाकर सतत सुकुमारि के॑॥
आबहुँ बचन विचारि बाजल कर विदेह-कुमारि सँ।
नहि होनि हिनका कष्ट कोनो हम निशाचरि-नारि सँ॥

अपराध के॑ स्वीकार कऽ सविनय छमा सब मांगि ले।
आबहुँ अखन सँ मृदु बचन बजबाक प्रण सब ठानि ले॥
सीता परम करुणावती छथि धर्मपत्नी राम के॑।
सभक्यो सनम्र प्रणाम कर लऽ रामचन्द्रक नाम के॑॥

रक्षा सभक हेतौक ध्रुव सीता कृपा सँ जानि ले।
हमरा सभक ई रक्षिका छथि जानकी के॑ मानि ले॥
किछु दिवस धरि सहि कष्ट सीता के॑ रहक छनि लंक मे।
कहि कऽ कुवाक्य कदापि कखनो डाल नहि आतंक मे॥

फड़कैत छनि बांमा नयन सीताक हम देखैत छी।
उद्धार के॑ लक्षण सकल प्रत्यक्ष अखन पबैत छी॥
वट-आम-पीपर-डाढ़िपर कोकिल सुरव सुनबैत छै।
पक्षी-गणक ध्वनि जानकी-पति-स्वागतार्थ लगैत छै।

लक्षरा लगैछ विलम्ब नहि वेशी सिया-उद्धार मे।
नहि छै विलम्ब सपुत्र-वान्धव रावराक संहार मे।
सीते ! अहाँ घबड़ाउ नहि दर्शन करब सुखधाम केँ।
मारल अवश्ये जेत रावरा वारा सँ श्री राम केँ॥
रहलैक अछि परिवार मे आ व्यक्ति मे दुर्मति जतऽ।
भेलैक अछि दुखप्रद अवश्य असह्य अति दुर्गति ततऽ॥
हे सिय ! सुनू सुन्दर वचन हम एक अखन कहैत छी।
जे बूझि कऽ हमहूँ अखन सँ राम-नाम जपैत छी॥
लागल पता किछु सूत्र केँ मन्दोदरी केँ दाइ सँ।
मति-भेद भऽ छनि गेल दशमुख केँ विभीषण भाइ सँ॥
फजहति बहुत कऽ अनुज केँ निष्ठुर जकाँ दरवार सँ।
देलक निकालि अवाच्य कहि रावण अपन परिवार सँ॥
तेँ ओ पहुँचला मित्र-सँग ततकाल रामक शरण मे।
कैलनि प्रणाम सनम्र अशरण-शरण केँ युग-चरण मे॥
कहलनि अहा ! "हे राम ! अयलहुँ अखन अपने शरण मे।
अपने सतत तत्पर रहै छी भक्त केँ दुख-हरण मे॥
रक्षा अवश्ये करब अपने सुनल अछि, भगवान छी।
अछि किन्तु हमरा शक, दशानन-सन अहाँ बलवान छी ??
सन्देह अछि मारब कोना ओ वीरवर बलवान केँ।
ओ अछि चढ़ल रथ पर अहाँ छी रहित रथ-पदत्राण केँ"॥
देलनि अहा ! उत्तर सुनू सिय ! राम अनुपम रूप मे।
जे भेल शिक्षाप्रद वचन नरपतिक लेल अनूप मे॥
"हे मित्र ! रण मे विजय-रथ ओ असल मे कहबैत छै।
पहिया जकर धृति-सौर्य, सत्यरु शील-केतु रहैत छै॥
इन्द्रिय-दमन, परहित, विवेक रु बल-तुरग जोतल रहै।
समता, दया एवं छमा-रजु सँ सुहय नाथल रहै॥
ईश्वर-भजन-सज्जन-पुसारथि रहथि चलबथि यान केँ।
निर्मोह रूपी ढ़ाल मे सन्तोष-रूप कृपाण केँ॥

फरसा बुझू दानक क्रिया कें बुद्धि कें बर्छी बुझू ।
विज्ञान कें बड़का गदा-सन दृढ़ तथा भारी बुझू ॥
मन मे परम पावन शिवक पद-भक्ति हमर दुकूल छी ।
यम अरु नियम धारण करै छी सैह हमर त्रिशूल छी ॥
गुरु-विप्र-पूजा-कवच अछि दृढ़ आब अधिक बताउ की ?
अछि विजय कें साधन सुलभ, हम तखन कहु घबड़ाउ कीं ??
पतिदेव कें विजयक सुभग संबाद सीता सूनि कऽ ।
कहलनि "कथन जौं सत्य तोहर भेल तौं हम चूनि कऽ ॥
देबौक जे मँगबें सभक हेतौ भला सब भाँति सँ ।
देबौक श्रेणी मे पहुँचबें राक्षसी कें पाँति सँ" ॥
दशग्रीव कें अप्रिय वचन सँ जे सिया पीड़ित छली ।
से किछु समय कें लेल त्रिजटा-कथन सँ प्रमुदित भेली ॥
कहलनि "कहै जो जे फुरौ सन्तोष लेल कहैत जो ।
दुख-विरह कें हम बिसरि हर्षित होइ यत्न करैत जो ॥
त्रिजटे ! मुदा हम आब निश्चय कैल अछि मरबे करी ।
तन आब संकट सहत नहि प्राणान्त तैं करबे करी ॥
क्यो झट कृपा कऽ आगि अखने आनि हमरा दैत जौं ।
अथवा हलाहल दैत हमरा सँ शुभाशिष लैत तौं ॥
उपकार नहिं बिसरब तकर कदापि कोनो काल मे ।
श्रद्धा अनुक्षण रहत तकरा प्रति हृदय विशाल मे ॥
पर्याप्त छल शोकाग्नि तन कें भष्म तौं कऽ दैत ओ ।
अछि किन्तु नोर अपार दृग मे नहि जड़य अछि दैत ओ ॥
की ? अछि लिखल कपार मे हम मात्र किछु ने जनैत छी ।
की ? की ? दशा देखैंक अछि बैसलि झखैत रहैत छी ॥
हे स्वजन ! परिजन ! बन्धु-बान्धव ! प्राण-पति-श्री राम हे !
केकइ ! सुमित्रे ! मातु ! कौशल्ये ! अवधपुर धाम हे !!
सभक्यो कियै ? हा ! निठुर भऽ कऽ बिसरि हमरा गेल छी ।
अछि नहि कियो अप्पन जेना तहिना अनाथनि भेल छी ॥

हमहूँ अहों सभ के थिकहु मात्सर्य किछु नहि ह्वैछ की ?
अपने सभक अछैत दुर्गति हमर ई शोभैछ की ?
हे सत्यव्रतधारी प्रभो ! श्री राम ! अहिक भरोश सँ ।
जीवैत छी, ई भोगि रहलहु दुःख अपना दोष सँ ॥
हे नाथ ! हमरा सँ अनेको भेल अछि अपराध कें ।
गणना करब जौं तकर तौं नहि पार पैब अगाध कें ॥
उबरब ने कहियो ताहि सँ हम नाथ ! अहूँ जनैत छी ।
करुणा करू प्रभु ! अहाँ करुणा-सिन्धु जे कहबैत छी ॥
कैलहु सकल व्रत-योग-जप नैहर रु सासुर-विपिन मे ।
पालन सती-नारी-नियम अरु धर्म-जप-तप सुदिन मे ॥
सद्धर्म श्रद्धा-प्रेम सँ निशि-दिन अखनि धरि कैल जे ।
पति-चरण-सेवा-व्रत निबाहल छल-रहित की ? भेल से ॥
हे नाथ ! अपने तौं पिता-आदेश-पालन कैल जे ।
वनवास-अवधि समाप्त कऽ नृप-पद अहाँ लै धैल से ॥
अवधेश भऽ अपने विवाहो कऽ अवश्य सकैत छी ।
भेटत सुलोचनि नारि सुन्दरि विश्व-मध्य जनैत छी ॥
हा ! किन्तु हम तौं अहिक छी नित सेविका बनि गेल छी ।
गति-मति अहीं आराध्य केवल मात्र हमरा लेल छी ॥
अति शीघ्र कृपानिकेत ! हमरा करब नहि उद्धार जौं ।
हम आगि मे जड़ि जैब अथवा करब विष-आहार तौं ॥
क्यो दैत उपकारी कोनो हथियार हमरा हाथ मे ।
सिर काटि मरितहुँ ऐह लिखने छथि विधाता माथ मे"॥
सीता रहथि जे ठाढ़ि गहि तरुवर अशोकक डाढ़ि कें ।
व्याकुल व्यथा सँ लखि पवनसुत, जानकी-सन नारि कें ॥
सीताक प्रति निश्चर-पतिक व्यवहार वार्त्तालाप कें ।
सुनलनि जखन कपिवर बहुत श्री जानकीक विलाप कें ॥
एवं निशाचर-नारि-वर्गक अति कठोर कुवाच्य कें ।
ओ साँस लंबा छोड़ि सुमिरण कैल निज आराध्य कें ॥
देखल सिया कें प्राण-त्यागक लेल तत्पर भेल हा !
सब भाँति सँ सीता हताश-निराश भऽ छथि गेल हा !

उपयुक्त अवसर पाबि हनुमत झट खसोलनि मुद्रिका।
भेली अचम्भित देखि अँगुठी तखन रामक प्रेमिका॥

सोचथि, अखन अनलक एतऽ के ? बस्तु जड़ आयल कोना ?
तजि राम-सुन्दर पाणि केँ चलि अँल हमरा लग कोना ?

भगवान रामक हेतु चिन्ता सीय केँ भेलनि महा।
शोकित सिया-मुख सँ व्यथायुत शब्द निकलल 'राम हा' !

बजली सिया "प्रभु राम तौँ तजलनि प्रथम निज राज केँ।
हमहूँ अलग भेलहुँ स्वपति सँ त्यागि सेवा-काज केँ॥

ई मुद्रिको प्रभु-संग त्यागल भागि आयल अछि एतऽ।
हा ! सुखक साधन सकल स्वामी केँ तजल, भागल कतऽ॥

हमरा दुनू केँ कष्ट लीखल अछि सदैव कपार मे।
तौँ की ? करब आशा सुखक हम आब अइ संसार मे" ॥

एमहर पवन सुत सोच मे छथि पड़ल 'चाही करक की ?
भऽजाइ सम्मुख, हैत उत्तम काज सुविधा-जनक की ?

नहि ज्ञात अछि हमरा बजै छथि बोल अवधक लोक की ?
कहबनि प्रथम की बात हेतनि दूर सीता-शोक की ?

कपिरूप मे होयब प्रकट भय-भीति भऽ जैती सिया।
रावण छली अछि ओ करय आयल अखन अछि छल-क्रिया॥

बुझती सिया 'रावण अनेकोँ रूप रचैत रहैछ ओ।
तौँ एक बानर बनि कियै नहि आबि एतय सकैछ ओ॥

नहि अछि फुरैत सुकाज सम्प्रति शीघ्रतम हम की ? करी।
अबिलम्ब करक उपाय अछि, सीता जिबै छथि पल-घड़ी॥

चाही अवश्य भरोश-आश्वासन सिया केँ अखन दी।
करजोड़ि प्रथम प्रणाम कऽ माँ सँ शुभाशीर्वचन ली॥

नहि सान्त्वना देबनि बचन सँ जानकी केँ तुरत जौँ।
बतियैब की ? हमरा सिया सँ हाथ धोमय पड़त तौँ॥

अति मधुर भाषा मैथिलीक प्रयोग उचित बुझैत छी।
करती छमा सब भूल केँ माता थिकी, भय-रहित छी॥

□

हनुमान केँ सीताक सँग वार्त्ता

सम्मुख सिया केँ होइ हम अतिशीघ्र ब्राह्मण-वेष मे।
किछु तौँ करक चाही सिया छथि पड़ल बड़का क्लेश मे॥

अगुताइ नहि कर्त्तव्य समयोचित अवश्य बिचारि ली।
सन्मार्ग तौँ सूझत अवश्ये राम-नाम उचारि ली॥

रामक प्रसंसा मधुर स्वर सँ कऽ अखन छीपल रही।
गुण गाबि प्रभुक चरित्र सुन्दर कथा सब बीतल कही॥

फुरि गेल कपिवर केँ कथा आरम्भ कैलनि आदि सँ।
भेलनि कोना कऽ मित्रता सुग्रीव-वानर जाति सँ॥

अयलाह लंका मे कोना अपने पयोनिधि-फाँनि कऽ।
दर्शन करौलक सीय सँ के? राम सेवक मानि कऽ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र पहिने जोड़ि दूतू पाणि केँ।
लगला कहय कपिवर समोद सुधारि मधुर सुवाणि के॥

"हे मातु! कैलनि राम वर्णन जेहन अहँक सुरूप केँ।
प्रत्यक्ष से देखैत छी हम रूप अहँक अनूप केँ॥

छल-कपट कऽ लंकेश कैलक हरण जनस्थान सँ।
ओ जानकी थीकहुँ अहीँ बूझैत छी अनुमान सँ॥

ई मुद्रिका हमहीं खसौने छलहुँ माता जानि कऽ।
कऽ दी छमा हे जननि! हमरा भक्तसुत-सम मानि कऽ॥

आज्ञा दिअऽ मा! अखन हम अपनेक की सेवा करी।
जे बस्तु चाही, आनि दी सम्मुख सकल मेवा धरी॥

जकरा कही गद्दा जकाँ झट बान्हि कऽ हम छानि दी।
अथवा कही बन्दी जकाँ सब असुर केँ हम आनि दी॥

जौँ दी अहाँ आज्ञा उलटि हम देब लंका सकल केँ।
देबनि मिला हम माटि मे अइ स्वर्ण-निर्मित महल केँ॥

हम शक्ति पौने छी अतुल प्रभु राम-चरण-प्रसाद सँ।
सम्भव असम्भव केँ करब हम अहिंक आशीर्वाद सँ॥

सीता सुखी भेलीह अंजनि-सुतक सुन्दर बात सँ।
हटलनि सकल चिन्ता-व्यथा-भय जानकी केँ गात सँ ॥

"अगुताउ नहि हे वीरवर !" कहलनि पवन कुमार सँ।
'विध्वंश नहि करबाक अछि लंकाक एहि प्रकार सँ ॥

पौताह दण्ड अवश्य जिनकर जेहन हेतनि दोष जे।
नहि पाबि सकता दण्ड कथमपि होथि जे निर्दोष से ॥

जे कार्य केला सँ अहित हेतैक ककरो मानि कऽ।
से कार्य स्वामी सँ कदापि ने भऽ सकै अछि जानि कऽ ॥

स्वामी हमर छथि न्याय-प्रिय नर-प्रवर श्रीयुत राम जे।
आदर्श मर्यादा-पुरुषवर सकल सुख केँ धाम से ॥

रविकुल-तिलक श्री राम केँ अर्द्धांगिनी हम जानकी।
छथि सब बतौने प्रेम सँ कहबैत छै सद्ज्ञान की ?

बलवान-ज्ञाननिधान दशरथ ससुर हमरे ओ छला।
जे कैल जीवनभरि जगत मे राति-दिन सभ केँ भला ॥

पुत्री थिकहुँ विख्यात नृपवर-जनक श्री मिथिलेश केँ।
जिनका दुलार-पियार मे पौलहुँ ने कहियो क्लेश केँ ॥

बारह वरष धरि विपिन मे बीतल वयस अति हर्ष सँ।
बिछुड़लि स्वपति सँ छी अखन लगभग बुझू गत वर्ष सँ ॥

हम नारि स्वामी लेल निज सुख सकल त्यागि सकैत छी।
पति जे करै लय कहथि तखने सैह काज करैत छी ॥

आज्ञा पिता केँ मानि प्रभु कैलनि तपस्वी-भेष केँ।
तजि राज-सुख अयलाह भोगै लेल बन मे क्लेश केँ ॥

छल ततय कानन मे बहुत राक्षस निठुर महाबली।
व्यभिचार-भ्रष्टाचार-रत सभ निदयी-कपटी-छली ॥

कर्त्तव्य बुझलनि राम सब केँ न्यायपूर्वक दण्ड दी।
पापी-अधम केँ छोड़ि दी तौँ बनब अधम प्रचण्ड की ?

अन्याय सहि कऽ बैसि जायब ई महा दुष्कर्म छी।
न्यायार्थ अपनो बन्धु केँ दी दण्ड से सद्धर्म छी ॥

से जानि, आयल जखन जे निशिचर निषिद्ध विचार लय।
मारल सकल कें राम छन मे नृपति-धर्मप्रचार लय॥

अछि बचल निश्चर आन जे किछु एहि दक्षिण प्रान्त मे।
क्यो नहि रहत जीवित जनै छी एहि मासक अन्त मे॥

अछि किन्तु भय तावत अनेकों दुर्दशा ओ करत जे।
हम निर्बला नारी सिया कें सहक सभटा पड़त से॥

सहि सकब दुख की नहि दशा देहक हमर हा! बनत की?
चिन्ता सतीत्वक अछि अधिक ओ तखन बचि कऽ रहत की?

तैं आब प्राणक त्यागि करबा लेल तत्पर भेल छी।
तोरा सँगे बतिआइ मे लगलहुँ अँटकि तैं गेल छी॥

वरु बास नरकक हो मुदा नहि रही दुर्जन संग मे।
छीजत नरक मे पाप, वेशी बढ़त दुष्टक संग मे"॥

दुख सँ दुखी सीता-कथन कें सूनि कपि भेला दुखी।
दऽ सान्त्वना सिय मातु कें किछु काल लय कैलनि सुखी॥

लगला कहय "हे मातु! हम श्री रामचन्द्रक दूत छी।
कपि-प्रवर सुग्रीवक थिकहु मंत्री पवन कें पूत छी॥

आयल एतै छी नृप-शिरोमणि राम कें सन्देश लय।
ओ छथि कुशल सँ किन्तु व्याकुल अधिक अहिक उदेश लय।

श्री राम कें अनुचर लखन सन्तप्त छथि अति शोक सँ।
कैलनि सनम्र प्रणाम पद मे भक्तियुत भरिपोख सँ"॥

"स्वामी कुशल सँ छथि" सुखद स्वर सूनि सिय हनुमन्त सँ।
देलनि शुभाशीर्वाद कपि कें मनहिं मन आनन्द सँ॥

कैलनि विचार विदेह-जा बूझी कने विस्तार सँ।
भेलनि कोना कऽ मिलन हिनका हमर प्राणाधार सँ॥

तखने सिया देखल निकट अति आबि वानर ठाढ़ ई।
देखबैत अछि श्रद्धा बहुत हम नारि-संग प्रगाढ़ ई॥

बतियाति लग मे घुसुकि कऽ कपि आबि गेल समीप मे।
ई देखि क्रम कें वानरक ओ पड़ि गेली भय-भीत मे॥

संदेह सीता के तखन भेलनि कपिक व्यवहार सँ।
हो गुप्तचर कहुँ रावणक आयल ठगै लय प्यार सँ॥
तेँ तुरत सीता बैसि रहली बृक्षतर मे घुमि कै।
भयभीत भऽ नख सँ तखन लगलीह खोधऽ भूमि के॥
ई देखि अंजनि-सुत बिचारल भेल की अनुचित क्रिया।
की ? जानि रहली बैसि, बजली किछु किये नहि माँ सिया॥
लगला करय कर जोड़ि कपिवर विनय प्रेमासक्ति सँ।
रघुवीर-यश-वर्णन करय लगलाह श्रद्धा-भक्ति सँ॥
रावण-निशाचर-वर्ग के निन्दा करय लगलाह ओ।
श्री राम-गुण-वर्णन करैत निमग्न भऽ गेलाह ओ॥
विश्वास भेलनि किछु प्रभुक चरितावली के सूनि कऽ।
लगली कहय हनुमान सँ सीता नयन के मूनि कऽ॥
"अछि पैघ मायावी दशानन अेल छल ऋषि-रूप मे।
छल सँ हरण कैलक महा अछि धूर्त्त निश्चर-भूप मे॥
संदेह मन मे अछि अखन शंका-रहित होयब कोना ?
तों रामचन्द्र दूत छे ई हम तोरा बूझब कोना ?
जौं दूत रामक छें तखन प्रत्यक्ष प्रवल प्रमाण दे।
आशीष हमरा सँ अखन सानन्द तों हनुमान ले॥
अछि विरह-रूपी बीछ बिन्हने व्यथित छी, अछि दुर्दशा।
स्वामीक चर्चा-मंत्र सँ विष के बदन सँ दे खसा॥
अंगुठी चोराकऽ चोर रावण आनि एतय सकैछ ओ।
हमरा अनेकों रीति सँ नित ठगक प्रयास करैछ ओ॥
तों आबि एतय कोना गेलें कपि भऽ महा आश्चर्य ई।
अति गुप्त बाग अशोक मे पहुँचब असम्भव कार्य ई॥
हम स्वप्न की देखैत छी की कल्पनादि करैत छी।
कपि एक के मुख सँ सुयश स्वामीक कोना सुनैत छी॥
ई दृश्य बूझि पड़ैछ किछु उन्माद-जन्य विकार की ?
मति-भ्रमित भऽ अछि गेल की ? बौआति अछि विचार की ?"

अनुमान एवं भावना सीताक नाना भाँति केँ।
लखि-सूनि कपि लगला हँटाबऽ वचन सँ सिय-भ्रान्ति केँ॥

'हे मा ! थिकहुँ हम तुच्छ सेवक श्री नरोत्तम राम केँ।
सबखन जपैत रहैत छी रामक मनोहर नाम केँ॥

हम छी बसौने हृदय मे मृदु युगल रूप अनूप केँ।
अपने कही तौँ फाड़ि उर केँ हम देखादी रूप केँ॥

अपने दुनू केँ चीन्ह गेलहुँ, प्रभुक सेवा-नेम सँ।
ओ ईश छथि माया अहाँ लीला करैछी प्रेम सँ॥

बनि कऽ विधाता राम रचना करथि सब संसार केँ।
बनि शारदा दै छी अहाँ सद्ज्ञान सकल प्रकार केँ॥

प्रभु विष्णु बनि पालन करथि संसार केँ सबजीव केँ।
रक्षा करी लक्ष्मी अहीँ बनि, जीव आ निर्जीव केँ॥

गिरिजा अहीँ छी शक्ति-दायिनि, शक्ति सभकेँ दैत छी।
सब जीव केँ उपकार मे लागलि सदैव रहैत छी॥

शिव-रूप सँ संहार सभकेँ करथि प्रभु कल्पान्त मे।
मन भेल पुनि रचना करथि कल्पान्त केँ उपरांत मे॥

मा ! राम छथि सर्वज्ञ एवं ईश केँ अवतार ई।
केवल अपन किछु अंश सँ चलबैत छथि संसार ई॥

आचरण छनि आदर्शमय रण-कुशल सकल प्रकार ई।
छथि कऽ रहल व्यवहार सँ सद्धर्म केर प्रचार ई॥

सिरमौर वीरक वर्ग मे बहु विज्ञ वार्त्तालाप मे।
भवभरिक भूपति सँ अधिक छथि बढ़ल राम प्रताप मे॥

आधार हिनके पाबि बस्तुक विश्व मे अस्तित्व छै।
बलवान मे बल गुण गुणो मे व्यक्ति मे व्यक्तित्व छै॥

की जानि सर्वसमर्थ रघुपति परम शोभा धाम सँ।
कऽ शत्रुता रावण कपट कैलक दयानिधि राम सँ॥

सुनने रही वेदज्ञ अछि दशमुख महा विद्वान ओ।
अछि किन्तु बूझि पड़ैत अति अल्पज्ञ मूढ़ महान ओ॥

भोगत कुफल देखब अहूँ लंका नगर-विनाश केँ।
हमहू" उजारि सकैत छी आदेश दी जौँ दास केँ॥

श्री रामचन्द्रक हाथ सँ सन्देश लय अयलहुँ एतै।
ओ छथि स्वयं विरहाग्नि सँ पीड़ित व्यथाकुल छनि हृदै॥

कुशलादि पुछलनि अछि अहँक अवधेश अति आवेश सँ।
कैलनि अहाँ केँ लखन लाल प्रणाम विनय विशेष सँ॥

श्री रामकेँ प्रेमी सखा सुग्रीव वानरराज जे।
प्रभु रहथि हर्षित जाहि तरहेँ करथि सबटा काज से॥

हम लाँघि सागर केँ एतय लंकापुरी मे अैल छी।
'अपनेक दर्शन भेल' प्रभुकेँ कहब, तँ अगुतैल छी॥

अदना-जकाँ हमरा बुझू नहि जखन हम देलहुँ पता।
नहि लाथ हमरा सँ करू कहि कऽ सुनादी उर-व्यथा॥

हमरा जेहन बूझैत छी से हम थिकहुँ नहि जानकी!
हे मा! कथी हम दी अखन विश्वास लेल प्रमाण की"?

कपि देल परिचय अपन यद्यपि बहुत-बहुत प्रकार सँ।
सीता मुदा पूछऽ पुनः लगलीह पवन-कुमार सँ॥

"कपिवर! अहाँ केँ राम सँ सम्पर्क भेल कतऽ कहू।
की रूप-रंग-स्वभाव छनि ओ जप करथि किनकर कहू॥

वानर-मनुज मे मेल सम्भव भेल कहु तौँ ई कोना?
विश्वस्थ भऽ देलनि अहाँ केँ मुद्रिका ई प्रभु कोना?

हमरा अटल विश्वास लै वर्णन करू विस्तार सँ।
की खाइ छथि, सूतथि कखन, बतियाथि कोन प्रकार सँ"॥

सीताक ई सन्देह-सानल शब्द सुखप्रद सूनि कऽ।
हनुमान हर्षित भऽ हृदय सँ कहय लगला गूनि कऽ॥

"हे जनक-राजकुमारि! हम तौँ भाग्यशाली छी महा।
अपनेक अनुकम्पा असीम अवश्य ई भेलछि अहा!!

प्रभु राम केँ सन्दर्भ मे हमरा अहाँ पूछैत छी।
गुण-रूप केँ ज्ञाता अहाँ! हमरा अहाँ बूझैत छी॥

ओ तौं पुरुष मे श्रेष्ठतम सदगुण-गणक अवतार ओ।
आदर्शमय आचार हुँनकर छथि परम उदार ओ॥

ओ श्रेष्ठ छथि बलवान-वभववान सब श्री मान सँ।
भजनीय छथि त्रैलोक केँ विद्वान आ गुणवान सँ॥

बाजब मधुरतम अंग-सुन्दर-सबल श्यामल रंग मे।
नररूप मे ईश्वर थिका, बीतनि समय सत्संग मे॥

कोमल कमल-दल-सम नयन-मुख पूर्ण रजनीपति जकाँ।
छनि हुँनक चालि स्वभाव सज्जन-साधु-ऋषि-मुनि-यति जकाँ॥

शिव-शिव जपैत-भजैत भक्तक गुण गबैत-रहैथ ओ।
सीता कतय? सीता कतय? सब सँ पुछैत-फिरैथ ओ॥

छनि पाणि युगल विशाल गरदनि छनि जेना की शंख हो।
रामक धनुष केँ वाण मे लागल मयूरक पंख हो॥

सूतथि समय पर नित्य ऊठथि ब्रह्म-वेला-काल मे।
प्रति दिन नहाथि त्रिकाल, चानन शिव-त्रिशूलक भाल मे॥

छथि राम शिव केँ भक्त, शिव छथि भक्त सीताराम केँ।
जप करथि निशि दिन एक-दोसर परम पावन नाम केँ॥

आहार फल छनि मात्र सेहो खसल अपने-आप सँ।
शोकित अखन रहैत छथि सीते! अहिंक दुख-ताप सँ॥

आदर्श-मर्यादा-पुरुष ओ अवधपति नरवर थिका।
तँ प्राप्त भेलनि मा! अहाँ-सन नारि अति सुखदायिका॥

हम तौं हृदय मे रूप हुँनकर धारि नाम जपैत छी।
दर्शन कोना भऽ गेल हमरा सैह आब कहैत छी॥

श्री राम दूनू भाइ वन मे मा! अहिंक तलाश मे।
घूमैत अयला ऋष्यमूक पहाड़ केर सुपास मे॥

सुग्रीव नामक कपि-प्रवर निज बन्धु वालिक भीति सँ।
गिरि पर रहै छथि हम तिनक छी एक सेवक प्रीति सँ॥

देखल दुनू केँ ठाढ़ छथि रखने धनुष-शर हाथ मे।
सुग्रीव, डर सँ बाजि उठला 'ठाढ़ के? गिरि-कात मे॥

जाकय पता लगाउ के ? छथि विपिन मे घूमैत ई।
कपि-वर्ग सभ सँ बस्तु किछु की ? अखन छथि चाहैत ई' ॥

भेलहु उपस्थित हम अहा ! सम्मुख समुद भगवान केँ।
लखि रूप रामक भेल हर्ष अपार अइ हनुमान केँ॥

अनलहुँ चढ़ाकय पीठ पर सुग्रीव-लग धनुधीर केँ।
सुग्रीव सँ देलहु मिला लछुमन तथा रघुवीर केँ॥

ओ एक-दोसर सँ व्यथा-गाथा कहल विस्तार सँ।
सोचल कोना दुख-दूर होयत अपन अपन विचार सँ॥

ओ वानरेश्वर देल आश्वासन तखन अवधेश केँ।
एवं नरेश्वर देल धीरज प्रिय सखा ग्रीवेश केँ॥

रावण अहाँ केँ हरण कऽ लऽ जाइ छल नभ-पंथ सँ।
कपि वर्ग केँ लखि कऽ खसौलहुँ नोचि भूषण अंग सँ॥

हमहीं समेटि-बटोरि कऽ लऽ आनि देल कपीश केँ।
से आनि कऽ देलनि जखन सुग्रीव श्री जगदीश केँ॥

ओ वस्त्र-आभूषण उपस्थित भेल सम्मुख राम केँ।
उर सँ लगा लगला, पुकारय अहा ! अहिक सुनाम केँ॥

शोकाग्नि गेलनि जागि मूर्च्छित भेल किछु छन ओ छला।
ओ दशा हुँनकर तखन हमरा हृदय केँ देलक हिला॥

हमहीं तुरत दय सान्त्वना प्रभु केँ अनेक प्रकार सँ।
चेतन पुरुष केँ चेतना देलहुँ परम सत्कार सँ॥

नहि पाबि मा ! सीते ! अहाँ के छनि बहुत दुख राम केँ।
चिन्ता-अनिद्रा सँ बहुत दुबरैल तन सुखधाम केँ॥

सुग्रीव कैलनि प्रण 'लगायब हम सिया केँ ध्रुव पता'।
प्रण राम कैलनि 'वालि केँ मारब निबाहब मित्रता'॥

तत्पर भेला तखने दुनू प्रण-पूर्ण करबा लेल ओ।
पहिने अवधपति राम-शर सँ वालि मारल गेल ओ॥

प्रभु राज्य-किष्किन्धाक सौंपल हाथ मे सुग्रीव केँ।
भेलनि अतीव प्रसन्नता सम्पूर्ण विपिनक जीव केँ॥

अति शीघ्र चूनल वीर वानर-वर्ग कें दरबार में
कपिपति बजौलनि झट उपस्थित भेल सब दरबार मे ॥

सब दिशि पठौलनि अहिक अन्वेषण करय कपि-भालु कें ।
हमरो तखन भेटल परम आदेश राम कृपालु कें ॥

सम्पूर्ण सेनापति अनेको सैन्य लऽ चारू दिशा ।
ताकय अहाँ कें निकलि गेला भेल गत कत दिन-निशा ॥

भुतिया गेलहुँ हम सब विकट दक्षिण-दिशा-गिरि-प्रान्त मे ।
सब थाकि कय हा! बैस रहलहुँ विवश भऽ कय अन्त मे ॥

सभक्यो हँकासल आ पियासल छलहुँ व्याकुल भूख सँ ।
की ? हम कहू ओ दुर्दशा, नहि बोल निकलय मूँह सँ ॥

लगलहुँ दुखित भऽ ठाढ़ गोहराबय तखन भगवान कें ।
छोड़ल विवश भऽ सभ कियो ई मोह निज-निज प्राण कें ॥

प्राणान्त करबा लेल उद्यत भेल सभ उपरान्त मे ।
हम राम-नामक जप करय लगलहुँ ओतय एकान्त मे ॥

हे मा ! कृपा श्री राम कें देखल अहा ! अद्भुत ओतऽ ।
प्रभु कें कृपा सँ पहुँचि गेला प्राण-रक्षक-झट ततऽ ॥

पक्षी-प्रवर सम्पाति छथि अग्रज विहंग जटायु कें ।
ओ आबि रखलनि रोकि कय निकलैत तन सँ वायु कें ॥

ओ कहि सुनौलनि छी अहाँ दशमुखक लंका देश मे ।
से सूनि नाचय सभ कियो लगलहुँ अधिक आवेश मे ॥

सभ कें अहा ! अति हर्ष सँ रोमाञ्च भेलनि गात मे ।
अविलम्ब दर्शन हैत तैं अयलहुँ समुद्रक कात मे ॥

सम्मुख अपार समुद्र कें लखि सभ भेला चिन्तित महा ।
मा ! हम मुदा प्रभु नाम लय चिन्ता सभक देलहुँ दहा ॥

वारिधि विशाल अगाध कें हम लाँघि कऽ अयलहुँ एतऽ ।
केलहुँ प्रवेश विदेश लंका-मध्य संध्या-छण ततऽ ॥

सब ठाम हम तकलहुँ अहाँ कें रावणक प्रति गेह मे ।
नहि देखि जीवित छी कि नहि, पड़ि हम गेलहुँ सन्देह मे ॥

चिन्तित छलहुँ परिचित कियो भेटैत नहि छल नर ततऽ।
पूछी तौँ ककरा सँ अहाँ मा? कोन तरहेँ छी कतऽ?

की तुरत परिचय भेल हमरा श्री विभीषण भक्त सँ।
जे सतत रामक नाम जपतहि रहथि प्रेमाश्र सक्त सँ॥

मा! छी कतय देलनि बता तखने एतय हम अैल छी॥
अपनेक दर्शन भेल, कहबनि राम केँ अगुतैल छी॥

हे जननि! सभटा कहि सुनौलहुँ हाल अपना काम केँ।
सुग्रीव केँ मंत्री थिकहुँ आ दूत हम श्री राम केँ॥

आयब एतय सार्थक सकल श्रम भेल मा! श्री जानकी!
पुनि आब जीवन मे एहन आनन्द होयत आन की?

हमही प्रथम दर्शक कहायब सकल वानर-वर्ग मे।
के? भाग्यशाली भेल हमरा-सन अवनि आ स्वर्ग मे॥

प्रभु केँ बतेबनि अहँक स्थिति कष्टप्रद विस्तार सँ।
अति शीघ्र मारल दुष्ट रावण जैत जाहि प्रकार सँ॥

से यत्न सत्वर करब हम जइतहि एतय सँ घूमि कै।
देखब भवन भऽ गेल सभटा भस्म लंका भूमि केँ॥

हे मा! अहाँ जे पूछलहुँ कहलहुँ हमहुँ सारांश मे।
धीरज धरू बूझू हँटल पीड़ा अहँक अधिकांश मे॥

ई मुद्रिका शोभित अहा! अछि प्रभुक सुन्दर नाम सँ।
विश्वास लै अनलहुँ एतय हम पाबि कय श्री राम सँ॥

बन्दिनि बनलि छी लंक मे बूझल छलनि नहि राम केँ।
क्यो देखि दुख-दुर्गति अहँक नहि कहि सुनौलक राम केँ॥

नहि हैत आब विलम्ब किछु माता! अहँक उद्धार मे।
पहुँचैक देरी मात्र केवल राम केँ दरबार मे॥

ओ नहि रहथि थिर एक छन, बेचैन सदिखन शोक सँ।
पूछल करथि सीता कतय? सीता कतय? सभ लोक सँ॥

डूबल रहथि रघुवर निरन्तर शोक-सागर-कीच मे।
ताकथि अहाँ केँ भालु-वानर-संग विपिनक बीच मे"॥

विश्वास कपि पर पूर्ण भेलनि दूत रामक ई थिका।
भेली प्रसन्न विदेह-नन्दिनि देखि पुनि-पुनि मुद्रिका॥

सन्देह केँ ओ त्यागि कहलनि समुद कपि हनुमान केँ।
"हम पूर्णरूपेँ बूझि गेलहुँ भक्त अहँ भगवान केँ॥

जाकय अहाँ अति शीघ्र कहबनि प्रभु दयानिधि राम केँ।
दू मास केँ भीतर अवशि लऽ जाथि अपना वाम केँ॥

निश्चित अवधि कऽ देल अछि रावण निशाचर दुर्मती।
जीवित रहब ताधरि कृपा जौँ करथि मा गिरिजा सती॥

अबितहि रहै अछि गुप्तचर रावण-छली केँ नित एतऽ।
बचिकय निशाचर-वर्ग सँ हम रहब कखनो कहु कतऽ॥

ओ आबि नाकोदम अधिक कैने रहै अछि सब घड़ी।
तेँ आब सोचै हम छलहुँ खाकऽ हलाहल झट मरी॥

की आबि सम्मुख मद्रिका लेलक बचा मम प्रान केँ।
लगलहुँ करय हम ध्यान परमाराध्य दयानिधान केँ॥

बाधा उपस्थित ह्वैछ हमरा प्राण-त्यागक काल मे।
प्रायः लगै अछि मरण नहि लीखल अखन अछि भाल मे॥

विश्वास अछि करताह संकट-नाश हमर तमाम तौँ।
हमरा दुरस्थिति सँ दयामय होथि ज्ञाता राम जौँ॥

प्रभु वीरवर छथि, देथि दंड सुरारि मूढ़ प्रचण्ड केँ।
ओ करथि चकनाचूर द्रुति दशग्रीव केर घमण्ड केँ॥

रघुवर विशेष बिलम्ब अयबा मे एतय करताह जौँ।
कथमपि तखन जीवित सिया केँ नाथ नहि पौताह तौँ"॥

ई बूझि वैदेही-व्यथा केँ वायु-सुत बजलाह जे।
से सूनि कपिवर केँ प्रशंसा मनुज नहि करताह के?

कहलनि पवनसुत "मातु! किछु दिन-मास धीरज केँ धरू।
अतिशय पराक्रम-शील रामक नाम केँ सुमिरण करू॥

हे मा! प्रभुक समीप जौँ अखने चलक चाहैत छी।
सामर्थवान सुजान रामक दूत जौँ मानैत छी॥

तौं हे सती-साध्वी सिये ! आज्ञा दिअऽ हमरा अहाँ।
निज शक्ति केँ करतूत आब देखैब हम कहिया कहाँ॥

रामक कृपा सँ पाबि बल हम भेल बड़का ढीठ छी।
चढ़ि कऽ चलू बाहन अहाँ केँ लेल हमरे पीठ छी॥

आदेश दी तौं अैल छी जहिना पयोनिधि लाँघि कऽ।
तहिना अखन लंको नगर केँ लऽ चलब हम टाँगि कऽ॥

कऽ देब दशमुख केँ उपस्थित राम केँ दरबार मे।
देखब अहाँ करतूत तखने एहि पवन-कुमार केँ॥

अपराध केँ स्वीकार कऽ माँगत छमा जौं राम सँ।
तौं ओ कदाचित बाँचि जायत तखन दण्ड तमाम सँ"॥

सीता कपिक ई रंग-ढंग-विचार सुन्दर पाबि कऽ।
कहलनि "पवनसुत ! धैर्य देलहुँ अहँ समय पर आबि कऽ॥

हम तौं अतीव कृतज्ञ छी बिसरब ने अइ उपकार केँ।
स्वीकार अछि, मानैत छी हनुमान ! अहक विचार केँ॥

गति अछि पवन-सन, तेज अग्निक तुल्य हम मानैत छी।
लऽ जैब हमरा पार से सामर्थ अछि, बूझैत छी॥

अद्भुत अहाँ मे बुद्धि-बल एवं विचार पवित्र ई।
रामक पठावल दूत छी, पावन अहँक चरित्र ई॥

देखैत छी लक्षण अहाँ मे पूर्ण श्री धीमान केँ।
छी पूत पवनक मानि गेलहुँ दूत दयानिधान केँ॥

प्रभु सँ विलग रहलहुँ बहुत दिन, थोड़ थीक विपत्ति की ?
कऽ देब दूर विपत्ति ई हमरा तखन आपत्ति की ?

तद्यपि विचारक बात ई जे जैब वानर-संग मे।
भऽ जैत तन-स्पर्श हमरा पर-पुरुष केँ अंग मे॥

ई की उचित छै नारि लय समुचित विचार अहीं कहू।
किछु नहि करू संकोच मन मे, वीर छी निर्भय रहू॥

सम्भव इहो नहिं दूर एतबा पीठ पर जायब कोना ?
अहं तीव्र गति सँ गगन मे ऊड़ब प्रभञ्जन-गति जेना॥

नभ मे रहब आतंक सँ खसि पड़ब जौं आकाश सँ।
भऽ जैब मूच्छित सूखि जायत मुख हमर अति प्यास सँ॥

देखत असुरगण एक वानर जाइ अछि लऽ नारि कें।
बूझत सिया कें कपि कोनो लऽ जाइ छनि परतारि कें॥

दौड़त-भिड़त लड़ि पड़त नभ मे जौं असुरगण आबि कऽ।
ओ लेत सब दिशि सँ तखन हा! घेरि एकसर पाबि कऽ॥

प्रतिकार कऽ की सकब ? अछि नहिं अस्त्र कोनो हाथ मे।
सहयोग ककरा सँ भेटत नहिं छथि कियो कपि साथ मे॥

एहना परिस्थिति मे तखन की ? कऽ सकब उपाय तौं।
लऽ जैत पुनि लंका सिया कें जैब भऽ असहाय तौं॥

निर्दय विचार-विहीन निश्चर मारिकऽ खा जैत जौं।
आयब अहाँ कें अञ्जनी-सुत ! व्यर्थ ई भऽ जैत तौं॥

अथवा बली छी भऽ सकै अछि मारि सब कें दी अहाँ।
रामक चरण मे शीघ्रतर पहुँचा सकै छी ध्रुव अहाँ॥

हे कपि! मुदा होयत उचित नहिं काज हमर विचार सँ.
मारल कोना जायत असुरगण तखन कोन प्रकार सँ॥

अपनेक सँग-चलबाक अछि नहिं तकर कारण एक छै।
पति-भक्तिनी जकरा हृदय मे बचल बुद्धि-विवेक छै॥

से करथि नहिं स्पर्श कथमपि आन पुरुष-शरीर सँ॥
वरु सहथि कष्ट अपार व्याकुल रहथि यद्यपि अधीर सँ।

छल भेल किछु स्पर्श तन कें लंकपतिक शरीर सँ।
कहु की ? तखन करितहुँ अहीं सोचू कने गम्भीर सँ॥

कपिवर! अहाँ ज्ञानी स्वयं प्रभु-भक्त बड़ बुधियार छी।
जायब अहाँ सँग उचित नहि अछि तैं बुझू लाचार छी॥

शुभ कार्य सिद्धिक हेतु साधन शुद्ध हम चाहैत छी।
अछि हृदय अहँक पवित्र हम सब भाँति सँ मानंत छी

तैं आब अहीं विचारि कऽ बाजू करब हम कार्य से।
हमरा अहाँ कें करक अछि ओ कार्य द्रुति अनिवार्य जे॥

ई बात प्राय: राम नहिं कहने हेताह जनैत छी।
केवल पता जाकऽ हमर दीअनि उचित बुझैत छी॥

आबथि एतय मारथि निशाचर वर्ग कें संग्राम मे।
लऽ जाथि हमरा जीति कऽ छनि शक्ति प्रियतम राम मे॥

तत्पर रहै छथि सतत प्रभुवर दुष्ट कें संहार मे।
तेँ दुष्ट-दलनक नाम सँ प्रख्यात छथि संसार मे"॥

सीता-कथन सँ भेल अति आनन्द कपि हनुमान कें।
लगला कहय माता सिया सँ नाम लऽ भगवान कें॥

"हे देवि! अपने कें कथन अति युक्ति-संगत भेल ई।
संसार लय शिक्षा-जनक शुभ सीख हमरो लेल ई॥

रामक प्रिया सचमुच अहाँ विदुषी परम बुधियारि छी।
होयत किये नहिं नीक मति मिथिलेश जनक-दुलारि छी॥

मा! ज्ञान भेटल पैघ हमरा अहँक आशीर्वाद सँ।
सीखथु सकल नारी सुशिक्षा सुखद अइ सम्बाद सँ॥

हे मा! जेना जे कहल हमरा सँ कृपा कय दास कें।
से सब सुनेबनि चरण-लग मे बैसि प्रेम-निवास कें॥

हम कैल आग्रह मा! अहाँ सँ संग मे चलबाक लै।
से भक्ति-वश बजलहुँ तुरत प्रभु सँ मिलन करबाक लै॥

मा! उचित बुझना गेल हमरा ऐह अपन विचार सँ।
अतिशीघ्र भऽ जायत मिलन हे मातु! प्रणाधार सँ॥

हे मा! कृपा कऽ आब सूनू एक दासक प्रार्थना।
दी चिन्ह किछु जे दऽ सकनि विरही प्रभू कें सान्त्वना॥

ओ बस्तु होयत पूर्ण रूपें अटल ध्रुव विश्वास लै।
नभ-मार्ग सँ घूमब अहा! ओ हैत रक्षक दास लै॥

एवं कोनो घटना कहू प्रभु आ अहाँ कें ज्ञात हो।
कहि कऽ सुनेबनि नाथ कें ओ गुप्त बीतल बात हो॥

विश्वास प्रभु कें होनि सिय जीबैत छथि लौं लंक मे।
कपि देखि आयल, बात कयलक, चिन्ह अनलक संग मे"॥

ई कहब कपिक यथार्थ छनि से बूझि सकल प्रकार सँ।
विश्वस्थ भऽ कहलनि जनकजा वचन पवन-कुमार सँ

"कपिवर ! सुनेबनि एक-दू घटना अहाँ श्री राम केँ।
पद-कमल-लग मे बैसि सुन्दर सुनर शोभाधाम केँ॥

अनुपम परम अछि चित्रकूट पहाड़ जम्बू द्वीप मे।
मन्दाकिनी नामक नदी नित बहथि ताहि समीप मे।

फल-पुष्प सँ परिपूर्ण तरुवर मधुप लुधकल फूल मे।
जप मे निरत मुनिगण ततय तप करथि धारक कूल मे॥

वातावरण सुरभित बहै छल पवन शीतल-मंद सँ।
हम सभ निवास करैत आश्रम मे छलहुँ आनन्द सँ॥

प्रभु एक दिन स्नान कऽ दौड़ैत अयला भोर मे।
तीतल वसन-युत आबि कऽ प्रभु बैसि रहला गोद मे॥

पुनि एक दिन केँ बात अछि बैसल छलहुँ प्रभु निकट मे।
आयल कतहुँ सँ एक कौआ-रूपकारी विकट मे॥

भय भेल हमरा बैसि गेलहुँ प्रभुक सुखकर कोड़ मे।
किछु काल लय हम सूति रहलहुँ तखन निद्रा घोर मे॥

जगलहुँ जखन प्रभु राम हमरा अंक मे शिर राखि कै।
निश्चिन्त सँ ओ सूति रहला मूँदि दून्नु आँखि केँ॥

ओ आबि वायस मारलक हमरा हृदय मे चोंच सँ।
हम को करी सोचै छलहुँ बैसलि जखन संकोच सँ॥

की तखन रक्तक बूँद उर सँ कपि ! अधिक लागल ढरै।
दुख-दर्द सँ अति नोर दून्नु नयन सँ लागल झरै॥

पड़लनि प्रभुक तन पर गरम ओ बूँद जगला निन्द सँ।
कारण कहै ले छलहुँ तत्पर भेल आनन्दकंद सँ॥

की पूछि देलनि प्रभु "प्रिये ! शोणित कियैक बहैछ ई।
कैलक कियो आघात तन मे बूझि संह पड़ैछ ई"॥

पुछतहिं छला की देखि लेलनि दुष्ट काग-विहंग केँ।
टपकैत तकरा लोल सँ शोणित छलै वदरंग केँ॥

ओ तौं छलाह सुरेश-सुत नामी जयन्तक नाम सँ।
आयल छला ओ शत्रुता करबाक लय श्री राम सँ॥

देलनि चला रघुवीर सहजहिं कुशक मंत्रित वाण कें।
ओ ऊड़ि भागल तखन रक्षा लेल अपना प्राण कें॥

भागल-फिरल निज प्राण-रक्षा हेतु तीनू लोक मे।
नहिं किन्तु क्यो देलक शरण पड़ि गेल बड़का शोक मे॥

असहाय भेल डेरैल-सन रामक शरण मे अैल ओ।
प्रभु-पैर पर पड़ि रहल, वायस छल बहुत घबड़ैल ओ।

प्रभु कें प्रतिज्ञा छैन्ह क्यो जौं आबि जायत शरण मे।
रक्षा तकर हेतैक जौं लपटैत हमरा चरण मे॥

तैं कैल करुणानिधि छमा खल वायसक अपराध कें।
दृग एक केवल मात्र फोड़ल देखि दोष अगाध कें॥

देलक व्यथा किछु काल हमरा तकर कैलनि ई दशा।
तौं एहि दोषी पैघ कें हेतै कियैं नहिं दुर्दशा॥

ई तौं विकट अपराध अति कैलक कपट श्री राम सँ।
बाँचल अखन धरि अछि कोना? जीबैत अछि आराम सँ॥

बेशी अहाँ सँ अखन कपिवर! एहि ठाम सुनैब की?
बस, ऐह पूर्ण यथेष्ठ अछि पुनि गुप्त बात बतैब की?

जाकय परिस्थिति हमर कहबनि अवश आनन्दकंद कें।
अविलम्ब आबथि सैन्य लऽ नाशथि निशाचर-बृन्द कें॥

सौभाग्य कें ई चिन्ह चूड़ामणि लिअऽ निज संग मे।
ई देखि कऽ विश्वास हेतनि निज प्रियाक प्रसंग मे"॥

ओ परम सुन्दर रत्न लऽ हनुमान अपना हाथ मे।
अति हर्षमय सत्कार सँ स्पर्श कैलनि माथ मे॥

प्रभु-प्रेमिका सीता-सती कें पवन-पूत प्रणाम कै।
चलबाक लै तत्पर भेला सुन्दर सियावर-नाम लै॥

की रोकि कऽ कहलनि सिया "अछि नहिं एतय किछु देब की?
तद्यपि कहै छी हम अहाँ कें झट कहू तौं लेब की"?

माता सियाक सनेह लखि कपि कहल हर्ष अतीव सँ।
'मा ! देखि मधुर अनेक फल टपकँत अछि जल जीव सँ॥

सीता तखन कहलनि "कोना तोड़ब बहुत रखवार छै।
सदिखन सचेतल वाग मे घूमँत पहरूदार छै"॥

कपि देल उत्तर "जननि ! भय नहि अहँक आशीर्वाद सँ॥
चढ़ि विटप पर हम तोड़ि खायब फल प्रभुक प्रसाद सँ॥

देखबाक अछि के ? के ? दशानन केँ हितैषी बूझिली।
प्रभु राम-दूतक काम अद्भुत अहूँ अखने देखिली॥

प्रभु छथि सहायक तखन चाही शक्ति आब विशेष की ?
करुणामयी मा ! कऽ कृपा केवल अहाँ आदेश दी"॥

फल खाइ लें आज्ञा सिया देलनि जखन हनुमान केँ।
कैलनि विचार कनेक देखी घूमि कऽ उद्यान केँ॥

किछु काज बाँकी रहल कऽ ली अखन निश्चय पूर्ण से।
दशमुखक बल-अभिमान केँ किछु-अंश कऽ दी चूर्ण से॥

छै सैन्य कतबा कोन अस्त्रऽ शस्त्र कतवा शक्ति छै।
रण मे टिकंवाला केहन रण-कुशल कतवा व्यक्ति छै॥

□

अशोक वाटिका विध्वंश

ई सभ पता लागत जखन मुठभेड़ एकरा सँ करी।
ललकारि किछु केँ मारि झगड़ा ठानि निश्चर सँ लड़ी॥

छै चारि तरहक शत्रु-सँग वर्त्ताव करक सुरीति जे।
अछि साम एवं दाम, भेदऽ दण्ड बूझल नीति से॥

समझा बुझा कऽ शत्रु केँ वश करी सामक अर्थ छै।
से किन्तु राक्षस प्रति प्रयोग लगैछ प्रायः व्यर्थ छै॥

धन-लोभ दऽ वश मे करी ई दाम नीतिक काज छै।
से तौँ चलत उपाय नहि भेटल कुबेरक राज छै॥

जौँ भेद-नीति चलैब से तौँ सफल होयत नहि मुदा।
कारण, निशाचर मद-नशा मे अछि सुनत नहि किछु कथा॥

एहना परिस्थिति मे प्रयोग लगैछ उत्तम दण्ड कें।
शक्तिक प्रदर्शन कऽ परीक्षा ली विमूढ़ प्रचण्ड कें॥

ई सोचि कपिवर ओहि सुन्दर सकल उपवन-बाग कें।
विध्वंश लगला करय लंका-वाटिकाक सुहाग कें॥

किछु खाथि फल किछु तोड़ि फेंकथि चीखि खट्टा-तीत कें।
जौं किछु कियो टोकनि कि लागथि तुरत गाबऽ गीत कें॥

पहुँचल जखन रखवार पकड़ै लेल कपि हनुमान कें।
की चट पकड़ि देलनि पटकि लऽ लेल असुरक प्राण कें॥

आयल अनेकों अस्त्र-आयुध लऽ असुरगण क्रोध मे।
मारल पवनसुत असुर कें तरु-डाढ़ि सँ प्रतिशोध मे॥

सब गेल दौड़ल हाकरोस करैत रावण-शरण मे।
कहलक "कतहु सँ आबि बन्दर एक अद्भुत वरण मे॥

रुचिगर मधुर फल तोड़ि खेलक फेंकि देलक अधिक कें।
कैलक मनां तौं मारि बैसल बाग-रक्षक-श्रमिक कें॥

तैं हे असुर पति ! दण्ड दी बड़का एहन कपि मूढ़ कें।
कहुना पकड़ि मंगबाउ थूड़ू हाथ-पैर विमूढ़ कें"॥

विध्वंश बागक सूनि कऽ अक्षय कुमारक अंग मे।
लगलक आगि सशस्त्र दौड़ल सैन्य लै बहु संग मे॥

धड़फड़ जकां अगुतैल दौड़ल गेल कपिक समीप मे।
जहिना देखैछी जाइ अछि फनिगा मरइ लै दीप मे॥

ई चाहलक कपि कें तुरत हम मारि देबनि वाण सँ।
हा ! किन्तु ओ लंकेश-सुत निज हाथ धोलक प्राण सँ॥

ई दुखद घटना सूनि रावण क्रोध मे भरि गेल ओ।
अपने स्वयं ऊठल चलइ लय तुरत तत्पर भेल ओ॥

सोचल हतइ लय एक कपि कें जाइ हम लंकेश की ?
नहि ई उचित, तैं एक कोनो वीर कें आदेश दी॥

देलक तखन आदेश दशमुख मेघनाद स्वपुत्र कें।
जो मारि कऽ की बान्हि कऽ तों आनि दे कपि क्षुद्र कें॥

झट मेघनाद पिताक आज्ञा मानि तत्पर भेल ओ।
हनुमान कें सम्मुख लड़ै लय आबि तखने गेल ओ॥

ठनिगेल दूनू मे परस्पर युद्ध अति विकराल सँ।
लगला लड़य लंगोटधर लऽ बिटप-डाढ़ि विशाल सँ॥

लंकेश-सुत हत होइछल नहि, ब्रह्म कें वरदान सँ।
भेटल छलै दिव्यास्त्र तैं लड़ि रहल छल हनुमान सँ॥

सोचल पवनसुत जाइ कहुना रावणक दरबार मे।
तैं बान्हि हमरा जैक चाही ब्रह्म कें सत्कार मे॥

देखी कने लंकेश कें कतबा विभव-सामर्थ छै।
वेदज्ञ अछि कहबैत किन्तु बिचार विलकुल व्यर्थ छै॥

ई सोचि कऽ हनुमान देलनि त्यागि करब प्रहार कें।
चुपचाप भऽ ओ ठाढ़ रहला राखि निज हथियार कें॥

ई पाबि अवसर इन्द्रजित झट बान्हि नागक पाश मे।
लऽ चलल बापक लग प्रशंसा हैत ताही आश मे॥

यद्यपि छलनि बान्हल दुनूटा हाथ अति मजबूत सँ।
तद्यपि बहुत मारल गेला निश्चर पवन-सुत-पूँछ सँ॥

लँकेश कें सम्मुख अनिल-सुत ठाढ़ भऽ सोचै छला।
देखी कने वार्त्ता करै कें केहन एकरा मे कला॥

□

हनुमान कें रावण सँ भेंट

कोपित बहुत भऽ गेल छल रावण विटप कें नष्ट सँ।
क्लेशित रहय अक्षय कुमारक मृत्यु सुनि कऽ कष्ट सँ॥

तैं पूछि ऊऽल कटु वचन-युत वाक्य रावण रुष्ट सँ।
"तों के? थिकें परिचय अपन दे बाजि कऽ स्पष्ट सँ॥

कयलें उपद्रव ढीठ भऽ तों आबि हमरा राज मे।
साहस कोना भेलौक तोरा एहि तरहक काज मे॥

अयलें कतय सँ? की प्रयोजन छौक? तोहर नाम की?
तों नहि जनै छें? होइ छै दुष्कर्म कें परिणाम की?

हम के थिकहुं नहिं चीन्हले ँ हम वीर मे विख्यात छी।
पुरुषार्थ हमरा मे परम तँ पुरुष मे प्रख्यात छी॥
कयले ँ महा अन्याय तों अक्षम्य छौ अपराध ई।
प्रिय पुत्र के ँ हति दोष कयले ँ तों कियैक अगाध ई॥

हम बूझि गेलहुँ विपिन-चर वानर महा अज्ञान छे ँ।
हमरा लगै अछि अधिक कैने मद्य प्रायः पान छे ँ॥
सत्कर्म की ? दुष्कर्म की ? नहिं तकर किछुओ ज्ञान छौ।
तें आब बचि सकवे ँ अखन नहिं, गेल तोहर प्राण छौ॥

चुप छे ँ कियै ? कहबाक जे छौ कह खुलासा बात की ?
हम बूझि गेलहुँ छे ँ महा हिंसक निठुरतम पातकी"॥
बजबाक ढंग विचित्र तरहक देखि एवं सूनि कऽ।
मुँहतोड़ उत्तर देल कपि किछु शब्द मे झट चूनि कऽ॥

कपि वीर छाती तानि कऽ लगला कहय लंकेश के ँ।
डटि कऽ तखन लगला सुनाबय किछु अपन उद्देश्य के ँ॥
"सुग्रीव के ँ मन्त्री थिकहुँ आ रामचन्द्रक दूत छी।
हनुमान नाम प्रसिद्ध अछि बलवान पवनक पूत छी॥

जे काम सँ आयल छलहुँ से कैल हम आराम सँ।
ई आब जाकय कहब घटना एहि ठामक राम सँ॥
भऽ गेल हमरा भेँट तोरा सँ निशाचर-रूप मे।
छे ँ विभव-मद मे चूर्ण एवं धूर्त्त कपटी भूप मे॥

हमरा सुनल छल लोक सँ तों पैघ बड़ वेदज्ञ छे।
देखैत छी हम किन्तु तों सब भाँति सँ अल्पज्ञ छे ँ॥
ईहो बुझल अछि तों कि के ? छल दबल वालिक काँख मे।
धनु नहिं उठा सकले ँ लजे ले ँ भीड़ लाखों-लाख मे॥

लखि सुन्न कुटिया पर पहुँचले ँ चोर बनि मुनि-भेष मे।
सीता-हरण कऽ भागि अयले ँ तुरत अपना देश मे॥
कयले ँ कपट जिनका सँगे छथि विश्व-बीच महान ओ।
सब वीर मे बलवान ज्ञान-निधान बड़ विद्वान ओ॥

छथि वैह स्वामी जानकी कें कान सँ तों सूनि ले।
तिनका सँगे जौं रारि ठनबें तौं तकर फल गूनि ले॥
लंका-प्रजा-सँग-सँग स्वयं मरबे तखन छन मात्र मे।
से सोचिले जौं बुद्धि बाँचल छौक तोरा गात्र मे॥
सुन कथन हमरो लंकपति ! जौं हित अपन चाहैत छें।
सुग्रीव-अग्रज वालि कें निज सँ बली मानैत छें॥
तौं वालि-वध केनिहार रामक नारि कें झट छोड़ि दे।
सीता समर्पण कऽ प्रभुक सँग मित्रता तों जोड़ि ले॥
प्रभु-शरण मे जा मानि लेबें जौं अपन अपराध कें।
करथुन छमा, करिहें विनय पद-छूबि सीतानाथ कें"॥
कपि कें कहब उत्तम छलनि यद्यपि अधिक हितकर महा।
लगलै मुदा अप्रिय दशानन कें हँसल कहि कऽ हहा॥
देलक सपदि आज्ञा असुरपति तुरत अपना दास कें।
"दे मारि वानर कें जलधि मे फेंकदे कपि लाश कें॥
ई एक तुच्छ कुरूप कपि की? ज्ञान हमरा देत ई।
अछि बड़ लुटेरा राज्य भरि कें लूटि प्रायः लेत ई॥
कैलक उपद्रव पैघ सुन्दर वाग कें विध्वंश कै।
अछि अति उकाठो थीक ई सन्तान वानर-वंश कें॥
ई गुप्तचर शत्रुक लगै अछि तुरत एकरा मारि दे।
आ बान्हि टाँगरु हाथ जिविते माटि तर मे गाड़ि दे"॥
अछि चोर मे ई धूर्त्त आयल कोन तरहे लंक मे।
हमरा सँगे वार्ता करै अछि ढीठ भऽ निःशंक मे॥
नहि कर विलम्ब विशेष मटिया तेल तन पर ढारि दे।
जड़ि जैत पावक सँ भसम कऽ भूमि तर मे पारि दे॥
ई सूनि लंकापतिक अनुचित निठुरतम निर्देश कें।
मंत्री विभीषण नीतियुत कहलनि बचन लंकेश कें॥
"हे बन्धुवर विद्वान ! त्यागू एहि क्रोधावेश कें।
राखू बचा कऽ नीति अनुपम परम अपना देश कें॥

भूपति करथि नहि दूत कें बध राजनीति कहैत छै।
दी दण्ड जकरा योग्य जे हो शास्त्र-मध्य लिखैत छै॥

नीतिज्ञ छी नीतिक विरुद्ध कदापि अपने नहि चली।
पिटबाउ, सिर कें मूड़ि कऽ घुमबाउ लंका कें गली॥

अथवा धिपा कऽ लोह सँ दी दागि कपिक शरीर कें।
बध किन्तु करक विचार नहि चाही अहाँसन वीर कें"॥

सुनि सुमति रावण कहल-"बेश, विचार जेह कहैत छी।
दे दण्ड वानर कें अखन जे बूझि उचित पड़ैत छी॥

प्रिय अधिक लाँगड़ि होइ छै कपि जाति कें सूनैत छी।
तैं आगि लाँगड़ि मे लगा दे उचित दण्ड बुझैत छी॥

सब दिनक लेल अवश्य ई रहतैक दाग, जनैत छी।
पुनि आब लंका ऐब नहि सोचत कदापि, बुझैत छी"॥

आदेश पबितहि दासगण जयकार कऽ लंकेश कें।
फाटल-पुरान-मलीन वस्त्र बटोरि-आनि विशेष कें॥

सब वस्त्र लाँगड़ि मे लपेटल बोरि देलक तेल सँ।
देलक लगा झट आगि कें लऽ चलल घुमबै लेल तौं॥

लंकाक पथ प्रत्येक पर लऽ चलल सब हनुमान कें।
ई गुप्तचर छी शत्रुकें अपमान कर अज्ञान कें॥

मचबैत शोर चलैत सब घुमबैत प्रति बाजार मे।
पीटैत-धक्का दैत गाड़ि पढ़ैत विविध प्रकार मे॥

दुर्गति करऽ सँ बाज नहि आयल कियो हनुमान कें।
हा ! किन्तु कपिवर करथि जय-जयकार श्री भगवान कें॥

निशिचरक दल सँ पकड़ि किछु कें पटकि पथ पर देथि ओ।
झट नाक एवं कान ककरो नोंचि नख सँ लेथि ओ॥

ककरो बना कन्दुक जकाँ फेंकथि पवनसुत पैर सँ।
जे आत्रि लग मे बात सुनबनि पूर्ण रूपें वैर सँ॥

झट कूदि पड़ला भवन पर लागल जड़य गृह स्वर्ण कें।
पशु सकल खुट्टा तोड़ि भागल छल अनेकों वर्ण कें॥

अउनी-पथारी लागि सभ के' गेल लंका नगर मे।
जड़ि गेल घर-भण्डार सभ के' हाय! किछुए पहर मे॥

देखल जड़ैत विशाल दशमुख केर शयनागार के'।
लगली बहाबय नारिगण सिर पीटि अश्रुक धार के'॥

जड़लैक सब सम्पत्ति हा! राखल छलै जे गेह मे।
बच लैक केवल वस्त्र-भूषण छल पहिरने देह मे॥

बचलनि विभीषण-भवन केवल मात्र लंका-नगर मे।
लहराथि सदिखन रहथि ओ प्रभु-प्रेम-सागर-लहर मे॥

छल भेल रावण एकदिन अति मुदित सीता-हरण सँ।
से बहु दुखी भऽ रहल अछि अक्षय कुमारक मरण सँ॥

छल जे सुखी जहिना कुवेरक राज्य-सम्पत्ति पाबि कऽ।
से अछि दुखी हा! आइ लंका के' जड़ैत विलोकि कऽ॥

तें छै कहल ई 'नहि रहल सब दिन जगत मे क्यो सुखी।
नहि रहल सब दिन आइ धरि संसार मे क्यो जन दुखी'॥

सिय के' सुनौलक निश्चरी क्यो कपिक ई अति दुर्दशा।
'सीते! अहँक कपि आइ रामक पाग के' देलक खसा॥

दुर्गति दनुज-दल कऽ रहल छै अखन लंका-नगर मे।
लाँगड़ि जड़ै छै देह जड़तै आब किछुए पहर मे॥

बेवश बहुत वानर अखन छथि, बन्द बाजब वीर के'।
बल-बुद्धि किछु नहि हा! चलै छनि ओहि कपि रणधीर के''॥

ई कष्टप्रद संवाद सुनितहि सीय शोकित भऽ गेली।
लगली करय सविनय निहोरा अनल सँ श्री मैथिली॥

"हे अग्निदेव! दयालु छी, करितहु दया किछु आइ जौं।
हनुमान लेल स्वभाव तजि शीतल अहाँ भऽ जाइ तौं॥

बिसरब ने कहियो हम अहँक हे अग्नि! अइ उपकार के'।
बड़का हितैषी हैब हमरा संग अवध कुमार के'॥

ई छथि पवनसुत पवन छथि अपनेक सहयोगी सही।
तें मित्र-सुत के' कष्ट अपने दूर कऽ शीतल रही॥

सीताक सविनय प्रार्थना पर अग्निदेव यथार्थ मे।
कपि लेल शीतल भऽ गेला ओ निश्चरक श्रम व्यर्थ मे॥
कूदैत नगरक महल पर लगबैत आगि पड़ाथि ओ।
प्रभु-भक्त बड़ ज्ञानी विभीषण-भवन पर नहि जाथि ओ॥
कुदलाह सागर मे मिझोलनि आगि, अति हर्षित छला।
ई काज जे कैलनि कहै लय समुद सीता-लग गेला॥
कैलनि प्रणाम स्वकाज कहलनि हाथ दूनू जोड़ि कऽ।
"हे मा! अहिक प्रसाद सँ खेलहुँ मधुर फल तोड़ि कऽ॥
जे अैल सम्मुख दनुज रोकक लेल तोड़क काल मे।
तकरा पठौलहुँ मारि-चूड़ि कराल कालक गाल मे॥
आज्ञा दिअऽ हम जाइ झट श्री राम-लक्ष्मण छथि जतऽ।
बैसल प्रतीक्षा मे सुनै लय सुधि अहँक होयता ततऽ"॥
कैलनि विदा हनुमान कें सीता समुद आशीष दऽ।
पद-कमल-रज कर सँ उठा सिर पर सहर्ष कपीश लऽ॥
चलला सुखद सम्बाद सीता-सुधिक लय आनन्द सँ।
कहिकय सुनौता पवनसुत सन्देश रघुकुल-चन्द सँ॥
बैसल प्रतीक्षा मे छला अइ पार सागर-तीर मे।
अंगद तथा सुग्रीव वानर-भालु-वनचर-भीड़ मे॥
घबड़ैल, चिन्ता सँ व्यथित भऽ राति-दिन बितबै छला।
बिनु अन्न-जल किछु पान कयने रहथि, नहि सूतै छला॥
अबितहि हेता हनुमान, सब अनुमान ई करितहि छला।
की पवनसुत अयलाह, लखितहि सब अहा! हर्षित भेला॥



लंका सँ वापस

सहजहि सकल मिलि लोकि लेलनि हाथ पर हनुमान कें।
कहलनि "अहाँ ई काज कैलहुँ पैघ बड़ भगवान कें"॥
रामक निकट अयलाह सब हनुमान कें लय संग मे।
प्रभु-चरण पर सिर-टेकि देलनि कपि विशेष उमंग मे॥

चुभकैत सब पहुँचै गेला आनन्द-जलधि-तरंग में।
चाहैत छथि सब हम कहो सन्देश सियक प्रसंग मे॥

आनन्दयुत दृग युगल सँ प्रेमक विमल वर वारि कें।
हनुमान देलनि ढारि पद पर समुद अवध-विहारि कें॥

"माताक दर्शन भेल हमरा" कहल श्री भगवान सँ।
उर सँ लगा लेलनि अहा! हनुमान कें सम्मान सँ॥

पूछल सियावर—"हे हितैषी! छथि सिया तौं कुशल सँ।
दुबरैल तौं नहिं छथि अधिक सुकुमारि अति दुख:-विकल सँ॥

किछु खाइ छथि की नहिं? वसन तौं मैल हेतनि अंग मे।
बतियाथि ककरा सँ सतत के? रहनि सीता-संग मे॥

सादर रखै छनि की? अनादर छनि करैत बताउ तौं।
की? काज करबा लेल कहलनि अखन अहाँ सुनाउ तौं॥

गेलहुँ कोना? रहलहुँ कतय निष्ठुर असुर कें देश मे।
छीपल कोना कऽ छलहुँ कपिवर! कोन तरहक भेष मे॥

अनुमान किछुओ कैल, शत्रुक सैन्य कतबा छैक की?
सुग्रीव-अंगद-लखन-सम सामर्थ अरि के छैक की?

दशमुखक शासन सँ प्रजागण छै रहैत प्रसन्न सँ?
नित राज्य कें भण्डार की? भरले रहै छै अन्न सँ?

अपकीर्त्ति कैलो पर दशानन की रहै अछि चैन सँ?
की बूझि मे आयल कुलक्षण सूनि रावण वैन सँ"?

कपिवर प्रभुक स्तुति-विनययुत कैल बहुत प्रकार सँ।
लगला करय वर्णन अपन यात्राक सब विस्तार सँ॥

"हे नाथ! पतिव्रत पर अटल छथि तौं जननि सब भाँति सँ।
कहुना बिताबथि समय माता रहथि किन्तु अशान्ति सँ॥

घेरलि निशाचरि सँ रहथि सदिखन बुभू बन्दिनि जकाँ।
ओ तौं लगै छथि दीन नर-कंगाल कें नन्दिनि जकाँ"॥

पुनि बीच मे रघुवीर पूछल बात किछु हनुमान सँ।
सीताक सम्प्रति भावना बुझबाक छनि अनुमान सँ॥

"हे कपि ! कहू हमरा बिना रखने कोना छथि प्राण कें।
छथि कोन तरहें सिय बचौने निज सतीत्त्वक मान कें" ॥

हनुमान देलनि केहन उत्तर तखन श्री भगवान कें।
से बूझि मानय पड़त छथि हनुमान सागर ज्ञान कें ॥

"अति ऊँच बैदेही-सतीत्त्वक प्रबल छहर दिवाल कें।
नहिं शक्ति छनि फनबाक ओ यमराज-रूपी काल कें ॥

छनि प्राण रक्षित प्रभुक पावन नाम-पहरूदार सँ।
सदिखन रहै छनि बन्द दृढ़तर अटल ध्यान-किवार सँ ॥

प्रभु कें चरण मे नयन लागल रहनि नित ताला जेना।
कहु तखन सीता-प्राण तन सँ निकलि कऽ जेतनि कोना ॥

जीबैत छथि कहुना हृदय मे अधिक धीरज धारि कऽ।
हमहूँ बहुत धीरज बन्हौलहुँ बाजि वचन विचारि कऽ ॥

जागलि रहथि सूतथि ने कखनो जपथि नाथक नाम कें।
निशिचर-त्रियागण कें सुनाबथि प्रभुक सद्गुण ग्राम कें ॥

के ? कोन दिशि सँ आबि जायत असुर चौंकलि रहथि ओ।
दुष्टा-निशाचरि केर अप्रिय वचन सदिखन सहथि ओ ॥

सब निश्चरीगण अहाँ दिशि सँ जानकी-मन-मोड़ि कऽ।
लंकेश-दिशि करबाक लै अछि पड़ल आफनतोड़ि कऽ ॥

हम देखि हुनकर दुर्दशा भेलहु दुखित हमहूँ महा।
मन भेल लंका कें उलटि हम वारिनिधि मे दी बहा ॥

छल किन्तु आज्ञा प्रभुक नहिं तैं दाबि देलहुँ क्रोध कें।
मानय पड़ल अगुताइ नहिं आत्माक अइ अनुरोध कें ॥

छिपि कऽ खसौलहुं मुद्रिका पड़लनि जननि कें हाथ मे।
रहलहुँ छिपल किछु छण अशोकक सघन सुन्दर पात मे ॥

ओ अकचकेली देखि अँगुठी राम नामांकित अहा !
लगलीह ताकय चारु दिशि सीता प्रसन्न छली महा ॥

हम पाबि अवसर प्रकट भेलहुँ बटुक ब्राह्मण-वेष मे
कर जोड़ि कऽ हम ठाढ़ रहलहुँ भक्ति कें आवेश मे ॥

पुछलनि – "अहाँ के ?" देल उत्तर हम "पवन केँ पूत छी।
अछि जन्म वानर-वंश मे हम अखन रामक दूत छी'॥

विश्वास भेलनि पूर्ण रूपेँ जखन हमरा पर अहा !
हम दास छी अपनेक सचमुच जानि लेलनि तखन हा !

भेली प्रसन्न विशेष पुछलनि कुशल-मंगल नाथ केँ।
ध्यानस्थ भऽ किछु काल धरि रहली झुकौने माथ केँ॥

हम बूझलहुँ मा डूबि गेलो शोक-पीड़ा-कीच मे।
सदिखन रहै छथि पड़ल अतिशय शोक-सागर-बीच मे॥

सुकुमारि छथि नारी परम पीड़ा अधिक सहती कोना ?
सोचू अहूँ जीबैत कतबा काल धरि रहती एना॥

हे नाथ ! आब विलम्ब नहिं लंका-विजय मे किछु करी।
अछि पैघ अन्देशा जिबै छथि अम्ब किछु छन पल-घड़ी॥

अछि आब केवलमात्र देरी श्री प्रभुक आदेश केँ।
रण-हेतु सब तत्पर प्रतीक्षा मे रुकल निर्देश केँ॥

अछि शत्रु दल केँ दलन करबा लेल अधिक जोशैल ई।
अछि कच्छमच्छ करैत लंका जाइ लै अगुतैल ई॥

बहुतो बरष सँ अछि दशानन पर बहुत खिसिऐल ई।
दर्शन करत श्री जानकी केँ तैं एतेक अगुतैल ई॥

प्रभु छी समर्थ, विलम्ब की होयत कोनो टा काज मे।
अगुता रहल अछि जाइलय रण-हेतु लंका-राज मे॥

दानव-दलन मे देर होमक कोन कारण बात की ?
लंका-विजय केँ संग मारल जैत रावण पातकी॥

हम देखि अयलहुँ वीर नहिं ओहन कियो अछि लंका मे।
जे लड़ि सकत किछु काल अंगद श्री लखन केँ संग मे॥

वश, नाथ ! हमरा अछि अन्देशा मात्र माता-प्राण केँ।
दुख-शोक सँ पीड़ित कखन धरि राखि सकती प्राण केँ॥

नहिं सान्त्वना देनिहार छनि मा केँ ओतय अप्पन कियो।
नहिं पहुँच सकता जतनि-लग सुर नाग-पशु-मानव कियो॥

ई छलनि रक्षक रूप मे शुभ रत्न चूड़ामणि अहा !
सेहो पठा देलनि अहाँ कें आब अछि चिन्ता महा'' ॥
कपि कें कथन सुनि राम किछु क्षण सोचि कहल कपीश कें।
''सुग्रीव ! सेना लऽ चलू लंका, सुमिरि शिव-ईश कें ॥
जौं आब अधिक बिलम्ब हम सभ करब ध्रुव पछतैब तौं।
रण शीघ्र जीती तखन जीवित जानकी कें पैब तौं'' ॥
आदेश रामक पाबि बाजल दुन्दुभी रणक्षेत्र कें।
चलि पड़ल सेना पाबि कऽ सेनापतिक संकेत कें ॥
कहु तौं तखन आज्ञाक पालन मे विलम्बे हैत की ?
रुचि देखि रामक भक्त सँ बैसल कनेकों जैत की ?
लगला विचारय जाइ सागर-पार लंका नगर मे।
दी मारि सब निश्चर-असुर कें पहुँचि किछुए पहर मे ॥
तँ एक दृढ़तर पुलक रचना हैब अति अनिवार्य छी।
सम्प्रति तुरत मिलि संग सभ कें करक ई शुभ कार्य छी ॥
भेलनि विचार समस्त शिल्पी कें सभक पसंद सँ।
लगि जाइ पुल-निर्माण मे आदेश आनन्दकंद सँ ॥
कोनो असंभव-कठिनतम नहिं कार्य अछि संसार मे।
जे हैत नहिं सम्पन्न, मिलि कऽ करी जौं सब प्यार मे ॥
नल-नील छल विज्ञान-विद लागल बनाबऽ सेतु कें।
जयकार कऽ लय पाणि मे सब राम-विजयक केतु कें ॥



लंका पर चढ़ाई

भऽ गेल निर्मित सेतु सागर-बीच अद्‌भुत एकटा।
कपि-सैन्य सब उतरऽ तुरत लागल जेना नभ मे घटा ॥
लऽ केतु कर मे सेतु पर रण हेतु छथि चलि पड़ल ओ।
जय राम जय-जय राम जय उद्‌घोष कऽ बढ़ि रहल ओ ॥
उत्साह सबहक देखि बजला प्रभु सुप्रिय सौमित्र सँ।
''हे प्रिय अनुज ! जीतब कठिन नहिं एहि असुर अमित्र सँ ॥

अछि किन्तु चिन्ता, युद्ध मे लगि जैत समय विशेष जौं।
की ? पाबि जीबित सकब सोता कें अधिक संदेह तौं ॥

लछुमन ! समुद्रक मध्य किछु छन रहक हम चाहैत छी।
विरहाग्नि सँ दगधल हृदय शीतल करऽ चाहैत छी॥

जीबित सिया छथि सूनि हमहूँ अखन धरि जीबैत छी।
सीता-वियोगक दुख अतीव सदैव सहैत रहैत छी॥

कहिया शरीर सजैब हम सुन्दरि सिया-सन सोन सँ।
सौन्दर्य-शालिनि-संग हम बतियैब कहिया मोन सँ॥

रोगी रसायन-पान कऽ नाशथि जेना निज रोग कें।
तहिना मनोहर छवि सियाक विलोकि नाशब शोक कें॥

सिय-वचन सूनब कखन ? देखब सुभग नयन विशाल कें।
दर्शन करब हम कखन सिन्दुर सँ सुशोभित भाल कें॥

मिथिलेश जिनकर बाप, दशरथ ससुर, पति हम राम छी।
तिनकर दशा ई हो, लगै अछि छथि विधाता वाम की ?

देवर अहाँ-सन जिनक अरु पतिव्रत-महाव्रत-धारिनी।
से आइ भोगथि पति-वियोगक दुख जेना हत भामिनी॥

सीता-वियोगक कष्ट सँ रोगी महा बनि गेल छी।
लछुमन ! अहीं टा वैद्य बड़का अखन हमरा लेल छी"।

बहु भाँति सँ श्री राम विरही छथि करैत विलाप कें।
दै सान्त्वना लछुमन चलाबथि वीर-वार्त्तालाप कें॥

उतरैत पुल सँ ठानि देलनि रण बिना आदेश कें।
किछु नहिं सुनऽ लगला कियो सुग्रीव कें निर्देश कें॥

कपि-भालु-सेना कें हुमेला मे सुनै अछि बात के ?
ओ ध्वनि विशेष कठोर छल जे भेल शस्त्राघात कें॥

कपि-असुर दूनू दल परस्पर लड़ि रहल अछि मोन सँ।
क्यो वाण तथा कृपाण सँ क्यो तीक्ष्ण बर्छी त्रोण सँ॥

प्रति-दिन मरय लागल अनेकों सैन्य दूनू पक्ष कें।
के ? गिन सकत कतबा मरल सेना सहस्त्रों लक्ष कें॥

सब वीर क्रम-क्रम सँ मरल लंकेश के' रण-खेत मे।
प्रभु-तीर सँ हत हैत रावण जैत तैं साकेत मे।।
प्रिय नारि मन्दोदरि मनाँ सदिखन करैत रहैत छै।
"नहि राम सँ झगड़ा बेसाहू" सुमति दैत रहैत छै।।
हा ! ओ मुदा रानी-कथन नहि नीक बूझि पड़ैत छै।
लंकेश भऽ रण सँ हटब अपमान-जनक लगैत छै।।
मारीच के' सुन्दर कथन प्रिय मोन जखन पड़ैत छै।
दिन-दिन घटैत स्वसैन्य के' लखि जितब कठिन लगैत छै।।
बल मे स्वयं के' राम सँ बहु थोड़ बूझि पड़ैत छै।
रण मे मरण के' वरण करबा मे चरण कँपैत छै।।
तद्यपि करत की ? आब रिपु तौं माथ पर चढ़ि गेल छै।
अपने मारत की शत्रु के' मारत कोनो तौं भेल छै।।
सुत मेघनादक मृत्यु सँ विचलित दशानन गेल भऽ।
पुनि कुम्भकरणाक मरण सुनि निज अस्त्र कर मे लेल धऽ।।



रावण-वध

ऊठल लड़ै लय राम-सँग की अपशकुन उचरैत छै।
सब असुरगण के' अशुभ लक्षण तखन देखि पड़ैत छै।।
सूर्यक प्रभा अति मंद भेल विहाड़ि ऊठल जोड़ सँ।
गज-बाजि-श्वान-विलाड़ि-गर्दभ-दृग भरल छल नोर सँ।।
पक्षी भयंकर बोल बाजल भू हिलै लागल ओतऽ।
बहु रक्त बरिसल व्योम सँ आ मेघ अति गरजल ततऽ।।
छै गीध गृह पर लंक मे गीदड़ भगै अछि दहिन सँ।
निश्चर-असुरपति रावणक पग बढ़नि रुकि-रुकि कठिन सँ।।
रथ-अश्व के' देखल चलब लटपट जकाँ भऽ रहल छै।
लच्छन अशुभ पहिने कुफल के' होइ अहिना कहल छै।।
उचरैत छै अपशकुन तद्यपि चेत नहि लंकेश के'।
नशलै विवेक विनाश-छन मे वेद-विद असुरेश के'।।

रावण करय लागल प्रदर्शन अपन सब युद्धक कला।
से किन्तु लीला-धाम के' कं सकत मोहित कहु भला?
असुरेश के' आयुक अवधि अन्तिम छलै जइ काल मे।
छोड़ल अवधपति नाभि मे शर एक दोसर भाल मे॥
लगितहि प्रभुक ओ वाण रावण खसि पड़ल भू पर तेना।
कारी भयंकर पैध कोनो अछि पहाड़ खसै जेना॥
प्रभु-तीर लेलक सोंखि अमृत नाभि-रूपी कुंड कें।
धऽ ऐल मन्दोदरि निकट ओ तीर रावण-मुण्ड कें॥
हत भेल रावण देखि निशिचर दल पड़ायल भीति सँ।
प्रभु-पक्ष के' सभ क्यो प्रसन्न छलाह अति ऐ जीति सँ॥
अति हर्षमय वातावरण बनि गेल वानर-बृन्द मे।
झट कैल तखने घोषणा "रामक विजय" आनन्द मे॥

कहलनि सियापति "सीय कें सम्बाद सुखद सुनाउ ई।
बध कैल रावण के' अहिंक पति विजय-बात बताउ ई"॥
हनुमान ज्ञान-निधान लऽ आदेश श्री भगवान सँ।
चलला कुदैत सहर्ष सिय-लग तेज अपना यान सँ॥
जय राम जय जय राम ध्वनि कऽ उच्चतम आलाप मे।
सिय-लग पहुँचला जे छली श्री राम-नामक जाप मे॥
कैलनि प्रणाम सनम्र माता-चरण मे कर-जोड़ि कऽ।
सीता छली पति-ध्यान मे बैसलि दुनू पद-मोड़ि कऽ॥
आशीष देल प्रसन्न मन सँ चीन्हि वानर वैह छी।
जे जाड़ि लंका गेल छल किछु पूर्व दिन कपि सैह छी॥
अनने अवश्ये हैत शुभ सन्देश शान्ति-निकेत सँ।
अनुमानि बैसक लेल कहलनि हाथ कें संकेत सँ॥
कहलनि "अहा! हे प्राण-रक्षक कपि! अहीं सीताक छी।
सत्पुत्र अपने पतिव्रता श्री अंजनी वनिताक छी॥
संदेश नीक सुनाउ, स्वामी कें कुशल-मंगल कहू।
पुनि आबि गेलहुँ तौं अहाँ ऐ बेर हमरा लऽ चलू"॥

कपि कहय लगला रण-विजय कैलनि कोना ? विस्तार सँ।
श्री राम हति लंकेश केँ कैलनि विदा संसार सँ॥

"हे जग-जननि ! आनन्दायिनि ! राम केँ हृदयेश्वरी !
निज भक्तगण-कल्याण-कारिणि ! विश्व केँ मातेश्वरी !!

सुन्दर सुखद सम्बाद मा ! सानन्द हम सुनवैत छी।
बध कैल रावण केँ अपधपति राम सत्य कहैत छी"॥

ई सूनि शुभ सन्देश सीता कहल प्रिय हनुमान सँ।
"हे कपि-प्रवर ! कृपया मिलादी शीघ्र श्री भगवान सँ॥

सुन्दर एहन सन्देश पर हम देब कीं ? उपहार मे।
नहि बस्तु कोनो हम देखैछी एहि भू-संसार मे॥

नहि अछि जवाहर-रत्न-मणि-साम्राज्य एकरा तुल्य मे।
जे दऽ पुरस्कृति कऽ सकी से बस्तु नहि ऐ मूल्य मे"॥

मा जानकीक प्रसन्नता पर कपि परम आनन्द सँ।
गद्गद् बचन मे कहल रामक दृग-चकोरक चन्द सँ॥

"ई भेल जय अपनेक पातिव्रत्य-धर्मक शक्ति सँ।
रावण मरैत कदापि नहि पशु-भालु-वानर-व्यक्ति सँ॥

ई कैल रचना छल अही केँ आततायी-नाश लै।
निजदेह परलै कष्ट सहलहुँ निश्चरक घर-वास कै॥

ई रण-विजय केँ श्रेय देलियनि राम केँ अहं जानि कऽ।
हम मात्र कैलहुँ काज दूतक प्रभुक आज्ञा मानि कऽ॥

प्रभु केर दुर्लभ दास-पद केँ पाबि जौँ हम गेल छी।
कहु तखन बढ़िकें एहि सौँ की बस्तु हमरा लेल छी॥

चाहैत जौँ छी देब किछु तौँ पुत्र हमरा मानि ली।
सेवा सकल सानन्द हमरा सँ करायब, ठान्हिली॥

मा ! आब हमरा कऽ कृपा ओ असुर केँ दीतहुँ बता।
जे आइ धरि कटुवचन सँ छल रहल अपने केँ सता॥

विकराल रूप कुरूप निश्चर-नारि सकल जमात केँ।
हम मारि मुक्का-लात सँ सब तोड़ि देबै दाँत केँ॥

देलक अहाँ कें क्लेश वेश कुवेष-रूपी राक्षसी।
तकरा उचित हम दण्ड देबा लै अखन तैयार छी॥

आज्ञा दिअ, झोंटा पकड़ि घिसिया पटकि लथाड़ि दी।
जिबिते कही तौ बान्हि कऽ हम माटि तर मे गाड़ि दी॥

आदेश दी तौं अंग सबकें भंग कैकऽ छोड़ि दी।
अथवा कही तौं अखन सबकें आँखि दून् फोड़ि दी"॥

कपिवरक कथन पसंद नहि भेलनि दयामयि सोय कें।
देलनि बचा सभ दंड सँ सिय, मूढ़ अति दयनीय कें॥

कहलनि सिया "हे पवनसुत! ई मूढ़ अति अज्ञान कें।
की दण्ड देब? अबझ निश्चर-नारि निपट नदान कें॥

ई अपन पालनहार रावण केर आज्ञा मानि कऽ।
वर्तावि कैलक अखनिधरि सामान्य महिला जानि कऽ॥

नहि चीन्ह हमरा सकल ई, हम छी ककर अर्द्धाङ्गिनी।
स्वामी हमर के छथि? किनक हम थिकहुँ प्रिय वामाङ्गिनी॥

ई शत्रु हमरा सभक अछि से तौं बुझू भ्रममात्र छी।
दशग्रीव कें तजि सभ कियो बूझू छमा कें पात्र छी॥

परतन्त्र अछि, नहि पढ़ल ई अनजान नारी-धर्म सँ।
सत्संग नहि किछु ओ, प्रयोजन तखन की सत्कर्म सँ॥

तैं ई निशाचरि नहि जनै अछि नारि-शिष्टाचर कें।
ई तामसी अछि जीव, जानत की? मनुज-व्यवहार कें॥

जकरा चरित मे कपि! सकल सद्गुणक पूर्ण अभाव छै।
अपराध सदिखन हैब तौं बनि जाइ तकर स्वभाव छै॥

तैं एहि तरहक जीव पर सज्जन दया करितहि एला।
हमरो सभक कर्तव्य अछि, करिते रही जीवक भला॥

जे भेल क्लेश अनेक हमरा से अपन दुर्भाग्य सँ।
सुख-दुख भेटै छै जन्तुकें निज शुभ-अशुभ कर्तव्य सँ॥

हमरो पहिल जन्मक करम-फल-भोग बाँकी छल कने।
दुष्कर्म कैने हैब तैं दुख काटि लेलहुँ हम भने॥

ई दोष दोसर पर मढ़ब हम उचित नहि बूझैत छी।
बुधियार छी, ई बात तौँ अपनो अहाँ जनैत छी॥

सब पर करी करुणा अहाँ-हमरा सभक ई धर्म छी।
सन्मार्ग पर लायब कुपंथी के सुजन केँ कर्म छी"॥

सीताक सुन्दर नीतिपूर्ण सुवाक्य हनुमत सूनि कऽ।
कहलनि सिया केँ मृदु वचन कपिवर हृदय मे गूनि कऽ॥

"हे देवि ! जनक-दुलारि ! रघुवर-प्यारि अनुपम नारि हे !
सुर-रक्षिके ! वर-दायिके ! माता सुनयना-प्यारि हे !!

जे किछु कहल अपने सुशिक्षा भेल जगतक लेल ई।
जीवन-सफलता-लेल मानव-मात्र केँ ध्रुव भेल ई॥

आदर्श-नारि-प्रसंग मे सुखप्रद सुकथा सुनैत छी।
से सब अखन प्रत्यक्ष हम तौँ मातु-मध्य पबैत छी॥

मा ! आब अपने कऽ कृपा हमरा अखन आदेश दी।
अखने चली प्रभु निकट अथवा एक शुभ सन्देश दी॥

हे अम्ब ! आकुल छथि अहाँ लै अवधपति बलवीर जे।
बैसल सखा-सँग छथि प्रतीक्षा कऽ रहल रणधीर से॥

हे जननि ! जाधरि हम अहाँ केँ नहि मिलायब राम सँ।
ता धरि अहँक ई दास बैसत छनहुँ नहि आराम सँ"॥

बुधियार वैदेही बुझल बड़ वायु-सुत हनुमान केँ।
कहलनि समुद सस्नेह निजमति परम ज्ञान-निधान केँ॥

प्रभु-युगल पद-लग हे सुकवि ! हमरा अहाँ लऽ जाइ जौँ।
कपिवीर ! हमरा प्रभुक शुभ दर्शन करा दी आइ जौँ॥

तौँ हम कदापि ने विसरि कखनो सकब अइ उपकार केँ।
नहि हैब उऋण सुवस्तु देलो पर अपन भण्डार केँ॥

ई जे सफलता प्राप्त भेलछि मात्र अहिक प्रयास सँ।
झट आबि अवसर पर बचौलहुँ एहि तन केँ नाश सँ॥

आशीष हम छी दैत हनुमत ! अमर भऽ जग मे रहू।
जे हो मनोरथ मोन मे निर्धोख भऽ हमरा कहू"॥

भेलहुँ अहाँ सेवक हमर आ अवधपति श्री राम कें।
ज्ञानी अहाँ सब दिन रहब भण्डार सद्गुणग्राम के" ॥

हनुमान पौलनि पैघ बड़ वरदान सीता-अम्ब सँ।
सविनय अपन उद्‌गार कैलनि प्रकट श्री जगदम्ब सँ॥

"हे मा ! हमर जीवन सफल भऽ गेल प्रभुक प्रसाद सँ ॥
सन्तुष्ट छी सीते ! सुखद अपनेक आशीर्वाद सँ॥

जे छल मनोरथ पाबि गेलहुँ दास-पद दुर्लभ महा।
हम पुत्रवत सेवक अहाँ के मा हमर थीकहुँ अहाँ॥

अविलम्ब हम आदेश प्रभु सँ लऽ अवश्य अबैत छी।
पहुँची अहाँ प्रभु-लग तुरत, हम सैह यत्न करैत छी"॥

कहलनि सिया "झट जाउ, प्रभु जहिना कहथि तहिना करी।
कपि ! आइ हम आनन्दघन कें चरण पर कहुना पड़ी" ॥

के ? भाग्यशाली अछि अहा ! हनुमान-सन संसार मे।
जे शक्तिधर कें शक्ति सँ मिलबैथ एहि प्रकार मे॥

आनन्द कें आनन्दघन सँ भक्त कें भगवान सँ।
मिलबैथ करुणा-रूपिणी कें परम कृपानिधान सँ॥

हनुमान हर्षित भऽ पहुँचला राम कें दरबार मे।
प्रभु कें सुनौलनि वचन, जननी जे कहल उद्‌गार मे॥

"हे नाथ ! आज्ञा प्राप्त हो तौं जग-जननि कें आनि दी।
अपना प्रिया प्राणेश्वरी कें प्रभु ! स्वयं पहिचानि ली"॥

देलनि अहा ! आदेश रघुवर परम प्रेमोद्‌गार सँ।
"लै आउ बिछुड़लि प्रेमिका कें पवनसुत ! सत्कार सँ॥

आबथि सिया स्नान कऽ सानन्द शोभित वसन सँ।
कऽ देथि हर्षित परम सभकें एहि सुन्दर मिलन सँ"॥

सत्वर सखागण समुद आज्ञा पाबि रघुकुल-चन्द सँ।
अनबाक लै सादर सिया कें सब चलल आनन्द सँ॥

करजोड़ि सविनय कहल सब "हे जगत-जननी जानकी !
स्नान कँ वस्त्रादि पावन पहिरि चलु चढ़ि पालकी॥

हमरा सभक जीवन परम सार्थक अहा ! भऽ गेल ई।
अपनेक पद-दर्शन सुदुर्लभ आइ सभ कें भेल ई॥
अपनेक दर्शन करक छनि बड़ लालसा श्री मान कें।
अखनहुँ अहिक अनुपम सरूपक छथि लगौने ध्यान कें॥
ओ अहँक दर्शन करथि, दर्शन करु अहूँ भरतार कें।
सुखप्रद युगल-जोड़ीक दर्शन दी करा संसार कें"॥



राम-सीता-मिलन

आनन्दमय वातावरण बनि गेल छल ततकाल मे।
छड़पैत सभ चलला सिया-लग हेंड़ बान्हि विशाल मे॥
ई देखि हर्ष अपार, विपिनक भालु-वानर-वर्ग कें।
छथि सभ सिहाति सुभाग्य-लखि पशु केर सुरगण स्वर्ग कें॥
सीताक दर्शन सँ अहा ! नहि तृप्ति किनको नैन कें।
चाहैत छथि सूनी कने सीताक सुन्दर वैन कें॥
तन-क्लेश मे, रण मे, स्वयंवर-काल मे, दुख-दाह मे।
नारीक दिशि ताकी तौं नहि हो दोष यज्ञ-विवाह मे॥
कर जोड़ि विनय करैत छथि सभ एक पग पर ठाढ़ भऽ।
टपकै छलनि दृग-विन्दु सभ कें स्नेह-पूर्ण प्रगाढ़ भऽ॥
जय मा ! जगत-जननी सिये ! स्वीकृति सभक प्रणाम हो।
अपनेक सेवक-वर्ग मे हमरो सभक ध्रुव नाम हो"॥
सुग्रीव आगू आबि बजला बचन अति उत्साह सँ।
"सब सैन्य कें बढ़ि गेल मासिक चारिगुण गत माह सँ॥
उपहार बाँटल जैत जय के प्राप्ति मे आनन्द सँ।
जे बस्तु चाहथि जे कियो से माँगिलेथि पसन्द सँ"॥
लंका-विजय सँ वीर-वर रघुवीर बड़ बनलाह तौं।
सीताक दर्शन पाबि रघुवर अति प्रसन्न छलाह तौं॥
तद्यपि तुरत स्पर्श तन सँ कैल नहि श्री सीय कें।
नहि पाणि-गहि बैसौल अपना लग प्रिया रमणीय कें॥

आदर्श-नर पुछलनि सिया सँ हँसि अधिक सिनेह सँ।
" रहलहुँ बहुत दिन धरि अहाँ बिछुड़लि स्वजन-पति-गेह सं ॥
दिन-राति रहलहुँ मनुज रिपु कामी दनुज कें गेह मे।
सम्भव कहूँ लागल अहाँ कें दाग हो शुचि देह मे ॥
तेँ पैसि पावक मे प्रिये! पावन स्वय कें कऽ लिअऽ।
अछि चरित विमल प्रमाण सम्प्रति सभक सम्मुख दऽ दिअऽ ॥
हम जौं परीक्षा-बिनु स्वपत्नी मानि संग रखैत छी।
अनुमान ह्वैछ समाज मे अपवाद हैत जनैत छी ॥
सभ लोक बाजल करत 'रखलनि राम ओही नारि कें'।
जइ नारि कें रखलक निशाचर वरष भरि परतारि कै ॥
कहबैत छथि जे राम मर्यादा-पुरुष संसार मे।
से तोड़ि देलनि आइ मर्यादा मनुज-अवतार मे ॥
स्थिति एहन मे कहु अहीं कर्त्तव्य चाही हमर की ?
जग मे कलंकित हम अहाँ नहि हे सिये ! भऽ रहब की ?
रक्षा करक अछि रघुकुलक आदर्श शिष्टाचार कें।
क्यो दूसि नहि भव मे सकथि रामक कोनो व्यवहार कें ॥
तैं हम अखन स्वीकार करबा सँ सिये ! लाचार छी।
पत्नी हमर नहि अखन छी हम अहँक नहि भरतार छी ॥
कैलहुँ उलंघन जे छला रखवार तिनकर बात कें।
कटुवचन सँ लखनक हृदय कें देल जे आघात कै ॥
फल तकर तौं भोगहि पड़त दुख सहक हैत शरीर सँ।
मिथिलाक कन्या छी अहूँ-सोचू कने गम्भीर सँ ॥
हम तौं अपन कर्त्तव्य कैलहुँ सिय-हरण-केनिहार कें।
मारल निशाचर-दुष्ट-कपटी-पातकी-भू-भार कें ॥
रक्षा सदाचारक, निवारण करक छल अन्याय कें।
रघुकुलक कीर्त्ति सुकाव्य मे जोड़ल विमल अध्याय कें ॥
हमरा यदपि सन्देह नहि किछु अछि अहंक चरित्र मे।
तद्यपि पड़ल छी हम अवस्था अखन एक विचित्र मे ॥

१८

मन ह्वैछ अतिशय स्नेह सँ ली कोड़ मे चाहैत छी।
होयब बचौने निज सतीत्त्व अवश्य से मानैत छी॥
हम किन्तु दुविधा मे पड़ल छी, की करी ! की नहि क
कुलशील-मर्यादा कोना राखी बचा कऽ ऐ घड़ी



सीताक अग्नि-परीक्षा संग्रामकेँवार्त्त

सीते ! अहाँ सन सकल सुन्दरि नारि सँ बतियैत जे।
से पुरुष प्रेमी अहंक नहिं बनिजैत ? ई पतियैत के ?
हम नहिं अहाँ केँ अखन राखब संग सोचि बजैत छी।
तैं हमर आशा त्यागि कऽ अन्यत्र जाउ, कहैत छी॥
लछुमन-भरत-लग जा सकै छी राखि ओ सकताह जौं।
स्वामीक त्यागलि नारि केँ रक्षक अहा ! बनताह तौं॥
इच्छा अहाँ केँ हो जतय सिय ! जा ततय सकैत छी।
ली मानि अखनो बात ई आग्रह उचित करैत छी"॥
दुखप्रद वचन रामक छलनि सीताक प्रति कहु केहन हा !
सीता अहा ! कैलनि सहन कहुना वचन ई कटु महा॥
सुनलीह ककरो सँ ने कहियो दुर्वचन सुकुमारि जे।
निज शील केँ रहलो बचौने आइधरि बुधियारि जे॥
से आइ निज पति सँ सुनै छथि कष्ट-प्रद दुर्वाक्य केँ।
देखू समय केँ फेर दैवक, खेल ई दुर्भाग्य केँ॥
बरखा जकाँ जनकात्मजा केँ घाम बरिसल माथ सँ।
आशा छलनि नहिं एहन सूनब बात कटु श्री नाथ सँ॥
स्वामीक मुख सँ सूनि दुखप्रद बात स्वजन-समूह मे।
लज्जावती गड़ि लाज सँ गेलीह शोकक व्यूह मे॥
लगलनि बहय बहु नोर अविरल धार-सम सिय-नैन सँ।
लगलो कहय अति तर्कमय प्रभु केँ विनय-युत बैन सँ॥
"हे बीर-धीर ! महान पुरुषोत्तम थिकहुँ रघुवंश मे।
सम्पूर्ण सद्गुण सँ प्रभो ! अवतरित विष्णुक-अंश मे॥

अपने जखन सब जीव-जन्तुक हृदय-बीच बसैत छी।
के अछि केहन स्वभाव कें स्वामी ! अवश्य जनैत छी॥

ज्ञानी-महान्यायी-दयानिधि विश्व मे कहबैत छी।
कहु तौं तखन सन्देह हमरा पर कियैक करैत छी॥

सज्ञान भऽ अज्ञान सन बजलहुं कियै से तौं कहू।
पति-शरण मे अबितहुँ दुखद कटु वचन हम सुनिते रहू॥

हे नाथ ! हमरा मे एहन कहु कोन चिन्ह पबैत छी।
जे देखि निज अर्द्धांगिनी पर एहन दोष मढ़ैत छी॥

अपना चरित्रक सत्प्रमाण बताउ प्रभु ! हम देब की ?
उर चीड़ दै छी, जौं कहो, प्रत्यक्ष देखिये लेब की ?

अपना सदाचारक शपथ खाकऽ कहै छी शुद्ध छी।
संदेह कें त्यागू, करू स्वीकार नाथ ! प्रबुद्ध छी॥

ई अछि हृदय हृदयेश ! सब दिन सँ अहिंक अधिकार मे।
अधिकार दोसर कऽ सकत के ? सीय पर संसार मे॥

हमरा अहाँ मे अचल अछि अनुराग टूटि सकैछ की ?
बिनु प्राण कें तन छनहुं जीबित कतहुँ बचल रहैछ की ?

हमरा बिना प्रभु, प्रभु बिना हम छनहु जीवित रहब की ?
आदर्शमय जीवन जगत मे राखि किन्नहु सकब की ?

सुनलहुं कतहु बिनु व्योम कें बाबू पवन बहतैक की ?
रवि सँ किरण आ किरण रवि सँ भिन्न भऽ सकतैक की ?

ई सृष्टि कें शाश्वत नियम बदलैक भेल विचार जौं।
अपना प्रिया-सँग छल निठुर करबाक ई व्यवहार जौं॥

तौं नाथ ! अपना हाथ कें ई मुद्रिका त्यागल कियै ?
सादर अहाँ लग हाय ! हमरा अखन लऽ आयल कियै ?

बन्हलहु कियै ओ सेतु आ रचलहु कियै रण-व्यूह कें।
रण मे कियै संहार कैलहु अकुत असुर-समूह कें॥

जौं ऐह छल करबाक तौं कैलहु बिलम्ब अहाँ कियै ?
हम नारि कें रहलहु बनल अवलम्ब परम अहाँ कियै ?

रामक दरवार

शुभ प्रातखन प्रभु राज-सिंहासन सुशोभित कैल जौं।
दरवार लागल छल, सभासद्-राज्य सेवक अैल तौं॥
दरवार मे पहुँचल छला सभ देवतागण स्वर्ग सँ।
पूछल अवधपति सकल सेवक निज सखा जन वर्ग सँ॥
"कहि कऽ सुनाउ बजैत अछि के? की? वचन समाज मे।
सम्मति अहूँ सभ दी सभासद! सतत शासन-काज मे॥
छनि प्रेम लछुमन-भरत आ शत्रुघ्न तीनू भाइ मे?
आचरण उत्तम छनि कि नहि, आ भक्ति श्रद्धा माइ मे?
सीता तथा हमरा विषय मे की? बजैछ-कहैछ की?
शासन-व्यवस्था सँ सकल सन्तुष्ट सतत रहैछ की?
सच-सच कहू स्पष्ट रूपेँ नहि रहू संकोच मे।
निर्धोख भऽ बाजू डरू नहि, नहि पड़ू किछु सोच मे॥
जनता सुखी सदिखन रहथि नृप केँ करक से कार्य छै।
नरपतिक तौं कर्त्तव्य नित जनहित करब अनिवार्य छै॥
हमरा बतादी, कऽ कृपा जे उचित सबहक लेल हो।
हमरा जनादी, अहित कर जौं कार्य किछु ओ भेल हो॥
हम हैब परम प्रसन्न सुनि जन-मनक निश्छल भाव केँ।
निश्चय करब हम पूर्ण सभकेँ सब प्रकार अभाव केँ" ॥
छल भद्र नामक व्यक्ति बाजल अवधपति श्री राम सँ।
स्पष्ट रूपेँ ओ कहय लागल परम सुखधाम सँ॥
"हे परम पुरुषोत्तम! प्रशंसा अहँक होइछ लोक मे।
प्रभु! राज्य भरि मे रहथि नहि कखनो कियो जन शोक मे॥
सब वर्ण केँ नारी-पुरुष बैसथि सतत सत्संग मे।
सोचथि-विचारथि नित्य, सब संसार-हितक प्रसंग मे॥
नित करथि पूजा-पाठ एवं यज्ञ जप-तप नेम सँ।
क्रोधित ने कखनो होथि तैँ सभ रहथि कुशल रु क्षेम सँ॥
निश्चित समय पर मीलि कऽ प्रभु-भजन गावथि प्रेम सँ।
नर-नारि प्रायः सभ करथि एकादशी-व्रत नेम सँ॥

किछु भिन्नता नहि देखि रहलहुँ अवध एवं स्वर्ग मे।
नव युवक सभ बलवान छथि स्फूर्ति बालक-वर्ग मे॥
सभ बृद्ध व्यक्तिक बात मानथि चलथि गुरु-आदेश सँ।
पितु-मातु केँ सेवा करथि तन-मन-लगन विशेष सँ॥
नारी सकल पति-भक्तिनी-अनुगामिनी-साध्वी सती।
सुमुखी-मधुर भाषिणि तथा सौभाग्य-शालिनि गुणवती॥
सभ करथि निज कर्त्तव्य नित्य स्वधर्म केँ अनुसार सँ।
ठानथि कोनोटा काज उत्तम बृद्ध-विप्र-विचार सँ॥
रोगी ने लोभी-आलशी-ठग-चोर-व्यभिचारी कियो।
नहि बनऽ चाहथि मनुज दोसर-धनक अधिकारी कियो॥
क्यो अपढ़ नहि अछि, सतत भागल करथि अनुचित काज सँ।
जौँ भूल किछु भऽ जान्हि तौँ गड़ि जानि मूरी लाज सँ॥
ऊभर ने खाभर कतहुँ अछि कादो ने कीचड़ बाट मे।
नहि जाड़-गरम असह्य अछि मच्छर ने खटमल खाट मे॥
आन्हर ने लाँगड़-बौक आ बकलेल नहि देखल कतौ।
नहि भुट्ट-बधिर कुरूप-भिक्षुक नहि एकोटा अछि कतौ॥
क्यो डूबि कऽ मरलाह जल मे सुनल नहि अइ राज्य मे।
क्यो खसल नहि नर गाछ पर सँ राम केँ साम्राज्य मे॥
दुष्कर्म-दुष्कर्मी-अधर्मी डरथि रामक नाम सँ।
नहि चोर केँ आतंक अछि सूतथि मनुज आराम सँ॥
नहि मूर्ख, पापी, कुटिल-कपटी, धूर्त्त, रोगी छथि कियो।
नहि देखि रहलहुँ राज्य मे बेबूझ बालक आ धियो॥
ऋषि-मुनिक तप-बाधक निशाचर-पति दशानन दुष्ट केँ।
कैलहुँ दलन, हरलहुँ सुजन-मुनि-देव-भक्तक कष्ट केँ॥
देलहुँ अहाँ लंकाक राजा-पद विभीषण मित्र केँ।
लेलहुँ परीक्षा परम पावनि पुहुमिजाक चरित्र केँ॥
तद्यपि सभक मन मे सतत खटकैत छनि किछु बात सँ।
स्वीकार सिय केँ कैल जहिया राम! तकरे प्रात सँ॥

सभजन कहै अछि जाहि सीता के दशानन संग मे।
लऽ गेल बलपूर्वक, कते दिन गुप्त रखलक लंक मे।।
तकरा कोना रखलनि रमापति धर्मपत्नी मानि कऽ।
परगेह-बासिनि नारि कें स्वीकार कैलनि जानि कऽ।।
हमरो सभक गृहणी रहत अन्यत्र आनक गेह मे।
हम राखि लेब अवश्य तकरा पड़ब नहि संदेह मे।।
आदर्श मानथि मनुज-गण महिपतिक कुल आचार कें।
जीवन अपन तहिना बनाबथि लखि नृपक व्यवहार कें।।
तैं आब पुनि ताकय पड़त आदर्श नर कें सृष्टि मे।
रहताह जे प्रत्येक छन झलकैत सदिखन दृष्टि मे"।।
सूनल जखन दुर्वाक्य अति अपवादपूर्ण प्रजाक ई।
जे आइ धरि अवसर एहन नहि भेल छल सुनबाक ई।।
पीड़ित परम भऽ पूछि उठला प्रभु सकल समवेत सँ।
"रघुकुल-बधू पर लांछना लगबैत छी की ? हेतु सँ।।
ई छनि कहब हिनकर उचित की ? सोचि सब मिलि कऽ कहू।
भय त्यागि तजि संकोच, जाउ बजैत क्यो चुप नहि रहू।।
नहि रहथि एको बृद्धजन तकरा सभा क्यो नहि कही।
ओ बृद्ध की ? जे धर्मयुत बाजथि वचन नहि किछु सही।।
पुनि धर्मयुत ओ वाक्य की ? नहि सत्यता अछि कथन मे।
ओ सत्य की ? जन-अहितकर एवं निठुरता वचन मे"।
रामक कथन कें सूनि झुकलनि माथ रामक चरण मे।
प्रभु सँ कहल स्पष्ट रूपें नम्रपूर्वक वचन मे।।
"हे नाथ ! सत्ये छनि कहब भल पुरुष भद्रक बात ई।
सदिखन सुनैत रहैत छी सबतरि दुखद अपबाद ई।।
हमसभ प्रभुक सेवक कतहुँ पहुँचैत छी किछु काज सँ।
सुनितहि अनर्गल बात मूड़ी गाड़ि लै छी लाज सँ।।
तें कहक हमरा पड़ल अछि सरकार कें दरबार मे।
जे उचित जानी से करी अइ कथन कें प्रतिकार मे"।।

ई सूनि दुखप्रद बचन रघुवर झाँपि लेलनि कान कें।
'आबथि अखन सब अनुजगण' आदेश दय दरवान कें॥

लगलाह सोचय 'की करी' चिन्तित उदाश छलाह ओ।
तखने प्रभुक सम्मुख अनुज तीनू तुरत अयलाह ओ॥

कैलनि सप्रेम प्रणाम प्रभु-पद मे सभय कर जोड़ि कऽ,
आदेश-पालन हेतु तत्पर भेल छथि छल-छोड़ि कऽ॥

देखल उदाश विशेष प्रभु आनन्द-घन श्री राम कें।
बैसल निराश छलाह देखल पूर्णमय सुखधाम कें॥

सोचल अखन हमरा एतय प्रभुवर बजौलनि अछि किये?
आनन्द-दाता भऽ स्वयं छथि अइ अवस्था मे किये?

संसार कें उपकार लै अवतार ई सरकार कें।
करबाक छनि आदर्शमय सभ काज विविध प्रकार कें॥

कहु तखन वातावरण एहन विपरीत भेलछि ई किये?
की? हेतु सँ दरवार मे क्यो नहि बजै अछि किछु किये?

प्रायः लगै अछि घटत की? घटना कोनो दुखप्रद्र महा"॥
भय-शोक सँ व्याकुल छला तैं सुमुख सँ गेलनि कहा॥

तखने सियापति बाजि उठला स्नेह-पूर्वक भ्रात सँ।
"घबड़ैब नहि हे भ्रातृगण! सुनि हमर दुखप्रद बात सँ॥

ज्ञाता धरम कें थिकहुँ सभ कर्त्तव्य-पालनहार छी।
परिपक्व अछिए बुद्धि जनिते छी मनुज-व्यवहार की?

हम कऽ रहल छी सभक सम्मुख ई उपस्थित कार्य जे।
अखने करक अछि राज-आज्ञा मानि कऽ अनिवार्य से॥

हम सभ घृणित नर नहि बनी कथमपि जगत कें दृष्टि में।
आदर्श मानवताक अछि रखबाक हमरा सृष्टि मे॥

सभ क्यो जनैछी जानकी कें शुद्धताक प्रमाण मे।
अग्निक परीक्षा लेल गेलनि लंक-रण-स्थान मे॥

भेली परीक्षोत्तीर्ण सीता सभ कहल निर्दोष ई।
से सूनि हमरो भेल छल उर मे परम सन्तोष ई॥

हा ! किन्तु अखन सुनैत छी अपवाद अबितहि नगर मे।
निन्दा-जनक चर्चा चलै अछि सभक घर-घर डगर मे॥

सब आछि बजैत चरित्र सुन्दर सुनल छल छनि राम के"।
कहु तौं मुदा कैलनि कहाँ चरितार्थ पावन नाम के"॥

तैं अछि विचार, अहाँक सम्मुख सैह सोचि बजैत छी।
अनुचित हमर ई कथन अछि ? हम जे अखन कहैत छी॥

दिनकरक कुल मे ई कलंक कदापि लागऽ देब की ?
मिथिलाक मर्यादा मलिन महि मध्य होमय देब की ?

होमय न देब खिधांस कथमपि शशि-कुलक संसार मे।
नहि देब लागय दाग रघुकुल के" विमल व्यवहार मे॥

अपकीर्त्ति-सन पातक ने दोसर छैक कोनो लोक मे।
भल पुरुष तौं मरि जाथि जिबिते एहि बातक शोक मे॥

हम लोक-निन्दा सँ बचैलय प्राण त्यागि सकैत छी।
सुन्दर समाजक रीति सँ कथमपि ने भागि सकैत छी॥

सद्धर्म-रक्षा लेल हम आजन्म जागि सकैत छी।
निज बन्धु-बान्धव-राज्य-सुख पर्यन्त त्यागि सकैत छी॥

कहु, तखन नारी-त्याग-बिषयक कोन बड़का बात ई।
शिक्षित-सुसभ्य समाज सँ भऽ जाइ हम सभ कात की ?

हम नहि बजैछी मात्र केवल अखन पड़िकय क्लेश मे।
ई नहि बुझू हम कहि रहल छी आबिकय आवेश मे॥

सब सोचि लेलहुँ धर्म-पथ पर चलक अछि हम राम के"।
रखबाक अछि आदर्श हमरा मनुजता-गुण-ग्राम के"॥

अतएव कालिह अवश्य वन मे जाउ सीता-संग कै।
दऽ आउ गंगा-पार वन मे हमर आधा अंग के"॥

लगतनि-बहलतनि मोन हिनकर देखि शोभा विपिन के"।
मन मुदित हेतनि बूझि शुद्ध बिचार तपसिनि-बहिन के"॥

'हम त्यागि सिय के" रहल छी' नहि कहब हिनका बाट मे।
सीता-सँगे रहबाक नहि अछि लिखल हमर ललाट मे॥

छथि गर्भिणी वौआति होयतनि मन अवश्य जनैत छी।
चाहैत छथि जे जखन इच्छा-पूर्ण हमहुँ करैत छी ॥
तेँ जाउ वन, दै आउ हिनका मुनि-कुटीक समीप मे।
पावन तपोवन होइ सुखप्रद जतय जम्बूद्वीप मे ॥
वन-वासिनी ऋषि-नारि-सँग किछु दिन रहक चाहैथ ई।
गंगाक तट पर मुनि सभक कुटिया देखय चाहैथ ई ॥
तैँ हिनक इच्छो पूर्ण भऽ जेतनि अखन अइ कार्य सँ।
ई कऽ रहल छी कार्य हम आदेश लऽ आचार्य सँ ॥
अपवाद सूनि समाज सँ पड़िगेल छी हम लाज मे।
लाचार भऽ लगबैत छी हे लखन ! लघुतर काज मे"।
लखि राम केँ स्थिति लखन किछु कहय चाहथि राम सँ।
छनि किन्तु भय-संकोच कहि सकताह की ? सुख धाम सँ"॥
सोचथि 'देखै छी आइ धरि सभ काज अद्भुत राम केँ।
अति दुखद प्रथम लगैछ सुखप्रद किन्तु लखि परिणाम केँ ॥
तैँ भऽ सकै छनि होनि प्रभु केँ नीक किछु उद्देश्य ई।
वन-बीच दऽ आबी सिया केँ मानि कऽ आदेश ई ॥
देलनि तुरत आज्ञा सुरथ लाबथि सुप्रातः काल मे।
सीताक संग सुमंत-हम वन चलब काल्हि सुकाल मे ॥

□

सीता-वनवास

सुखप्रद सुआसन सजि सुमंत सुनारि सीता माइ लै।
अनलनि तुरग सँग रथ, भेला तत्पर विपिन मे जाइ लै ॥
पहुँचल छला एमहर लखन सीताक सुन्दर गेह मे।
कैलनि प्रणाम कहैत छण रोमांच भेलनि देह मे ॥
"हे देवि ! अभिलाषा अहाँ कहने छलहुँ प्रभु राम सँ।
वन जाइ देखी मुनि-कुटी संगति करी मुनि-वाम सँ ॥
तैँ भेल अछि आज्ञा अखन हम सैह आब कहैत छी।
वन चली रथ चढ़ि अखन सारथि-संग हमहुँ चलैत छी" ॥

लखनक कथन केँ श्रवण कऽ सीता परम आनन्द सँ।
मधुमय वचन कहलनि जनकजा उर्मिला-मुख-चन्द सँ॥

"हे प्रिय लखन ! तपसिनि सभक हित वस्तु किछु लऽ लैत छी।
संदेश लऽ अविलम्ब हमहूँ अहीं संग चलैत छी॥

स्वामी मनोरथ पूर्ण कऽ रहलाह अछि हम धन्य छी।
तेँ विश्व मे सौभाग्यशालिनि नारि मे हम गण्य छी॥

लेमय दिअऽ सन्देश अर्पण करब तपसी-चरण मे।
किछु वस्त्र लऽ ली जाइ छी जे विपिन-वातावरण मे"॥

सीताक क्रम लखि नोर बहु खसलनि लखन केँ नयन सँ।
से देखि सीता लखन केँ पुछलनि मधुरयुत वयन सँ॥

"सुखमय समय यात्राक अछि तौं लखन ! कियैक कनैत छी।
शुभकाल मे लछुमन ! उदाश-निराश कियैं ? लगैत छी॥

क्यो छीक देलक अछि अखन तइ लेल की ? घबराइ छी।
गीदर दहिन सँ बाम भागल तैं अहाँ भय खाइ छी॥

भोरक समय छै ठंढ लगने छीक देलक अछि कियो।
ऐ स्यार केँ किछु ढेप मारि-खिहारि देलक अछि कियो॥

की ? एहि तरहक दृश्य केँ अशकुन अहाँ बुझैत छी।
की ? अन्य किछु कारण कोनो छै से ने कियैं कहैत छी॥

जौं होनि तप मे विघ्न मुनि केँ पुनि निशाचर वर्ग सँ।
तौं हम स्वयं अइ बेर मारब दुष्ट-दल केँ खड्ग सँ"॥

पति त्यागि देलनि, अछि सिया केँ नहि कनेकों ज्ञात ई।
अपशकुन ह्वैछ कियैक ? से नहिं बूझि पड़लनि बात ई॥

पूछलि लखन सँ "ई कुलक्षण हम कियै देखैत छी।
हँसमुख अहाँ छी तखन कियैक एना उदाश लगैत छी॥

तन अछि हमर कँपैत फरकन ह्वैछ दहिना अंग मे।
हहरैत अछि छाती कहू की हेतु एहि प्रसंग मे॥

सभटा कुलक्षण देखि रहलहुँ हम अखुनका दृश्य मे।
हैबाक छै घटना दुखद की ? लखन ! निकट भविष्य मे॥

प्रभुवर विपिन मे जाइ लै कहलनि जखन आवेश सँ।
कहु तखन भय-चिन्ता कथी कोनो प्रकारक क्लेश सँ॥

ऋषि-मुनि-तपस्विनि-चरण-लग मे बैसि सूनब प्रभु-कथा।
सब दूर भऽ जायत हृदय मे शेष जे होयत व्यथा॥

हे मा उमे! कैलहुँ मनोरथ पूर्ण सीता केँ अहीं।
अखनो अवश्ये करब इच्छा पूर्ण आशान्वित रही॥

हम जा रहल छी ज्ञान सीखक हेतु ज्ञान-प्रवीण सँ।
लेबाक अछि हमरा शुभाशीर्वाद धर्म-धुरीण सँ॥

तेँ कऽ रहल छी प्रार्थना हम देव-देवी सकल सँ।
भऽ जाय वन-यात्रा सफल सभ घूमि आबी कुशल सँ"।

गंगाक तट पर पहुँचि धारा देखि लछुमन व्यथित भऽ।
लगला बहाबऽ धार दृग सँ अति व्यथाकुल-दुखित भऽ॥

लखि लखन केँ पुछलनि सिया "आकुल किये छी शोक सँ।
की हेतु शोकित छी अहाँ कारण कहू निर्धोख सँ॥

आनन्द-अवसर अछि अखन अयलहुँ पवित्र सुठाम मे।
किछु काल मे पहुँचैक अछि तप-भूमि सुन्दर-धाम मे॥

ऋषि-मुनि सभक दर्शन करब मर्मज्ञ छथि जे धर्म केँ।
ऋषि-नारि-लग मे बैसि सीखब नारि-धर्मक मर्म केँ॥

रहि कऽ एतय भरि राति, घूमब काल्हि अपना धाम केँ।
अनुभव सुनेबनि वन-प्रवासक समुद स्वामी राम केँ।

विश्वास छनि अपनेक ऊपर नाथ केँ प्रिय दास छी।
आनन्द-कन्दक भाइ छी कहु तखन किये उदास छी॥

आदेश-पालन करब सेवा पैघ ह्वैछ जनैत छी।
से कऽ रहल छी अखन तखनहुँ लखन! किये झँखैत छी॥

दुइ दिनुक विछुड़न भाइ सँ भऽ जैत तेँ घबड़ाइ छी।
अछि जे हृदय मे भावना से कहू किये? लजाइ छी॥

ओ छथि हमर सर्वस्व-स्वामी अत्यधिक प्रिय प्राण सँ।
हमहूँ रहक चाहैत नहिं छी भिन्न भऽ भगवान सँ॥

तद्यपि अधिक चिन्तित अहाँ-सन हम अखन नहिं भेल छी ।
कहु किये ! लछुमन ! धैर्य त्यागि अधीर अति भऽ गेल छी ॥

निश्छल अहाँ-हम छी दुनू सच-सच कहू की बात छै ।
हमरा किये नहिं कहि रहल छी, दुखद की ? संवाद छै ॥

जहिना हमर दुख दूर कैलहुँ आइ धरि लछुमन अहाँ ।
तहिना अहूँ के दूर दुख हम करब कहु हमरा अहाँ" ॥

सीताक आतुरता निरखि सौमित्र सोचल हृदय मे ।
कहि कऽ सुना दीअनि अवश्ये आइ कोनो समय मे ॥

सोचैत छथि-वन मे जननि कें छोड़ि जायब हम कोना ।
हम दास भऽ दुखप्रद वचन "वन मे रहू" कहबनि कोना ॥

आदेश कें अनुसार अछि करबाक हमरा कार्य ई ।
हमरा अवश्ये करक चाही मानि कऽ अनिवार्य ई ॥

तैं विवश भऽ सौमित्र निज साहस सकल समेटि कऽ ।
बजलाह दुखप्रद वचन अति प्रिय मधुर वचन लपेटि कऽ ॥

"हे मा ! कहक नहिं अछि कथन से अखन हारि कहैत छी ।
स्वामीक आज्ञा मानि कऽ कर्त्तव्य मात्र करैत छी ॥

धिक्कार तकरा छैक देलक राम कें ई मंत्रणा !
सुनबैत हमरा ह्वैछ जतबा मृत्यु कालक यंत्रणा ॥

नहिं दोष हमरा दी अहाँ मा ! पूर्ण हम निर्दोष छी ।
हम कोन तरहें मा ! अहाँ कें वचन सँ सन्तोष दी" ॥

लगलाह बाजऽ तौं मुदा किछु बाजि नहिं सकलाह ओ ।
सीता-चरण-लग भूमि पर कर-जोड़ि कऽ खसलाह ओ ॥

क्षोभित सिया भेलीह ई लखनक दशा निहारि कै ।
की बात ? नहिं अनुमानि सकली देखि अवध-विहारि कें ॥

पुछलनि लखन सँ "हे लखन ! किछु नहिं बुझै छी बात की ?
सच-सच कहू भय नहिं करू किछु जानकी सँ लाथ की ?

की शोकप्रद किछु बात अछि ? तैं नहिं अहाँ सुनबैत छी ।
ओ बात बाजक योग्य नहिं की ? तैं अहाँ ने बजैत छी ॥

बाजू अहाँ निर्धोख भऽ हम कहि रहल छी नहिं डरू।
जे काज छथि कहने करक हित से अखन निर्भय करू" ॥

आदेश जे भेटल छलनि अवधेश रघुकुल-चन्द सँ।
से कहि सुनौलनि विनययुत दृग-नोर भरि स्वर मंद सँ॥

"हे स्वामिनी ! सीते ? अहाँ निर्दोष सकल प्रकार सँ।
सन्तुष्ट छथि प्रभु अहँक शील-स्वभाव-शिष्टाचार सँ॥

तद्यपि प्रजा केँ कहल पर श्रीनाथ छथि कऽ रहल ई।
तजि कऽ महल-सुख सकल हा ! वन-बीच आबऽ पड़ल ई॥

प्रभु त्यागि देलनि लोक केँ अपवाद सँ बचबाक लै।
तेँ हम अहूँ केँ एतय अनलहुँ विपिन मे रहबाक लै॥

इच्छा अहूँ केँ भेल छल वन जाइ तेँ अनलहुँ एतऽ।
हम दऽ अबै छी छनि सुआश्रम मुनिगणक पावन जतऽ॥

छथि अवधपतिक घनिष्ठ अति प्रिय मित्र मुनि वाल्मीकि जे।
धर्मिष्ठ छथि तिनके शरण मे रहब होयत नीक से।

प्रभु राम-नामक जप करब जनकात्मजे ! एकान्त मे।
पति-पद-कमल केँ ध्यान धरु, सुख पैब जीवन-अंत मे" ॥

हा ! वचन लखनक उर-विदारक सूनि माता जानकी।
धरि धीर कहलनि "लोक केँ नहिं छैक ककरो ज्ञान की ?

हमरा विषय मे लोक केँ बाजल कोना गेलैक ई।
मिथिलाक कन्या-प्रति कियै दुर्भावना भेलैक ई॥

हम तों परीक्षोत्तीर्ण पूर्वहिं अग्नि मे भऽ गेल छी।
सुरगणक सम्मुख हम जनकजा निष्कलंकित भेल छी" ॥

लगलनि बहय दृग-नोर केर अजस्त्र धारा नैन सँ।
बजली व्यथित भऽ बात बैदेही व्यथाकुल वैन सँ॥

"देवर ! हमर नारी जनम दुख केँ सहै लै भेल की ?
सिरजल विधाता विपति केवल सकल हमरे लेल की ?

हम कोन केने पाप कतबा छलहुँ पूरब जन्म मे।
जनमल छलहुँ हम कोन दुर्दिन राशि मध्य कुलग्न मे॥

ककरा दियौनें दुख छलहुँ स्वामी-वियोगक कष्ट ई।
तकरे कुफल थिक, आब मानव-देह होयत नष्ट ई।।

हे लखन ! चौदह वर्ष धरि रहलहुँ पहिल वनबास मे।
नहिं भेल दुख-अनुभव कनेको पति छलाहे पास मे।।

किछु भूल सँ अपहरण गेलहुँ कैल हम लंकेश सँ।
छल भेल किछु दिन धरि वियोग विशाल निज प्राणेश सँ।।

तखनहुँ मुदा विश्वास छल लगतनि पता असुरारि कें।
तौं ओ हमर उद्धार करता शीघ्र निशिचर मारि कै।।

छी किन्तु अखन निराश त्यागलि थिकहुँ श्री अवधेश सँ।
कहलनि अहाँ कें विपिन मे दऽ आउ दृढ़ आदेश सँ।।

हे राम कें प्रिय अनुज ! के अछि एतय अपन बता दिअऽ।
के देत हमरा सान्त्वना ? ककरा स्वजन बना लिअऽ ?

अनजान ठाम कोना अपरिचित व्यक्ति-बीच रहब कतऽ।
अहँ सोचि कऽ हमरा बता दी जैब हम निश्चय ततऽ।।

ककरा अपन पीड़ा कहब अवलाक गाथा सुनत के ?
जे देत दुख हमरा एतै तकरा हतै लै लड़त के ?

पुछताह मुनिगण पति अहाँ कें त्यागि देलनि अछि कियै ?
अपराध की अछि अहँक ? कारण कहु विपिन एलहुँ कियै ?

हे लखन ! तखन बताउ उत्तर देब की ? ऋषिदेव कें।
की धारणा बनतनि सिया-प्रति ओहि छन मुनिदेव कें।।

मन ह्वैछ तन कऽ दी विसर्जन जाह्नवी कें धार मे।
कथमपि ने राखी आब नर-तन एहि भू-संसार मे।।

छी किन्तु हम बेवशि कहत्र को ? बूझि अपने जेब जौं।
सीताक दिशि दी ताकि तखने लखन ! लक्षण पैब तौं।।

तें भेल बेवशि छी पतिक कुल रहनि आगू जाहि सँ।
नहि कऽ रहल छी त्याग प्राणक, रुकलि छी हम ताहि सँ।।

अछि धर्म प्रथम अहाँक प्रभु-आदेश कें पालन करी।
अछि शपथ, हमरा लेल देवर ! कथुक चिन्ता नहिं करी।।

करबनि प्रणाम सियाक दिशि सँ पैर पर प्राणेश कें।
सन्देश दू शब्दक हमर कहबनि कने अवधेश कें॥
नहिं बिसरि कखनो जाथि एहि अबोधिनी निज नारि कें।
उर मे बसौने रहथि सदिखन एहि अपन पियारि कें॥

वन-गमन-अवसर पर प्रभुक सँग कैल बहुत विवाद जे।
सेवा-टहल मे त्रुटि अनेकों भेल हो अपराध से॥
कृपया छमा कऽ देथि, कहबनि कौशलेश-कुमार सँ।
तन-सँ पृथक भेलहुँ मुदा नहिं होथि हृदयागार सँ।

अपवाद सुनऽ आइ पड़लनि हाय! हमरे लेल ई।
अपराधिनी हमहीं थिकहुँ तैं दुर्दशा अछि भेल ई॥
तद्यपि प्रबल आशा बनल अछि, छथि दया कें सिन्धु ओ।
अशरण-शरण, असहाय-रक्षक, दीन जन कें बन्धु ओ॥

छथि भक्त-भक्तिनि कें सहायक सृष्टि कें आधार ओ।
आचार आ व्यवहार मे छथि कुशल सकल प्रकार ओ॥
राखथि विपति मे धैर्य, समरथ छथि, छमाशाली अहा!
बजबाक पटुता छनि सभा मे आचरण उत्तम महा!!

रणधीर छथि, मति विमल, अभिरुचि छनि सतत सद्ग्रन्थ मे।
हिनकर सुयश-चर्चा निरन्तर चलनि संत-महंथ मे॥
करताह निश्चय ओ छमा सभटा हमर अपराध कें।
जौं देथि दंड सहर्ष भोगब हमहुँ कष्ट अगाध कें॥

भऽ जानि निन्दा-दूर प्रभु कें जाहि समुचित रीति सँ।
से करथि, किन्तु ने तजथि-वंचित करथि पावन प्रीति सँ॥
कहने छलहुँ देवर! अहूँके कटुवचन वनबास मे।
पति पर विपति पड़लनि पड़ल से बूझि किछु आभास मे॥

अज्ञानि हम छीहे कहल चिन्तित मनक स्वभाव सँ।
पश्चात हम बूझू छलहुँ मरि गेल पश्चात्ताप सँ॥
फल तकर भोगक पड़ल हम रहलहुँ खलक आवास मे।
बन्दिनि जकाँ रहलहुँ बहुत दिन-राति धरि अति त्रास मे॥

जे कैल अछि, फल तकर भोगक पड़त आब अवश्य कें"।
देखऽ पड़त दुर्दिन दशा दुखपूर्ण दारुण दृश्य कें"॥

फल भोगि चुकलहुँ, छलहुँ कैने आइ धरि सत्कर्म जे।
प्रायः कुफल भोगऽ पड़त की ? कैल अछि दुष्कर्म जे॥

सब दिन सुखी नहि रहथि क्यो दुख होनि सुख उपरान्त मे।
जहिना प्रकृति कें नियम छै निशि हैब ध्रुव दिवसान्त मे॥

हमरा तकर चिन्ता मुदा नहि निज शरीरक कष्ट लै।
सम्पूर्ण संकट-सहब स्वामी-स्वपति कें सन्तुष्ट लै॥

स्वामी रहथि सानन्द सुनितहि रही तीनू काल मे।
ई होथि सब सँ पूज्य पूजल जाथि सब नरपाल मे॥

हम शेष आयु बितैब जपि शुभ नाम पति भगवान कें"।
बस, एक पद पर ठाढि भऽ विनती करब दिनमान कें"॥

जौँ जन्म हो पुनि जानकी कें जाहि जीवक योनि मे।
श्री राम स्वामी बनथि ध्रुव अछि ऐह्न हमरा मोन मे॥

वेशी करब लछुमन ! अहाँ लग अधिक अखन प्रलाप की ?
कहि कऽ सुनायब कोन रूपें अछि हृदय मे ताप की ?

नहि जा सकै छथि-घूमि कऽ कौशलपुरी ई जानकी।
लऽ जा सकै छी नहि अहूँ तें अधिक बजने लाभ की ?

वेशी कहब-बाजब, बनब पागलि, शरण मे लेत के ?
बिनु पुरुष कें लखि नारि, आश्रय नीक नर कहु देत के ?

बस, अधिक नहि किछु कहब हम तौं बनल पशुक समान छी।
जे किछु फुरय कहबनि अहाँ अपने स्वयं सज्ञान छी॥

रक्षा करथि ताधरि अवश्ये अवधपति निज नारि कें"।
सन्तान छनि जा धरि उदर मे एहि जनक-कुमारि कें"॥

हे लखन ! अपनहुँ देखिली प्रत्यक्ष अपना नयन सँ।
जग मे विदित कऽ देब द्रुति बेशी कहब की ? वचन सँ"॥

सीताक दुखमय वचन लछुमन सूनि शोकित भऽ गेला।
बजताह की ? किछु नहि फुरै छनि जोड़ि कर ठाढ़े छला॥

पुनि-पुनि प्रणाम करैत कैलनि जानकीक परिक्रमा।
बजलाह अपने छमाशालिनि छी, करब निश्चय छमा।।

हम आइ धरि नहि देखि सकलहुँ अंग अहँक स्वनैन सँ।
माता अहाँ केँ मानि कैलहुँ टहल तन-मन-वैन सँ।।

अपनेक चरणक भेल दर्शन-मात्र विनती-काल मे।
पद-रज लगौलहुँ हम सहर्ष सदैव अपना भाल मे।।

केवल चरण केँ ध्यान धेने हम रहै छी सब घड़ी।
नहि ह्वैछ साहस तन अहँक निहारि कऽ देखल करी।।

विश्वास अछि हमरा, अहाँ जे किछु कथन कहैत छी।
की अछि अवस्था अहँक से हमहूँ अवश्य जनैत छी।

आज्ञा दिअऽ हमरा अयोध्या जाइ अपना नगर मे।
मुनि सँ अहाँ रक्षित रहब मन बहलि जायत सुघर मे।।

क्यो आबि जायल करत मा! सन्देश लै अवधेश केँ।
जे करत सतत अहाँक माता! दूर हृदयक क्लेश केँ।।

अखरत ने कहियो मा! अहाँ केँ दूर छी प्राणेश सँ।
अहँ धैर्य-धारिणि नारि छी घबड़ैब नहि किछु क्लेश सँ"।।

हा! ओहि कालक दृश्य केँ लखि, के ने विचलित भऽ जेता।
जिनका ने आँखिक नोर बहतनि के ओहन मानब हेता।।

चुपचाप दूनू ठाढ़ छथि भू-दिशि तकैत विछोह सँ।
छथि छुब्ध दूनू दिअर-भाउज स्वजन केँ निर्मोह सँ।।

सीताक स्थिति देखि लछुमन पीठ-पाछू डेग केँ।
लगला बढ़ाबऽ तेज कैलनि अत्यधिक ओ वेग केँ।।

मन-मलिन कैने छथि लखन कहु तौं अवध-कुमार भऽ।
अवधक पकड़लनि पथ तखन रथ पर तुरत सवार भऽ।।

सोचैत छथि विधि की? करौलनि काज हमरा हाथ सँ।
सीता सती केँ भिन्न कऽ हम देल हा! श्री नाथ सँ"।।

देखू एतय एकसरि सिया सुरसरिक धारक कात मे।
सोचैत छथि "की अछि लिखल दुख-भोग हमरा गात मे।।

के ! करत हित पति-त्यागिनी कें अइ बिपत्तिक वेर मे।
बस, राम-नामक अछि सहारा एहि कष्टक वेर मे" ॥

रहली कनैत घड़ी पहर जनहीन वन सुनसान मे।
मुनि-बालवर्गक मधुरतम ध्वनि सूनि पड़लनि कान मे ॥

ओ सब अबैत छलाह मज्जन-हेतु गंगा धार मे।
एकसरि सिया कें देखि वन मे पड़ि गेलाह विचार मे ॥

अनुमान कैलनि 'ई थिकी प्राय: सुकन्या स्वर्ग कें
मोहित करक हित अैल छथि तपभूमि पर मुनि-वर्ग कें ॥

ई किन्तु साकेतक परी-सन नहि लगथि अनुमान मे।
चुपचाप बैसलि जप करै छथि राखि किनको ध्यान मे ॥

ई ! उच्चकुल कें नारि छथि पति सँ विछुड़ि छथि गेल की ?
आश्रय तकै छथि नर कियो भेटनि सुरक्षा लेल की ॥

तें हेतु चाही सूचना अविलम्ब दी गुरुदेव कें।
असहाय कें रक्षा करक अछि हम सकल भूदेव कें" ॥

दौड़ल गेला मुनि वाल्मीकि-समीप जे जप-रत छला।
कहलनि "मुनीश्वर ! नारि एकसरि एक अतिशय निर्मला ॥

गंगाक तट पर ठाढ़ि छथि बिछुड़लि जकां निज लोक सँ।
लक्ष्मी-समान सुरूप-सुन्दरि किन्तु शोकित शोक सँ ॥

हमसभ एहन सुमुखी अखनिधरि नारि नहि देखल अहा !
से छथि कनैत, बूझैत छी दुख पड़ल छनि हिनका महा ॥

तें हे मुनीश्वर ! बूझिली की बात ? के छथि नारि ई।
की छनि विपत्ति, कहाँक नृपतिक नारि अति सुकुमारि ई ॥

हमरे सभक आश्रम-निकट छथि आबि कियैक कनैत ई।
दीअनि अवश्ये सान्त्वना, की छथि अखन चाहैत ई ॥

रक्षा करक चाही एहन असहाय अवला नारि कें।
माता-बहिन-समान हम बूझैत छी परनारि कें ॥

गुरुदेव ! दी आदेश तौं हम जाइ, जा कऽ पूछिली।
की कष्ट छनि ? चाहैत की छथि ? पूछि कऽ सब बूझि ली" ॥

सर्वज्ञ मुनि सीताक स्थिति सूनि सब सुकुमार सँ।
ओ बूझि गेला ई थिकी सीता अपन विचार सँ॥

जनकात्मजा वन मे कनैत-झखैत वैसलि छथि जतऽ।
सब शिष्य केँ लऽ संग चलला झटकि कऽ तखने ततऽ॥

देखल महामुनि जनक-नन्दिनि केँ कनैत विलाप कैं।
नहि धैर्य रहलनि मुनिक थिर लखि जानकी-संताप केँ॥

देलनि प्रथम आशीष एवं देल धीरज स्नेह सँ।
"घबड़ाउ नहि अयलहुँ पिता-गृह अखन श्वशुरक गेह सँ॥

दुख-शोक-भय भगत एतऽ सीते! अहाँ केँ देह सँ।
सम्मान किछु नहि थोड़ भेटल करत जनक विदेह सँ॥

हे पतिव्रते! दशरथ नृपति केँ सुतवधू थीकहुँ अहाँ।
मिथिलेश-पुत्री मैथिली श्री राम-पत्नी छी अहाँ॥

स्वागत अहाँ केँ हम करै छी हृदय केँ उद्गार सँ।
सन्तुष्ट भऽ जायब अहाँ वनवासिनी-व्यवहार सँ॥

अछि ज्ञात हमरा कोन कारण सँ एतै अयलहुँ अहाँ।
पति त्यागि तों देलनि मुदा अपराधिनी नहिं छी अहाँ॥

हमरा तपक वल सँ सिये! अछि ज्ञात अहँ निर्दोष छी।
कहु कोन तरहेँ कोन विधि सँ हम अखन सन्तोष दी॥

मर्जी प्रभू केँ होइ छनि जे, सैह भेल करैत छै।
तकरा कियो नहिं टारि जग मे सकथि, वेद कहैत छै॥

जे भऽ रहल अछि भेल अछि आगू पुनः किछु हैत जे।
निश्चित व्यवस्था सृष्टि केँ कथमपि ने बदलल जैत से॥

तैं बात बीतल पर सिये! नहिं शोक किछु मन मे करू।
सम्मुख उपस्थित जे परिस्थिति अछि तकर चर्चा करू॥

सुस्थान पर पहुँचलि अहाँ छी दिन बितत सत्संग मे।
सूनब-सुनायब चरित सुन्दर पतिव्रताक प्रसंग मे॥

ओ सभ करै छथि तप महा हमरे कुटीक समीप मे।
करुणामयी हिनका सदृश नहिं पैब सातो द्वीप मे॥

पालन अहाँक सहर्ष निज सन्तान-सन करतीह ओ।।
एकसरि रहक अखरत ने कखनो सतत सँग रहतीह ओ।

मानब अहाँ बृद्धा तपस्विनि कें अपन माता-जकाँ।
मुनि कें पिता-सम शिष्य कें मानब अहाँ भ्राता-जकाँ।।

सभ सम-वयस्का नारि कें बूझब सखी-सङ्गिनि-जकाँ।
वन-वासिनीगण कें पड़ोसिनि-तुल्य सुखदायिनि-जकाँ।।

हमहूँ अहाँ कें सब तरह सँ करब रक्षा सर्वदा।
होमय ने देब स्वस्वामि सँ त्यागक व्यथा ई दुखप्रदा"।।

सब भाँति सँ मुनि जानकी कें दैत मन सँ सान्त्वना।
अनलनि जतय ऋषि-नारिगण बैसलि छली कऽ साधना।।

मुनि-संग मे लखि नारि कें पूछलि प्रथम कऽ वन्दना।
"हे पूज्य मुनिवर ! के थिकी अनुपम सुभग ई अंगना।।

कृपया बताउ अहाँ दुनू कें की ? अखन सेवा करी।
आदेश दी तौं आनि सम्मुख मधुर फल मेवा धरी।।

परिचय हिनक कृपया दिअऽ किनकर सुभामिनि नारि ई।
एकसरि विपिन मे पुरुख-बिनु अयली कोना सुकुमारि ई"।।

मुसकैत मुनि परिचय बतौलनि "हे ऋषीश्वर-भामिनी !
ई धर्मपत्नी रामचन्द्रक जानकी मृदुभाषिनी।।

अवधेश दशरथ कें पुतोहु विदेह-कन्या ई थिकी।
पति-सेविका मे अग्रणी आदर्श नारी जानकी।।

निष्पाप भेलो पर सिया कें देल पति परित्याग कें।
तें आब चाही हिनक रक्षा करक अति अनुराग कें।।

अतएव हिनका पर विशेष रखैत जैअनि ध्यान कें।
जहिना सदैव स्वदेह मे बूझैत छी निज प्राण कें"।।

आज्ञा मुनिक पालन करब कर्त्तव्य बूझि तपस्विनी।
सादर सिया कें पाणि गहि बैसौल ओ वनवासिनी।।

सीता परम प्रसन्न भऽ गेलीह सद्व्यवहार सँ।
हुनका सभक वर्त्ताव सुन्दर भरल शिष्टाचार सँ।।

कैलनि विचार विदेह-नन्दिनि भेल संग सुलोक स ँ।
सुन्दर सुअवसर प्राप्त हमरा भेल ई संयोग स ँ॥
माता-पिता-पति स ँ सुनल जे नारि-धर्म जनैत छी।
से सब एतय ऋषि-नारि मे प्रत्यक्ष अखन पबैत छी॥
तैं हमर अछि कर्त्तव्य जे नहिं ज्ञात अछि से सीखि ली।
हिनका सभक आचार-दिनचर्या स्वदृग स ँ देखि ली" ॥
ई सोचि मन मे योगिनी-स ँग रहय लगली जानकी।
ऋषि-आश्रमक सब कार्य लगली करय नित श्री जानकी॥
चर्चा परस्पर करथि उत्तम नीति शास्त्र-पुराण केँ।
सद्गुण सुनाबथि-सुनथि सदिखन परम श्री भगवान केँ॥

□

लव-कुशक जन्म

मुनि सँ कथा-पुराण सीता नित सुनैत रहै छली।
उद्देश्य मन मे, होथि ई गर्भस्थ शिशु ज्ञानी-बली॥
उदरस्थ शिशु पर ध्रुव प्रभाव पड़ैछ करु वर्त्ताव जे।
जननीक सब आचार-सम बनि जाइ शिशुक स्वभाव से॥
देखथि-लगाबथि ध्यान गर्भिणि जाहि तरहक चित्र केँ।
नवजात शिशु पर छाप निश्चय पड़नि जननि-चरित्र केँ॥
ई बात बूझल छलनि तैं नित रहथि चेतलि जानकी।
मन मे मनोरथ रहनि प्रिय सुत सद्गुणी जनमा सकी॥
हँटले रहथि सीता सतत दुर्गुण तथा दुष्कार्य सँ।
सदिखन सुशिक्षा-पूर्ण सूनथि कथा श्री आचार्य सँ॥
ओ आदि कवि वाल्मीकि मुनि सद्काव्य केँ ज्ञाता छला।
आदर्श रामक चरित रामायण अहा! लीखै छला॥
नित रचित मधुर प्रसंग सब केँ प्रेम स ँ सुनबै छला।
सुनि सकल श्रोता मुग्ध भऽ आनन्द स ँ झूमै छला॥
ताही सुअवसर पर जनम भेलनि सुपुत्र अनूप केँ।
नवजात शिशुक सुरूप छल श्री रामहिक अनुरूप केँ॥

ई कर्ण-सुखकर बात सुनबा लय सबहु आतुर छला।
सुनितहिं सकल समाज अति हर्षित-प्रफुल्लित भऽ गेला।।

वर्णन करत के कवि ! कवीश्वर वाल्मीकिक हर्ष कें।
अपनहुँ मुनीश्वर कहि सकथि नहि हर्ष कें उत्कर्ष के"।।

सत्वर कृपालु महर्षि तखनहि बाल-ग्रह-निवृत्ति लै।
शुभ मंत्र पढ़ि देलनि शुभाशीर्वाद भाव-प्रवृत्ति भै।।

शिशु-बाँहि मे बँधलनि सुरक्षा-हेतु रक्षा-यंत्र के"।
सभ मिलि करऽ लगलाह उच्चारण सुवेदक मंत्र के"।।

मुनि आश्रमक शोभा अधिक वढ़ि गेल बालक-जन्म सँ।
सीता विशेष प्रसन्न भऽ गेलीह अनुपम रत्न सँ।।

छठिहार भरि उत्सव मनावल गेल अति उत्साह सँ।
बहुदान पौलनि विप्रगण पर्याप्त निज-निज चाह सँ।।

कुश-मूठ सँ मार्जन करौलनि नाम तैं 'कुश' जेठ के"।
लव सँ करावल गेल मार्जन नाम तैं लव छोट के"।।

क्रम-क्रम बढ़ै लगलाह दून्‌ मधुर वातावरण मे।
शिक्षा-ग्रहण लगला करय रहि कऽ तपस्वी-शरण मे।।

सद्ग्रन्थ रामायण महाकवि काव्य जे रचने छला।
लव-कुश युगल कुमार के" सस्नेह नित सिखबै छला।।

कंठस्थ कऽ लेलनि दुनू सुकुमार किछुए काल मे।
लगला सुनाबऽ गाबि हर्षित भऽ मधुर स्वर-ताल मे।।

श्रोता गणक उर द्रवित भऽ ध्रुव जानि अति मात्सर्य सँ।
शिशु मे विलक्षण गुण निरखि-सुनि कहथि सभ आश्चर्य सँ।।

"बालक परम होनहार प्राय: देव के" अवतार ई।
आनन्द के" सरिता बहौता सीय केर कुमार ई।।

नहि आइ धरि देखल-सुनल सुन्दर एहन गुणवान के?
हिनकर पिता-माता-सदृश नर हैत वैभववान के?

हमरा सभक सन भाग्यशाली के? अखन संसार मे
सानन्द समय बितैब लव-कुश केर प्यार-दुलार मे।।

ई रहथि सदिखन दृष्टि-पथ मे ऐह हम चाहैत छी।
हिनका अपन हम प्राण सँ बढ़िकऽ बूझू मानैत छी ॥

हमरे सभक सौभाग्य सँ अयलहुँ अहाँ वनवास मे।
जप-तप-व्रतक फल पाबि रहलहुँ अछि अहिक सहवास मे ॥

आनन्द कतवा भऽ रहल अछि अहँक शुचि सत्संग मे।
कत ह्वैछ परम प्रसन्नता पूछू न एहि प्रसंग मे ॥

सीते ! अहाँ पतियैब की नहि, हम कहब की ? बात सँ।
रवि-किरण लखि की हर्ष हो पूछू कने जलजात सँ ॥

जे होनि हर्ष अपार भगवत-भक्त केँ प्रभु-मिलन सँ।
नहि ताहि सँ कम हर्ष होइछ अहँक सुखकर वचन सँ" ॥

ताही दिने श्री राम लऽ आदेश गुरुवर विज्ञ केँ।
करबाक लै तत्पर भेला ओ अश्वमेध-सुयज्ञ केँ ॥

ऋषि, मुनि, नृपति, भूदेव, सज्जन, संतगण विद्वान केँ।
कैलनि निमंत्रण-पत्र प्रेषित सकल व्यक्ति महान केँ ॥

मुनि वाल्मीकि समान ऋषि केँ विनय-युत सत्कार सँ।
आग्रह छलनि मुनिगण पधारथि यज्ञ मे स्वविचार सँ ॥

पौलनि कवीश्वर पत्र एक विशेष व्यक्तिक हाथ सँ।
देखल निमंत्रण-पत्र लीखल अवधपति रघुनाथ सँ ॥

मुनि वाल्मीकि प्रसन्न भऽ गेला निमंत्रण पाबि कै।
कहलनि समुद सम्बाद शुभ सीताक लग मे आबि कै ॥

"हे जानकी ! अपनेक पति श्री राम ठनलनि यज्ञ केँ।
कैलनि निमंत्रित विश्व महि नृप-मुनि गुणी नर विज्ञ केँ ॥

हमहूँ निमंत्रित भेल छी सँग सकल शिष्य कुमार केँ।
जैबाक चाही संग कऽ लव-कुश दुनू सुकुमार केँ ॥

संयोग उत्तम भेल अछि दर्शन करब सुखधाम केँ।
सीते ! प्रयोजन आब पड़तनि अहँक ध्रुव श्री राम केँ ॥

हम जैब तौँ करबनि विनय साग्रह दयानिधान सँ।
लऽ जाथि श्री स्वामी अहाँ केँ प्रेम-युत सम्मान सँ ॥

हम जा रहल छी, सोचि मन मे ऐह प्रमुख विचार के"।
परिचित हेता निज पुत्र सँ सुनि गान युगल कुमार के" ॥
सुविचार सीता सूनि कऽ हर्षित भेलो अति हृदय सँ!
कैलनि प्रणाम सनम्र मुनि के" कहल अतिशय विनय सँ ॥

"हे मुनि प्रवर ! ई भऽ रहल अछि अहिंक प्रवल प्रयत्न सँ।
आशा प्रवल अछि हैत हित अपने सदृश मुनि-रत्न सँ ॥
जे किछु करब अपने अवश्ये हैत हितकर काज से।
जे रीति-नीति चलैब उत्तम मानि करत समाज से ॥

छथि पुत्र सीता के" मुदा अपनेक सेवक-शिष्य ई।
सेवा अहाँ के" कऽ बनाबथि अपन नीक भविष्य ई ॥
विश्वास अछि ई यज्ञ होयत पूर्ण अहिंक प्रसाद सँ।
हमरो अवश्ये शीघ्र दर्शन हैत स्वामी-पाद सँ ॥

विश्वास अछि लव-कुशक लेल हितार्थ होयत कार्य ई।
तैं हेतु जायब यज्ञ मे अपनेक अछि अनिवार्य ई ॥
जौं पूछि बेसथि नाथ अपना नारि के" सम्बन्ध मे।
तौं कहि सुनेबनि सिय-तपस्विनि संग छथि आनन्द मे।

मुनि सँ सुरक्षित रहथि सीता सतत सकल प्रकार सँ ॥
सन्तुष्ट छथि प्रभु के" प्रिया एतय मुनि-नारिगण-व्यवहार सँ।
चाहैत छी हमहूँ खिधांश ने होनि प्रिय-प्राणेश के"।
सभ जन प्रशंसा करनि मन सँ नित्य श्री अवधेश के" ॥

स्वामी हृदय मे बसथि सदिखन सैह हम चाहैत छी।
सुखमय समय बीतनि प्रभुक हम इष्ट सँ मनबैत छी।'
स्वामी-विछोहक दुख असह्य शरीर सँ सहिलैत छी।
पुनि हैत दर्शन पतिक मन के" कहि बुझा तौं दैत छी ॥

मुनिवर ! मुदा आत्मा हठी मानैत नहि अछि बात के"।
ओ नहिं सहय चाहैत अछि स्वामी-विरह-आघात के" ॥
ई देह-रूपी रथ चलै अछि पंथ बिनु किछुए घड़ी।
चलबैत रथ के" सारथी ई बुद्धि अछि जे सहचरी ॥

ई टूटि जायत आब मन अछि जे लगामक रूप मे।
अति शीघ्र खसिये पड़त ई इन्द्रिय-तुरगदल कूप मे॥
तेँ एक केवल मात्र रक्षक राम-नाम जपैत छी।
स्वामीक सद्‌गुण सतत श्रद्धा सँ गबैत रहैत छी॥
बेशी कहब की हम अहाँ सँ मनक बात जनैत छी।
कहबनि अवधपति सँ एतय हम कोन भाँति रहैत छी"॥
देलनि शुभाशीर्वाद मुनि सीता-कथन केँ सूनि कै।
चलला अवध केँ शिष्यगण लै सुभग यात्रा गूनि कै॥
पहुँचैत सभ गेलाह सुन्दर परम अनुपम नगर मे।
आनन्द केँ वर्षा जतय छल ह्वैत आठो पहर मे॥
छल सकल जन तन-मन-हृदय सँ व्यस्त यज्ञक काज मे।
बैसल रहथि नहिं काज यज्ञक त्यागि कियो समाज मे॥



लव-कुशक रामायण-गायन

देलनि सुआज्ञा मुनि सुअवसर पाबि सिय-सुकुमार केँ।
"सभ केँ दिखा दीअनु अपन आदर्श शिष्टाचार केँ॥
ई गाबि रामायण सुनाउ सप्रेम सुन्दर राग मे।
बहिजाथि-सभनर-नारिगण अनुराग केर तड़ाग मे॥
नवरस-रसिकवर राम केँ सुन्दर निवास-समीप मे।
जाकय सुनाउ चरित्र सिय केँ गाबि राग-प्रदीप मे॥
सुनताह जखने राम श्री सीताक पावन चरित केँ।
सम्भव बजाबथि, जेँ लग मे नमन करबनि स्वपितु केँ॥
पूछताह ओ जौं, के थिकहुँ? किनकर अहाँ सन्तान छी।
के छथि सिखौने? लघु वयस मे गाबि लैत सुगान छी॥
तौं देब परिचय अपन जे किछु थोड़ बहुत जनैत छी।
जौं कहथि रामायण गबै लै गेब जेना गबैत छी॥
अति प्रिय मनोहर गान पर ओ मुग्ध भऽ किछु दैथ जौं।
कथमपि ग्रहण नहि करब किछुओ वस्तु भेँट करैथ तौं॥

बेशी सिखँब-पढ़ैब की ? जे उचित बूझब करब से।
समयानुकूल विचारि सुन्दर वचन बाजल करब से॥

तौं हम प्रसन्न विशेष होयब एहि सुन्दर कार्य सँ।
आशीष दै छी हैब सम्मानित सकल आचार्य सँ"॥

गुरुवरक आज्ञा मानिकऽ चललाह अति उत्साह सँ।
मन छलनि अधिक प्रसन्न हम बतियैब तौं नरनाह सँ॥

सुनताह जौं सीताक पावन चरित सुन्दर ध्यान सँ।
कहबैत छथि जौं ज्ञान केँ भण्डार सब विद्वान सँ॥

तौं हृदय हेतनि द्रवित ध्रुव केहनो ने होथि कठोर ओ।
आदर्श नर कहबैत छथि जग मे अवध-किशोर ओ॥

अछि सुनल, छथि साहित्य-सँग संगीत-प्रेमी राम ओ।
सम्पन्न सद्गुण सँ सकल आनन्दघन सुखधाम ओ॥

तैं जाइ प्रथम सप्रेम सस्वर गाबि गुरुवर-काव्य केँ।
सुनबैत ताधरि रही जाधरि सुनथि मन सँ काव्य केँ॥

लगला सुनाबऽ गाबि कऽ अवधक सकल नर-नारि केँ।
की बहय लगलनि धार सबहक गाल पर दृग-वारि केँ॥

सुनलनि अवधपति मधुर स्वर-युत गीत अपना कान सँ।
"लै आउ एहि कुमार केँ" कहलनि अपन दरवान सँ॥

गेलाह दूनू भाइ सीतापतिक शुभ दरवार मे।
सन्मान सँ स्थान दऽ पुछलनि रमापति प्यार मे॥

"किनकर थिकहुँ सुपुत्र एवं कोन ॠषि केँ शिष्य छी।
किनकर रचल ई काव्य श्रेष्ठ गबैत अपने नित्य छी॥

सस्वर सुनाउ सुराग मे सूनऽ हमहुँ चाहैत छी।
संगीत मे अतिविज्ञ शिशु होनहार अहाँ लगैत छी"॥

देलनि अपन परिचय मधुर श्रुति-सुखद वचन अनूप मे।
सब प्रश्न केँ उत्तर यथाक्रम देल समुचित रूप मे॥

"माता हमर सीता थिकी रघुनाथ-कथा गबैत छी।
होयता पिता माताक पति नहिं नाम तिनक जनैत छी॥

गुरु वाल्मीकिक शिष्य छी सद्शास्त्र सतत पढ़ैत छी।
फल-मूल अछि आहार वन मे जननि-संग रहैत छी॥
अवधेश यज्ञ करैत छथि से सूनि अयलहुँ अछि एतऽ।
आदेश गुरु सँ पाबि रामायण गबैछी हम ततऽ॥
गुरुवाल्मीकिक रचित रामायण सुनू आरम्भ सँ।
ई काव्य सुनितहि मुग्ध होयब हम कहै छी दम्भ सँ" ॥
लगलाह गाबय मोन सँ वीणा बजा शुभ ताल मे।
आनन्दमय बातावरण भऽ गेल छल तत्काल मे॥
जे क्यो उपस्थित रसिकगण बैसल छला दरवार मे।
सभ ध्यान सँ लगला सुनय भऽ मग्न हर्ष अपार मे।
कतबा समय बीतल रहल नहिं तखन किनको ध्यान मे।
जे जतय बैसल रहथि तहना छथि डटल स्वस्थान मे॥
संतुष्ट कऽ संगीत सँ श्रोता सकल सज्ञान केँ।
यज्ञक समय लगि चैल छल तैँ बन्द कैलनि गान केँ॥
लगला करय सभक्यो प्रशंसा स्नेहमय उद्गार सँ।
कैलनि पुरस्कृत बन्धु द्वय केँ तखन विविध प्रकार सँ॥
चाहैत छथि उपहार दीअनि वस्तु बहु सत्कार सँ।
तन केँ सजा दी वसन-भूषण-युत सकल शृंगार सँ॥
बाजल करथि सभ "एहन बालक हम ने देखलसृष्टि मे।
सुकुमार गीताकार सुन्दर नहि अबं अछि दृष्टि मे॥
आकृति-मधुर स्वर राम-सन सम्राट मिलैत देखैत छी।
तन-रूप रंग-स्वभाव-बाजब राम सदृश पबैत छी॥
वल्कल पहिरने छथि, अहा! बालक, जटा छनि माथ मे।
धनु-तीर नहि छनि संग मे बस मात्र वीणा हाथ मे।
बूझू बनल छथि राम अद्भुत ब्रह्मचारी रूप मे॥
करताह लीला विश्व मे नव रीति-नीति अनूप मे"॥
कहलनि भरत केँ राम "मुद्रा स्वर्ण केँ भण्डार सं।
लै आनि कऽ करियनु पुरस्कृत स्नेह-युत सत्कार सं॥

अतिरिक्त एकरा और किछु चाहथि अमूल्यो वस्तु जौं।
लै आनि दीयनु दैत रहिअनु कहथि जाधरि अस्तु तौं॥

मिष्ठान्न दीअनु आनि कऽ जे करथि ग्रहण पसंद सँ।
पहिराउ पुष्पक हार सुरभित भरत! पूर्ण सुगंध सँ"॥

भऽ गेल ढेर कुवेर कें निधि-तुल्य प्रभु-आदेश सँ।
लव-कुशक सम्मुख भेल अर्पित सकल स्नेह विशेष सँ॥

देलनि नगर कें नारि सकल उतारि भूषण देह सँ।
गुरुजन शुभाशीर्वाद देलनि पितृ-तुल्य-स्नेह सँ॥

कैलनि मुदा नहि ग्रहण किछु, देलनि अपन इच्छा बता।
"चाहैत छी बस मात्र हम अपने सभक वात्सल्यता॥

हम लेब नहि किछु वस्तु" कहलनि पाणि दूनू जोड़ि कै।
"अछि नहि प्रयोजन धनक हमरा ई लँगोटी छौड़ि कै॥

वन मे रहै छी, खाइ छी फल, छाल कें पहिरैत छी।
गुरुवर कवीश्वर कें सिखावल राम-कथा गबैत छी॥

नृप! मात्र अपने सभक शुभ आशीष हम चाहैत छी।
श्री जानकी माता-कृपा सँ सतत प्रसन्न रहैत छी"॥

आश्चर्य सँ सभ चकित भऽ गेलाह उत्तर सूनि कै।
"निर्लोभ बालक एहन नहि देखल" कहल सब गूनि कै॥

रामक हृदय मे भेल उत्सुकता सुनी सद् ग्रन्थ कें।
दर्शन करी हम काव्य-रचनाकार अद्भुत संत कें॥

कहलनि "कुमार! सुकाव्य ई नित गाबि अवश्य सुनाउ तौं।
सत्वर महा कवि केर दर्शन अखन अहाँ कराउ तौं॥

ई काव्य हम सम्पूर्ण सुनबा लेल आतुर भेल छी।
श्रोता प्रमुख हम, व्यास अपने अखन हमरा लेल छी"॥

लगला सुनाबऽ गाबि लव-कुश नित्य यज्ञक अन्त मे।
चर्चा चलय लगलनि प्रशंसात्मक हिनक श्रीमन्त मे॥

सानन्द प्रभु सुनलनि जखन सम्पूर्ण निज जीवन-कथा।
हटलनि हृदय सँ जे छलनि सिय-त्याग कें दुखमय व्यथा॥

सीताक सुत छथि बूझि हर्षित भेल मन रघुवीर कें।
सत्वर पठौलनि मुनिक लग चुनि एक दूत सुधीर कें॥

जाकय सुनाबथि हमर ई सन्देश मुनि वाल्मीकि कें।
सीताक सँग आबथि एतय झट देथि उलझन ठीक कै॥

सीताक शुद्ध चरित्र छनि तौं आबि सभक समक्ष मे।
अपने प्रमाणित करथि निज पावन चरित्रक पक्ष मे॥

भल मनुख मुनिगण दृष्टि मे निर्दोष सावित होथि जौं।
'सीता परम पवित्र छथि' ई सकल जनता कहथि तौं॥

हम तखन सीता कें करब स्वीकार निश्छल हृदय सँ।
हमरा छमा कऽ देथि कहबनि हम सिया कें विनय सँ"॥

सन्देश ई रामक जखन सुनलनि कवीश्वर दूत सँ।
सन्तुष्ट भऽ गेलाह मुनि लव-कुशक अइ करतूत सँ।

अयलाह सिय कें संग कै सीतापतिक दरवार मे।
बैसल जतय छलाह ऋषि-मुनिगण अनेक कतार मे॥

शिव, वरुण, ब्रह्मा, गर्ग, काश्यप, च्यवन अरु धर्मज्ञ जे।
गौतम, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद अरु वशिष्ठ सुयज्ञ जे॥

वामन, महातपसी रु विश्वामित्र, कात्यायन तथा।
मौद्गल्य, दुर्वासा सभक अति पुण्यमय जीवन-कथा॥

कपि, असुर, सुर, नरश्रेष्ठ, पण्डित, कवि, सुअधिकारी प्रजा।
आयल छलाह सहर्ष फहराबैत रामक यश-ध्वजा॥

जावालि, भार्गव-संग देखथु जगत कें सभ भूप ई।
शिव कें उपस्थिति मे घटत घटना अखन अनूप ई॥

सीता शपथ करती ग्रहण सुनताह सभ निज कान सँ।
'स्वीकार सीता कें करू' कहताह सभ श्री राम सँ॥

पहुँचल छली वाल्मीकि-सँग सीता भरल दरवार मे।
चुप भेल पाछू मुनिक छथि ओ ठाढ़ि पड़ल विचार मे॥

पति-चरण पर शिर धरि प्रणाम सप्रेम कैलनि जानकी।
सोचैथ, अखनो नहिँ ग्रहण करताह दयानिधान की?

मुनिवर तखन सम्मुख-सभक लगला कहय रघुवीर सँ।
"हे राम ! हमरा कथन पर दी ध्यान अति गम्भीर सँ॥

लव-कुश दुनू केँ जन्म भेलनि जानकी केँ देह सँ।
ई पुत्र छथि अपनेक रखिअनु आब अधिक स्नेह सँ॥

हम वरुण केँ छी पुत्र बाजब झूठ नहिं कथमपि प्रभो !
हम जे कहै छी सत्य मानू हे सिया-स्वामी विभो !!

कैलहुँ तपस्या जे सहस्रो वर्ष धरि संसार मे।
हम खाइ छी तकरे शपथ सीताक शिष्टाचार मे।

जौं दोष किछुओ होनि तौं तप फलक भागी नहिं रही।
सत्कर्म कैलहुँ तकर हमरा फलक भोगी नहिं कही॥

हे राम ! हम मन-बुद्धि-उर सँ ई विचारि कहैत छी।
सीता-चरित मे दोष नहिं ई वाक्य सत्य बजैत छी॥

आचरण हिनकर शुद्ध छनि मानय पड़त सब रीति सँ।
अर्द्धाङ्गिनी अपनेक छथि गुण अहिंक गाबति प्रीति सँ॥

ई अैल छथि अपने शरण मे आब रखिअनु प्रेम सँ।
सुनिअनु कहै छथि की ? सिया मन-वचन-कर्म सुनेम सँ॥

करतीह सीता सिद्धि शुद्ध चरित्र अटल प्रमाण सँ।
सुनिलेथि. ऋषि-मुनि-देव-नर-पशुवर्ग निज-निज कान सँ"॥

मुनि वाल्मीकिक कथन सुनि सियपति समुद सत्प्रेम सँ।
श्री जानकी दिशि ताकि मुनि सँ कहल श्रीपतिनेम सँ॥

"हे मुनि ! कथन अपनेक अछि सब सत्य सिय-सम्बन्ध मे।
हम तौं छलहुँ बान्हल समाजक अति कठिन प्रतिबन्ध मे॥

सीताक पावन चरित केँ पुनि हम परीक्षा लेब की ?
सीता परम पवित्र छथि, ई नहि जनै छथि देव की ?

वन मे पठौलहुँ जानि कऽ बचबाक लै अभियोग सँ।
कऽ देल वञ्चित जानकी केँ राज्य-सुख-उपभोग सँ॥

लाचार भऽ कैलहुँ निठुरतम कार्य दोष अगाध केँ।
कृपया छमा करु हे कवीश्वर ! हमर अइ अपराध केँ॥

सीखथु जगत के नारिगण शिक्षा सियाक चरित्र सँ।
स्वामी-प्रसन्नक लेल सब किछु करथि हृदय पवित्र सँ" ॥

ई कहि धरित्री भूमिजा कें अंक मे लऽ स्नेह सँ।
बैसौल सिंहासनक ऊपर पुष्प बरिसल मेह सँ॥

कैलनि प्रवेश दुनू पुहुमि मे सभक सम्मुख हर्ष सँ।
गम्भीर मुद्रा मे छलाह विचार कें उत्कर्ष सँ।

छथि छुब्ध सुर-नर जे उपस्थित यज्ञ कें स्थान मे।
क्यो हर्ष ध्वनि लगला करय क्यो लीन छथि प्रभु ध्यान मे॥

किछु काल धरि रहला पड़ल प्रभु प्रेमिकाक वियोग मे।
सोचै छला की करक बाँकी रहल अछि नर-लोक मे॥

होयत कोना कऽ पूर्ण नर-लीला हमर सीता-बिना।
हम एक पत्नी-व्रत निबाहब आब कहु तौं ई कोना?

हम अखन बूझू भेल छी बिनु पाँखि कें पक्षी जेना।
करबाक अछि किछु और लीला आब से होयत कोना?

शुभ कार्य मनुजक सफल होयब कठिन छै पत्नी बिना।
अर्द्धाङ्गिनी बिनु काज ठानब तौं अवश जायत घिना॥

स्थिति हमर अछि शोचनीय विशेष हे बसुधा प्रिये!
जीयब असम्भव अछि हमर सीता-बिना हे भू प्रिये!!

तें एहि विरही व्यक्ति पर करितहु कृपा जौं वसुमती!
तौं देर हमहूँ नहि करब दुख-काल मे एकोरती॥

जौं नहिं सिया कें देब तौं हमरो सँगे-सँग लऽ चली।
रहतीह सँग मे जाहि तरहें विपिन बीच रहै छली॥

रहलहु अखन धरि एक सँग साकेत मे संसार मे।
तहिना रहब सानन्द नित पाताल कें आगार मे॥

ई जौं विनय स्वीकार नहिं करतीह महि तौं बूझि ली।
हम आब नहिं धारण करब नर देह सभ क्यो सूनि ली॥

नहिं मढ़थि क्यो जन दोष हमरा पर अखन कहि दैत छी।
लाचार भऽ ई काज हमरा करक हैत कहैत छी" ॥

ई टूटि जायत आब मन अछि जे लगामक रूप मे।
अति शीघ्र खसिये पड़त ई इन्द्रिय-तुरगदल कूप मे ।।
तेँ एक केवल मात्र रक्षक राम-नाम जपैत छी।
स्वामीक सद्गुण सतत श्रद्धा सँ गबैत रहैत छी ।।
बेशी कहब की हम अहाँ सँ मनक बात जनैत छी।
कहबनि अवधपति सँ एतय हम कोन भाँति रहैत छी" ।।
देलनि शुभाशीर्वाद मुनि सीता-कथन केँ सुनि कै।
चलला अवध केँ शिष्यगण लै सुभग यात्रा गुनि कै ।।
पहुँचैत सभ गेलाह सुन्दर परम अनुपम नगर मे।
आनन्द केँ वर्षा जतय छल ह्वैत आठो पहर मे ।।
छल सकल जन तन-मन-हृदय सँ व्यस्त यज्ञक काज मे।
बैसल रहथि नहिं काज यज्ञक त्यागि कियो समाज मे ।।



लव-कुशक रामायण-गायन

देलनि सुआज्ञा मुनि सुअवसर पाबि सिय-सुकुमार केँ।
"सभ केँ दिखा दीअनु अपन आदर्श शिष्टाचार केँ ।।
ई गाबि रामायण सुनाउ सप्रेम सुन्दर राग मे।
बहिजाथि-सभनर-नारिगण अनुराग केर तड़ाग मे ।।
नवरस-रसिकवर राम केँ सुन्दर निवास-समीप मे।
जाकय सुनाउ चरित्र सिय केँ गाबि राग-प्रदीप मे ।।
सुनताह जखने राम श्री सीताक पावन चरित केँ।
सम्भव बजाबथि, जेँ लग मे नमन करबनि स्वपितु केँ ।।
पूछताह ओ जौँ, के थिकहुँ ? किनकर अहाँ सन्तान छी।
के छथि सिखौने ? लघु वयस मे गाबि लैत सुगान छी ।।
तौँ देब परिचय अपन जे किछु थोड़ बहुत जनैत छी।
जौँ कहथि रामायण गबै लै गेब जेना गबैत छी ।।
अति प्रिय मनोहर गान पर ओ मुग्ध भऽ किछु दैथ जौँ।
कथमपि ग्रहण नहि करब किछुओ वस्तु भेंट करैथ तौँ ।।

बेशी सिखँब-पढ़ैब की ? जे उचित बूझब करब से।
समयानुकूल विचारि सुन्दर वचन बाजल करब से ।।

तौं हम प्रसन्न विशेष होयब एहि सुन्दर कार्य सँ।
आशीष दै छी हैब सम्मानित सकल आचार्य सँ" ।।

गुरुवरक आज्ञा मानिकऽ चललाह अति उत्साह सँ।
मन छलनि अधिक प्रसन्न हम बतियैब तौं नरनाह सँ ।।

सुनताह जौं सीताक पावन चरित सुन्दर ध्यान सँ।
कहबैत छथि जौं ज्ञान कें भण्डार सब विद्वान सँ ।।

तौं हृदय हेतनि द्रवित ध्रुव केहनो ने होथि कठोर ओ।
आदर्श नर कहबैत छथि जग मे अवध-किशोर ओ ।।

अछि सुनल, छथि साहित्य-सँग संगीत-प्रेमी राम ओ।
सम्पन्न सद्गुण सँ सकल आनन्दघन सुखधाम ओ ।।

तैं जाइ प्रथम सप्रेम सस्वर गाबि गुरुवर-काव्य कें।
सुनबैत ताधरि रही जाधरि सुनथि मन सँ काव्य कें ।।

लगला सुनाबऽ गाबि कऽ अवधक सकल नर-नारि कें।
की बहय लगलनि धार सबहक गाल पर दृग-वारि कें ।।

सुनलनि अवधपति मधुर स्वर-युत गीत अपना कान सँ।
"लै आउ एहि कुमार कें" कहलनि अपन दरवान सँ ।।

गेलाह दूनू भाइ सीतापतिक शुभ दरवार मे।
सन्मान सँ स्थान दऽ पुछलनि रमापति प्यार मे ।।

"किनकर थिकहुँ सुपुत्र एवं कोन ऋषि कें शिष्य छी।
किनकर रचल ई काव्य श्रेष्ठ गबैत अपने नित्य छी ।।

सस्वर सुनाउ सुराग मे सूनऽ हमहुँ चाहैत छी।
संगीत मे अतिविज्ञ शिशु होनहार अहाँ लगैत छी" ।।

देलनि अपन परिचय मधुर श्रुति-सुखद वचन अनूप मे।
सब प्रश्न कें उत्तर यथाक्रम देल समुचित रूप मे ।।

"माता हमर सीता थिकी रघुनाथ-कथा गबैत छी।
होयता पिता माताक पति नहिं नाम तिनक जनैत छी ।।

गुरु वाल्मीकिक शिष्य छी सद्शास्त्र सतत पढ़ैत छी।
फल-मूल अछि आहार वन मे जननि-संग रहैत छी॥
अवधेश यज्ञ करैत छथि से सूनि अयलहुँ अछि एतऽ।
आदेश गुरु सँ पाबि रामायण गबैछी हम ततऽ॥
गुरुवाल्मीकिक रचित रामायण सुनू आरम्भ सँ।
ई काव्य सुनितहि मुग्ध होयब हम कहै छी दम्भ सँ"॥
लगलाह गाबय मोन सँ वीणा बजा शुभ ताल मे।
आनन्दमय बातावरण भऽ गेल छल तत्काल मे॥
जे क्यो उपस्थित रसिकगण बैसल छला दरवार मे।
सभ ध्यान सँ लगला सुनय भऽ मग्न हर्ष अपार मे।
कतबा समय बीतल रहल नहिं तखन किनको ध्यान मे।
जे जतय बैसल रहथि तहना छथि डटल स्वस्थान मे॥
संतुष्ट कऽ संगीत सँ श्रोता सकल सज्ञान कें।
यज्ञक समय लगि चैल छल तैं बन्द कैलनि गान कें॥
लगला करय सभक्यो प्रशंसा स्नेहमय उद्गार सँ।
कैलनि पुरस्कृत बन्धु द्वय कें तखन विविध प्रकार सँ॥
चाहैत छथि उपहार दीअनि वस्तु बहु सत्कार सँ।
तन कें सजा दी वसन-भूषण-युत सकल श्रृंगार सँ॥
बाजल करथि सभ "एहन बालक हम ने देखलसृष्टि मे।
सुकुमार गीताकार सुन्दर नहि अबं अछि दृष्टि मे॥
आकृति-मधुर स्वर राम-सन सभटा मिलैत देखैत छी।
तन-रूप रंग-स्वभाव-बाजब राम सदृश पबैत छी॥
वल्कल पहिरने छथि, अहा! बालक, जटा छनि माथ में।
धनु-तीर नहि छनि संग मे वस मात्र वीणा हाथ मे।
बूझू बनल छथि राम अद्भुत ब्रह्मचारी रूप मे॥
करताह लीला विश्व मे नव रीति-नीति अनूप मे"॥
कहलनि भरत कें राम "मुद्रा स्वर्ण कें भण्डार सं।
लै आनि कऽ करियनु पुरस्कृत स्नेह-युत सत्कार सं॥

अतिरिक्त एकरा और किछु चाहथि अमूल्यो वस्तु जों।
लै आनि दीयनु दैत रहिअनु कहथि जाधरि अस्तु तों॥

मिष्ठान्न दीअनु आनि कऽ जे करथि ग्रहण पसंद सँ।
पहिराउ पुष्पक हार सुरभित भरत! पूर्ण सुगंध सँ"॥

भऽ गेल ढेर कुवेर कें निधि-तुल्य प्रभु-आदेश सँ।
लव-कुशक सम्मुख भेल अर्पित सकल स्नेह विशेष सँ॥

देलनि नगर कें नारि सकल उतारि भूषण देह सँ।
गुरुजन शुभाशीर्वाद देलनि पितृ-तुल्य-स्नेह सँ॥

कैलनि मुदा नहि ग्रहण किछु, देलनि अपन इच्छा बता।
"चाहैत छी बस मात्र हम अपने सभक वात्सल्यता॥

हम लेब नहि किछु वस्तु" कहलनि पाणि दूनू जोड़ि कै।
"अछि नहि प्रयोजन धनक हमरा ई लँगोटी छौड़ि कै॥

वन मे रहै छी, खाइ छी फल, छाल कें पहिरैत छी।
गुरुवर कवीश्वर कें सिखावल राम-कथा गबैत छी॥

नृप! मात्र अपने सभक शुभ आशीष हम चाहैत छी।
श्री जानकी माता-कृपा सँ सतत प्रसन्न रहैत छी"॥

आश्चर्य सँ सभ चकित भऽ गेलाह उत्तर सूनि कै।
"निर्लोभ बालक एहन नहि देखल" कहल सब गूनि कै॥

रामक हृदय मे भेल उत्सुकता सुनी सद् ग्रन्थ कें।
दर्शन करी हम काव्य-रचनाकार अद्भुत संत कें॥

कहलनि "कुमार! सुकाव्य ई नित गाबि अवश्य सुनाउ तों।
सत्वर महा कवि केर दर्शन अखन अहां कराउ तों॥

ई काव्य हम सम्पूर्ण सुनबा लेल आतुर भेल छी।
श्रोता प्रमुख हम, व्यास अपने अखन हमरा लेल छी"॥

लगला सुनाबऽ गाबि लव-कुश नित्य यज्ञक अन्त मे।
चर्चा चलय लगलनि प्रशंसात्मक हिनक श्रीमन्त मे॥

सानन्द प्रभु सुनलनि जखन सम्पूर्ण निज जीवन-कथा।
हटलनि हृदय सँ जे छलनि सिय-त्याग कें दुखमय व्यथा॥

सीताक सुत छथि बूझि हर्षित भेल मन रघुवीर कें।
सत्वर पठौलनि मुनिक लग चुनि एक दूत सुधीर कें॥

जाकय सुनाबथि हमर ई सन्देश मुनि वाल्मीकि कें।
सीताक सँग आबथि एतय झट देथि उलझन ठीक कै॥

सीताक शुद्ध चरित्र छनि तौं आबि सभक समक्ष मे।
अपने प्रमाणित करथि निज पावन चरित्रक पक्ष मे॥

भल मनुख मुनिगण दृष्टि मे निर्दोष सावित होथि जौं।
'सीता परम पवित्र छथि' ई सकल जनता कहथि तौं॥

हम तखन सीता कें करब स्वीकार निश्छल हृदय सँ।
हमरा छमा कऽ देथि कहबनि हम सिया कें विनय सँ"॥

सन्देश ई रामक जखन सुनलनि कवीश्वर दूत सँ।
सन्तुष्ट भऽ गेलाह मुनि लव-कुशक अइ करतूत सँ।

अयलाह सिय कें संग कै सीतापतिक दरवार मे।
बैसल जतय छलाह ऋषि-मुनिगण अनेक कतार मे॥

शिव, वरुण, ब्रह्मा, गर्ग, काश्यप, च्यवन अरु धर्मज्ञ जे।
गौतम, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद अरु वशिष्ठ सुयज्ञ जे॥

वामन, महातपसी रु विश्वामित्र, कात्यायन तथा।
मौद्गल्य, दुर्वासा सभक अति पुण्यमय जीवन-कथा॥

कपि, असुर, सुर, नरश्रेष्ठ, पण्डित, कवि, सुअधिकारी प्रजा।
आयल छलाह सहर्ष फहराबैत रामक यश-ध्वजा॥

जावालि, भार्गव-संग देखथु जगत कें सभ भूप ई।
शिव कें उपस्थिति मे घटत घटना अखन अनूप ई॥

सीता शपथ करती ग्रहण सुनताह सभ निज कान सँ।
'स्वीकार सीता कें करू' कहताह सभ श्री राम सँ॥

पहुँचल छली वाल्मीकि-सँग सीता भरल दरवार मे।
चुप भेल पाछू मुनिक छथि ओ ठाढ़ि पड़ल विचार मे॥

पति-चरण पर शिर धरि प्रणाम सप्रेम कैलनि जानकी।
सोचैथ, अखनो नहिँ ग्रहण करताह दयानिधान की?

मुनिवर तखन सम्मुख-सभक लगला कहय रघुवीर सँ।
"हे राम ! हमरा कथन पर दी ध्यान अति गम्भीर सँ॥

लव-कुश दुनू कें जन्म भेलनि जानकी कें देह सँ।
ई पुत्र छथि अपनेक रखिअनु आब अधिक स्नेह सँ॥

हम वरुण कें छी पुत्र बाजब झूठ नहिं कथमपि प्रभो !
हम जे कहै छी सत्य मानू हे सिया-स्वामी विभो !!

कैलहु तपस्या जे सहस्त्रो वर्ष धरि संसार मे।
हम खाइ छी तकरे शपथ सीताक शिष्टाचार मे।

जौं दोष किछुओ होनि तौं तप फलक भागी नहिं रही।
सत्कर्म कैलहुँ तकर हमरा फलक भोगी नहिं कही॥

हे राम ! हम मन-बुद्धि-उर सँ ई विचारि कहैत छी।
सीता-चरित मे दोष नहिं ई वाक्य सत्य बजैत छी॥

आचरण हिनकर शुद्ध छनि मानय पड़त सब रीति सँ।
अर्द्धाङ्गिनी अपनेक छथि गुण अहिंक गाबति प्रीति सँ॥

ई ऐल छथि अपने शरण मे आब रखिअनु प्रेम सँ।
सुनिअनु कहै छथि की ? सिया मन-वचन-कर्म सुनेम सँ॥

करतीह सीता सिद्धि शुद्ध चरित्र अटल प्रमाण सँ।
सुनिलेथि. ऋषि-मुनि-देव-नर-पशुवर्ग निज-निज कान सँ" ॥

मुनि वाल्मीकिक कथन सुनि सियपति समुद सत्प्रेम सँ।
श्री जानकी दिशि ताकि मुनि सँ कहल श्रीपतिनेम सँ॥

"हे मुनि ! कथन अपनेक अछि सब सत्य सिय-सम्बन्ध मे।
हम तौं छलहुँ बान्हल समाजक अति कठिन प्रतिबन्ध मे॥

सीताक पावन चरित कें पुनि हम परीक्षा लेब की ?
सीता परम पवित्र छथि, ई नहि जनै छथि देव की ?

वन मे पठौलहु जानि कऽ बचबाक लै अभियोग सँ।
कऽ देल वञ्चित जानकी कें राज्य-सुख-उपभोग सँ॥

लाचार भऽ कैलहु निठुरतम कार्य दोष अगाध कें।
कृपया छमा करु हे कवीश्वर ! हमर अइ अपराध कें॥

सीखथु जगत केँ नारिगण शिक्षा सियाक चरित्र सँ।
स्वामी-प्रसन्नक लेल सब किछु करथि हृदय पवित्र सँ" ॥
ई कहि धरित्री भूमिजा केँ अंक मे लऽ स्नेह सँ।
बैसौल सिंहासनक ऊपर पुष्प बरिसल मेह सँ॥
कैलनि प्रवेश दुनू पुहुमि मे सभक सम्मुख हर्ष सँ।
गम्भीर मुद्रा मे छलाह विचार केँ उत्कर्ष सँ।
छथि छुब्ध सुर-नर जे उपस्थित यज्ञ केँ स्थान मे।
क्यो हर्ष-ध्वनि लगला करय क्यो लीन छथि प्रभु ध्यान मे॥
किछु काल धरि रहला पड़ल प्रभु प्रेमिकाक वियोग मे।
सोचैं छला की करक बाँकी रहल अछि नर-लोक मे॥
होयत कोना कऽ पूर्ण नर-लीला हमर सीता-बिना।
हम एक पत्नी-व्रत निबाहब आब कहु तौं ई कोना?
हम अखन बूझू भेल छी बिनु पाँखि केँ पक्षी जेना।
करबाक अछि किछु और लीला आब से होयत कोना?
शुभ कार्य मनुजक सफल होयब कठिन छै पत्नी बिना।
अर्द्धाङ्गिनी बिनु काज ठानब तौं अवश जायत घिना॥
स्थिति हमर अछि शोचनीय विशेष हे बसुधा प्रिये!
जीयब असम्भव अछि हमर सीता-बिना हे भू प्रिये!!
तें एहि विरही व्यक्ति पर करितहुँ कृपा जौं वसुमती!
तौं देर हमहूँ नहि करब दुख-काल मे एकोरती॥
जौं नहिं सिया केँ देब तौं हमरो सँगे-सँग लऽ चली।
रहतीह सँग मे जाहि तरहेँ विपिन बीच रहै छली॥
रहलहुँ अखन धरि एक सँग साकेत मे संसार मे।
तहिना रहब सानन्द नित पाताल केँ आगार मे॥
ई जौं विनय स्वीकार नहिं करतीह महि तौं बूझि ली।
हम आब नहिं धारण करब नर देह सभ क्यो सूनि ली॥
नहिं मढ़थि क्यो जन दोष हमरा पर अखन कहि दैत छी।
लाचार भऽ ई काज हमरा करक हैत कहैत छी"॥

ई सुनि वचन विरञ्चि-शिव-सुर राम-शोकावेश के ।
कहलनि विनय युत वचन सभ मिलि नर-प्रवर अवधेश के ॥

"हे शत्रुसूदन राम ! मन सँ त्यागि दी संताप के ।
अपने थिकहु के ? जानि ली कृपया अपन प्रताप के ॥

प्रभु के मनक प्रतिकूल ककरा किछु करक सामर्थ छै ।
विपरीत कोनो काज सोचब सभक बूझू व्यर्थ छै ॥

सब काज सृष्टिक भऽ रहल अछि रचल दयानिधान सँ ।
सब नीक आ अधलाह ह्वै छ विचारि बनल विधान सँ ॥

अपनहि अनेकों पात्र बनि अभिनय करी संसार मे ।
दर्शक स्वयं बनि बस्तु दी सत्पात्र के उपहार मे ॥

तँ एहि नर-लीलाक अछि करबाक अभिनय शेष जे ।
चलु स्वर्ग शीघ्र समाप्त कै कऽ आब हे अवधेश ! से ॥

सीता पहुँचली पूर्व लीला पूर्ण कऽ साकेत मे ।
बिनु जानकी कें नीक लागत की अवध-निकेत मे" ॥

सब देव-नर प्रस्थान कैलनि राम कें आदेश सँ ।
पहुँचैत सभ गेलाह निज-निज धाम हर्षावेश सँ ।

सीताक संग समाप्त लीला भेल सुन्दर रूप मे ।
आदर्श नारी मे सिया आदर्श रघुपति भूप मे ।

सीताक अनुपम चरित वर्णन भेल "सीता-शील" मे ।
सद् कीर्त्ति-केतु सियाकनित फहरोंति अछि नभ-नील मे ॥

ई चरित पढ़ि आदर्श जीवन के बनौती नारि जे ।
बनतीह जग मे परम पूज्या पतिक परम पियारि से ॥

जे छथि पढ़लि से पढ़थि सुनबथि सुनऽ चाहथि नारि जे ।
स्वामीक सेवा करथि बाजथि वचन मधुर बिचारि जे ॥

झगड़ा करथि नहिं दैथ नहिं कखनो कि ककरो गारि जे ।
आदर्श नारी विश्व मे बनती परम बुधियारि से ॥

ई पूर्ण पोथी-पुष्प अर्पित चरण पर श्री नाथ के ।
जे पूर्ण भेलछि पाबि कऽ अतिशय कृपा गणनाथ के ॥

□

मैथिलानिक कथन

किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ।
अैब मिथिला मे कहिया ? दिअऽ से वचन ॥

किछु सुनल गाड़ि तैं रोख बड़ भेल की ?
वंश उकटल बहुत गेल तइ लेल की ?

हैत संकोच मिथिला मे अयबाक छण ।
किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

जानकी-रँग-सन नहि अहँक रंग अछि ।
नाम लघु राम बड़ तैं सिया चंग अछि ॥

तैं एतेक जानकी कऽ रहलि अछि रुदन ।
किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

बड़ परिश्रम धनुष-भंग मे कैल अछि ।
बतकही बड़ परशुराम सँग भेल अछि ॥

से सिया-योग्य दुलहाक छल जाँच-सन ।
किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

एहि सब बात कें मोन मे लैब नहि ।
जौं बिचारब तौं ई सुख कतहुँ पैब नहि ॥

अछि शपथ लाख राखब "स्वजन"-स्मरण ।
किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥



समदाउन

सिया-सन धिया आनि पिया देल जहिया
कि हिया भेल मुदित अपार।
सब सुख-साधन सँ सदन दयानिधि
भरि देल सकल प्रकार॥
मुख देखि सिया कें प्रसन्न चित सदिखन
छल मन परम उदार।
जीवन सफल भेल हमर मनुज-तन
कैल नित सिया कें दुलार॥
एहन धिया कें हम जननी कहौलहुँ
घर भेल स्वर्गक जोड़।
ई जनितहुँ हम राखि नहि सकलहु
के? भेल एहन कठोर॥
उर तजि दुग्ध निठुर कहु इहो भेल
बनि गैल आँखिक नोर।
तदपि मुदित मन पाहुन पौलहुँ
दशरथ राज - किशोर॥
अनुनय हमर सुनथु हे विधाता!
जनम जौं नारिक देथु।
तौं हम जननी सिया केर बनितहुँ
"स्वजन" विनय सुनि लेथु॥



ईश्वर-नाम मे चमत्कार

(१०८ के" महत्त्व)

ब्रह्म = ब + र, ह + म

ब = २३ (क सँ ब धरि तैस)
र = २७ (क सँ र धरि सताइस)
ह = ३३ (क सँ ह धरि तैंतिश)
म = २५ (क सँ म धरि पच्चीश)

१०८

सीता राम = स + ी, त + ा, र + ा, म

स = ३२ (क सँ स धरि बत्तीश)
ी = ४ (अ सँ ई (ी) चारि)
त = १६ (क सँ त धरि सोलह)
ा = २ (अ सँ आ (ा) दू)
र = २७ (क सँ र धरि सत्ताइस)
ा = २ (अ सँ आ (ा) दू)
म = २५ (क सँ म धरि पचीश)

१०८

राधिका कृष्ण = र + ा, ि + ध, क + ा, क + ृ, ष + ण

र = २७ (क सँ र धरि सताइस)
ा = २ (अ सँ आ (ा) दू)
ि = ३ (अ सँ इ (ि) तीन)
ध = १९ (क सँ ध धरि उन्नैश)
क = १ (क मात्र एक)
ा = २ (अ सँ आ (ा) दू)
क = १ (क मात्र एक)
ृ = ७ (अ सँ ऋ (ृ) सात)
ष = ३१ (क सँ ष एकतीश)
ण = १५ (क सँ ण धरि पन्द्रह)

१०८

बिनु मात्रा के शिव-प्रति श्रद्धा-समर्पण

गगन - पवन - जल - अनल - जगत - कण
जकर धवल यश पसरल।
नवल कमल-सन वदन, जकर तन
सगरल फणधर - जकड़ल॥
जकर नयन-शर पल-मह तत क्षण
भसम कयल तन मदनक।
दशरथ-तनयक पद-रज-कण लय
बनल तनय वर पवनक॥
जकर वरद-कर पड़त भगत पर
हर क्षण अशरण-शरणक॥
तकर चरण पर जकर सतत मन
रहत, कहब हम नरवर।
हर-जन-मल पर अरपन तन-धन
तकर "स्वजन" हम सहचर॥



शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
पड़	पड़ू	२	६	ताक	ताकू	१०३	२४
काना	कोना	२	१९	दुनु	दूनू	१०९	२१
मथिली	मैथिली	३	१८	तँ	तैँ	११२	२२
सुयल	सुथल	३	२५	नहि	हा ! नहि	११३	१८
प्रमी	पक्षी	११	२८	थीक के	नीक कै	११४	६
बुझैत	बुझै	२०	८	रोकक	रोकैक	११४	२[illegible]
सनन	सन्तान	२६	११	योग	योग्य	११६	२[illegible]
प्राणधिक	प्राणाधिक	३२	३	छन	छीन	१२१	१[illegible]
पब	पैब	३४	६	सनि	सूनि	१२६	[illegible]
नितऽ रहू	नितरहू	४०	१	चन्द्र	चन्द्रक	१४६	१[illegible]
सदैद	सदैव	४०	२६	वभव	वैभव	१४९	
पछलि	पूछलि	४१	५	प्रेमाशसक्त	प्रेमासक्त	१५२	
'लैल'	लेल	४१	७	अहक	अहँक	१५४	१[illegible]
दुघंट	दुर्घट	४१	६	यद्यपि	यदपि	१५५	[illegible]
लगाल	लागल	४२	१	लगलक	लगलैक	१६०	[illegible]
ब्यहार	व्यवहार	४२	१४	पाश	फाँस	१६१	[illegible]
सवंज्ञ	सर्वज्ञ	४३	२१	लंका	लंक	१६९	[illegible]
माइ	भाइ	४९	२६	मारत	मरत	१७२	[illegible]
हेतौक	हेतैक	५५	४	अपध	अवध	१७४	
सदर	सुन्दर	५८	२१	सुकवि	सुकपि	१७६	
सहष	सहर्ष	६२	११	शोल	शील	१८०	
मन	धन	६४	८	ओहूँ	ओ	१८५	
ब्यहार	व्यवहार	६७	१४	कहु	कह	७६	
तौं	तौं	८२	२	डेण	डेग	८२	
शोचै	सोचै	८४	१२	वश	बस	८६	
तौं	तैं	९७	११	कलक	कैलक	९९	
हमार	हमर	१०३	५				

प्राप्ति स्थान :—

१. "कुमार-कुञ्ज"

महल्ला—सिन्धुआ टोली
गुलजारबाग, पटना–७

२. श्री अनिरुद्ध नारायण चौधरी

साइंस-टीचर
श्री मुकुन्दी चौधरी-हाई स्कूल,
कैदराबाद, दरभंगा।

३. श्री विनय कुमार दास

इलाहाबाद-बैंक
समस्तीपुर।

आवरण मुद्रक - कलर आर्ट प्रिन्टर्स, तारनी प्रसाद लेन पटना-८